MANGALORE UNIVERSITY

CENTRE FOR DISTANCE EDUCATION
MANGALAGANGOTHRI - 574 199
DAKSHINA KANNADA DISTRICT, KARNATAKA STATE

COURSE 7
Pedagogy of School Subject – I (c)

HINDI
(Curriculum and Pedagogic Studies)
BLOCKS 1, 2, 3 & 4

B.Ed. DEGREE PROGRAMME
(OPEN AND DISTANCE LEARNING)

SECOND YEAR B.Ed.

Published by
MANGALORE UNIVERSITY
Mangalagangothri - 574 199
Dakshina Kannada District, Karnataka State

Hindi : Self Learning Material for B.Ed. Degree Programme (Open and Distance Learning) of Second Year, Prepared by Dr. Deepthi Nayak and Dr. Indrani B., Published by The Registrar, Mangalore University, Mangalagangothri - 574 199, Karnataka.

Year 2019-20

Developed by:
The Director
Centre for Distance Education,
Mangalore University,
Mangalagangothri - 574 199,
Dakshina Kannada District, Karnataka.

Course Co-ordinator
Dr. Chidananda A.L.
B.Ed.(ODL) Programme,
Centre for Distance Education,
Mangalore University, Mangalagangothri - 574 199,
Dakshina Kannada District, Karnataka.

© The Registrar, Mangalore University

Hindi **:** Self-learning Material for B.Ed. Degree Programme (Open and Distance Learning) of Second Year.

Prepared by:
Dr. Deepthi Nayak
Dr. Indrani B.

Published by:
The Registrar
Mangalore University,
Mangalagangothri - 574 199,
Dakshina Kannada District, Karnataka.

Year 2019-20

© The Registrar, Mangalore University

(For private circulation only)

COURSE 7
Pedagogy of School Subject – I (c)

HINDI
(Curriculum and Pedagogic Studies)

The Registrar
Mangalore University
Manalagangothri-574 199

Publisher

Dr. Deepthi Nayak : Block - 1

Dr. Indrani B. : Blocks - 2, 3 & 4

Course Writers

Prof. B.N. Manjunathaiah
Professor of Education (Rtd)
Department of Studies and Research in Education
University of Mysore
Manasagangothri, Mysore - 570 006

Course Scrutinizer

Dr. Indrani B.

Assistant Course Editor

Contents

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई १: भाषा का अर्थ एवं उत्पत्ति

इकाई २: त्रिभाषासूत्र और हिन्दी।

इकाई ३: हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

इकाई ४: हिन्दी भाषा का स्तान

इकाई ५: हिन्दी भाषा का इतिहास

इकाई ६: हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका

खण्ड २: भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई १: श्रवण कौशल

इकाई २: मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (भाषण कौशल)

इकाई ३: वाचन कौशल

इकाई ४: लेखन कौशल

इकाई ५: हिन्दी अध्यापक और इसके सामर्थ्य

इकाई ६: हिन्दी अध्यापक के आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र

खण्ड ३ : पाठयोजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई १ : पाठयोजना

इकाई २ : इकाई योजना

इकाई ३ : संसाधन पाठयोजना

इकाई ४ : शिक्षण विधियाँ

इकाई ५ : कविता का रसास्वादन

इकाई ६ : व्याकरण शिक्षण

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई १ : हिन्दी अध्ययन सामग्री

इकाई २: दृश्य और श्रवण सामग्री

इकाई ३ : कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री

इकाई ४ : हिन्दी भाषा का मूल्यांकन

इकाई ५ : उपलब्धि मूल्यांकन और नैदानिक मूल्यांकन

इकाई ६ : हिन्दी भाषाभ्यास की अनुदेशात्मक सामग्री

स्कूल विषय की शिक्षा–हिंदी

कोर्स पर एक सरसरी निगाह (अवलोकन)

प्रिय छात्रों,

एक शिक्षक के रूप में आपने भाषा के महत्व को शैक्षिक, व्यावसायिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन में अनुभव किया है । भाषा भावों, विचारों तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति का साधन तथा माध्यम है । भाषा के सहारे मानव अपने सामाजिक अस्तित्व की स्थापना करता है । भाषा व्यक्ति और समाज के मध्य होनेवाली अंतःक्रिया का परिणाम है ।

एक हिंदी शिक्षक बनने के लिए आप को हिंदी भाषा की विस्तृत जानकारी की आवश्यकता है कि हिंदी भाषा बहुत सरल और लचीली भाषा है, आज दुनिया की सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है । हिंदी को संस्कृत की बड़ी बेटी मानी जाती है ।

हिंदी भाषा से संबंधित प्रस्तुत कोर्स – स्कूल विषय की शिक्षा हिंदी, में आप सामान्यतौर पर भाषा और हिंदी भाषा के इतिहास को प्राचीन–मध्य–आधुनिक काल में झाँक लेंगे । जान लेंगे कि हिंदी भाषा के रूप, हिंदी शिक्षण के उद्देश्य और भाषा के बारे में संविधान की धाराएँ तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–२००५ के सुझाव के अनुसार त्रिभाषा सूत्र का महत्व ।

भाषा अध्यापक को भाषा पर प्रभुत्व पाने के लिए चार कौशल जैसे–श्रवण कौशल, भाषण कौशल, वाचन कौशल, लेखन कौशल की आवश्यकता है । एक समर्थ हिंदी शिक्षक के सामर्थ्य और आनुपातिक विकास पर नज़र डाला गया है ।

प्रस्तुत कोर्स में हिंदी शिक्षक को अध्यापन के पूर्व की तैयारी में पाठयोजना (गद्य, कविता, व्याकरण), पाठ को प्रभावशाली बनाने में सहायक सामग्री का पात्र, पाठ को कैसे पढ़ाये जाये? के उत्तर में विभिन्न शिक्षण विधियों की ओर ध्यान खींचा गया है ।

अंत में शिक्षक का अध्यापन तथा छात्रों का अध्ययन कहाँ तक सफल हुआ है–जानना आवश्यक है । इस प्रक्रिया को जानने के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता है । इस सिलसिले में मूल्यांकन के महत्व और उपलब्धि तथा नैदानिक परीक्षा और अनुदेशात्मक सामग्री द्वारा कोर्स को समृद्द बनाया गया है

आशा है कि आप छात्र, इस सामग्री से लाभान्वित होंगे ।

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई १: भाषा का अर्थ एवं उत्पत्ति

इकाई की संरचना

१.१.१: सीखने केउद्देश्य
१.१.२: प्रस्तावना
१.१.३: सीखनेके अंश और सीखने की विधियाँ ।
१.१.३.१: भाषा का अर्थ
आपकी प्रगति की जाँच–१
१.१.३.२: भाषा की परिभाषा और उत्पत्ति ।
आपकी प्रगति की जाँच–२
१.१.३.३: भाषा की प्रकृति ।
आपकी प्रगति की जाँच–३
१.१.३.४: भाषा का महत्व ।
आपकी प्रगति की जाँच–४
१.१.४: सारांश
१.१.५: आपकी प्रगतिकी जाँच के उत्तर
१.१.६:इकाई समाप्ति का अभ्यास
१.१.७: संदर्भ पुस्तकें

१.१.१: सीखने केउद्देश्य

इस इकाईके अध्ययन के बाद छात्र इन अंशों के योग्य होंगे।

–भाषा के अर्थ कोसमझेंगे।
–भाषा की परिभाषा और उत्पत्ति के बारे में विवरण देंगे ।
–भाषा की प्रकृति की व्याख्या करेंगे ।
–भाषा के महत्व को समझेंगे ।

१.१.२: प्रस्तावना

इस इकाई में हम भाषा के अर्थ, परिभाषा और उत्पत्ति, प्रकृति और भाषा के महत्व की जानकारी प्राप्त करेंगे।

शिक्षणशात्र में भाषा का शिक्षण अधिक महत्वपूर्ण है , क्यों कि भाषा से न केवल विषयगत तथ्यों की ही जानकारी प्राप्त होती , बल्की इसके माद्यम से हमारा संवेगात्मक विकास होता है । हमारी भाषा का सामर्थ्य बढ़ता है, उसके साथ साथ व्यक्तित्व निकरता है। शिक्षण में भाषा केवल साहित्य की जानकारी ही नही, बल्कि अन्य विषयों को जानने के लिए एक माद्यम का कार्य करती है। जीवन में भाषा के इस महत्व को देखते हुए भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाको अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

इस दृष्टि से यह उपयुक्त है कि यहपहले हम यह जानने का प्रयत्न करें कि भाषा क्या है ? उसकी परीभाषा, प्रकृति तथा महत्व क्या होती है।

१.१.३: सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

१.१.३.१: भाषा का अर्थ :

नीचे दिए गए इस वाक्यको पढ़ें ;

- भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों अथवा विचारों का आदान– प्रदान किया जाता है।
- भाषा मानव जीवन का ऐसा अंग है जिसके बिना मानव जीवन अधूरा है। मैक्समुल्लर कहते हैं, "भाषा यदि प्रकृति की देन है, तो निसन्देह यह प्रकृति की अंतिम और सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसे प्रकृति ने केवल मनुष्य केलिए ही सुरक्षित कर रखा था।"
- वस्तुतः भाषा एक मानवीय कलाकृति है, जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समाझा सके और दूसरों के भावों को समझ सके उसे भाषा कहते हैं।
- 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है , जिसका अर्थ है बोलना, इसके द्वारा मानव के भावों, विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–१**

इस वाक्यों को पूरा करें।

१. भाषा –––––––– है।
२. मैक्समुल्लर के अनुसार भाषा ––––––––––––––––––––––––––––––– है?
३. 'भाषा' शब्द धातु ––––––––––––––– से निकला है।
४. 'भाष' शब्द का अर्थ ––––––––है।

१.१.३.२: भाषा की परिभाषा और उत्पत्ति ।

भाषा के बारे में कुछ और स्पष्ट जानकारी केलिए भाषा की परिभाषा के बारे में जानेंगे।

- भाषा शब्द संस्कृत के भाष धातु से बना है जिसका अर्थ है बॊलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।
- प्लेटो: "विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यान्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"
- आचार्य देवनाथ शर्मा: " भाषाके उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अथवा जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय या सहयोग करते है उस यादृच्छिक, रूढ. ध्वनि संकेत की प्रणाली को भाषा कहते है।"
- डा. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव: "भाषा उच्चरीत, यादृच्छिक, अर्थवत्. ध्वनि प्रतीकों या शब्दों की ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के व्यक्ति आपस में अपने भावों–विचारों को सप्रैषित करते हैं ।

- **भाषा की उत्पत्ति:**

"मनुष्य द्वारा उच्चरित सार्थक ध्वनि संकेतों के सहयोग से किसी या विचार का संपूर्ण संप्रेषण जो हो सके, उसे भाषा कहते है."लेकिन भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई ? यह कहना मुश्किल है। सामान्यतः हम भाषा की उत्पत्ति के बारे में यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि, सर्वप्रथम मनुष्य को भाषा की आवश्यकता का अनुभव हुआ और समुदाय के बीच रहते हुये कुछ ध्वनियों का उच्चारण प्रारंभ किया, धीरे–धीरे वे ध्वनियाँ मानक बनने लगी । लेकिन कुछ सैध्दांतिककारों ने अपने सिध्दांतों से भाषा की उत्पत्ति को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं।

दिव्योत्पति सिध्दांत: मनुष्य की पराचेतना किसी अलौकिक सूत्र से बंधी हुई है। सम्पूर्ण सृष्टि के जन्म के विषय में एक अध्यात्मिक सूत्र सामने रखा गया है"**एकोऽहम बहुस्याम.**"

इस के अनुसार भाषा की उत्पत्ति का प्रयोजन दैविक माना जाता है, लेकिन जैसे– जैसे भाषाविज्ञानियों की खोज आगे बढ़ती गई, इस सिध्दांत पर भी कुछ शंकाएँ उठने लगी, जैसे– अनीश्वरवादियों का तर्क है कि यदि मनुष्य को भाषा मिलनी थी जन्म के साथ क्यों नहीं मिली। क्योंकि सभी जीवों को बोलियों का उपहार जन्म के साथ–साथ मिला लेकिन, मानव शिशु के जन्म लेने के बाद भाषा मिली । उसने अपने समाज में रहकर धीरे–धीरे भाषागत संस्कारों का विकास कर दिय ।

संकेत सिध्दांत: विश्व भाषाविज्ञानी यह स्वीकार करते हैं कि मनुष्य के पास जब भाषा नहीं थी, तब वह संकेतों से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता था। यह संप्रेषण यध्यपि अधूरा होता था तथापि, आंगिक चेष्टाओं के माध्यम से परम्पर परामर्श करने की एक कला विकसित हो रही थी । विचार विनिमय के लिये यह आंगिक संकेत सूत्र एक नये सिध्दांत के रूप में सामने आया और संकेत के माध्यम से ही भाषाएँ गढ़ी जाने लगी। भाषाविज्ञानियों का यह मानना है कि जिस समय विश्वकी भाषा का कोई मानक स्वरूप स्थिर नहीं हुआ था, उस समय मनुष्य संकेत शैली में ही वैचारिक आदान–प्रदान किया करता था।

रणन सिध्दांत: भाषावैज्ञानिकों ने रणन सिध्दांत की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया कि प्रत्येक वस्तु के भीतर अव्यक्त ध्वनियाँ रहती है। प्लुटो व मैक्समुलर ने इस सिध्दांत को आधार बनाकर भाषा के जन्म का सिध्दांत सिध्द किया था। उदाहरण के लिए किसी भारी वस्तु से किसी दूसरी वस्तु पर दकराव किया जाय तो कुछ ध्वनियाँ निकलती है। लकड़ी, पत्थर, ईंट और अलग–अलग धातुएँ। इन सब से अलग–अलग ध्वनियाँ छिपी होती है और बिना देखे भी मनुष्य आसानी से जान सकता है कि किस वस्तु या किस धातु की कौन सी ध्वनि है, इससे यह स्पष्ट होता है कि संसार में ध्वनि की उत्पत्ति हुई । फिर धीरे–धीरे उन्हीं ध्वनियों का अनुसरण करते हुये मनुष्य ने शब्दों का आविष्कार किया।

इंगित या अनुकरण सिध्दांत: भाषाविज्ञानिकों का एक विशेष दल अपने पय़ोगों के आधार पर यह मानता है कि इंगित या अनुकरण से भाषा उत्पन्न हुई। इंगित को संकेत सिध्दांत के साथ जोड़ा जा सकता है लेकिन भाषाविज्ञानिक के मत में पाषाण काल का मानव, पशु–पक्षियों के अनुकरण से इंगित से सीखने की आकाक्षां रखता था। पशु जल के स्रोत में मुँह

लगाकर पानी पीते थे। अपनी प्यास बुझाने हेतु आदि मानव ने उसी क्रिया का अनुकरण किया और उसने दोनों होठों के जुड़ने और खुलने की ध्वनि से पानी शब्द पाया। इसी प्रकार अनुकरण से अनेक शब्द प्राप्त हुए । लेकिन अनुकरण या दूसरे पर निर्भर रहने की प्रवृति बहुत दिनों तक नहीं चली और धीरे–धीरे मनुष्य ने अपनी बुध्दि से नए शब्दों का आविष्कार किया ।

यही कारण है कि भाषाविज्ञानिकों का आज का विश्लेषण यह निष्पति देता है कि भाषा की उत्पत्ति के लिये सभी सिध्दांतों को मिलते हुये एक समन्वय सिध्दांत की स्थापना होनी चहिए । यह सच है कि कुछ शब्द दैविक व अलौकिक कारणों से उत्पन्न हुए । कुछ शब्दों के लिये संकेत की शैली पयोजन बनी। कहीं भाषा का व्यापक स्वरूप ध्वनि से जुड़कर और भी व्यापक हुआ। कहीं अनुकरण की क्रिया का मदत लेकर भाषा की यात्रा आगे बढ़ी। कहीं मनोवेगों ने साथ दिया और सबसे अधिक विचारों की परिपक्वता को संप्रेषित करने के लिये मनुष्य की बौध्दिकता ने जीवन की प्रयोगशाला में नये तथा सार्थक शब्दों का निर्माण किया ।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२**

– **नीचे के वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए ।**
 १. भाषा केवल क्रियागत् तथ्यों की जानकारी देती है।
 २. भाषा मन के भावों , विचारों के आदान– प्रदान का साधन है।
 ३. प्लेटो के अनुसार विचार जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकटहोते है , उसे ही भाषा कहते हैं।
 ४. भाषा केवल उच्चरित ध्वनि है।
 ५. "मनुष्य द्वारा उच्चरित सार्थक ध्वनि के भाषा कहते हैं।
 ६. संकेत सिध्दांत का मानना है कि मनुष्य की पराचेतना किसी अलौकिक सूत्र से बंधी हुई है।

अब तक आप भाषा के अर्थ और भाषा की परिभाषा के बारे में स्पष्ट जानकारी पाचुके हैं। आगे भाषा की प्रकृति के बारे में जानकारी पाने की कोशिश करेंगे।

१.१.३.३: भाषा की प्रकृति:

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक जीव दूसरे जीव से अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करते हैं और दूसरे के विचार, भाव आदि कॊ ग्रहण करते है। लेकिन भाषा के सहारे अपने भावो, विचारों और अनुभूतियों को प्रकट करने के लिए ध्वनि संकेतों और भाषिक प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है। इसे भाषा प्रकृति कहते हैं। भाषा की प्रकृति इस प्रकार हैं।

– **भाषा वाक्– प्रधान समष्टि है :**'भाषा'शब्द   संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना। परन्तु यह भाषा का व्यापक अर्थ है। वस्तुतः भाषा मनुष्य के ध्वनि अवयवों से निःसृत ध्वनि समूह है। इसके साथ साथ ये ध्वनियाँ सार्थक भी होनी चाहिये, जिससे इनका विश्लेषण और अध्ययन किया जा सके। डा. भोलानाथ तिवारी ने भाषा की परिभाषा देते हुए लिखा है कि,"भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत सार्थक ध्वनि समष्टि है। जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जा सके।"

– **भाषा एक व्यवस्था है ।:** किसी भी भाषा के संबंध में विचार करने पर हमें मालूम पड़ता है कि भाषा में एक व्यवस्था होती है, एक संघटन होता है, उसके अपने कुछ नियम हॊता है। उदाहरणतः अंग्रेजी और हिंदी की वाक्य व्यवस्था को देखिए–
 १.राम आम खाता है।
 २.ढग ज्ळ्ल ग प्फ्ळ
 हिंदी के वाक्य में शब्दों का क्रम , कर्ता, कर्म और क्रिया है. जबकि अंग्रेजी भाषा में शब्दों का क्रम बदल गया है। वहां कर्ता के बाद पहले क्रिया का प्रयोग हो रहा है और बाद में कर्म का।

– **भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है। :** हमें यह स्पष्ट होगया है कि भाषा में वाक्य शब्दों से बनते हैं। यह शब्द ध्वनि समूह है, जिसके उच्चारण करने पर शब्द चित्र आखों के सामने उपस्थित हॊता है। उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि भाषा एक व्यवस्था है और उसके अंतर्गत ध्वनि, शब्द और वाक्य रचना संबंधी उपव्यवस्थाएँ हैं । किसी भी भाषा की व्यवस्था को समझने के लिए तीनों को समझना अवश्यक है। अतः शब्द वह ध्वन्यात्मक प्रतीक है जिससे उस भाषा कोबोलने वाले अधिकांश लोग समझते हैं।

- **भाषा पैतृक संपत्ति है:** भाषा पैतृक संपत्ति है। पिता की भाषा पुत्र को पैतृक संपत्ति की भांति ही प्राप्त होती है किंतु, ऐसी बात नहीं है कि यदि किसी भारतीय बच्चे को १–२ वर्ष की अवस्था से अन्य देश में पाला जाए तो वह हिंदी या हिंदूस्थानी आदि भाषा न समझ सकेगा और न ही बोल सकेगा। उस देश की ही भाषा उसकी मातृभाषा या अपनी भाषा होगी। यदी पैतृक भाषा संपत्ति होती तो भारतीय बालक भारत से बाहर कहीं भी बिना प्रयास के हिंदी भाषा समझ और बोल लेता है ।

- **भाषा अर्जित संपत्ति है।:** मानव अपने चारों ओर के समाज और वातावरण से भाषा सीखता है। भारत में जन्मेबालक इंग्लैंड में रहकर अंग्रेजी से बाते करता है , क्यों कि वह अंग्रेजी के वातावरण में रहता है। अतः स्पष्ट है कि भाषा आसपास के लोगों से अर्जित की जाती है । इसलिए यह अर्जित संपत्ति होती है।

- **भाषा सामाजिक वस्तु है:** भाषा पूर्णतः आदि से अंत तक समाज से संबंधित है। उसका विकास समाज में ही होता है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति भाषा का अर्जन कहाँ से करता है? इसका एक मात्र उत्तर है– समाज से ही व्यक्ति भाषा सीखता है । इसलिए समाज एक सामाजिक संस्था है ।

- **भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है:** भाषा को हम अनुकरण द्वारा सीखते हैं। शिशु अपने आस पास के जो ध्वनियों को सुनकर ग्रहण करते हैऔर धीरे–धीरे ऐसे स्वयंसीखने का प्रयास करता है। अरस्तु के शब्दों में अनुकरण मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है।

- **भाषा परिवर्तनाशील है:** भाषा का दो रूप होता है मैखिक और लिखित जो भाषा के दो आधार हाते है। शारीरिक और मानसिक परिस्थीति सदैव ठीक वैसी ही नहीं रहती जैसी कि उसका अनुसरण करते करते और बाहरी प्रभाव से भी परिवर्तन होता है अतः भाषा परिवर्तित होती रहती है।

- **प्रत्येक भाषा की एक अपनी अलग संरचना होती है:** दो भाषाओं का स्वरूप या ढांचा एक सा नहीं हो सकता है। उसमें ध्वनि, शब्द, रूप वाक्य या अर्थ आदि किसी भी एक स्तर पर अंतर व्यवस्था होता है।प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। उच्चरित ध्वनियों के लिए जो संकेत निश्चित किए जाते हैं उन्हें लिपि कहते हैं। लिपि भाषा का संकेत है। जैसे हिंदीकी लिपि देवनागरी है वैसे ही अंग्रेजी का रोमन, उर्दू का फारसी है । लिपि भाषा की सुरक्षा प्रदान करती है। अर्थात् यह भाषा का संरक्षण करती है।

- **अपकी प्रगति की जाँच–३**

प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

१. भाष'धातु का अर्थ क्या है?
२. वाक्य किससे बनते है ?
३. भाषा का विकास कहाँहोता है ?
४. भाषा के अर्जन किस के द्वारा होता है?
५. भाषाके दोरूप कौन से हैं?

अब तक आप भाषा का अर्थ और भाषा की परिभाषा के साथ भाषा की प्रकृति के बारे में जानकारी पा चुके हैं।

१.१.३.४: भाषा का महत्व :

किसी भी व्यक्ति के जीवन में भाषा बहुत महत्वपूर्ण होता है। भाषा का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत एवं व्यापक है। मनुष्य ने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जो भी विकास एवं प्रगति की है उसका श्रेय भाषा को ही जाता है। इस दृष्टि से मानव जीवन में भाषा का महत्व सबसे अधिक है। भाषा के महत्व इस प्रकार है।

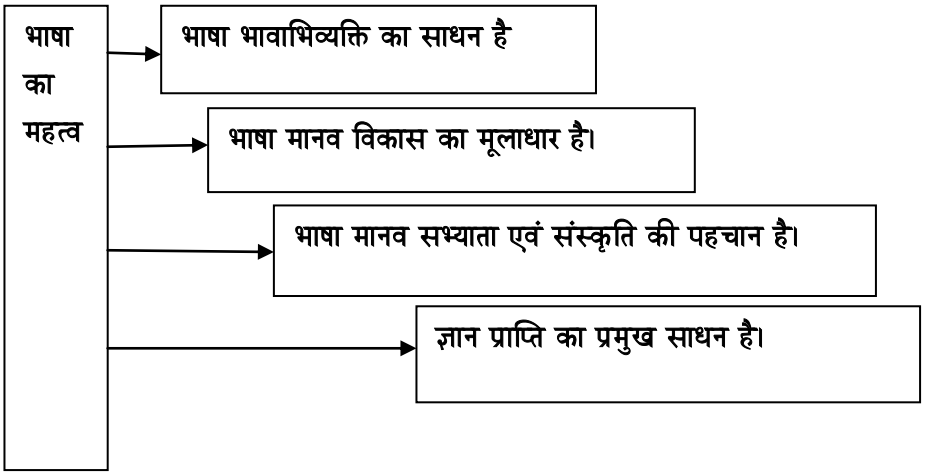

१. **भाषा भावाभिव्यक्ति का साधन है।** भाषा विचार विनिमय का एक साधन है। मनोभावों की अभिव्यक्ति के प्रयत्न से भाषा का जन्म हुआ, जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों को दूसरों से कहसकता है और सुन सकता है। इसी भाषा के माध्यम से भाषा मानव जीवन में एक महत्व पूर्ण साधन माना जाता है।

२. **भाषा मानव विकास का मूलाधार है।**
भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है । वैसे तो संसार में प्राणियों के पास भी अपनी ट्अपनी 'भाषाएँ' हैं, परंतु विचार प्रधान भाषा मनुष्य के पास ही है। इसी भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने ज्ञान ट्विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति कर सकता है।

३. **भाषा मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है।**
किसी जाति, समाज व राष्ट्र की सभ्याता एवं संस्कूति का आकलन उसके साहित्य से किया जाता है। भाषा के विकास से संस्कृति का विकास हो जाता है। अतः भाषा की कहानी ही मानव सभ्यता एवं संस्कृति की कहानी है।

४. **ज्ञानप्राप्ति का प्रमुख साधन है।**
भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को सामाजिक विरासत के रूप में अब तक का समस्त संक्षिप्त ज्ञान भावी पीढ़ी को सौंपती है। इससे समाज से निरंतर ज्ञान का पारंपरिक प्रसार भाषा के माध्यम से चलता रहेगा।

५. **ज्ञान का संरक्षण:**
भाषा ज्ञानसंरक्षण का प्रमुख साधन है। लेखन के ज़रिए भाषा मनुष्य के ज्ञान तथा अनुभवों को चिरकाल तक रख सकती है। भाषा के माध्यम से पुस्तकों के रूप में ज्ञान का प्रकाश हमें प्राप्त होता है।

६. मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के लिए भाषा सहायता करती है।
७. भाषा सामाजिक एकता स्थापित करती है एक भाषीयलोगोंको एक ही माला में पिरोए रकने का काम भाषा ही कर सकती है ।
८. भाषा राष्ट्रीय एकता का निर्माण करती है।

९. अपकी प्रगति की जाँच–४

– **खाली जगह भरिए:**

१. भाषा ––––––और ––––– का साधन है ।
२. भाषा –––––––––– का मूलाधार है।
३. भाषा ––––––––––– की पहचान है।
४. भाषा –––––––– का निर्माण करती है।

१.१.४: सारांश

इस संसार में भाषा एक माध्यम का साधन है। इसके द्वारा अपनीट्टअपनी भावनावों को व्यक्त कर सकते हैं। लेकिन मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक रचना की विशेषता के कारण भाषा एक मानवीय कालाकृति है। इसके द्वारा वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर रहा है। इससे अपने ज्ञान का विकास भी कर रहा है। भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है। यह एक अनुकरणात्मक प्रक्रिया है। समाज के निरंतर परिवर्तनों से भाषा में भी बदलाव आता है। भाषा ही एक समाज का व्यवहार, परंपराओं और मान्यताओं का आधार है। भाषा से ही संस्कृति का विकास होता है। भाषा का कोई अंतिम रूप नहीं होता । इसलिए भाषा शिक्षण में भाषा ज्ञान को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने की अवश्यकता है।

१.१.६: आपकी प्रगति के जाँच के उत्तर:

१. १.व्यावहार का साधन २. प्रकृति की ३. संस्कृत ४. बोलना
२. १.गलत २. सही ३. सही ४.गलत ५. सही ६. गलत
३: १. बोलना२. सार्थक शब्दों का समूह ३. समाज ४. अनुकरण ५.लिखित ट्टमौखिक
४: १. भावभिव्यक्ति और ज्ञान २. मानव विकास ३. मानव सभ्यता एवं संस्कृति ४. राष्ट्रिय एकता.

१.१.७: इकाई समाप्ति के बाद अभ्यास।

प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. भाषा का अर्थ और परिभाषा को अपने वाक्य में स्पष्ट कीजिए ?
२. भाषा की उत्पत्ति के बारे में सक्षिप्त विवरण लिखों?
३. भाषाकी प्रकृति के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजिए?
४. भाषा के महत्व के बारे में लिखिए?

१.१.८: संदर्भ पुस्तकें

१.भाई योगेंद्र जीत (२०१३). हिन्दी भाषा शिक्षण, श्री विनोद पुस्तक मंदीर, आगरा.

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई २: त्रिभाषासूत्र और हिन्दी।

इकाई की संरचना

१.२.१: सीखने के उदेश्य
१.२.२: प्रस्तावना
१.२.३ : सीखने के अंश और सीखने की गतिविधियाँ ।
१.२.३.१: मातृभाषा के रूप में हिन्दी ।
आपकी प्रगति की जाँच –१
१.२.३.२: क्षेत्रीय भाषा के रूप में हिन्दी ।
आपकी प्रगति की जाँच –२
१.२.३.३: द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी ।
आपकी प्रगति की जाँच –३
१.२.३.४: विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी ।
आपकी प्रगति की जाँच –४
१.२.४: सारांश
१.२.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
१.२.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास
१.२.७: संदर्भ पुस्तकें

१.२.१: सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र इन अंशों के योग्य होंगे।

१. त्रिभाषा–सूत्र का अर्थ समझाएँगे ।

२. मातृभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को समर्थन करेंगे ।

३. द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को समझाएँगे ।

४. विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को समझाएँगे ।

१.२.२: प्रस्तावना

भारत एक बहुभाषीय देश है। भारत की इस बहुभाषियता को ध्यान में रखकर देश के राज्यकर्ताओं ने संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी भाषा को स्वीकृति प्रदान कीथी। हिंदी के प्रसार तथा शिक्षण के महत्व को राष्ट्रनेताओं तथा शिक्षणतजज ने स्वीकार किया था। विभिन्न शिक्षा आयोगों ने हिंदी के शिक्षण पर पर्याप्त बल दिया था। संपर्क भाषा के साथ–साथ राजभाषा होने के कारण हिंदी के प्रचार–प्रसार विभिन्न स्तरों पर होना आवश्यक है ।

अतः हिंदी सहित सभीभाषाओं की भाषिक , साहित्यिक और सांस्कृतिक समृध्दि के लिए आवश्यक है कि, अहिंदी भाषी बालक हिंदी और हिंदी भाषी बालक कोई अन्य भारतीय भाषा अवश्य सीखें। इसलिए भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र कोअपनाया गया।

१.२.३ :सीखने के अंश और सीखने की गतिविधियाँ ।

१.२.३.१: त्रिभाषा–सूत्र का अर्थ :

स्वतंत्रता पाने के बाद भारत जैसे बहु भाषी देश के सामने भाषा शिक्षा के संदर्भ में सरकार ने १४ भाषाओं को मान्यता दी है उनमें से हमें कितने भाषाओं को सीखनी चाहिए ? इस समस्या के लिए त्रिभाषा सूत्र का प्रवर्तन हुआ। । इसी परिस्थिति में १९५६ में " केंद्रीय शिक्षा सलाहकार मण्डल" त्रिभाषा सूत्र की रचना की । इस मण्डल का दावा था कि त्रिभाषा सूत्र भाषा समस्या का सर्वोत्तम हल है । सन १९५७ में भारत सरकार ने मण्डल व्दारा निर्मित त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार कर लिया । स्वीकृत त्रिभाषा सूत्र के अनुसार विद्यालय के स्तर पर प्रत्थेक छात्र के लिए त्रिभाषा सूत्र अनिवार्य माना गया । इसके प्रकार, त्रिभाषा सूत्र में तीन भाषाएँ सीखना पडता है।

१. मात्रुभाषा या क्षेत्रीय भाषा
२. अंग्रेजी
३. हिन्दी (अहिन्दी भाषी क्षेत्र केलिए)

त्रिभाषा सूत्र वस्तुतः माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में सामने आता है । इसके नियमों के विश्लेषण इस प्रकार है । इस सूत्र के अनुसार किसी भाषा की अनिवार्यता का यहप्रश्न नहीं उठता कि छात्र चाहे जितनी भाषाएँ पढ़ सकते हैं।

१. शिक्षा का माध्यम मात्रुभाषा तो होना ही है, अतः मातृभाषा का अनीवार्य अध्ययन भी अभीष्ट है ।
२. स्कूल में जो पहली भाषा पढ़ाई जानेवाली भाषा मात्रभाषा हो या क्षेत्रिय भाषा।
३. दूसरी भाषा: हिन्दी भाषी राज्यों में दूसरी भाषा कोई भी अन्य आधुनिक भाषा हो या अंग्रेजी । गैर हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी या अंग्रेजी होगी।
४. तृतीय भाषा: हिन्दी भाषी राज्यों में तीसरी या तृतीय भाषा अंग्रेजी होगी या एक आधुनिक भारतीय भाषा, जो दूसरी राज्य के रूप में नहीं पढ़ी जा रही हो। गैर हिन्दी भाषी राज्यों तीसरी भाषा अंग्रेजी होगी या एक आधुनिक भारतीय भाषा जो दूसरी भाषा के रूप में नहीं पढ़ी जा रही हो ।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२.१**

– **नीचे के वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए ।**

१. मात्रभाषा और क्षेत्रिय भाषा एक ही है।
२. तृतीय भाषा का उध्देश सरल व्यवहारिक भाषा वृद्धि कराना है।
३. त्रिभाषा सूत्र का राष्ट्रिय शिक्षा नीति का एक हिस्सा है।
४. त्रिभाषा सूत्र में तीन भाषाओं को पढ़ना ज़रूरी है।

१.२.३.२: मातृभाषा के रूप में हिन्दी :

जन्म लेने के बाद मानव जो प्रथम भाषा सीखता है उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा, किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। मात्रभाषा का अर्थ है जो माँ की बोली हो, इसका दूसरा अर्थ है 'मूल भाषा'। मनुष्य जन्म लेने के बाद जो प्रथम भाषा सीखता है उसे उसकी मातृभाषा कहते है। मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। भाषा का पहला ज्ञान आसपास सुनाई देनेवाली आवाजों से प्राप्त होता है और भारत के उत्तर भागों में अधिकतर घरों में बोलचाल की भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी एक सरल भाषा है। हिन्दी हिन्दुस्थानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है। उत्तर भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी हौ। इसका विकास क्रम इस प्रकार है।

संस्कृत → पाली → पाकृत → अपभ्रंश → हिन्दी

भारत एक बहुसंस्कृतिक देश है। इसलिए इसकी भाषाएँ अलग–अलग है। अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग भाषाएँ प्रधान है, उसे मातृभाषा कहलाते है, जो भिन्न ट्रभिन्न राज्यों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होती है। त्रिभाषा सूत्र के अनुसार मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को अनिवार्यतः दस वर्ष तक (कषा १ से १० तक) अध्ययन करना आवश्यक मानागया है। हिन्दी को उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़ तथा दिल्ली में मातृभाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन होता है।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२.२**

❖ **एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।**

१. मूल भाषा किसे कहते है ?

२. हिंदी लिपि को क्या कहते है?

१.२.३.३: क्षेत्रीय भाषा के रूप में हिंदी :

भाषा व्यवहार अथवा भाषा प्रकार्य की दृष्टि से भाषा के अनेक भेद होते हैं। उसमें क्षेत्रीत भाषा भी एक हैं । जब भिन्न भाषाओं के बोलने वाले एक ही क्षेत्र में निवास करने लगते हैं तो भाषाओंके संसर्ग से विशिष्ट भाषा का रूप विकसित हो जाते हैं । उसे क्षेत्रीय भाषा कहते है तथाएक प्रदेश अथवा एक क्षेत्र में बोले जानेवाली भाषा क्षेत्रीय भाषा कहलाती हैं । सामान्य तौर पर जिस भाषा का व्यवहार में उपयोग किया जाता है । जैसे, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार की क्षेत्रीय भाषा हिन्दी है

१.२.३.४: द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी :

भारतीय संविधान ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया है । हिंदी भाषी प्रदेशों में हिन्दी मातृभाषा एवं राजभाषा दोनों ही है। किन्तु अहिन्दी भाषी प्रदेशों में केवल राजभाषा है, उनकी मातृभाषा पृथक है। अतः इन प्रदेशों में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाता है।

द्वितीय भाषा मातृभाषा से भिन्न होता है। अहिन्दी भाषीय प्रान्तों में हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, एक संपर्क स्थापन के लिए एवं अखिल भारतीय स्तर पर व्यवहारिक सम्पर्क साधन के लिए सीखी जाती है।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२.३**

❖ **रिक्त स्थान को सही शब्द से भरिए ।**

१. अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिंदी केवल ––––––––भाषा है।

२. हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में ––––––––– प्रदशों में पढ़ाई जाती है।

३. द्वितीय भाषा का उद्धेश है ––––––––।

१.२.३.५: विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी

जिस भाषा के माध्यम से विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में कर्य ट्रकलाप, आदान प्रदान चलता है, उसको विदेशी भाषा कहलाते है। विदेश में भी हिंदी को एक महत्व स्थान मिलि है। विश्व में लगभग १०० विश्वविध्यालयों में हिंदी केलिए अध्ययन केंद्र की व्यवस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी प्रचार प्रसार है। विश्व के प्रत्येक प्रमुख देश में हमारे दूतावस है; जिसने राजनीतिक संदर्भ के अतिरिक्त अपने भारत की सामाजिक संकृति और भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रदर्शन करना चहिए ।

१. भारतीय संकृति के अनुराग हो,
२. भारतीय जन जीवन को समझने केलिए,
३. अन्य देशों में राजकिय / सरकारी उपयोग केलिए,
४. व्यवहारिक भाषा के रूप में,
५. भारतीय आचार–विचार जानने केलिए हिंदी भाषा को विदेशों में भी महत्व दीजारही है।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२.५**

❖ **प्रश्नों का उत्तर दी जिए।**

१. विदेश में हिंदी भाषा का उद्धेश क्या है?

२. भारतीय जन जिवन को समझने के लिए क्या अवस्यकता है?

१.२.४: सारांश:

भारत एक बहुभाषीय देश है। इस देश में हिंदी सहित सभीभाषाओं की भाषिक और साहित्थिक संस्कृतिक समृध्दि के लिए आवश्यक यह थी । अहिन्दी भाषी बालक हिन्दी और हिन्दी भाषी बालक कोई अन्य भारतीय भाषा अवश्य सीखें । इसलीए भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र अपनाया गया। इसमें हिंदी को मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई कर सकते हो। इससे अहिंदी भाषीय राज्यों में भी हिंदी का विकास हो सके।

१.२.५.: आपकी प्रगति के जाँच के उत्तर:

२.१ : १. गलत. २. सही. ३. सही. ४. सही. ५. गलत

२.२: १. मातृभाषा २. देवनागरी

२.३: १: राजभाषा २: अहिन्दी भाषी प्रदेशों ३: संपर्क स्थापन

२.४ :१. राजभाषा २.अहिन्दी भाषिय प्रान्तों ३.व्यवहारिक साधन

१.२.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास ।

१. त्रिभाषा सूत्र का अर्थ क्या है?

२. द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी के बारे में कुच वाक्य लिखिए ।

३.क्षेत्रीय भाषा और मातृभाषा में क्या अंतर है?

४.विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व के बारे में लिखिए?

१.२.७: संदर्भ पुस्तकें

१. हिन्दी अध्यापन: पंडीत ब. बि.:नूतन प्रकाशन, पुने: (द्वि.सु.आ.२००४) पृष्ठ–२६).

२. पठाण यु. जी., माहाविद्यालय स्तर के माराठी भाषी छात्रों की हिन्दी की लिखावट मेंहोनेवाली त्रुटियों का वोश्लेषण एवं सुधार की दिशाएँ ।

३. अनन्त चौधरी. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ।

४. जयनारयण कौशिक, हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।

५. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर १९७९ ।

६. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण , लायल बुक डिपो, मेरठ ।

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई ३: हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

इकाई की संरचना

१.३.१: सीखने के उद्देश्य

१.३.२: प्रस्तावना

१.३.३: सीखने के अंश और सीखने की गतिविधियाँ ।

१.३.३.१: मात्र भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य।

आपकी प्रगति की जाँच –१

१.३.३.२: द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य:

आपकी प्रगति की जाँच –२

१.३.४: सारांश

१.३.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.३.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास

१.३.७: संदर्भ पुस्तकें

१.३.१: हिन्दी सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र ,

- मात्रभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कास्पष्ट जानकारी प्रकट करेंगे ।
- द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को समझ सकेंगे।

१.३.२: प्रस्तावना:

'हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य' यह इकाई प्रथम खंड की तीसरी इकाई है। इस इकाई से छात्रा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों के भारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे। मात्रभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य और द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों केभारे में ज्ञानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

भारत एक बहुभाषीय देश होने के नाते तथा हिन्दी के प्रसार तथा शिक्षण का महत्व को ध्यान में रकते हुए और भारत देश में हिन्दी और हिन्दी भाषीबोलनेवाले कोई अन्य भारतीय भाषा अवश्य सीखें। इसलीए भारत कीराष्ट्रिय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र अपनाया गया था। इसमें प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा के शिक्षण उद्देश्य को जिस के प्रकार स्पष्ट करते हैं । वह इस प्रकार हैं।

१.३.३: हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य:

उद्देश्य एक पूर्वदर्शित लक्ष्य है जोकिसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। व्यक्ति का लक्ष्य स्पष्ट करने केलिए उद्देश्य का स्पष्ट होना जरूरी है। इसी प्रकार मानव जीवन में सभी कार्यविधा में एक उद्देश्य होना चाहिए। इससे उसका लक्ष्य पूरा होता है। उसी प्रकार हिन्दी भाषा शिक्षण का भी उद्देश्य है।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार हिन्दी के विविध रूप के अलग–अलग उद्देश्य होते है। मात्रभाषा के रूप में हिन्दी का उद्देश्य और द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का उद्देश्य भिन्न होता है। इसका सक्षिप्त ज्ञानकारी इस प्रकार है।

१.३.३.१: मात्रभाषा के रूप में हिंदीशिक्षण का उद्देश्य।

हिन्दी शिक्षण में प्रथमभाषा यानी मात्रभाषा का प्रधान स्थान प्राप्त किया है। प्रथमभाषा का माध्यम से पढ़ाई जो कराई जाती है, वह प्रथमभाषा या मात्रभाषा कहलाती है। किसी भी विषय की शिक्षा का निश्चित उद्देश्य होता है । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्राशिक्षण परिषद ने प्रथमभाषा हिन्दी का जो पाठक्रम (एन,सि,ई,आर,टि) ने तैय्यार किया है, उसमें माध्यमिक और उच्च माध्यमुक स्तर पर प्रथमभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को विस्तार से संकेत किया गया है। मात्रभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का सामन्य उद्देश्य इस प्रकार है।

जीवन का समस्त क्रिया–कलापों का संचार की भाषा है मात्रभाषा । अतः असके शिक्षण का उद्देश्य भी व्यापक है। भाषा शिक्षण के अंतर्गत भाषा का चार कौशल होते है। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। इन चारों कों सिखाना ही मात्रभाषा का मुख्य अथवा मूल उद्देश्य है। इसके अलावा अन्य उद्धेशों कों भी जानना ज़रूरी है। वह इस प्रकार है।

६. **कौशल शिक्षा के उद्देश्य:**

–सुनकर अर्थग्रहण करनेकी योग्यता का विकास

–पढ़कर अर्थग्रहण करनेकी सामर्थ्य का विकास

–मौखिक अभिव्यक्ति ; अपने भावों एवं विचारों कों व्यक्त करनकी योग्यता का विकास;

–लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास.

७. ज्ञानात्मक उद्देश्य:

- भाषिक तत्वों केज्ञान का विकास
- विविध साहित्यिक विधाओं केज्ञान का विकास
- विषय –वस्तु का ज्ञान
- हिन्दी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा का ज्ञान
- भाषिक तत्वों काज्ञान, ध्वनि, शब्द, शब्दभण्डार, वाक्य रचना के संक्षिप्त ज्ञानकारी।

८. सोन्दर्यबोधात्मक उद्देश्य:

–कलात्मक साहित्य, कहानी, एकांकी, उपन्यास, नाटक तया निबंध साहित्यों के साथ साहित्य का सौन्दर्य का बोध।

–साहित्यिक सौन्दर्य तत्वों–भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य तथा नाद सौन्दर्य की पहचान।

९. सृजनात्मक उद्देश्य:

- विषय तथा उसके भावों कों अपने विचारों के साथ अभिव्यक्त करने का सामर्थ का विकास.
- ग्रहण किए विचारों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करना।
- अपनी कल्पना से नवीन स्वरूप प्रदान कर अभिव्यक्त करने का सामर्त्य का विकास करना।

५. अभिरूचात्मक तथा अभिवृत्यात्मक उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य में रुचि एवं सदवृत्तियों का विकास।
- अपना स्वयं का पुस्तकालय बनाकर पढ़ने का अभ्यास करना।
- मानव मूल्यों का पढ़ना और उसको अपने जीवन में अपनाना।
- पर्यावरण के प्रति संवेगनशील होना ।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–३.१**

- **इस वाक्यों को पूरा करें।**

१. लक्ष्य पूरा हाने केलिऐ ––––– होता चाहिए ।

२. सुनकर अर्थग्रहण करनेकी योग्यता का विकास –––––– से होता है ।

३. भाषिक तत्वों केज्ञानका विकास –––––– से होनाहै ।

४. मानव मूल्यों की पढ़ना और उसको अपने जीवन में अपनाना –––––– से मिलता है ।

१.३.३.२: द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य:

शिक्षा में दूसरी भाषा के माध्यम से पढ़ाई जो कराई जाती है वह द्वितीय भाषा कहलाती है। किसी भी विषय की शिक्षाण का निश्चित उद्देश्य तय होता है । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्राशिक्षण परिषद ने द्वितीय भाषा हिन्दी (एन,सि,ई, आर,टि) का जो पाठक्रम तैय्यार किया है, उसमें माध्यमिक और उच्च माध्यमुक स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का विस्तार से विवरण किया गया है। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का सामन्य उद्देश्य इस प्रकार है।

१. छात्रों कोहिन्दी का शुध्द तथा स्पष्ट उच्चारण सीखाना।
२. छात्रों को दैनंदिन जीवन से संबंधित सरल तथा आसान विषयों पर हिन्दी में संभाषण करने की योग्यता विकसित कराना।
३. छात्रों को हिन्दी का आसान गध्य परिच्छेद, कथा, कवितएँ एवं संवाद की सही अर्थ समझाकर, पढ़ने का कौशल्य विकसित कराना।
४. उनमें सामाजिक जीवन से संबंधित सरल हिन्दी में पत्र लिखने की योग्यता विकसित कराना।
५. व्यवहातिक या कार्यात्मक व्याकरण समझ लेने में छात्रों की सहायता करना।
६. छात्रों में सिनेमा, दूरदर्शन , रेडियो आदि की हिन्दी कार्यक्रमों कोदेख सुनकर मनोरंजन एवं ज्ञानार्जन करने की क्षमता बढ़ाना है।
७. छात्रों में हिन्दी का बालसाहित्य या बालोायोगी मासिक पत्रिकाएँ तथा आकलन के साथ पढ़ने केलिए सक्षम बनाना।
८. छात्रों को राष्ट्रीय जीवन में हिन्दी का महत्व से परिचित करना।
९. अपने घरेल विषयों में संबंधित सलर हिन्दी में पत्र– लेखन की योग्यता का विकास कराना।
१०. देखे हुए प्रसंगों का उचित शब्दों में वर्णन करना, कथन करना आदि क्षमताओं को विखसित करना।
११. छात्रों को भारत की विविधता से भरी संकृति का परिचय करना।
१२. हिन्दी अध्ययन के व्दारा छात्रों में भावनात्मक और राष्ट्रीय एकात्मता का निर्माण करना।
१३. छात्रों की हिन्दी शब्दभंडार को बढ़ाने के लिए उन्हे प्रेरित करना।[१]

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–३.२**

❖ नीचे के वाक्यों में सही या गलत को पहचानिए ।

१. द्वितीय भाषा का उद्देश्य भाषा का शुध्द तथा स्पष्ट ज्ञानाकारी देना।

२. हिन्दी शब्दभंडार को बढ़ाने के लिए उन्हे प्रेरित करना ।

३. छात्रों को राष्ट्रीय जीवन में भाषा का महत्व से परिचित करना ।

४. छात्रों में हिन्दी का बालसाहित्य या बालोपयोगी मासिक पत्रिकाएँ आकलन के साथ पढ़ने केलिए सक्षम बनाना।

५. व्यवहातिक या कार्यात्मक व्याकरण समझ लेने में छात्रों को मदद करना।

- **प्रथम भाषा और व्दितीय भाषाशिक्षण उद्देश्यों में अन्तरः**

प्रथम भाषा एवं व्दितीय भाषाशिक्षण उद्देश्यों में अन्तर होना स्वभाविक है।

• प्रथम भाषा मातृभाषा कहलाती है। • मातृभाषा बालक का मानसिक एवं भावनात्मक रचना का आधार एवं साधन है। अतः मात्रुभाषा में हम साहित्यिक सौन्दर्य का बोध , नैतिक मूल्यों का उत्कर्ष एवं व्यक्तित्व विकास करते है। • मातृभाषा को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए सिखाया जाता है। • मातृभाषा एक स्वाभाविक सीख है।	• अहिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। • व्दितीय भाषा का उद्देश्य मूलतः कौशल्यात्मक, ज्ञानात्मक और अभिरूच्यात्मक उद्देश्यों तक ही सीमित रहते है। • अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी अपने जीवन की पूर्ति के लिए नही. बल्कि देश के अन्य अहिन्दी भाषी राज्यों से सम्पर्क स्थापक केलिए एवं अखिल भारतीय स्तर पर व्यवहारिक सम्पर्क साधन केलिए सीखी जाती है। • व्दितीय भाषा में कौशल पर विशेष बल देने की अवश्यकता है। व्दितीय भाषाशिक्षण में "अर्थ बोध" महत्वपूर्ण उद्देश्य है। • व्दितीय भाषा स्वाभाविक भाषा नहीं है बल्की उसे सीखाना पढ़ता है।

१.३.४: सारांश:

हम 'हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य' इस पाठ क्रम में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों में हिन्दी मात्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा का उद्देश्य और द्वितीय भाषा के रूप हिन्दी भाषा का उद्देश्य से परिचय प्राप्त पाचुके है। मात्रभाषा का उद्देश्य व्दितीय भाषा के उद्देश्य से ज्यादा जिम्मेदारियाँ रकते है।

बच्चे मात्रभाषा को सीखकर ही द्वितीय भाषा को सीखते है। व्दितीय भाषा को सीखाना पढ़ता है। भारत देश में अहिन्दी भाषी बालक हिन्दी और हिन्दी भाषी बालक व्दितीय भाषा के रूप में हिन्दी की अवश्य ही सीखना पढ़ता है।

१.३.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर:

३.१: १.उद्देश्य २:कौशल शिक्षा ३:ज्ञानात्मक उद्देश्य: ४.अभिरूचात्मक तथा अभिवृत्यात्मक उद्देश्य

३.२: १: गलत २: सही ३: सही ४: सही ५: सही

१.३.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास।

प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. मात्र भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कोस्पष्ट कीजिए ?
२. द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को लिखिए?
३. प्रथम भाषा और व्दितीय भाषाशिक्षण के उद्देश्यों में अन्तर स्पष्ट कीजीए?

१.३.७: संदर्भ पुस्तकें

१. पठाण यु. जी., माहाविद्यालय स्तर के माराठी भाषी छात्रों की हिन्दी की लिखावट मेंहोनेवाली त्रुटियों का वोश्लेषण एवं सुधार की दिशाएँ ।
२. अनन्त चौधरी. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ।
३. जयनारयण कौशिक, हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।
४. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर 1979 ।
५. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण , लायल बुक डिपो, मेरठ ।

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई ४: हिन्दी भाषा का स्तान

इकाई की संरचना

१.३.१: सीखने के उद्देश्य

१.३.२: प्रस्तावना

१.३.३: सीखने के अंश और सीखने की गतिविधियाँ ।

१.४.१.३.१: संविधान की धारा(३४३–३५१–३५०);

आपकी प्रगति की जाँच –१

१.४.१.३.२: कोठारी शिक्षाण कमीशन (१९६४–६६),

आपकी प्रगति की जाँच –२

१.४.१.३.३: राट्रीय शिक्षाण नीति (१९८६,)

आपकी प्रगति की जाँच –३

१.४.१.३.४: राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा–(२००५)

आपकी प्रगति की जाँच –४

१.४.४: सारांश

१.४.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.४.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास

१.४.७: संदर्भ पुस्तकें

१.४.१.१: उद्देष्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थि इन्ह विषयों में समर्थ होंगे ।

- संविधान की धाराओ में हिन्दी का स्थान (343-351-350) स्पष्ट करेंगे ।
- कोठारी शिक्षा कमीशन में हिन्दी का स्थान (1964-66),
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिन्दी का स्थान (1986,) बताएँगे ।
- राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा–(2005) में हिंदी का स्थान बताएँगे ।

१.४.१.२: प्रस्तावना:

'हिन्दी भाषा का स्थान' इस पाठ क्रम प्रथम खंड के चौता इकाई है। इस में हम संविधान की धारा (३४३–३५१–३५०); कोठारी शिक्षाण कमीशन (१९६४–६६), राष्ट्रीय शिक्षाण नीति (१९८६,) और

राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा–(२००५) ; इन्ह योजनाओं में हिन्दी भाषा को किस प्रकार का स्थान मिला है उसके बारे में पढ़ाई करेंगे ।

१.४.१.३.१: संविधान की धाराओं मेंहिन्दी भाषा का स्तान(३४३–३५१–३५०);

भारत में संविधान की धार 26 जनवरी 1950को लागु किया गया था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 120 और 210 के अतिरिक्त अनुच्छेद 343 से351 तक के ग्यारह अनुच्छेदों में संघ और राज्यों के बीच प्रयुक्त होनेवाली भाषों के संबंध में अलग–अलग व्यवस्था की गयी है।

सांविधान के अनिच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अनुच्छेद 343(2) के अनुसार यह भी व्यवस्था कीगयी कि संविधान प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की कालाबाधि के लिए संघ के जन सब राजकीय पयोजनों केलिए अंग्रेजी भाषा प्रयुक्त की जाती रहेगी। जिनके लिए ऐसे प्रारंभ का ठीक पहले प्रयोग की जाती है।[२] यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि हिन्दी भाषा को प्रशासनिक कार्यो केलिए सभी प्रकार से सक्षम बनाया जा सकेगा।

अनिच्छेद 344 में यह कहा गया कि राष्ट्रपति इस संविधान का प्रारंभ में पांच वर्ष की समाप्ति पर तथा तत्पश्यात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर आदेश व्दारा एक आयोग गठित करेंगे।[३]जो संध के सरकारी काम–काज में से सब या किसी केलिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर रोक लगाने और संघ की सरकारी काम–काज केलिए हिन्दी भाषा का उत्तरोत्तर प्रयोग के बारे में राष्ट्रपति को सिफारिश करेगा।

अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए प्रावधन किया था जिस में कहागया था कि हिन्दी भाषा का प्रसार तथा वृद्दि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत का सामाजिक संस्कृति के सब तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सकें।

भारतीय संविधान के 344 अनुच्छेद के अनुसार 1955 में राजभाषा आयोग बनाया गया था, जिसने अपने रिपीर्ट सन १९५६ में पेंश की। । आयोग की शिफारिशों की जाँच करने केलिए ३ सितंबर १९५८ का एक संसदीय समिति का गठन किया गया था। इन दोनोंका राय यह थी कि सन १९६५ के बाद अंग्रेजी का पयोग चलते रहना चहिए। तद्नुसार सन १९६३ राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसमें राजभाषा के संबंध में संविधानिक व्यवस्थाएँ इस प्रकार हैं ।

१. **अधिनियम की धारा ३ के अनुसार–**

क) संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों केलिए जिनके लिए 26 जनवरी 1965 से तत्काल पूर्व अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा था और

ख) संसद में कार्य उत्पादन केलिए 26 जनवरी 1965 के बाद भी हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी का पयोग जारी रखा जा सकेगा।

२. केंद्र सरकार और हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनानेवाले किसी राज्य के बीच पत्रचार अंग्रेजी में होगा । इसी प्रकार हिन्दी भाषी राज्यों के सरकारें ऐसे राज्यों के सरकारों के साथ अंग्रेजी में पत्रचार करेगी और यदि वे ऐसे राज्यों को कोई पत्र हिन्दी में भेजती है तो साथ – साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद भी भेजेंगी।

३. केंद्र सरकार के कार्यालयों आदि के बीच पत्र –व्यवहार केलिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्रयीग किया जा सकता है।

४. अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने संबंधी व्यवस्था तब तक जारी रहेगी जब तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनानेवाले सभी राज्यों के विधान मंडल अंग्रेजी का प्रयोग खत्म करने केलिए आवश्यक संकल्प पारित न करे और इन संकल्पों पर विचार करने के बाद संभंद का प्रत्येक सदन इसी आशय का संकल्प पारित न करें इस प्रकार कहा ज सकता है कि संविधान के तहत्त इस प्रकार का प्रयोजनाओं के कारण आज भी हिन्दी भाषा की दर्जा सही रूप में नहीं मिल पाया है तथा अंग्रेजी राष्ट्रभाषा के रूप में कार्यरत है।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–४.१**

- **एक वाक्य में उत्तर लिखिए ।**

१. भारत में संविधान की धाराएँ कब लागु किये गये ?

२. भारतीय संविधान के कितने अनुच्छेदों में भाषों के बारे में उल्लेकहैं?

३. सांविधान के अनिच्छेद 343(1) किसके बारे में कहती है ?

४. किस अनुच्छेद में हिन्दी भाषा के विकास के बारे में कहा गया है ?

५. सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के अलावा कौन सी भाषा का प्रयोग किया जाता था ?

१.४.१.३.२: कोठारी शिक्षाण कमीशन मेंहिन्दी भाषा का स्थान(१९६४–६६): कोठारी आयोग की नियुक्ति जुलाई १९६४ ई. मेंडाक्टर डि. एस.कोठारी की अध्यक्षता में की गई थी। इस आयोग ने प्राथमिक शिक्षाण माध्यमिक शिक्षा और उच्च आर्थात विश्वविद्यालयी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इस में

हिन्दी भाषा का स्थान के बारे में चर्चा करेंगे।कोठारी आयोग ने केवल शिक्षण निती पर ध्यान दिया है बल्की भाषा पर भी अपना सलहा–सुझाव दिया है।

- स्कूल में जो पहली भाषा पढाई जाय वह मात्रभाषा हो या क्षेत्रिय भाषा।
- दूसरी भाषा: हिन्दी भाषी राज्यों में दूसरी भाषा कोई भी अन्य आधुनिक भाषा हो या अंग्रेजी । गैर हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी या अंग्रेजी होगी।
- नृतीय भाषा: हिन्दी भाषी राज्यों में तीसरी या तृतीय भाषा अंग्रेजी होगी या एक आधुनिक भारतीय भाषा जो दूसरी राज्य के रूप में नहीं पढ़ी जा रही हो। गैर हिन्दी भाषी राज्योंतिसरी भाषा अंग्रेजी होगी या एक आधुनिक भारतीय भाषा जो दूसरी भाषा के रूप में नहीं पढ़ी जा रही हो।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–४.२**

❖ नीचे के वाक्यों में सही या गलत को पहचानिए ।

1. कोठारी आयोग की नियुक्ति जुलाई 1964 ई. में हुई थी ।
2. डाक्टर राधाक्रिश्नन इस आयोग के अध्यक्ष थे ।
3. कोठारी आयोग में प्राथमिक शिक्षण, माध्यमिक शिक्षाण और उच्च आर्थात विश्वविद्यालयी शिक्षा के बारे में महत्व सुझाव है।
4. स्कूल में जो पहली भाषा पढाई जाय वह मात्रभाषा होनी चाहिए ।
5. हिन्दी भाषी राज्यों में दूसरी भाषा जर्मन होगी ।

1.4.1.3.3: राष्ट्रीय शिक्षण नीति में हिन्दी भाषा का स्थान(1986,):

मानव इतिहास का आदिकाल से शिक्षा के विविध शैली का विकास एवं प्रसार होता रहा है। प्रत्येक राज्योंको अपने – अपने सामाजिक सांकृतिक रूडीगतों के आधार पर शिक्षण प्रंणाली को विकासीत करना अनिवार्य था।

भारत देश एक बहुसंस्कृतिक देश है इसलिए देश में एकता की भावना को सदृढ़ कराना था। इसी उद्देश्य से भारत के इतिहास में 1986 में राष्ट्रीय शिक्षण निति आयोग उभर आया। इसमें भाषा का महत्व में भी चर्चा कि गयी ।

भारत में १९८६ में नवीन शिक्षण नीति नाम से एक शिक्षा नीति लागू की गयी । इस नीति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि, इसमें सारे देश के लिए एक समान शैक्षिक ढाँचे को स्वीकार किया और अधिकांश राज्यों में १०+२+३ की संरचना को अपनाया। इसमें शिक्षा संबंधी अनेक विषमताओं व त्रुठियों को दूर करने का प्रयास किया गया ।१९६८ की नीति लागू होने के बाद देश में शिक्षाका व्यापक प्रसार हुआ है । ९० प्रतिशत से अधिक लोगों के लिए एककिलोमीटरकेआसपास भीतरप्राथमिकविद्यालयउपलब्धहैं।अन्यस्तरोंपरभीशिक्षाकीसुविधाएंपहलेकेमुकाबलेकहींअधिकबढ़ीहैं ।पूरेदेशमेंशिक्षाकीसमानसंरचनाऔरलगभगसभीराज्योंद्वारा १०+२+३ कीप्रणालीकोमानलेनाशायद

१९६८ कीनीतिकीसबसेबड़ीदेनहै।इसप्रणालीकेअनुसारस्कूलीपाठ्यक्रममेंछात्र–छात्राओंकोएकसमानशिक्षादेनेकेअलावाविज्ञानवगणितकोअनिवार्यविषयबनायागयाऔरकार्यानुभवको महत्त्वपूर्णस्थानदियागया।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–४.३**

- **इस वाक्यों को पूरा करें ।**

१. मानव इतिहास का आदिकाल से शिक्षा के –––––––– का विकास एवं प्रसार होता आया है।

२. 1986 राष्ट्रीय शिक्षण निति आयोग का मुख्य उद्देश्य ––––––––––––––––– ।

३. –––––––– में नवीन शिक्षण नीति भारत में लागू की गयी ।

४. १९६८ कीनीतिमें ––––––––––– को अनिवार्य विषय बनाया गया ।

१.५.१.३.४: राष्ट्रीय पाठय चर्या–(२००५):

भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा (NCF) का निर्माण करने की जिम्मेदारी (NCERT) की है । यह संस्था समय–समय पर इसकी समीक्षा भी करती है।

- **विषय प्रवेश:**

  –यह विध्यालयी शिक्षा का अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है।

  –इसे अंतराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों, विषय विशेषज्ञनों व अध्यापकों ने मिलकर तैय्यार किया है।

  –मानव विकास संसाधन मंत्रालय की पहल पर प्रो.यशपाल की अध्यक्षता में देश के चुने हुए विध्वानों ने शिक्षा को नई राष्ट्रीय चिनौतियों के रूप में देखा।

- **माग्रदर्शी सिध्दांत)**

  १. ज्ञानको स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाए।

  २. पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त किया जाए।

  ३. पाठ्यचय्रा पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न रह जाए।

  ४. कक्षा कक्षा को गतिविधियों से जोड़ा जाए।

  ५. राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विध्यार्थि तैय्यार हो ।

प्रमुख सुझाव:

१. शिक्षण सूत्रों जैसे ज्ञान से अज्ञान की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर आदी का अधिकतम प्रयोग हो ।

२. सूचना को ज्ञान मानने से बचा जाए ।

३. विशाल पाठ्यक्रम व मोटी किताबों शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है।

४. मूल्यों को उपदेश देकर नहीं वातावरण देकर स्थपित किया जाए।

५. अच्छे विध्यार्थि की धारणा में बदलाव अवश्यक है अर्थात अच्छा विद्यार्थि वह है जो तर्क वर्ण था । बहस के द्वारा अपने मौलिक विचार शिक्षक के सामने प्रस्तुत करता है।

६. अधिभावोकों सख्त सन्देश दिया जाए कि बच्चोंको छटी उम्र में निपुण बनाने की आकाक्षा रखाना गलत है।

७. बच्चों को स्कूल से बहारी जीवन में तनावमुक्त वातावरण प्रदान करना चहिए ।

८. "कक्षा में शान्ति"का नियम बार–बार ठीक नहीं अर्थात जीवन्त कक्षागत वातावरण को प्रोस्ताहित किया जाना चाहिए।

९. सह शिक्षक गतिविधियों में बच्चों के अभिभाव को भी जोड़ा जाए।

१०. समूदाय को मानवीय संसाधन के रूप में प्रयुक्त होने का अवसर दें।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–४.५**

१. भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा (NCF) का निर्माण करने की जिम्मेदारी –––––– की थी ।

२. मानव विकास संसाधन मंत्रालय की पहल पर –––––––– की अध्यक्षता में देश के चुने हुए विध्वानों ने शिक्षा को नई राष्ट्रीय चिनौतियों के रूप में देखा गया ।

३. ––––––––––––––––––––– शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है।

१.४.१.४: सारांश:

हिन्दी भाषा का स्थान' इस इकाई में हम संविधान की धारा (३४३–३५१–३५०); कोठारी शिक्षा कमीशन (१९६४–६६), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (१९८६,) और राष्ट्रीय पाठ्य चर्या–(२००५) ; इन्ह योजनाओं में हिन्दी भाषा को किस प्रकार का स्थान मिला है उसके बारे में जान चुए है । सांविधान के अनिच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी के बारे में और हिन्दी भाषा को प्रशासनिक कार्यो केलिए सभी प्रकार से सक्षम के बारे में,अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए प्रावधन किया है। कोठारी आयोग में प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक शिक्षा और उच्च आर्थात विश्वविद्यालयी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इस में हिन्दी भाषा का स्थान के बारे में चर्चा की गई है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 10+2+3 का परिचय किया गया है । राष्ट्रीय पाठय चर्या–(२००५) में शिक्षा का स्थान को महत्व दिया गया है। इस प्रकार इन सभी आयोग में शिक्षा के वृद्धि के साथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप हिन्दी भाषा को भारत के सभी राज्यों में प्रचार प्रसार करने का प्रयत्न किया गया है ।

१.४.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर:

4.1: 1.26 जनवरी 1950. 2. ग्यारह. 3. राजभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि 4. 351. 5. अंग्रेजी

4.2: 1.सही 2. जलत 3. सही 4. सही 5. गलत

4.3: 1.विविध शैली का विकास, 2: एकता की भावना को सदृढ़ कराना,3: 1986,4: विज्ञानवगणित

4.4: 1.NCERT,2: प्रो.यशपाल ,३: विशाल पाठ्यक्रम व मोटी किताब।

१.४.६: इकाई समाप्ति का अभ्यास।

प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. संविधान की धारा (३४३–३५१–३५०) में हिन्दी का स्थान के बारे में सक्सिप्त परिचय दी जिए?

२. कोठारी शिक्षा कमीशन (१९६४–६६) में हिन्दी का स्थान क्या है ?

३. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (१९८६)में हिन्दी भाषा महत्व किस प्रकार दी गई है?

४. राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा–(२००५) के बारे में स्पष्ट कीजिए ?

१.४.७: संदर्भ पुस्तकें

१. पठाण यु. जी., माहाविद्यालय स्तर के माराठी भाषी छात्रों की हिन्दी की लिखावट में होनेवाली त्रुटियों का वोश्लेषण एवं सुधार की दिशाएँ ।

२. अनन्त चौधरी: नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादामी, पटना ।

३. जयनारयण कौशिक :हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।

४. रघुनाथ सफाया : हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर 1979 ।

५. सावित्री सिंह :हिन्दी शिक्षण , लायल बुक डिपो, मेरठ ।

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई ५: हिन्दी भाषा का इतिहास

इकाई की संरचना

१.५.१: सीखने केउद्देश्य

१.५.२: प्रस्तावना

१.५.३ : सीखने के अंश और सीखने की गतिविधियाँ ।

१.५.३.१: प्राचीन हिन्दी भाषा का इतिहास ।

आपकी प्रगति का जाँच –१

१.५.३.२: मध्यकालिन हिन्दी भाषा का इतिहास ।

आपकी प्रगति का जाँच –२

१.५.३.३:आधुनिक हिन्दी भाषा का इतिहास ।

आपकी प्रगति का जाँच –३

१.५.४: सारांश

१.५.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.५.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास

१.५.७: संदर्भ पुस्तकें

१.५.१: सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र ,

–प्राचीन हिन्दी भाषा का इतिहासका विवरण करेंगे ।

–मध्यकालिन हिन्दी भाषा का इतिहासके बारे में समझेंगे।

–आधुनिक हिन्दी भाषा का इतिहास को समझेंगे,

१.५.२: प्रस्तावना

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव को स्वीकार किया जाता है। हिन्दी साहित्य का इतिहास एक विशाल सागर जैसा है। इसके अध्ययन के लिए तीन भागो में विभागित किया गया है, जैसे, आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल । इन तीन खंड़ो के अधार पर हम हिन्दी साहित्य के इतिहास को सक्षिप्त से अध्ययन कर सकेंगे ।

१.५.३: हिन्दी भाषा का इतिहासः

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत का अन्तिम अपभ्रश अवस्था से ही हिंदी साहित्य का आविर्भाव को स्वीकार किया याता है। हिन्दी साहिता का प्रथम सुन्यवस्थित और वैज्ञानिक इतिहास रामचन्द्र शुक्ला ने अमना ग्रंथ "हिन्दी साहित्य के इतिहास" लिखा। उन्होने व्यापक परिप्रेक्ष्य में ठोस और वैज्ञानिक आधार पर सर्वप्रथन हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन किया है । उन्होने हिन्दी साहित्य को तीन खंडो में विभाजित किया । जैसे,

1. आदिकाल– (वीरगाता काल, विक्रम–संवत 1050-1375)
2. मध्यकाल
    - पूर्व मध्यकाल––(भक्तिकाल वि. सं. 1375-1700)
    - उत्तर मध्यकाल–(रीतिकाल वि.सं. 1700-1900)
3. आधुनिक काल–(1900 वि.सं. से १९८४ वि.सं आजतक)

१.५.३.१: प्राचीन हिन्दी भाषा का इतिहास

आदिकाल– (वीरगाता काल, विक्रम–संवत 1050–1375)

प्राचीन काल से बोलचाल की भाषा को देशी भाषा अथवा भाषा कहा जाता था । भाषा एक परिवर्तनाशील व्यवस्ता है । विश्व के 3000 भाषों में हिन्दी एक है । अकृति या रूप के आधार पर हिन्दी वियोगात्मक या विशिष्ट भाषा है । हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी अर्धमगधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है । 1000 ई. के आसपास इसका स्वतंत्र रचना से परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएं साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रहीं थीं । यहीँ भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधिनुल भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में विकसित हुईं । अपभ्रंश का जो भी कथ्थ रूप था –वही आधुनिक बालियों मेंविकसित हुआ । पाणिनि के समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी । अतः पाणिनि ने इसको भाषा कहा है । पतंजली के समय तक संस्कृत केवल शिष्ट समाज के व्यवहार की भाषा रह गई थी और प्राकृत ने बिलचाल की भाषा का स्थान ले लिया था । प्रारंभिक दोर में हिन्दी भाषा के सभी बातों में अपभ्रंश से बहुत निकट थी । इसी अपभ्रंश से हिन्दी का जन्म हुआ है । धीरे–धीरे परिवर्तन होते हुए और 1500 ईसवी आते–आते हिन्दी स्वतंत्र रूप में खडी हुई । साथ साथ 1460 के आस– पास देश भाषा में साहित्य सर्जन प्रारंभ हो चुका था । इस अवधि में दोहा, चौपाई, छद्दय दोहा, गाथा आदि छंदों में रचनाए हुई है। इस समय के प्रमुख रचनाकार गोरखनाथ, विध्यापति, नरपति नल्लहा, चंदवरदाई, कबीर आदी थे।

हिन्दी का विकास क्रम–संस्कृत–पालि–प्राकृत अपभ्रंश–अवहट्ट –प्राचीन/ प्रारंम्भिक हिन्दी ।

❖ अपकी प्रगति की जाँच–१

- **इन वाक्यों को पूरा करें।**

1. प्राचीन काल में ––––––––––––भाषा को भाषा कह जाता था ।
2. भाषा एक ––––––––––व्यवस्ता है।

3. अकृति या रूप के आधार पर हिन्दी ---------- भाषा है ।
4. पाणिनि के समय में ------- भाषा बोलचाल की भाषा थी ।

१.५.३.२: मध्यकालिन हिन्दी भाषा का इतिहास:

मध्यकाल

- **पूर्व मध्यकाल--(भक्तिकाल: क्रिस्त वर्ष वि. सं. १३७५–१७००)**
- **उत्तर मध्यकाल–(रीतिकाल : क्रिस्थ वर्ष वि.सं. १७००–१९००)**

इस अवधि में हिन्दी में बहुत परिवर्तन हुए। देश पर मुगलों का शासन होने के कारण उनकी भाषा परसी का प्रभाव हिन्दी पर पड़ा। परिणाम यह हुआ कि फारसी के लगभाग 3500 शब्द, अरबी के 250 शब्द, पश्तों से 50 शब्द, तुर्की के 125 शब्द हिन्दी की शब्दावली में शामिल हो गयि । युरोप केसाथ व्यापार आदि से संपर्क बढ़ रहा था। परिणाम स्वरूप पुर्त्गाली, स्पेनी, प्रांसीसी और अंग्रेजी के शब्दों का समावेश हिन्दी में हुआ।

इस अवधि में हिन्दी में स्वर्णिम साहित्य का सृजन हुआ। भक्ति का आदोलन ने देश की जनता की मनोभावना को प्रभावित किया। राम और कृष्ण जन्म स्थान की ब्रजभाषा में काव्य रचना की गई, जो इस काल के साहित्य की मुख्यधारा मानी जाती हैं। इसी अवधि में दक्खिनि हिन्दी का रूप सामने आया। पिंगल, मैथिली और खड़ीबोली में भी रचनाएँ लिखी जा रही थी। इस काल के मुख्य कवियों में महाकवि तुलसीदास, संत सूरदास, संत मीराभाई, मलिक मोहम्मद जायसी, बिहारी और भूषण हैं।

❖ **अपकी प्रगति की जाँच–२**

❖ **नीचे के वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए ।**

१. मध्यकाल में देश में मुगलों का आगमन हुआ ।
२. मध्यकाल में हिन्दी भाषा में पारसी का प्रभाव ज़ादा था ।
३. भक्ति का आंदोलन ने देश की जनता की देशप्रेमको प्रभावित किया।
४. मध्यकाल में दक्खिनि हिन्दी का जन्म हुआ ।

१.५.३.३: आधुनिक हिन्दी भाषा का इतिहास:

आधुनिक काल– (1900क्रि.सं. से 1984क्रि.सं आजतक) आधुनिक काल में देश में अनेक परिवर्तन हो गये । इन्ही परिवर्तनों का परिणाम हिन्दी साहित्यों में भी हुआ । अंग्रेजी का प्रभाव देश की भाषा और संस्कृति पर दिखाई पड़ने लगा। अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन हिन्दी के साद्थ बनने लगा। इसी समय में खड़ीबोली अश्तित्व में आई । इसका क्षेत्र देहरादून, सहारनपुर, दिल्ली, रामपुर और मुरादाबाद थे ।

1860 के आसपास हिन्दी गध्य का रचना आरंभ हीने लगी थी। इसकी सहायता लेते हुए अंग्रेजी पादरियो ने ईसाई धर्म के प्रचार में बाईबल का अनुवाद खड़ीबोली में किए। यध्यपि इनका लक्ष्य अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। तथापि इसका लाभ अंग्रेजी शासकोंकी कूटनीति के सहारे हिन्दी में रचना कियागए। नाटको, उपन्यासो, कहानि, कविता आदी रचनाएँ किये गया ।

1900 सदी का आरंभ हिन्दी भाषा के विकास की दृष्ट्रि से बहुत महत्वपूर्ण है। इस समय देश में स्वतंत्रता आंदोलन और कई तरह के अन्य आदोलन चल रहे थे। पूरे भारतीय आंदोलन की भाषा हिन्दी ही बन चुकी थी। साहित्य की दृष्ट्रि से हिन्दी सबसे आगे थी। इसलिए हिन्दी को आगे चलकर राजभाषा बनया गया । हिन्दी में अनेक साहित्य विधाओं का विकास हुए।

इस प्रकार आधिकाल से आधुनिक काल तक हिन्दी का भाषा विकास सामाजिक परिवर्तन के साथ होते–होते हिन्दी का शुब्द रूप सामाने आने लगा ।

❖ अपकी प्रगति की जाँच–३

प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

१. खड़ीबोलीका क्षेत्र कौन सा था ?
२. नाटको, उपन्यासों, कहानि, कविता आदी की रचना कब होने लगी ?
३. 1900क्रि. सदी का आरंभ हिन्दी भाषा के विकास की दृष्ट्रि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है क्यों?

१.५.४: सारांश

हिन्दी भाषा का इतिहास को लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव को स्वीकार किया याता है। इसके अध्ययन के लिए हिन्दी साहित्य काल को तीन भागो में विभागित किया गया है, जैसे, आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल । प्राचीन काल या आदि काल से बोलचाल की भाषा को देशी भाषा कही जाती थी । भाषा एक परिवर्तनाशील व्यवस्ता है । हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी अर्धमगधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है । 1000 ई. के आसपास इसका स्वतंत्र परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएं साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग होने लगे । इसी प्रकार मध्यकाल की अवधि में हिन्दी में बहुत परिवर्तन हुए । मुगलों का शासन, फारसी के लगभाग 3500 शब्द, अरबी के 250 शब्द, पश्तों से 50 शब्द, तुर्की के 125 शब्द हिन्दी की शब्दावली में शामिल हो गये । युरोप केसाथ व्यापार आदि से संपर्क बढ़ रहा था। परिणाम स्वरूप पुर्त्गाली, स्पेनी, प्रांसीसी औरअंग्रेजी के शब्दों का समावेश हिन्दी में होने लगा । अंग्रेजी का

प्रभाव देश की भाषा और संस्कृति पर दिखाई पड़ने लगी। अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन हिन्दी की साद्ढता बढ़ने लगा। 1860 के आसपास हिन्दी गध्य का रचना आरंभ हीने लगी थी। यद्यपि ईसाई प्रचारकों का लक्ष्य अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। तथापि इसका लाभ पाकर अंग्रेजी शासकों की कूटनीति के सहारे हिन्दी में रचना कियागए। नाटकों, उपन्यासों, कहानि, कविता आदी ग्रन्थों की रचनाहीने लगी। इस प्रकार काल के अनुसार हिन्दी भाषा साहित्य में भी निरंतर परिवर्तन आने लगा । इस प्रकार आधिकाल से आधुनिक काल तक हिन्दी का भाषा विकास सामाजिक परिवतृन के साथ होते–होते हिन्दी का शुब्द रूप सामाने आने लगा ।

१.५.५: अपने प्रगति का परीक्षा

5.1: 1. बोलचल की भाषा 2. परिवर्तनशील. 3.वियोगात्मक या विशिष्ट . 4. संकृत,

१.५.७: पद्याधारित अभ्यास

१. प्राचीन हिन्दी भाषा का इतिहास के बारे में लिखिए?

२ मध्यकालिन हिन्दी भाषा का इतिहासके बारे में स्पष्ट कीजिए ?

३ आधुनिक काल में हिन्दी भाषा को क्यों महत्व स्थान मिला ?

१.५.८: उपयोगी पुस्तक.

१. पठाण यु. जी., माहाविद्यालय स्तर के माराठी भाषी छात्रों की हिन्दी की लिखावट में होनेवाली त्रुटियों का वोश्लेषण एवं सुधार की दिशाएँ ।

२.अनन्त चौधरी. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादामी, पटना ।

३. जयनारयण कौशिक, हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।

४. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर 1979 ।

५. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण , लायल बुक डिपो, मेरठ ।

खण्ड १ : भाषा का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

इकाई ६: हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका

इकाई की संरचना

१.६.१: सीखने के उद्देश्य

१.६.२: प्रस्तावना

१.६.३: सीखने के अंश और सीखने की गतिविधिएँ ।

१.६.३.१: स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका ।

आपकी प्रगति का जाँच –१

१.६.३.२: स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान ।

आपकी प्रगति का जाँच –२

१.६.३.३: हिंदी के विविध रूप ।

आपकी प्रगति का जाँच –३

१.६.३.४: अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ।

आपकी प्रगति का जाँच –४

१.६.३.५: हिंदी पढने–पढाने में चुनौतियाँ ।

आपकी प्रगति का जाँच –५

१.५.४: सारांश

१.६.५: आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.६.६: इकाई समाप्ति के अभ्यास

१.६.७: संदर्भ पुस्तकें

१.६.१: उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के अपरान्त छात्र ,

- स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका कोबताएँगे।
- स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान के बारे में समझाएँगे ।
- हिंदी के विविध रूप;अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के बारे में विवरण देंगे ।
- हिंदी पढ़ने–पढ़ाने में चुनौतियों के बारे में समझाएँगे ।

१.६.२: प्रस्तावना :

यह इकाई पहले खंड की छठि इकाई है। इस में हम स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका ; स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान; हिंदी के विविध रूप ; अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ; हिंदी पढ़ने–पढ़ाने में चुनौतियों के बारे में जानकारियाँ पा सकेंगे।

१.६.३: हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका:

भाषा मानव की अपनी आकांक्षाओं, वृत्तियों एवं मनोगत भावों की अभिव्यक्ति है। भाषा को व्दारा ही हम दूसरों के विचारों को ग्रहण करते हैं और भाषा मानव सभ्याता में एक महत्वपूर्ण स्थान रकती है। यह एक सामाजिक माध्यम का साधन है अतः इसके व्दारा ही मानव जीवन का शुरूआत हुआ।

भारत एक बहु भाषीय देश है। प्रत्येक राज्यों में अपनी –अपनी मात्रभाषा प्रधान है। लेकिन हिन्दी भाषा को राजभाषा मानागया है। क्योंकि भारत देश में हिन्दी अनेक राज्य की मात्रभाषा के रूप में बोली जाती है। इस भारत देश में और अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका के बारे में जानकारीकी चर्चा करेंगे।

१.६.३.१: स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका ।

समाज के निरंतर बदलाव के साथ हिन्दी भाषा की स्थिति में भी परिवर्तन आया है। हिन्दी साहित्य का आरंभिक समय–सीमा क्रिस्थशक11.विं, 12 विं, शताब्दी के आसपास मानाजाता है। बौध्दों और जैनों से उत्तर अपभ्रंशों में साहित्यों की रचना होने लगी । इसका प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर होने लगें। उस समय में धर्मों की प्रधानता देते हुए हिन्दी साहित्य उभर आने लगा ।

1400 क्रिस्त संवत से 1900 क्रिस्त संवत तक हिन्दी साहित्य में राजस्थानी और खडीबोली का सम्मिलित प्रभाव विशेष रूप सेहोने लगा। ब्रजभाषा और अवधी का विशेष प्रयोग साहित्थित रचनाओं में मिलता है। हिन्दी अपनी विभिन्न बोलियों के साथ बहुत व्यापक क्षेत्र में बोली जाती है; अतः यह स्वाभाविक है कि विशिष्ट रूप में साहित्थिक रचना भी होने लगी।

- **अपकी प्रगति की जाँच–१**
- **इन वाक्यों को पूरा करें।**

१. प्रत्येक राज्यों में ––––––भाषा प्रधान है। ।

२. ––––––भाषा को राजभाषा मानागया है।

३. ––––––––– वर्ष में हिन्दी साहित्य में राजस्थानी और खडीबोली का सम्मिलित होने लगा।

४. ––––– और ––– भाषाओं का प्रयोग हिन्दी साहित्य में मिलता है।

१.७.३.२: स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान:

1947 अगस्त15 को भारत देश को अंग्रेजें से स्वतंत्रता मिली। युगों कागुलामी दिनों के बाद भारत में नए जीवन का संचार हुआ, नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाई–चारे को मतलब दिया गया। इस संदर्भ में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया। लेकिन गैर हिन्दी भाषी राज्य के लोग उसका विरौध करने लगे और अंग्रेजी भाषा का प्रभाव पढ़ने लगा।

हिन्दी भाषा में अंग्रेजी भाषा के प्रभाव कॊ दूर करने केलिए हिन्दी संबंधित कुछ संविधानिक योजनाएँ बनाने लगे इनमें कुछ एसे है।

*1949 में संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस दिनको अब हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

*शिक्षा मंत्रालय व्दारा 1952में हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण ऐच्छिक तोर पर प्रारंभ किया गया। तथा राज्यपालों /उच्चतम न्यायालयों में अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि का पयोग को अधिकृत किया गया।

*हिन्दीको राज्यभाषा बनाने के बाद अहिन्दी भाषीय राज्यों में इसका विरोध होने लगा। क्योंकी कुछ प्रतिशत लोगों को हिन्दी का कोई ज्ञान नहीं था। इसके बाद 15 वर्ष केलिए अंग्रेजी भाषा को उच्च स्थान मिला। तब तक सभी राज्यों के लोगेको हिन्दी सीखना पड़ेगा।

*15 वर्ष के बाद हिन्दी भाषा का विकास नहीं हुआ और तब तक अंग्रेजी भाषा काफीहद तक हिन्दी का स्थान ले लिया था। 26 जनवरी 1965 कॊ संसद में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि "हिन्दी को सभी सरकारी कार्यों में उपयोग किया जाएगा, लेकिन उसके साथ साथ अंग्रेज़ी का भी सह राजभाषा के रूप में उपयोग किया जाएगा"

- **अपकी प्रगति की जाँच–२**
- **नीचे के वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए ।**

1. हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित होने के बाद, गैर हिन्दी भाषी राज्य के लोग उसका विरौध करने लगे ।
2. 1949 में हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
3. 1952में हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि का पयोग को अधिकृत किया गया।

4. हिन्दी को राज्यभाषा बनाने के बाद अहिन्दी भाषीय राज्यों में इसका विरोध होने लगा। क्योंकी कुछ प्रतिशत लोगों को हिन्दी का कोई ज्ञान नहीं था।

१.६.३. अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी:

हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जो संपूर्ण विश्व में हिन्दी भाषियों की उपस्थिति के कारण किसी न किसी रूप में विश्व के स्तर पर फैली हुई है। जागतिक स्थर में बोलीजाने वाली भाषाओं में हिन्दी चौथे स्थान पर है।

अन्तराष्ट्रीय भाषा कहलाने केलिए, उसकेलिए कुछ अहताएं होती है।

१. उस भाषा को बोलने व समझने बालों का विस्तृत भौगोलिक विवरण हो।
२. भाषा में लचीलापन का गुण अनिवार्य तत्व है। उसमें यह क्षमता होनी चाहिए कि वह भिन्न सन्दर्भों की अभिव्यक्ति कर सके। इसके साथ यह भी अवश्यक है कि उसमें प्रयुक्ति का स्तर हो और साथ ही असका एक सर्व स्वीकृत मानक रूप हो।

यह सभी गुण हिन्दी में है। इसका प्रमुख कारण यह है कि हिन्दी स्वयं अनेक जनपदीय भाषाओं और मध्ययुग से लेकर आज तक अनेक साहित्यिक भाषाओं के रस से सिंची हुई है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जो अपने देश में भी अनेक राज्यों में विकास होने के कारण प्रान्तीयता की भावना से ऊपर उठी हुई है। इसमें ऐसि भावनाओं का उद्रेक है जो पूरा विश्व के सामान्य जन को सबोधित और गौरव प्रदान करने की क्षमता रकती है।

इस प्रकार अंतराष्ट्रीय स्थर पर हिन्दी का स्थान व्यापक है। विश्व हिंदी सम्मेलन के ध्वारा हिंदी को पहचान मजबूत करने के लिए एक अवसर मिला है। हिंदी भाषा, साहित्य, साहित्यकार और भाषा विदों के बीच आपसी संवाद भी कायम होता है। यह हिंदी की प्रगती को एक नई ऊर्जा प्रदान कराता है। इस प्रकार अंतराष्ट्रीय स्थर पर हिंदी निरन्तर प्रगतिशील है।

5. अपकी प्रगति की जाँच–३

- प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

१. जागतिक स्थर में बोलीजाने वाली भाषाओं में हिन्दी कितने स्थान पर है ?
२. भाषा में कौन सा गुण अनिवार्य तत्व है ?
३. हिंदी अंतराष्ट्रीय स्थर पर हिंदी निरन्तर प्रगतिशील रही है। कारण दीजिए?

१.६.३.२ :हिंदी के विविध रूप ।

भाषा व्यक्ति और समाज की पहचान है। इसके सहारे समाज और राष्ट्र की अस्मिता की अभिव्यक्ति होती है। भाषा, मानव समाज की सबसे बडी. शक्ति है। यह व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, संबेदनाओं और क्रिया कलापों की अभिव्यंजना का सशक्त माध्यम है।

भौगोलिक सीमा विस्तार के साथ हिन्दी जन जीवन में अपनी विभ्भिन्न भूमिकाओं का निर्वाह कर रही है। हिन्दी अपनी विविध भूमिकाओं में जन भाषा, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूपों में बहुमुखी उत्तरदायित्व का पालन कर रही है।

- हिन्दी: मातृभाषा के रूप में : सन 1991 तक के नजसंख्या आकलन के अनुसार देश का करीब पैंतालीस प्रतिशत जनता की मातृभाषा हिन्दी थी। सर्वधिक रूप में हिन्दी को अपनी मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने बाले प्रांतों में– उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश,राजस्थान, बिहार, उत्तरांचल, हरियाण, दिल्ली, झरखण्ड राज्य आते है। इसके अलावा अन्य छोटे–बडे अन्य कई शहरों में हिन्दी मातृभाषा है।
- **हिन्दी: राष्ट्रभाषा के रूप में:** भारत देश विशाल बहुभाषीय और नजसमूदाय वाला बहुभाषी देश है। यहां प्रायः सोलह सौ पचास से अधिक बोलियां और भाषाओं को प्रथम भाषा के रूप में बोलीजाती है। हिन्दी भारोपीय भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। आजादी के बाद समूचे देश में एकसूत्र में बांधे रखने के संविधान व्दारा हिन्दी को भारतीय गणराज्य की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। आज हिन्दी न सिर्फ़ भारत के हिन्दी और अहिन्दी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा के रूप में व्यवहार हो रही है बल्कि वह विदशों में भी कहीं –कहीं राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। हिन्दी की इन्हीं गुणों के कारण भाषा राष्ट्रीय चेतना और अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है। इसी के कारण स्वतंत्र और स्वाभिमनी देशवासियों के व्दारा भारत की राष्ट्रभाषा मानी गई है।
- **हिन्दी: राजभाषा के रूप में:** सरकारी कार्य जिस भाष में संपन्न होते हैं, उसे प्रशासजिक भाषा अथवा राजभाषा कहा जा सकता है, " जो सरकारी कामकाज की भाषा हो और शासन तथा जनता के बीच आपसी संम्पर्क के काम आती हो।"वह राजभाषा है। हिन्दी को भारतीय संध की राजभाषा के स्थान में सन 1950 से लागू किया गया। स्वाधीन भारत का संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949कोसर्वसम्मत से हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कियागया । अनुच्छेद 343 के साथ 351 में राजभाषा हिन्दी के संबंधी निर्देशों से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार हिन्दी भाषा भारत देश के राजभाषा के रूप में विकास हो रही है।हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी मातृभाषा एवं हिन्दी मातृभाषा

एवं राजभाषा दोनों ही है। किन्तु अहिन्दी भाषी प्रदेशों में केवल राजभाषा है, उनकी मातृभाषा पृथक है। अतः इन प्रदेशों में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाता है।

- **हिन्दी: संपर्क भाषा रूप में:** भारत एक बहुसंस्कृतिक देश है। इसलिए इसकी भाषाएं अलग–अलग है। अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग भाषाएं प्रधान है। समाज जितना ही विस्तृत और वैविध्यपूर्ण होगा भाषा की जिम्मेदारी उतनी ही बड़ी होगी। हिन्दी संपर्क भाष के स्वरूप में मात्र राष्ट्रव्यापी न होकर विश्वव्यापी स्थान ग्रहण कर रही है । त्रिभाषा के अनुसार मातृभाषा भाषा को अनिवार्यतः दस वर्ष तक (कषा 1 से 10 तक) अध्ययन करना आवश्यक मानागया है।अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी जन जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, एक संपर्क स्थापन के लिए एवं अखिल भारतीय स्तर पर व्यवहारिक संम्पर्क साधन के लिए सीखी जाती है। हिन्दी को भारत देश में सभी राज्यों में एक संपर्क भाषा के रूप मे उपयोग किया जत है ।

- **अपकी प्रगति की जाँच–४**
- **इन वाक्यों को पूरा करें।**
    १. भाषा –––––––– की पहचान है।
    २. ––––––––जनता की मातृभाषा हिन्दी थी।
    ३. भारत देश विशाल ––––––––वाला बहुभाषी देश है।
    ४. भारत एक ––––––––देशहै। इसलिए इसकी भाषाएं अलग–अलग है।

१.६.३.५: हिंदी पढने–पढाने में चुनौतियाँ।

जब हम कोई भाषा सीकते है तब हमें तीज चुनौतियाँ सामने आती है। जैसे

१. **पठन से संबंधित चुनौतियाँ:** भाषा के संबंध में जब पठन से विषय आता है तब हमें कुछ ध्वनियोँ के उच्चारण के कठिणाईयाँ सामने आती हैं जो अहिन्दीभाषी लोगों के लिए मुश्किल है इसलिए अहिन्दीभाषी विध्यार्थियों की मातृभाषा जानना शिक्षक के लिए एक चुनौती है ।
२. **लेखन से संबंधित चुनौतियाँ:** भाषा के संबंध में जब लेखन का विषय आता है तब हमें कुछ लिपि, स्वर व्यंजन, मात्राएं आदी । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। अहिन्दी भाषी को इससे कठिनाई होती है । इस लिपि में मात्राएं बाएं, दाएं, ऊपर, नीचे लगती है जिससे नए विद्यार्थि को असुविधा होती है । जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ श्र द्व म्र आदीइन्ह अक्षरों को समझने में चुनौती है ।
३. **व्याकरण से संबंधित चुनौतियाँ:** व्याकरण में भाषा की संरचना, शब्द, पद, वाक्य, उनके नियम और प्रयोग में जानकारी पाना व्याकरण कहलाता है। हिन्दी भाषा में व्याकरण संबंधित लिंग, वचन,

कारक, कर्ता या कर्म के अनुसार क्रिया का रूप विकार, काल के अनुसार ' ने'का नियम, द्वित्व एंव संयुक्त क्रियाएं, हिन्दी प्रदेशों तत्सम शब्दों की अर्थ भिनता – आदी कठिनाईयाँ होती है ।

अपकी प्रगति की जाँच–५

१. पठन से संबंधित चुनौतियाँ ––––– से संबंधित है ।

२. लेखन से संबंधित चुनौतियाँ ––––––– है ।

३. व्याकरण से संबंधित चुनौतियाँ ––––––– है ।

१.७.४: सारांश:

भाषा मानव की अपनी आकांक्षाओं, वृत्तियों एवं मनोगत भावों की अभिव्यक्ति है। भाषा को व्दारा ही हम दूसरों के विचारों को ग्रहण करते हैं और भाषा मानव सभ्याता में एक महत्वपूर्ण स्थान रकती है। यह एक सामाजिक माध्यम का साधन है अतः इसके व्दारा ही मानव जीवन का शुरूआत हुआ। भारत एक बहु भाषीय देश है। प्रत्येक राज्यों में अपनी –अपनी मात्रभाषा प्रधान होती है, भारत देश में हिन्दी अनेक राज्य की मात्रभाषा के रूप में बोली जाती है, इसलिए हिन्दी भाषा को राजभाषा मानागया है। केवल भारत में ही नहीं बल्की अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा को एक महत्व स्थान है। इसके सात–सात ही जो अहिन्दी भाषी लोगों इस लिपि में मात्राएं बाएं, दाएं, ऊपर, नीचे लगती है जिससे नए विद्यार्थि को असुविधा होती है । जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ श्र द्व म्र आदी इन्ह अक्षरों को समझने में चुनौती है और हिन्दी भाषा में व्याकरण संबंधित लिंग, वचन, कारक, कर्ता या कर्म के अनुसार क्रिया का रूप विकार,– आदी कठिनाईयाँ होती है । इस प्रकार स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिकाएँ , स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान , हिंदी के विविध रूप;अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी और हिंदी पढ़ने–पढ़ाने में चुनौतियों के बारे में समझ चुके हैं ।

- **आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर:**

6.1: 1.मात्र भाषा, 2: हिन्दी 3: 1400 क्रिस्त संवत से 1900 : 4: ब्रजभाषा और अवधी

6.2:1: सही, 2: सही. 3: सही, 4: सही ।

6.3: चौथे स्थान, 2: लचीलापन 3: हिंदी भाषा, साहित्य, साहित्यकार और भाषा विदों के बीच आपसी संवाद ।

6.4: 1: व्यक्ति और समाज की २: पैंतालीस प्रतिशत ३: बहुभाषीय और नजसमूदाय ४ बहुसंस्कृतिक

6.5:1.: ध्वनि 2: लिपि, 3:भाषा की संरचना, शब्द, पद, वाक्य,

१.७.५: इकाई अंत के अभ्यास ।

१. स्वतंत्र के पहले हिन्दी भाषा का स्थान और भूमिका कैसे थी ?

२. स्वतंत्र के बाद हिंदी का स्थान के बारे में समझाईए ?

३. हिन्दी के विविध रूपों के बारे में स्पष्ट ज्ञानकरी दीजिए ?

४. अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के स्थान मान के बारे में चर्चा कीजिए ?

५. हिन्दी पढ़ने–पढ़ाने में चुनौतियों के बारे में आपका क्या राय हैं ?

१.७.६ उपयोगी पुस्तक.

१. पठाण यु. जी., माहाविद्यालय स्तर के माराठी भाषी छात्रों की हिन्दी की लिखावट मेंहोनेवाली त्रुटियों का वोश्लेषण एवं सुधार की दिशाएँ ।

२. अनन्त चौधरी. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादामी, पटना ।

३. जयनारयण कौशिक, हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ।

४. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर 1979 ।

५. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण , लायल बुक डिपो, मेरठ ।

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई १ : श्रवण कौशल

इकाई की संरचना

२.१.१. सीखने के उद्देश्य
२.१.२. प्रस्तावना
२.१.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
२.१.३.१. श्रवण कौशल का अर्थ, महत्व और उद्देश्य
आपकी प्रगति की जाँच – ०१
२.१.३.२.श्रवण कौशल की विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच – ०२
२.१.३.३. श्रवण कौशल में ध्यान देने योग्य बातें
आपकी प्रगति की जाँच – ०३
२.१.३.४. श्रवण कार्य का मूल्यांकन
आपकी प्रगति की जाँच – ०४
२.१.४. सारांश
२.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
२.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
२.१.७. संदर्भ पुस्तकें

२.१.१. सीखने के उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे-

- भाषाई कौशलों को पहचानेंगे|
- श्रवण कौशल के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखेंगे
- श्रवण कौशल की विधियों का वर्णन करेंगे।
- श्रवण कौशल में ध्यान देने की बातों को सीखेंगे।
- श्रवण कार्य का मूल्यांकन करेंगे।

२.१.२. प्रस्तावना -

प्रिय छात्रों,

भाषा कौशलों के बारे में आप जानते हैं। इन कौशलों के बारे में सोचिए और आपके विचारों को नीचे के विचारों से मिलाइए।

भाषा एक कला विषय है, न कि इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि। भाषा सीखने के चार कौशल हैं, जैसे - पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना।

जब बालक में इन चारों कौशलों का विकास हो जाता है तभी उसे पूर्ण भाषा का बोध होता है।

परंपरागत रूप से भाषा के अध्यापन में वाचन, लेखन पर बल दिया जाता था। वास्तविक जीवन में ये चार कौशलों को अलग करना आसान नहीं है। भाषा के अनेक उपकौशल हैं। सीखने की क्रिया के संगठन की दृष्टि से श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन पर बल दिया गया है।

ये चारों कौशल स्वतंत्र कौशल नहीं बल्कि परस्पर संबंधित हैं | इन में दो कौशल ग्राह्यात्मक कौशल हैं जैसे श्रवण, वाचन और दो कौशल अभिव्यंजनात्मक कौशल हैं।
जैसे - भाषण, लेखन

ये कौशल जोड़े में चलते हैं और बोध पर आधारित हैं। भाषा कौशल शिक्षण का मुख्य ध्येय -शिक्षार्थी सीखी गई भाषा को शुद्ध, प्रवाह और स्वतंत्रता के साथ प्रयोग कर ले।
- सुनकर अर्थ ग्रहण करना यानी श्रवण कौशल
- पढ़कर अर्थ ग्रहण यानी पठन / वाचन कौशल
- बोलकर विचार व्यक्त यानी मौखिक अभिव्यक्ति कौशल(भाषण कौशल)
- लिखकर विचार व्यक्त करना यानी लेखन कौशल।

<u>भाषाई कौशलों का विभाजन</u> -

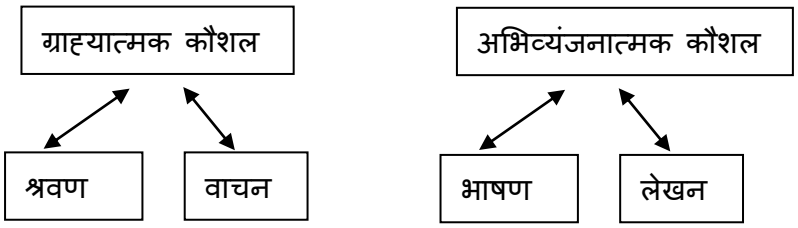

२.१.३. सीखने के अंश तथा सीखने की क्रियाएँ

२.१.३.१. श्रवण कौशल - अर्थ, महत्व और उद्देश्य

श्रवण कौशल के **अर्थ, महत्व और उद्देश्यों की चर्चा करेंगे -**

<u>श्रवण कौशल का अर्थ -</u>

प्रिय छात्रों, हम सुनने के बारे में काफी जानते हैं -

सामान्यतः कानों के माध्यम से ध्वनि ग्रहण की क्रिया को सुनना कहा जाता है। कानों के माध्यम से कुछ भी सुनने और उसे समझने की चेष्टा को श्रवण कहा जाता है। श्रवण कौशल में सुनने की निपुणता के अंतर्गत श्रोता की सक्रियता का समावेश रहता है। रुचि, अवधान के साथ सुननेवाला श्रोता भाषा की ध्वनियों, ध्वनिसंयोगों को सही रूप में केवल सुनता ही नहीं वरन् सुनी हुई भाषा (शब्द, वाक्य) का अर्थ समझने की चेष्टा भी करता है।

<u>श्रवण कौशल का महत्व</u> -

आइए श्रवण कौशल की चर्चा करेंगे -

श्रवण एक सक्रिय तथा सोद्देश्य क्रिया है। भावग्रहण का मुख्य आधार होने के कारण श्रवण कौशल मुख्य कौशल है तथा भाषा शिक्षण में इसका प्रमुख स्थान है। किसी भी भाषा को सीखने की पहली शर्त है - उस भाषा को सुनना / श्रवण करना है। द्वितीय भाषा ($भाषा_2$) शिक्षण का चरम लक्ष्य है - उस भाषा में संप्रेषण का चरम विकास करना। द्वितीय भाषा ($भाषा_2$) शिक्षण में श्रवण कौशल का विकास एक महत्वपूर्ण सोपान है।

श्रवण कौशल तथा भाषण कौशल का अन्योन्याश्रित संबंध है अर्थात् किसी भी भाषा को स्पष्ट रूप से सुनकर/श्रवणकर सीख लेने पर ही उस भाषा का उच्चारण अभिव्यक्ति संभव है।

श्रवण कौशल की नींव पर भाषा रूपी भवन के अन्य अंगोपांग सुस्थिर रहते हैं। श्रवण से वाचन, लेखन, भाषण विषय की जानकारी प्राप्त होता है।

श्रवण कौशल का विकास छात्रों में करने का यह महत्व रहेगा -

- छात्र सरल मौखिक सूचनाओं की प्रतिक्रिया देंगे।
- अपने श्रवण स्मृति का विकास करेंगे।
- दूसरों द्वारा बोली हिन्दी भाषा को समझेंगे।
- किसी वर्णन का मुख्य विचार को समझेंगे।
- हिन्दी भाषा के शब्द, शब्द संरचना का स्मरण करेंगे।

श्रवण कौशल के अंतर्गत तीन मुख्य शक्तियों का समावेश है जैसे -

१. **अंतरबोध शक्ति** - $भाषा_1$ (मातृभाषा), $भाषा_2$ (द्वितीय भाषा) की दो एकाकी ध्वनियों तथा दो ध्वनि संयोजनों को सुनकर उनके बीच के अंतर को समझना ।

२. **धारण शक्ति** - ध्वनि युग्मों, शब्द युग्मों के बीच के अंतर को अपनी अचेतन अवस्था में स्थिर रखना है ।

३. **बोधन शक्ति** (अनुच्छेद)- ध्वनियोग से निर्मित शब्दों के अर्थ को ग्रहण करते हुए समझना।

अभ्यास १ -

इस अनुच्छेद / पैराग्राफ को पढ़िए और संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए-

श्रवण एक सोद्धेश्य तथा सक्रिय क्रिया है। भावग्रहण का मुख्य आधार होने के कारण श्रवण कौशल मुख्य कौशल है। किसी भी भाषा को स्पष्ट रूप से सुनने के बाद ही उस भाषा का उच्चारण अभिव्यक्ति संभव होने के कारण श्रवण कौशल और भाषण कौशल का अन्योन्याश्रित संबंध है। श्रवण से वाचन, लेखन, भाषण विषय की जानकारी प्राप्त होता है। श्रवण कौशल के विकास से छात्र की श्रवण स्मृति का विकास होता है। श्रवण कौशल के अंतर्गत तीन प्रमुख शक्ति जैसे अंतर बोध, धारण और बोधन का समावेश है।

१. श्रवण कौशल को मुख्य कौशल क्यों कहा जाता है?
२. श्रवण कौशल और भाषण कौशल के बीच क्यों अन्योन्याश्रित संबंध है?
३. श्रवण कौशल के तीन प्रमुख शक्तियाँ कौन कौन सी हैं?
४. श्रवण से किन विषय की जानकारी प्राप्त होता है?

<u>श्रवण कौशल के उद्देश्य</u> -

श्रवण कौशल के उद्देश्यों को संक्षेप में जानेंगे -

श्रवण कौशल के ये उद्देश्य हैं -

छात्रों में -

- ध्वनियों को गद्य रूप से सुनने, समझने की योग्यता का विकास करना।
- सुनने की क्रिया को एक उद्देश्य पूरित, अर्थ पूर्ण मानसिक क्रिया के रूप में विकास करना।
- हिन्दी भाषा संप्रेषण का विकास करना।
- हिन्दी भाषा के श्रवण कौशल पर अच्छा अधिकार प्राप्त करना।
- छात्रों को अर्थ ग्रहण के लिए श्रवण कराना।
- श्रवण का आनंद अपनाने का योग्य बनाना।
- श्रवण के प्रति रुचि का सृजन करना।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

नीचे दिए गए वाक्यों को पढिये और अपनी समझ के आधार पर बताइए कि ये वाक्य सही या गलत हैं -

१. श्रवण कौशल में सुनने की निपुणता के अंतर्गत श्रोता का निष्क्रिय समावेश रहता है।
२. श्रवण कौशल में सुननेवाला श्रोता भाषा की ध्वनियों, ध्वनि संयोगों को केवल सही रूप में सुनना काफी है।
३. श्रवण कौशल का विकास होने पर छात्र सरल मौखिक सूचनाओं की प्रतिक्रिया देंगे।
४. श्रवण से सिर्फ लेखन कौशल की जानकारी प्राप्त होता है।।
५. श्रवण कौशल का उद्देश्य, छात्रों को अर्थग्रहण के लिए श्रवण कराना है।

२.१.३.२. श्रवण कौशल की विधियाँ -

छात्रों अब तक हम सामान्य रूप से सुनना, श्रवण कौशल के महत्व, उद्देश्य जान चुके हैं - आइये अब हम विचार करेंगे श्रवण कौशल के विकास की विधियों के बारे में -

श्रवण कौशल को विकसित करने की प्रक्रिया में दो प्रमुख अंग हैं -

१. सामान्य श्रवण
२. चयनात्मक श्रवण

i. सामान्य श्रवण -

सामान्य श्रवण का अर्थ है अध्येय भाषा (हिन्दी भाषा) को सामान्य रूप से सुनना सामान्य श्रवण विकास के आधार हैं -

अ. पर्याप्त श्रवण -

बहुत देर तक बहुत सी बातों को लगातार सुनना। भाषा की ध्वनि व्यवस्था का प्रभाव श्रोता (सुननेवाला) के मस्तिष्क पर पड़ते रहने के कारण धीरे धीरे उस भाषा की ध्वनियों को पहचानने की शक्ति का स्वतः ही विकास हो जाता है और मस्तिष्क स्वतः उन ध्वनियों का उच्चारण करने समर्थ हो पाता है।

आ. शान्त चित्त श्रवण -

अध्येता, कुछ भी सुने, शांतचित्त से सुने इससे मस्तिष्क में अच्छी तरह प्रविष्ट होकर स्थिर होता है ।

इ. **एकाग्र श्रवण** - श्रवण के समय उसके श्रवण में रुचि हो जिससे कि एकाग्रता बनी रहे।

ई. अनौपचारिक श्रवण -

भाषा सीखने इच्छित व्यक्ति अन्य कार्य में लगे हुए होने पर भी मस्तिष्क की रचना के कारण भाषा को सुनते हुए धीरे धीरे उसके श्रवण पक्ष पुष्ट हो जाते हैं ।

उ. बाधा हीन श्रवण -

जहाँ तक संभव हो उस समय तक बाधाहीन श्रवण का अवसर प्रदान किए जाए जब तक छात्रों की श्रवणेन्द्रिय में बाहरी शोरगुल के प्रति अपेक्षित बाधिरता उत्पन्न नहीं होती है।

सामान्य श्रवण को विकसित करने का वातावरण तथा साधन -

- कोई भी भाषा सीखने-सिखाने में वातावरण और साधनों का पर्याप्त महत्व होता है -
- औपचारिक शिक्षण के समय शिक्षक तथा छात्राओं को दो प्रकार के वातावरण उपलब्ध होता हैं
  १. कक्षा का आंतरिक वातावरण
  २. कक्षा का बाह्य वातावरण

अध्यापक को चाहिए कि , कक्षा के अंदर-बाहर हिन्दी भाषा का वातावरण- सूचना, आदेश, प्रश्न, स्पष्टीकरण हिन्दी में ही किए जाएँ। कक्षा के बाहर छात्रों को सहपाठ्य क्रियाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

श्रवणीय सामग्री / साधन चयन के समय

- छात्र स्तर के अनुरूप हो।
- विविध विधाओं से सूक्त हो।
- पाठ्यक्रम अंधानुकरण से मुक्त हो।

अभ्यास २ -

इन कथनों पर विचार करके अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए।

१. बहुत देर तक बहुत सी बातों को लगातार सुनना ही पर्याप्त श्रवण है।

२. श्रवण में रुचि नहीं, तो एकाग्रता भी नहीं होती है।
३. भाषा सीखते समय सीखने इच्छित व्यक्ति अन्य कार्य में लगे रहने से सफल श्रवण नहीं होता है।
४. श्रवणीय सामग्री चयन में सावधानी आवश्यक नहीं है।

II. **चयनात्मक श्रवण -**

छात्रों, चयनात्मक श्रवण के अपने विचारों को नीचे के विचारों से मिलाकर देखिए कि आप कहाँ तक सही हैं -

यहाँ शिक्षक मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा (हिन्दी भाषा) की ध्वनि व्यवस्था की तुलना करने के बाद मातृभाषा या द्वितीय भाषा में अनुपलब्ध ध्वनियों, उपलब्ध किन्तु विवरण की दृष्टि से भिन्न ध्वनियों के श्रवण का अभ्यास कराता है। यह अभ्यास एक-एक पाठ्य बिन्दु चयनकर किया जाता है न कि सभी ध्वनियों को एक साथ मिलाकर।

चयनात्मक श्रवण विकास के पाँच सोपान हैं -

१. **समस्यामूल्क ध्वनियों का श्रवण -**
दो भाषाओं के उच्चारण तथा वितरण की दृष्टि से समान ध्वनियों का उच्चारण करते छात्रों को श्रवण करा देता है।

२. **नवीन ध्वनियों का श्रवण -**
मातृभाषा में अनुपलब्ध तथा द्वितीय भाषा (हिन्दी भाषा) में उपलब्ध ध्वनियाँ द्वितीय भाषा के छात्र के लिए नवीन ध्वनियाँ कही जाती हैं। नवीन ध्वनियों को सुनते समय छात्र उन ध्वनियों से मिलती जुलती मातृभाषा की ध्वनियों के रूप में सुनता है।
शिक्षक नवीन ध्वनियों के कुछ शब्द का श्रवण कराकर, उनके उच्चारण अनुकरण कराकर यह पता लगाना कि छात्र नवीन ध्वनि को मातृभाषा की किस ध्वनि के रूप में सुन रहा है।

३. **अनुतान साँचों का श्रवण -**
अनुतान सांचों के वाक्यों में नवीन ध्वनियाँ, समस्यामूल्क ध्वनियाँ, विवृत्ति, अक्षर विभाजन, सुर, संधि सब का समाहार होता है।
शिक्षक दोनों भाषाओं में उपलब्ध (उच्चारण, वितरण) समान ध्वनियों के माध्यम से ही अनुतान साँचों के वाक्यों का निर्माण कर ले तो श्रवण कौशल के विकास में अवश्य सहयोग मिलने की संभावना है।
इन अनुतान साँचों में विभिन्न वाक्यों का श्रवण अभ्यास करा सकता है -
यह गुलाब है
क्या यह गुलाब है?
क्या यह भी गुलाब है?
क्या यह गुलाब नहीं है?

४. व्याकरणिक रूपों का श्रवण -

अधिकांश भाषाओं के बहुत से शब्द वाक्यों में अपने मूल रूप के परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होते हैं। इस रूप परिवर्तन के समय या तो शब्द के मूल रूप में कुछ नया अंश जुड़ जाता है या कुछ अंश छूट जाता है या ये दोनों ही बातें साथ साथ होती हैं। शब्द प्रयोग के समय होनेवाले इस परिवर्तन या रूपान्तरण को समझने के लिए छात्रों को विभिन्न व्याकरणिक कोटियाँ आदि के ऍसे कुछ शब्दों का शब्द युग्मों, वाक्यों में श्रवण अभ्यास कराया जाना श्रवण कौशल के विकास में उपयुक्त है। जैसे,

लिंग - कुत्ता - कुतिया

हाथी - हथिनी

वाक्यों में - कुत्ता भाग गया

कुतिया भाग गयी

हाथी दौड़ रहा है।

हाथिनी दौड़ रही है।

व्याकरणिक रूपों के चयनात्मक श्रवण - अभ्यास से छात्रों के मस्तिष्क पर शनैः-शनैः शब्दों की ध्वनि व्यवस्था तथा ध्वनि परिवर्तन से होनेवाले अर्थ भेद का अंकन होता जाएगा जिससे भाषण कौशल के अभ्यास के लिए ठोस आधार बनता जाएगा।

५. संदर्भ वाक्यों के श्रवण -

शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों के माध्यम से ध्वनियों, साँचों के अंतर का श्रवण - बोध कराते हुए वाक्यों द्वारा अर्थग्रहण करना सिखाया जाता है। इस अभ्यास में वाक्यों में प्रयुक्त ध्वनि, शब्द विशेष के प्रयोग की पहचान तथा वाक्यों के अर्थग्रहण का प्रयास किया जाता है। संदर्भ वाक्य का छात्रों को बार-बार सुनाए जाने से, वे कुछ शब्दों का ध्वन्यात्मक अंतर स्वतः ही पकड़ लेते जैं।

आपकी प्रगति की जाँच - २

नीचे दिये गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. श्रवण कौशल को विकसित करने की प्रक्रिया में कितने प्रमुख अंग हैं?

२. सामन्य श्रवण विकास के कितने आधार हैं?

३. चयनात्मक श्रवण विकास के कितने आधार हैं?

४. दो भाषाओं की कौनसी ध्वनियों का अनुतान साँचों में अभ्यास कराया जाता है?

५. औपचारिक शिक्षण के समय उपलब्ध वातावरण कौन-कौन से हैं?

२.१.३.३. श्रवण कौशल के विकास में ध्यान देने योग्य बातें

छात्रों, श्रवण कौशल के विकास में कुछ बातों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए जैसे -

- श्रवण के समय छात्र को शान्तचित्त होना चाहिए।
- श्रवण के समय छात्र को एकाग्र रहना है।

- अनौपचारिक श्रवण के पर्याप्त अवसर प्रदान करना।
- सार्थक शब्दों का श्रवण कराना।
- श्रवण के अंतर्गत - वाक्य के वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ का ग्रहण कराना।
- शिक्षक, छात्रों की आयु, बुद्धि, योग्यता के अनुसार श्रवण सामग्री का चयन कराना।
- श्रवण एक सोद्देश्य पूरित क्रिया है।
- श्रवण के दोषों का पता लगाकर समयानुसार क्रियाओं का आयोजन कराना है।
- श्रवण योग्यता को प्राथमिक स्तर से विकास करना है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

नीचे कुछ अपूर्ण वाक्य दिये गए है। सूची से सही उत्तर को चुनकर इन अपूर्ण वाक्य को पूरा कीजिए।

१. अनौपचारिक श्रवण के पर्याप्त ___ प्रदान किया जाए।
२. श्रवण एक _____ क्रिया है।
३. श्रवण योग्यता को _____ स्तर से विकास करना चाहिए।
४. श्रवण के समय छात्र का _____ रहना आवश्यक है।

(एकाग्र, प्राथमिक, सोद्देश्य पूरित, अवसर)

२.१.३.४. श्रवण कार्य का मूल्यांकन -

आइए श्रवण कौशल के मूल्यांकन के बारे में जानेंगे -

श्रवण कौशल विकास करने से पूर्व इनके शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण - अधिगम, -प्रक्रिया क्रियान्वित की जाती है। इसके फलस्वरूप छात्रों ने उन पूर्वनिर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक की हैं- इस की जानकारी के लिए मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन के लिए विभिन्न तकनीकों और साधनों की सहायता ली जाती है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण करते समय अध्यापक उनसे संबंधित विचार वस्तु की चर्चा छात्रों के सम्मुख करता है। छात्र उसे सुनकर समझते हैं या नहीं इसके लिए पाठ का सार, विषय वस्तु से संबंधित प्रश्न आदि पूछकर अर्थात् मौखिक परीक्षा द्वारा छात्रों के श्रवण कार्य / कौशल की जाँच कर सकता है।

किसी कहानी को सुनकर छात्रों को अपने शब्दों में कहने के लिए कहा जा सकता है। किसी विषय पर, संक्षिप्त भाषण देकर या कहानी सुनाकर उसे अपने शब्दों में लिखने को कहा जा सकता है। इसके लिए गृहकार्य के पर्यवेक्षण की सहायता ली जा सकती है। अगर छात्रों में श्रवण कौशल का काफी विकास हुआ है तो वे - आदर्शवाचन, आकाशवाणी, दूरदर्शन के प्रसारण को ध्यान पूर्वक सुनते हैं।

श्रुत सामग्री में प्रयुक्त ध्वनियों, शब्दों, मुहावरों, आदि को समझने का प्रयास करते हैं और उनका अर्थ समझते हैं।

छात्र अध्यापक के निर्देशों को समझकर उनका पालन करते हैं।

इस तरह श्रवण कार्य का मूल्यांकन किया जाता है और उद्देश्य की प्राप्ति का पता लगाया जाता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०४

नीचे दिए गए वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

1. अध्यापक पाठ की चर्चा करने के बाद उस पाठ का मूल्यांकन प्रश्नों द्वारा करता है।
2. अध्यापक कहानी सुनाकर छात्रों को अपने शब्दों में कहने तथा लिखने को बताता है।
3. उद्देश्यों की पूर्ति का पता लगाने के लिए मूल्यांकन किया जाता है।
4. मूल्यांकन में गृहकार्य की सहायता नहीं ली जा सकती है।
5. अगर छात्र में श्रवण कौशल का विकास हुआ है तो वह अध्यापक के निर्देशों को समझने में असफल हो जाता है।

२.१.४. सारांश -

आइए छात्रों, पूरी इकाई की ओर एक नज़र डालें -

कानों से कुछ भी सुनने और उसे समझने की चेष्टा को श्रवण कहा जाता है। श्रवण कौशल में श्रोता भाषा की ध्वनियों को सही रूप में सुनकर, अर्थ समझता है।

श्रवण कौशल एक सक्रिय तथा सोद्देश्य क्रिया है । श्रवण, भावग्रहण का मुख्य आधार है। इसकी नींव पर अन्य कौशलों की जानकारी प्राप्त होती है। श्रवण विकास से छात्र हिन्दी भाषा के शब्द, शब्द संरचना का स्मरण करेंगे।

श्रवण कौशल के उद्देश्यों के अंतर्गत छात्रों में भाषा की ध्वनियों को शुद्ध रूप से सुनने, समझने की योग्यता का विकास करना है। छात्रों में श्रवण के प्रति रुचि का सृजन करना है।

श्रवण कौशल की विधियों के अंतर्गत - श्रवण कौशल के दो प्रमुख अंग जैसे - सामान्य श्रवण तथा चयनात्मक श्रवण। सामान्य श्रवण का विकास पाँच आधारों पर और चयनात्मक श्रवण का विकास पाँच सोपानों द्वारा किया जाता है।

श्रवणकौशल के विकास में कुछ बातों को ध्यान देना है जैसे - छात्रों को सार्थक शब्दों का श्रवण कराना है। श्रवण के समय छात्र शांतचित्त और एकाग्र होना आवश्यक है।

श्रवण कार्य के मूल्यांकन को शिक्षक पाठ की चर्चा होने के बाद प्रश्नों द्वारा कर सकता है। छात्र उनके निर्देशन को समझकर पालन करें तो समझना है कि उनमें श्रवण कौशल का विकास हुआ है।

२.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१. गलत २. गलत ३. सही ४. गलत ५. सही

२.१. दो २. पाँच ३. पाँच ४. समान ध्वनियाँ

५. कक्षा के अंदर का वातावरण, कक्षा के बाहर का वातावरण

३. १-४, २-३, ३-२, ४-१

४.१. सही २. सही ३. सही ४. गलत ५.गलत

२.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. श्रवण कौशल से आप क्या समझते हैं? इसके उद्देश्य कौन कौन से हैं?

२. चयनात्मक श्रवण विकास के सोपानों का संक्षेप में वर्णन कीजिए ।

३. श्रवण कौशल विकास में ध्यान देने की बातें कौन कौन सी हैं?

२.१.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)

श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

२. भाषा१,२ की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ नियोजन

डा. ल़क्ष्मी नारायण शर्मा (२००९)

श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई २ : मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (भाषण कौशल)

इकाई की संरचना

२.२.१. सीखने के उद्देश्य

२.२.२. प्रस्तावना

२.२.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

२.२.३.१. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्व और उद्देश्य

आपकी प्रगति की जाँच – ०१

२.२.३.२. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की विधियाँ

आपकी प्रगति की जाँच – ०२

२.२.३.३. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल में ध्यान देने योग्य बातें और मौखिक कार्य का मूल्यांकन

आपकी प्रगति की जाँच –०३

२.२.४. सारांश

२.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

२.२.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

२.२.७. संदर्भ पुस्तकें

२.२.१. सीखने के उद्देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे –

- अभिव्यक्ति कौशल (भाषण कौशल) के महत्व का स्पष्टीकरण देंगे ।
- अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्यों को समझकर लिखेंगे ।
- अभिव्यक्ति कौशल की विधियों का वर्णन करेंगे ।
- अभिव्यक्ति कौशल में ध्यान देने योग्य बातों को सीखेंगे ।
- मौखिक कार्य का मूल्यांकन करेंगे ।

२.२.२. प्रस्तावना –

प्रिय छात्रों, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के बारे में विचार करेंगे –

भाषा ही विचारों की काया है । मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति मौखिक भाषा में ही करता है । इसे भाषण कौशल जिसको शिक्षण का चरम सोपन कहा जाता है ।

अभिव्यक्ति कौशल (भाषण कौशल) भाषा के चारों कौशलों में एक है । यह कौशल भाषा की अभिव्यक्ति पक्ष में है ।

अभिव्यक्ति कौशल का, श्रवण कौशल से अन्योन्याश्रित है । अर्थात् किसी भी भाषा को स्पष्ट रूप से सुनकर / ग्रहणकर सीख लेने पर ही उस भाषा का उच्चारण अभिव्यक्ति संभव है ।

भाषा के चारों कौशलों में भाषण / बोलना एक जटिल प्रक्रिया है । मौखिक भाषा ही भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व है ।

२.२.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

२.२.३.१. मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व –

छात्रों,

मौखिक अभिव्यक्ति के बारे में हम जानते हैं । मौखिक अभिव्यक्ति के अर्थ, उद्देश्य और महत्व के बारे में विचार करेंगे.

मौखिक अभिव्यक्ति (भाषण) का अर्थ –

भाषा विशेष में धारा प्रवाह बातचीत करना है जिससे अध्येता अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट रूप से बोल कर व्यक्त कर सके, जिन्हें दूसरे लोग सुनकर समझ सकें और उनका सही सही अर्थ ग्रहण कर सकें ।

मौखिक अभिव्यक्ति की प्रक्रिया में ये पक्ष रहते हैं –

१. संदर्भानुसार उपयुक्त शब्दों का चयन ।

२. एक सुनिश्चित, सुव्यवस्थित संरचना में उनका विकास।

३. विन्यासित शब्दों का उचित गति के साथ प्रवाहपूर्ण उच्चारण ।

मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व

अध्यापक को भाषण कौशल सिखाते समय – मौखिक अभिव्यक्ति के साथ साथ उच्चारण पक्ष पर भी ध्यान देना चाहिए ।

उच्चारण का अर्थ – ध्वानि के चिन्ह जब स्वरयंत्रों की सहायता से प्रकट होते हैं तब उसे उच्चारण कहते हैं । भाषा के बोलने में ध्वनियों को एक विशेष प्रकार से उत्पन्न करना ही उच्चारण है ।

(अ) उच्चारण का महत्व–

- स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए उच्चारण बहुत आवश्यक है ।
- शुद्ध उच्चारण ही भाषा विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण है ।
- शुद्ध उच्चारण से संप्रेषण में बोधगम्यता आती है ।
- शुद्ध उच्चारण से भाषा परिष्कृत होती है ।

(आ) मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व

छात्रों, आप मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व के बारे में जानते हैं । मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व के कुछ अंशों को बताइए, और नीचे के विचारों से मिलाइए –

मौखिक अभिव्यक्ति में मुख और कान का सीधा संपर्क स्थापित हो जाता है ।

- लेखक की अपेक्षा, वक्ता, व्यक्ति का ध्यान अधिक आकर्षित कर सकता है ।
- छात्र अपने सहपाठियों द्वारा दिए गए सुझावों से तत्काल लाभ उठा सकते हैं ।
- मौखिक अभिव्यक्ति विध्यालय में शिक्षण पद्धति को रोचक व प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण है ।
- मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण, अभ्यास के अवसर बराबर मिलते रहते हैं ।
- जनसामान्य के जीवन में ग्रहण के साथ अभिव्यक्ति भी आवश्यक है । वह सामाजिक संबंधों को सद्दृढ़ बनाती है ।
- मौखिक अभिव्यक्ति में अर्जित कुशलताएँ अन्य भाषाई कौशल के विकास में सहायक सिद्ध होती है।
- विध्यालयी पठ्यक्रम के सभी विषयों की शिक्षा में मौखिक भाषा ही प्रमुख माध्यम होती है।
- मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा विचारों का आदान– प्रदान कर नई बातों की जानकारी होती है और ज्ञान में वृद्धि होती है ।

अभ्यास –

इस अनुच्छेद को पढ़िए और संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

भाषा के चार कौशलों में भाषण / बोलना एक जटिल प्रक्रिया है । मौखिक भाषा ही भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व है । मौखिक अभिव्यक्ति के तीन पक्ष – उपयुक्त शब्द चयन, व्यवस्थित संरचना में उनका विकास और शब्दों का उचित गति के साथ उच्चारण । स्वर यंत्र की सहायता से प्रकट होनेवाला ध्वनि चिन्ह ही उच्चारण है । स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए उच्चारण बड़ा महत्वपूर्ण है । मौखिक अभिव्यक्ति, सामाजिक संबंधों को सदृढ बनाती है ।

१. भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व कौनसा है ?

२. मौखिक अभिव्यक्ति के कितने पक्ष हैं ?

३. उच्चारण किसे कहते हैं ?

४. चारों कौशलों में जटिल प्रक्रिया कौन सी है ?

मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य –

छात्रों, मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्यों की सूची बनाकर नीचे के अंशों से मिलाकर देखिए आप कहाँ तक सही हैं –

छात्रों में –

- शब्दकोश का विकास करना –
- इतनी क्षमता उत्पन्न कर देना कि उनसे जो पूछा जाए, उसका उत्तर वे शुद्ध तथा उचित एवं पूर्ण वाक्यों में दे सकें ।
- उच्चारण को शुद्ध, परिमार्जित करना ।
- अपने मनोभावों को सरलता, स्पष्टता से दूसरों के सामने प्रकट करने के योग्य बनाना ।
- अपरिचित व्यक्ति के सामने भी मधुर / संयत भाषा में वार्तालाप करने के योग्य बनाना ।
- स्वाभाविक ढंग से परस्पर वार्तालाप करने की आदत को विकसित करना ।
- धाराप्रवाह, प्रभावोत्पादक वाणी में बोलना सिखाना ।
- उचित समय पर उचित शब्दों का प्रयोग कर बोलने का अभ्यास कराना ।
- संकोच, झिझक, आत्महीनता की भावना को दूर करना ।

आपकी प्रगति की जाँच –०१

निम्नाकिंत अंशों को जोड़िए –

१. शुद्ध उच्चारण	१. अनुकरण, अभ्यास के लिए
२. उच्चारण	२. छात्र के संकोच, झिझक आत्महीनता को दूर करना ।
३. अध्यापक को भाषण कौशल सिखाते समय	३. भाषा विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण है ।
४. मौखिक अभिव्यक्ति में बराबर के अवसर मिलते हैं	४.ध्वनि चिन्ह,स्वरयंत्रों की सहायता से प्रकट होना है ।
५. मौखिक अभिव्यक्ति का उद्देश्य	५. **मौखिक अभिव्यक्ति और उच्चारण पक्ष पर बल देना चाहिए।**

२.२.३.२. मौखिक अभिव्यक्ति की विधियाँ ।

छात्रों, मौखिक अभिव्यक्ति के अंग और विधियों के बारे में जानेंगे ।

मौखिक अभिव्यक्ति एक समन्वित कौशल है जो ध्वनि, बलाघात, विवृत्ति, अनुतान को साथ लेकर भाषा की शाब्दी, व्याकरणिक तथा आर्थी संरचनाओं में कथ्य को प्रकट करता है ।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से मौखिक अभिव्यक्ति के तीन अंग हैं –

१. शाब्दी संरचना –

विविध प्रकार के शब्दों के ज्ञान के साथ शब्द संरचना से भी परिचित किया जाता है ।

२. व्याकरणिक संरचना –

यह संरचना मौखिक अभिव्यक्ति का आधार है । यहाँ भाषिक इकाइयाँ निश्चित क्रम और श्रृंखला में वाक्य का रूप धारण करती है । व्याकरणिक संरचना–भाषिक इकाइयों का चयनीकृत सुनियोजित

श्रृंखला बद्ध रूप है । यहाँ लिंग, वचन, पुरूष, कारक आदि को व्याकरणिक नियमों के रूप में न सिखाकर उसके व्यावहारिक साँचों के रूप में सिखाना है ।

३. आर्थी संरचना –

शब्द अभिज्ञान के साथ उसके अर्थों का अभिज्ञान भी होता जाता है ।

अभ्यास –

देखें कि आप मौखिक अभिव्यक्ति के अंगों के बारे में क्या जानते हैं –

इन अपूर्ण वाक्यो को पूर्ण कीजिए –

मौखिक अभिव्यक्ति एक ..... कौशल है । मौखिक अभिव्यक्ति के ..... अंग है । शाब्दी संरचना में शब्द के साथ ..... से परिचय किया जाता है । मौखिक अभिव्यक्ति का आधार ..... संरचना है । आर्थी संरचना में शब्द अभिज्ञान के साथ ..... भी होता है ।

मौखिक अभिव्यक्ति की विधियाँ

छात्रों, मौखिक अभिव्यक्ति की विधियों की सूची बनाइए –

छात्र का उत्तर – चित्रवर्णन, कहानी विधि ।

आइए, उपरोक्त विधि के साथ साथ अन्य उपयुक्त विधियों की चर्चा करेंगे –

मौखिक भाषा के बिना सीखना और सिखाना दोनों ही असंभव है । प्रारंभिक स्तर से ही मौखिक भाषा की शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है ताकि उच्च कक्षा तक पहुँचते पहुँचते उनकी अभिव्यक्ति में शुद्धता, स्पष्टता, सुबोधता, प्रवाहिकता, स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता, पूरी तरह से विकसित हो जाए, इसके लिए शिक्षक द्वारा निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जा सकता है _

१. वार्तालाप –

पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य अवसरों पर छात्रों के साथ शिक्षक को वार्तालाप करना चाहिए । प्रत्येक छात्र को वार्तालाप में भाग लेने प्रेरित करना चाहिए । वार्तालाप का विषय छात्रों के ज्ञान व अनुभव की परिधि के भीतर का होना चाहिए । यदि छात्र जिज्ञासावश प्रश्न पूछे तो उसका उत्तर देना चाहिए ।

२. सस्वरवाचन –

पाठ्य पुस्तक का पाठ पढ़ाते समय पहले शिक्षक को स्वयं चयनित अनुच्छेद का वाचन करना चाहिए । फिर कक्षा के छात्रों से सस्वरवाचन कराना चाहिए , जिससे छात्रों का मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी संकोच दूर होता है ।

३. **प्रश्नोत्तर** –

सामान्य विषय पर पाठ्यपुस्तक से संबंधित पाठों पर छात्रों से प्रश्न पूछने चाहिए ; छात्र से पूर्ण वाक्य में ही उत्तर स्वीकार करना चाहिए । यदि उत्तर अपूर्ण या अशुद्ध होतो उसे पूर्ण व शुद्ध कराया जाए ।

४. चित्र वर्णन –

किसी चित्र को दिखाकर उस पर प्रश्न पूछकर बच्चों से चित्र वर्णन कराना चाहिए। चित्र के द्वारा कहानी कही जा सकती है । मौखिक अभिव्यक्ति के लिए चित्रवर्ण्न एक रोचक विधि है ।

५. कहानी सुनाना व सुनना –

अध्यापक को पहले स्वयं कहानी सुनाना चाहिए फिर छात्रों से उसी कहानी को सुनने के लिए कहना चाहिए, इससे श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल दोनों को विकसित करने में सहायता मिलती है ।

६. कविता पाठ –

कविताएँ कंठस्थ कराके छात्रोंको कविता पाठ के लिए प्रेरित करना चाहिए । उचित हावभाव व अंग संचालन के साथ कविता पाठ करने में उन्हें बहुत आनंद का अनुभव होता है ।

७. अंत्याक्षरी प्रतियोगिता–

इस साहित्यिक क्रिया में छात्र कविताओं को कंठस्थ करते हैं। प्रतियोगिता के समय पहले दल के छात्र द्वारा कही गई कविता जिस वर्ण से खत्म होती है, उसी वर्ण से शुरू होनेवाली कविता सुनाते हैं इससे छात्रों में कविता के प्रति रुचि जाग्रत होती है और मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास भी होता है ।

८. पाठ का सार –

पाठ्य पुस्तक या अन्य किसी पत्रिका का कोई पाठ या रचना पढ़कर उसका सार बताने के लिए कहा जाता है । छात्र रचना की मुख्य मुख्य बातें संक्षेप में व्यक्त करते हैं ।

९. स्वतंत्र आत्मप्रकाशन का अवसर–

छात्रों को भी समय समय पर विभिन्न प्रकार के अनुभव होते रहते हैं । विभिन्न घटनाओं, दृश्यों या व्यक्तिगत जीवन से संबंधित इन अनुभवों को सुनाने के लिए अवसर देकर भी शिक्षक मौखिक भाषा का अभ्यास कर सकता है ।

१०. उपयुक्त वातावरण –

परिवार ही मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण की प्रथम पाठ शाला है । बच्चा परिवार में व्यवहार की गई भाषा को सुनता है । अप्रत्यक्ष रूप से इन सभी व्यक्तियों से कुछ न कुछ बोलना सीखता है । प्रारंभ में अस्पष्टता धीरे धीरे स्पष्ट होने लगती है । कुछ समय बाद उच्चारण भी शुद्ध होने लगता है । अभिव्यक्ति के अभ्यास की दृष्टि से उपयुक्त भाषा वातावरण का निर्माण करना बहुत आवश्यक है।

ऐसे ही पाठशाला का अप्राकृतिक वातावरण भय, संकोच, छात्र के स्वतंत्र वार्तालाप में बाधक होते हैं अतः शिक्षक को धैर्य पूर्वक बच्चों के संकोच को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रारंभ में अशुद्धता की ओर ध्यान न देकर प्रवाह के साथ आत्मप्रकाशन करने का प्रोत्साहन देना चाहिए ।

ऐसे ही शिक्षक को मौखिक अभिव्भक्ति की विधियों में वादविवाद, भाषण, नाटक मंचन आदि को भी ध्यान में रखना आवश्यक है ।

आपकी प्रगति की जाँच – ०२

रिक्त स्थान की पूर्ति, सही उत्तर चुनकर कीजिए ।

१. मौखिक अभिव्यक्ति एक ..... कौशल है ।
२. भाषा शिक्षण की दृष्टि से मौखिक अभिव्यक्ति के ..... अंग है ।
३. मौखिक अभिव्यक्ति विकास करने की विधियों में एक विधि ..... है ।
४. मौखिक अभिव्यक्ति के लिए ..... एक रोचक विधि है ।
५. श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल दोनों का विकास..... विधि की सहायता से होती है ।

[कहानी सुनाना व सुनना, वार्तालाप, चित्रवर्णन, तीन, समन्वित]

२.२.३.३. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल में ध्यान देने योग्य बातें –

छात्रों, मौखिक अभिव्यक्ति कराते समय शिक्षक को निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए –

- उच्चारण के अभ्यास के लिए अथवा त्रुटियों को ठीक करने के लिये स्वरयंत्रों की सहायता ली जाय।
- छात्र यदि प्राकृतिक कारण से उच्चारण नहीं कर पाता तो डाक्टर की सहायता ली जाय ।
- मनोवैज्ञानिक कारण जैसे भय से छात्र शुद्ध बोलने में हिचकाना, हकलाना शुरू कर देता है तो छात्र के भय की भावना को निकालकर, अभ्यास के द्वारा कठिनाई दूर की जाय।
- शिक्षक बोलने का आदर्श उपास्थित करे ।

- बोलने में कठिनाई अनुभव करनेवाले छात्र को अधिक से अधिक बोलने और पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए ।
- प्रश्नों के उत्तर पूर्ण हों जिससे बालकों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर मिले ।
- बोलते समय सस्वरता, भावानुकूल वाणी के उतार चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए ।
- भाषा प्रान्तीयता और व्याकरण दोषों से रहित हो ।
- भूल सुधार का काम सावधानी से करना चाहिए ।

यदि अभ्यास उचित समय पर दिए गए हैं तो अशुद्धियाँ बहुत न होंगी ।

अशुद्धियों को माता–पिता, संरक्षक, शिक्षक के सहयोग और प्रत्यनों से दूर किया जा सकता है ।

परीक्षा :

इन कथनों को पढ़कर अपना अभिमत, सहमत / असहमत के रूप में दीजिए –

		सहमत	**असहमत**
१	बोलने में कठिनाई का अनुभव करने वाले छात्र को अधिक बोलने / पढ़ने का अवसर नहीं देना चाहिए ।		
२	अभिव्यक्ति के संदर्भ में भय से शुद्ध बोलने में हकलाना, हिचकाना मनोवैज्ञानिक कारण नहीं है ।		
३	प्रश्न का उत्तर पूर्ण रूप से देने के लिए छात्रों को प्रेरित करना है ।		
४	अशुद्धियों को कम करने के लिए, अभ्यास को उचित समय पर कराना है ।		
५	परिवार ही मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण का प्रथम पाठशाला है ।		
६	छात्र जिज्ञासायुक्त प्रश्न पूछे तो उसका उत्तर देना ज़रुरी नहीं है ।		

(**उत्तर :** १. असहमत २. असहमत ३. सहमत ४. सहमत ५. सहमत ६. असहमत)

मौखिक कार्य का मूल्यांकन –

इस इकाई के अंत में मौखिक कार्य के मूल्यांकन के बारे में जानेंगे –

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में शुद्ध उच्चारण का महत्वपूर्ण स्थान है ।

उच्चारण कौशल की जाँच के लिए मौखिक परीक्षा ही सर्वोत्तम विधि है ।

शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण करने के लिए कहा जा सकता है । पाठ्यपुस्तक का कोई परिच्छेद पढ़वाकर और सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछकर उच्चारण कौशल का मूल्यांकन किया जा सकता है ।

छात्रों में अपने भावों विचारों एवं अनुभवों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की योग्यता, का विकास करना भाषा की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है । छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास किस स्तर तक हुआ है, इस बात की जाँच मौखिक परीक्षा एवं प्रायोगिक परीक्षा के द्वारा की जा सकती है । पठित विषय वस्तु पर प्रश्न पूछकर उनके उत्तर देने के ढंग से कहानी आदि सुनाने के ढंग से, विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं जैसे – भाषण, वाद–विवाद, नाटक, कविता पाठ आदि में छात्र की सहभागिता के स्तर आदि की जाँच करके इस बात का पता लगाया जा सकता है कि छात्र मौखिक रूप से अपने विचारों को किस तरह व्यक्त करता है ।

छात्रों से साक्षात्कार करने से भी मौखिक अभिव्यक्ति कौश्ल की जाँच की जा सकती है ।

कुछ विशिष्ट लक्षण और व्यावहारगत परिवर्तन से भी मौखिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जा सकता है –

जैसे, –

- छात्र के बोलने में प्रवाह है ।
- छात्र प्रसंग तथा विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग करता है ।
- छात्र सुश्रव्य वाणी में आत्मप्रकाशन करता है ।
- वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों, उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकता है ।
- पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मौखिक अभिव्यक्ति करता है ।
- अभिव्यक्ति में औचित्य, संक्षिप्तता एवं सार्थकता का ध्यान रखता है ।

आपकी प्रगति की जाँच – ०३

१. प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. छात्र की भूल सुधार का काम अध्यापक को कैसे करना चाहिए ?

२. छात्र की मौखिक अभिव्यक्ति की अशुद्धियों को किनके सहयोग और प्रयत्न के द्वारा किया जा सकता है ?

२. इन वाक्यों में सही या गलत को पहचाहिए –

१. सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछकर उच्चारण कौशल का मूल्यांकन कर सकते हैं ।

२. साक्षात्कार से मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच नहीं की जा सकती है ।

३. मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच मौखिक परीक्षा एवं प्रयोगिक परीक्षा के द्वार की जा सकती है ।

२.२.४. सारांश –

छात्रों, हम इस इकाई में मौखिक अभिव्यक्ति के बारे में काफी जानकारी प्राप्त किये हैं ।

मौखिक भाषा ही भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व है । मौखिक अभिव्यक्ति में उच्चारण का महत्व पूर्ण स्थान है । भाषा विशेष में धारा प्रवाह बातचीत करना ही मौखिक अभिव्यक्ति है ।

मौखिक अभिव्यक्ति में मुख और कान का सीधा संपर्क रहता है । इसके द्वारा विचारों का आदान–प्रदान कर नई बात की जानकारी होती है ।

मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य हैं जैसे – छात्रों में शब्दकोश का विकास करना । धारा प्रवाह रूप से बोलना सिखाना । मौखिक अभिव्यक्ति के विकास की विधियाँ हैं – वार्तालाप, चित्रवर्णन, कहानी सुनाना व सुनना, कविता पाठ आदि ।

मौखिक अभिव्यक्ति विकास में शिक्षक को कुछ योग्य बातें ध्यान में रखना जैसे – भूल सुधार सावधानी से करें । शिक्षक स्वयं बोलने का आदर्श प्रस्तुत करें ।

मौखिक परीक्षा, प्रायोगिक परीक्षा, प्रश्नोत्तर, कहानी सुनाने द्वारा मौखिक कार्य का मूल्यांकन किया जाता है ।

२.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर –

१. १–३, २–४, ३–५, ४–१, ५–२.

२. १. समन्वित २. तीन, ३. वार्तालाप, ४. चित्रवर्णन, ५. कहानी सुनाना व सुनना

३. १. सावधानी से २. माता–पिता, संरक्षक, शिक्षक ३. १. सही २. गलत ३. सही

२.२.६ इकाई समाप्ति का अभ्यास –

प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. मौखिक अभिव्यक्ति की विधियों के बारे में प्रकाश डालिए ।

२. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य लिखिए ।

३. मौखिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं?

२.२.७ संदर्भ पुस्तकें –

१. नूतन हिन्दी शिक्षण

के. आय सत्तिगेरी (१९९७),

संपादक – श्रीमती विजया के सत्तिगेरी, बेंलगाँव

२. हिन्दी शिक्षण

डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१),

आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

३. हिन्दी भाषा शिक्षण

डा. उमा मंगल (२००६),

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

४. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई भोगेन्द्रजीत (२०१२), श्रि विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

5. Content cum methodology of English Teaching
Dr.Chaya A.Heblikar (2009)
Sapna Book House, Bangalore.

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई ३ : वाचन कौशल

इकाई की संरचना

२.३.१. सीखने के उद्देश्य

२.३.२. प्रस्तावना

२.३.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

२.३.३.१. वाचन कौशल का महत्व और उद्देश्य

आपकी प्रगति की जाँच – ०१

२.३.३.२. वाचन कौशल के प्रकार

आपकी प्रगति की जाँच – ०२

२.३.३.३. वाचन कौशल की विधियाँ

आपकी प्रगति की जाँच – ०३

२.३.३.४. वाचन संबंधी त्रुटियाँ और उनके सुधार

आपकी प्रगति की जाँच – ०४

२.३.३.५. वाचन कार्य का मूल्यांकन

आपकी प्रगति की जाँच – ०५

२.३.४. सारांश

२.३.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

२.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

२.३.७. संदर्भ पुस्तकें

२.३.१. सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत छात्र इन अंशों के योग्य होंगे –

- वाचन कौशल के उद्देश्यों को स्पष्ट लिखेंगे ।
- वाचन कौशल के महत्व को पहचानेंगे ।
- वाचन कौशल के प्रकार का वर्णन करेंगे ।
- वाचन कौशल की विधियों का विश्लेषण करेंगे ।
- वाचन संबंधी त्रुटियाँ और उनके सुधार की चर्चा करेंगे ।
- वाचन कार्य का मूल्यांकन करेंगे ।

२.३.२. प्रस्तावना –

प्रिय छात्रों,

भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । साहित्य में पाठ्यवस्तु और भाषा में संप्रेषण कुशलता निहित होती है ।

छात्रों, आप भाषाई कौशलों के बारे में जानते हैं । वाचन, लेखन और श्रवण, भाषण इन कौशलों का क्रम बताइए ।

आप नीचे के उत्तर से सहमत होंगे ।

भाषा अधिगम में वाचन तथा लेखन सीखना होता है । वाचन तथा लिखने के कौश्लों में पाठ्यवस्तु का और संप्रेषण का क्रम एक सा होता है । इसी प्रकार सुनने तथा पढ़ने में कौशलों का क्रम विपरीत होता है । अंतःक्रिया में वाचन तथा सुनने के कौशलों का संपादन एक साथ किया जाता है और लिखने तथा पढ़ने को एक साथ प्रयुक्त करते हैं । भाषण और लेखन अभिव्यक्ति प्रधान कौशल है । वाचन एक लेखक का प्रमुख कौशल है। शिक्षण में इन कौशलों के के जोड़े का संपादन स्वाभाविक है।

वाचन एक कला है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वाचन की आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सुसंस्कृत एवं मधुर वाणी है।

२.३.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ –

२.३.३.१ वाचन कौशल का महत्व और उद्देश्य ट्ट

छात्रों, वाचन कौशल का महत्व और उद्देश्य के बारे में जानेंगे ।

मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को बोल कर अथवा लिखकर व्यक्त करता है।

वाचन शब्द का अर्थ

भाषा को उसके लिखित रूप के आधार पर ग्रहण करना है । लिपि संकेतों / वर्णों का संबद्ध ध्वनियों के सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया को वाचन कहा जाता है। वाचन के मूल में अर्थ ग्रहण की आवश्यकता छिपी रहती है। वाचन में शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्व होता है।

कैथरीन ओकानर के अनुसार –

" वाचन वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्ष से संबंध होता है" ।

वाचन कौशल के महत्व ---

छात्रों, वाचन कौशल के महत्व इस प्रकार हैं ।

- वाचन की क्रिया स्वाभाविक है और प्रकृति प्रदत्त शक्ति है।

- वाचन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्व है। बिना वाचन के मनुष्य पशु के समान है। वाचन में ध्वनियों को प्रधानता दी जाती है ।
- वाचन व्यक्तित्व के विकास का श्रेष्ठतम साधनों में से एक है। आत्म प्रकाशन मनुष्य की प्रमुख आवश्यकता है। अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति से संतुष्टि मिलती है।
- दिन प्रतिदिन के जीवन निर्वाह में, व्यवहार में वाचन का विशेष महत्व है। मधुर वाचन से मानव सामाजिक क्षेत्र में स्थान बनाता है।
- लेखन की अपेक्षा वाचन अधिक प्रयुक्त किया जाता है।
- लिखित भाषा को सीखने के लिए वाचन का विशेष महत्व है, बिना वाचन के भाषा ज्ञान अधूरा माना जाता है।
- शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी शिक्षण स्तरों पर वाचन के माध्यम से किया जाता है।
- वाचन, भाषा शिक्षा की आधार शिला है।

अभ्यास –

आइए देखेंगे आप वाचन कौशल के महत्व के बारे में क्या जानते हैं –

इन कथनों को पूरा कीजिए ।

वाचन के मूल में ..... की आवश्यकता छिपी रहती है । वाचन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्व है । बिना वाचन के मनुष्य ..... के समान है । मानव सामाजिक क्षेत्र में ..... से स्थान बनाता है । बिना वाचन के ..... ज्ञान अधूरा माना जाता है । वाचन ..... की आधार शिला है ।

वाचन कौशल के उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

छात्रों में,

- शब्द, ध्वनियों, उच्चारण का उचित परिचय कराना ।
- शुद्ध भाषा प्रयोग की दक्षता का विकास कराना ।
- बिना झिझक के बोलने की प्रवृत्ति का विकास कराना ।
- वाचन में स्वराघात, अनुतान, स्वर गति का सही प्रयोग कराना ।
- स्वाभाविक भाषा का प्रयोग कराना ।
- व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाचन कराना ।
- शब्द / वाक्यों की अर्थ व्यवस्था का ग्रहण कराना ।
- वाक्य–अर्थ की समाहारात्मक विचारयुक्त व्यवस्था का बोध कराना ।

आपकी प्रगति की जाँच ०१

नीचे लिखे कथनों में सही / गलत वाक्य को पहचानिए –

१. वाचन में शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्व होता है ।

२. शुद्द भाषा प्रयोग की दक्षता का विकास करना वाचन का उद्देश नहीं है ।

३. वाचन कौशल भाषाई कौशलों में एक है।

४. स्वराघात, अनुतान, स्वर गति का सही प्रयोग कराना वाचन का उद्देश्य नहीं है।

२.३.३.२. वाचन कौशल के प्रकार

आइए, वाचन कौशल के प्रकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

तीन आधार पर वाचन कौशल के प्रकार का विभाजन किया जाता है।

१. सस्वरता या मुखरता के आधार पर वाचन के दो प्रकार हैं –

१. सस्वर वाचन

२. मौन वाचन

सस्वर वाचन

सस्वर वाचन स्वर सहित वाचन है। इसमें छात्र पढ़ने के साथ साथ बोलता भी जाता है । इसमें चार क्रियाएँ सम्मिलित हैं –

- लिपि बद्ध अक्षरों को देखना ।
- अक्षरों को पहचानना ।
- शब्दों को समझना एवं उच्चारण करना ।
- शब्द तथा वाक्यों का अर्थ ग्रहण करना ।

सस्वर वाचन के प्रकार

वाचक कुशलता के आधार पर सस्वर वाचन के दो भेद हैं –

१. आदर्श वाचन –

यह अध्यापक द्वारा छात्रों के सम्मुख किया जाता है। आदर्श वाचन का उद्देश्य छात्रों को वाचन का मानदंड प्रस्तुत करना । छात्रोंको उचित उच्चारण, गति, लय, विराम, स्पष्टता आदि को ध्यान में रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा देना ।

२. अनुकरण वाचन

छात्र, अध्यापक के आदर्श वाचन का अनुकरण वाचन करने का प्रयत्न करते हैं। यहाँ छात्र शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करते हैं और भाव के अनुसार वाचन की क्षमता अपनाते हैं।

वाचक संख्या के अनुसार सस्वर वाचन के दो प्रकार हैं ।

१. वैयक्तिक वाचन (व्यक्तिगत)

एक ही व्यक्ति वाचन करता है। अध्यापक के आदर्श वाचन के बाद यह वाचन किया जाता है।

२. सामूहिक वाचन

इसका प्रयोग प्रारंभिक कक्षा में अधिक है। एक से अधिक छात्र मिलकर वाचन करते हैं। इससे वाचन करने में झिझक दूर हो जाती है।

मौन वाचन

सस्वर वाचन पर अच्छा अधिकार हो जाने के बाद ही छात्र को मौन वाचन की ओर उन्मुख करना चाहिए । चुपचाप पढ़ते हुए अधिक से अधिक अर्थ ग्रहण किया जा सकता है । छात्र कम समय में अधिक सामग्री अपनाते हैं । शब्दकोश का विकास होता है। छात्र की मनन, तार्किक शक्ति का विकास होता है। पढ़ने की शीघ्रता बढ़ती है। स्वाध्याय की आदत बढ़ती है। छात्र कम थकावट का अनुभव करते हैं।

२. भाव ग्रहण के आधार पर वाचन के दो प्रकार है–

१. गहन / समीक्षात्मक वाचन

विषय वस्तु को गहराई के साथ पढ़ना है । विषय वस्तु में निहित ज्ञान के विभिन्न बिंदुओं को अच्छी तरह समझना है ।

२. विस्तृत वाचन

कक्षा के बाहर अध्येता की अभिरुचि उद्देश्य के अनुरूप किंतु युक्त पाठ्यसामग्री का वाचन किया जाता है। इसका उद्देश्य विशेष रूप से मनोरंजन की प्राप्ति है। इसके अंतर्गत पत्र– पत्रिकाएँ, समाचार पत्र को पढ़ाया जाता है।

३. वाचन गति के आधार पर, वाचन के तीन भेद हैं –

१. मंद वाचन

छात्र धीरे–धीरे रुक रुक कर पढ़ता है। उच्चारण, वाक्य अनुतान, वाक्य भाव विचारों को समझने की असमर्थता में वाचन गति मंद रहती है।

२. सामान्य वाचन

वाचन की गति सामान्य रहती है न अधिक तेज होती है न अधिक मंद । धीरे धीरे अभ्यास से वाचन की गति सामान्य हो जाती है।

३. द्रुत वाचन

अधिक गति के साथ वाचन करते हुए विषय वस्तु को समझना है इसके लिए यथोचित स्मृतिव्याप्ति, दृष्टिव्याप्ति का होना आवश्यक है।

वाचन विकास के स्तर –

छात्रों, वाचन विकास के मुख्य तीन स्तर हैं –

१. प्राथमिक स्तर

सस्वर वाचन का ही शिक्षण दिया जाता है।

२. माध्यमिक स्तर

सस्वर वाचन के साथ साथ मौनवाचन की ओर छात्रों को उन्मुख किया जाता है।

३. उच्चस्तर –

गहन वाचन को प्रोत्साहन दिया जाता है ।

अपकी प्रगति की जाँच – ०२

इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. वाचन कौशल के प्रकार के विभाजन के कितने आधार हैं ?

२. सस्वरता के आधार पर वाचन के भेद कौन से हैं ?

३. वाचक कुशलता के आधार पर सस्वर वाचन के भेद कौन से हैं ?

४. भावग्रहण के आधार पर वाचन के भेद कितने हैं ?

५. वाचन गति के आधार पर वाचन के भेद कौन कौन से हैं ?

२.३.३.३. वाचन कौशल शिक्षण की विधियाँ –

छात्रों, वाचन कौशल शिक्षण की कई विधियाँ है । आप इन विधियों के बारे में सोचिए और कुछ विधियों की सूची बनाइए –

छात्रों का उत्तर – देखो कहो विधि

– ध्वनि साम्य विधि

ठीक है अब हम इन विधियों के साथ अन्य प्रचलित विधियों की चर्चा करेंगे ।

१. देखो और कहो विधि –

इस विधि में चित्र, कभी कभी बिना चित्र की सहायता से शब्द का बोध कराया जाता है ।

प्रारंभ में शब्दों का परिचय कराया जाता है । वही शब्द लिए जाते, जो बालक की अनुभव परिधि के भीतर हों । छात्रों का शब्द ज्ञान सीमित रह जाने की दृष्टि से यह विधि उपयोगी नहीं है।

२. वर्तनी बोध विधि / अक्षर बोध विधि –

यह बहुत ही पुरानी विधि है । छात्रों को वर्णमाला के एक–एक वर्ण का बोध कराते हुए उनके संयोजन से बने शब्द / शब्दों का वाचन करना सिखाया जाता है ।

जैसे ब, र, ग, द = बरगद; गाय = गा ढ्

लेकिन वर्णमाला सीखने में बहुत समय लगता है ।

३. ध्वनि साम्य विधि –

एक / दो स्वरों से युक्त, एक या दो समान व्यंजनवाले शब्दों का वाचन कराना सिखाया जाता हैं ।

जैसे – कल, बल, चल

– धर्म, मर्म

४. अनुकरण विधि

इस विधि का प्रयोग विशेष रूप से ऐसे शब्दों का वाचन सिखाने के लिए किया जाता है, जिनके लिखित और उच्चरित रूप में काफी अंतर होता है, यहाँ अध्यापक से एक एक शब्द कहा जाता है और छात्र उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करते हैं ।

यथा – ज्ञान, ज्ञात,

– संसार, संहार

५. उपकरण विधि / भाषा शिक्षा यंत्र विधि –

यहाँ ग्रामोफोन, रिकार्ड में भरी आवाज़ को सुनते हुए चित्र विस्तारक के माध्यम से पर्दे पर या पुस्तक में देखते हुए लिखित सामग्री का अनुकरण वाचन किया जाता है । यह विधि काफी रोचक है, किन्तु पर्याप्त व्यय साद्य है । इस विधि से भाषा प्रयोगालय में वाचन, शब्दों के शुद्ध उच्चारण का विकास किया जाता है ।

परीक्षा :

इन कथनों को पढकर अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए :

१. अनुकरण विधि में छात्र शिक्षक द्वारा कथित शब्द की ध्वनि का अनुकरण करते हैं ।

२. 'देखो और कहो' विधि के प्रारंभ में अक्षर का परिचय कराया जाता है ।

३. 'वर्तनी बोध' विधि में वर्ण का बोध कराते हुए शब्द का वाचन सिखाया जाता है ।

४. ध्वनि साम्य विधि में किसी स्वर / व्यंजन के शब्दों का वाचन सिखाया जाता है ।

५. भाषा शिक्षा यंत्र विधि में वाचन का अनुकरण कराने विविध उपकरण का प्रयोग किया जाता है ।

(**उत्तर –** १. सहमत २. असहमत ३. सहमत ४. असहमत ५. सहमत)

छात्रों, आइए कुछ और विधियों का विचार करेंगे –

६. साहचार्य विधि –

इस विधि का आविष्कार श्रीमती मान्तेसरी ने किया था, इस में चित्रों, पदार्थों, नमूनों से संबंधित शब्द कार्डों को खोजकर छोटे छोटे बच्चे उन कार्डों को, संबंधित चित्रों, पदार्थों, नमूनों

के पास रखते है । छोटे बच्चों के लिए यह विधि रोचक और आनंदप्रद है । इस विधि का उपयोग केवल छोटी कक्षाओं तक ही सीमित रह जाता है ।

७. सामूहिक पाठन विधि –

अध्यापक छात्रों को एक समूह / पूरी कक्षा को, छोटे छोटे पद / गीत सुनाता है ।

जैसे – डुग डुग करता आया

बंदरवाला बंदर लाया ।

छात्र, अध्यापक का अनुसरण करते हैं । छात्रों का उच्चारण सुधारा जा सकता है तथा हाव भाव द्वारा वाचन भी सीख सकते हैं ।

८. वाक्य शिक्षण विधि –

यह विधि इस सिद्धान्त पर आधारित है कि – बालक जब पुस्तक पढ़ने लगते हैं तो उनकी दृष्टि पहले पूरे वाक्य पर पड़ती हैं, बाद में धीरे धीरे शब्दों पर जाती हैं । इसलिए शब्दों की अपेक्षा पूरे वाक्य को ही बार बार देखकर पहचान लेना अधिक सरल होगा ।

उदा – अनार मीठा है

मीठा है अनार

है मीठा अनार

बच्चे इन वाक्यों को देखेंगे, उच्चारण करेंगे, सुनेंगे । इस प्रकार भिन्न भिन्न स्थानों पर वे इन शब्दों को पहचानने में समर्थ हो जायेंगे ।

९. कहानी विधि –

यह विधि वाक्य शिक्षण पद्धति का एक परिवर्तित रूप है । कई वाक्य, कई चित्र जो किसी कहानी से संबंधित लिए जाते हैं । चित्रों के नीचे एक–एक वाक्य लिखा होता है । कई चित्र मिलाकर एक कहानी का सृजन करते हैं । चित्रों के नीचे के वाक्यों के अक्षर बड़े बड़े होते हैं, जिन्हें छात्र सुगमतापूर्वक ग्रहण कर सकते हैं । कहानी को सुनने के बाद छात्र उसमें प्रयुक्त वाक्यों से परिचय प्राप्त करते हैं । वाक्यों से परिचय हो जाने पर बालक शब्दों को भी समझने लगते हैं, कई बार कहानी से संबांधित वाक्य श्यामपट पर लिख दिए जाते हैं ।

कहानी को छात्र घर में सुनते और उसमे रुचि भी लेते हैं । पाठशाला में भी कहानी पद्धति द्वारा वाचन की शिक्षा दी जाए हो तो वे पढ़ने में जल्दि प्रगाति करेंगे । इस पद्धति से छात्रों को बिना रुके एक प्रवाह से पढ़ना संभव है । कहानी में परिचित शब्दों का प्रयोग हो । यह विधि मौनवाचन में भी सहायक है ।

वाचन संबंधी भिन्न भिन्न विधियाँ होने पर भी सभी विधियों का यथायोग्य व्यवहार किया जाये । **श्री मेन्जिल के अनुसार –** माध्यमिक शिक्षा के लिए स्वरोच्चार तथा वर्णोंच्चार पद्धतियों का ही प्रयोग करना चाहिए ।

छोटे छोटे बालकों को पढ़ना सिखाने के लिए ध्वन्यात्मक विधि, वाक्य शिक्षण विधि तथा कहानी विधि – इन सभी का सम्मिश्रण करना होगा ।

आपकी प्रगति की जाँच – ०३

सही शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

१. साहचर्य विधि का आविष्कार ..... ने किया था ।

२. वाक्य शिक्षण विधि में शब्द की अपेक्षा ..... के उच्चारण पर बल दिया जाता है ।

३. कहानी विधि ..... विधि का परिवर्तित रूप है ।

४. मौन वाचन में ..... विधि सहायक है ।

५. माध्यमिक शिक्षा के लिये ..... विधियों का प्रयोग करना ही चाहिए ।

२.३.३.४. वाचन संबंधी त्रुटियाँ / दोष और उनके सुधार –

छात्रों, वाचन संबंधी त्रुटियाँ और उनके सुधार का विचार करेंगे ।

मुख्य त्रुटियाँ हैं –

- वाचन का मुख्य दोष उच्चारण होता है ।
- आवृत्ति–पुनरावृत्ति से भी उच्चारण की अशुद्दि ठीक नहीं होती है ।
- वाचन में स्थानीय प्रभाव से त्रुटियाँ होती हैं ।
- सस्वर वाचन में छात्र जल्दी थकान महसूस करते हैं और झिझ्क भी होती है ।
- शारीरिक दोष भी बाधक होता है ।
- व्यक्तिगत भिन्नता, के कारण मौनवाचन लाभदायक नहीं होता है ।

छात्र निम्न प्रकार की त्रुटियाँ भी करते हैं

– अनुचित गति से पढ़ना

– अटक अटक कर पढ़ना

– अनुचित मुद्रा (पुस्तक, निकट लाकर या झुककर पढ़ना)

– अनुचित वाचन शैली का प्रयोग

– बिना अर्थ समझे पढ़ना

अभ्यास –

इन वाक्यों में वाचन संबंधी त्रुटियों को पहचानिए –

१. छात्र का उच्चारण अशुद्द है ।

२. गोपाल अटक अटक कर बोलता है ।

३. वाचन में स्थानीय प्रभाव है ।

४. छात्र बिना अर्थ समझे पढते हैं ।

५. राम अनुचित गति से पढता है ।

वाचन त्रुटियों के कारण हैं –

– दृष्टि दोष, वाणी संबंधी दोष

– शब्द ज्ञान की कमी ।

– वाचन अभ्यास की कमी

– पाठ्यसामग्री में छपाई संबंधी त्रुटि

– मनोवैज्ञानिक कारण ।

– वाचन संबंधी मार्गदर्शन का अभाव

– अरुचिकर पाठ्यसामग्री।

– असावधानी आदि ।

वाचन त्रुटि सुधारने के उपाय –

देखिए, वाचन कौशल शिक्षण के समय शिक्षक को अधोलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए –

- शारीरिक उपचार द्वारा दृष्टि दोष व वाणी दोष को दूर करने का प्रयास करे ।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना ।
- ध्वनियों का पूर्णज्ञान व अभ्यास कराना ।
- छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्यसामाग्री का चुनाव ।
- छात्रों से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना ।
- वाचन संबंधी उचित मार्गदर्शन देना ।
- वाचन से पहले कठिन शब्दों का व्याख्या देना ।
- जब छात्र बोल रहा हो, उस समय टोकना नहीं चाहिए । वाचन में उच्चारण अशुद्दियाँ होने पर भी टोकना नहीं । वाचन की अशुद्धियों का सुधार स्वाभाविक ढ़ंग से करना चाहिए ।

- आरंभ से वाचन में शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दिए जाए और अभ्यास कराया जाये । उच्चारण का आर्दश प्रस्तुत किए जाए और अनुकरण का अवसर दिए जाए ।
- अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किए जाए । छात्रों को उनकी रुचि तथा अनुभव के अनुरूप विषय पर वाचन के लिए अवसर दिए जाए ।
- आरंभ से ही वाचन भाषा की शुद्धता, शुद्ध व्याकरण पर आधारित वाचन को प्रोत्साहित हो ।
- छात्रों को उपयोगी पुस्तकों, कहानियों, पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराए जाए ।
- वाचन की कुशलता, अभ्यास पर निर्भर है । अभ्यास के लिए अधिक ध्यान दिये जाए।

अपकी प्रगति की जाँच – ४

प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

1. वाचन की अशुद्धियों का सुधार किस ढंग से करना चाहिए ?
2. पाठ्य सामाग्री के चुनाव कैसे करना है ?
3. वाचन की कुशलता किस पर निर्भर है ?
4. उच्चारण को शुद्द करने के लिए किन अंशों पर ध्यान देना चाहिए ?
5. जोड़कर लिखिए ––

त्रुटि	सुधार
१. दृष्टि दोष	१ पाठ्य की शुद्ध छपाई ।
२. बिना अर्थ समझे पढ़ना	२. शारीरिक उपचार ।
३. पाठ्य की मुद्रित त्रुटि	३. ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान ।

२.३.३.५. वाचन कार्य का मूल्यांकन

छात्रों अब वाचन कार्य के मूल्यांकन की चर्चा करेंगे –

दूसरों के विचारों को एक तो सुनकर ग्रहण किया जाता है और दूसरा पढ़कर । भाषा साहित्य की सभी विधाएँ छात्रों में वाचन कौशल को विकसित करने के उत्तम माध्यम होती हैं। छात्र गद्य, कहानी, नाटक आदि विधाओं को पढ़कर उनमें व्यक्त विचारों से परिचित होते हैं ।

अतः भाषा की शिक्षा में, छात्रों में पठन योग्यता का विकास करना भी आवश्यक होता है। छात्रों को उचित गति के साथ शुद्ध वाचन का अभ्यास कराया जाता है । छात्रों में वाचन कौशल का विकास किस सीमा तक हुआ है, इसका मूल्यांकन भी मौखिक एवं प्रायोगिक परीक्षा के द्वारा ही किया जाता है । इसके लिए छात्रों को किसी भी पुस्तक से कोई पाठ, अनुच्छेद या अंश पढ़ने के लिए कहा जाता है, और

छात्रों के पढ़ते समय उसकी पढ़ने की गति, उच्चारण, बल, विराम, स्वर के उतार–चढ़ाव, प्रवाह एवं हाव–भाव का निरीक्षण कर उसके वाचन कौशल के स्तर का मूल्यांकन किया जाता है ।

कुछ लक्षण तथा व्यावहारगत परिवर्तन के आधार पर भी वाचन कौशल के विकास का मूल्यांकन किया जा सकता है।

छात्र विषयवस्तु को शुद्ध उच्चारण, गति, उचित स्वर, स्वराघात के साथ पढ़ते हैं।

– भावानुकूल सस्वर वाचन करते हैं ।

– पाठ्य सामग्री का केंद्रीय भाव ग्रहण कर, उसका सारांश बताते हैं ।

– छात्र शब्दों को ठीक प्रकार से पहचान सकते हैं ।

– नेत्रों की गति ठीक है ।

– वाचन के समय अर्थ को समझते हैं ।

– नवीन अपरिचित शब्दों को ठीक प्रकार से पढ़ सकते हैं ।

– छात्र पठित अंश के सारांश में, तथ्यों को ग्रहण करने में सफल हुए हैं ।

आपकी प्रगति की जाँच – ५

आवरण में दिए शब्दों में उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

१. पढ़ते समय छात्र शब्दों को ठीक प्रकार से .....सकते हैं । (लिख, पहचान, भूल)

२. राजू ..... सस्वर वाचन करता है । (भावानुकूल, धीरे से, तेज़ी से)

३. छात्र के द्वारा पढ़ते समय उसकी पढ़ने की ..... से वाचन के मूल्यांकन का पता चलता है । (मति, गति, चुति)

४. छात्र, वाचन के समय ..... को समझता है । (अर्थ, गति, अनर्थ)

२.३.४ सारांश –

छात्रों, अब तक वाचन कौशल के बारे में काफी जान चुके हैं । आइए और एक नज़र डालें –

वाचन एक कला है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी आवश्यकता होती है । भाषा को उसके लिखित रूप के आधार पर ग्रहण करना ही वाचन है।

वाचन की क्रिया स्वाभाविक है । वाचन में ध्वनियों की प्रधानता होती हैं । वाचन व्यक्तित्व विकास का श्रेष्ठतम साधन है ।

वाचन का मुख्य उद्देश्य शुद्ध भाषा की दक्षता का विकास करना है । छात्रों को शब्द / वाक्यों की अर्थ ट्ट व्यवस्था का ग्रहण कराना है ।

वाचन के प्रकार के अतंर्गत – सस्वरवाचन, मौनवाचन, गहनवाचन, विस्तृत वाचन, मंदवाचन, सामान्य वाचन, द्रुतवाचन आदि देख सकते हैं ।

वाचन कौशल विकास की विधियों में – देखो कहो विधि, अनुकरण विधि, साहचर्य विधि आदि हैं।

वाचन करते समय त्रुटियाँ हो सकती है, जिनके सुधार का उपाय अध्यापक को सावधानी से करनी चाहिए ।

छात्र के पढ़ते समय ट्र पढ़ने की गति, उच्चारण, स्वाराघात द्वारा उनके वाचन कार्य का मूल्यांकन किया जाता है ।

२.३.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१) १. सही २. गलत ३. सही ४. गलत

२) १. तीन, २.सस्वर वाचन, मौन वाचन, ३. आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन,
५. दो, ५. मंदवाचन, सामान्य वाचन, द्रुतवाचन

३) १. श्रीमती मान्तेसरी २. वाक्य ३. वाक्य शिक्षण ४. कहानी
५. स्वरोच्चार, वर्णोच्चार

४) १. स्वाभाविक २. छात्र के मानसिक स्तर के अनुकूल
३. अभ्यास ४. अभ्यास, अनुकरण, उच्चारण का आदर्श
५. १–२, २–३, ३–१

५) १. पहचान, २. भावानुकूल, ३. गति, ४. अर्थ

२.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

प्रश्नों का उत्तर लिखिए ।

१. वाचन किसे कहते हैं? भाषा शिक्षण में इसके महत्व पर प्रकाश डालिये ।

२. वाचन कौशल विकास की कौन सी विधियाँ प्रचलित हैं? हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए कौनसी विधि उपयोगी है? और क्यों?

३. वाचन करते समय छात्र किस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं ? उन्हें दूर करने के उपायों का उल्लेख कीजिए ।

२.३.७. संदर्भ पुस्तकें –

१. **हिन्दी भाषा शिक्षण**

भाई योगेंद्र जीत (२०१२)

श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

१. **हिन्दी शिक्षण**

डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

२. **भाषा १, २, की शिक्षण विधियाँ एवं पाठनियोजन**

डा. लक्षी नारायण शर्मा (२००९)

श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

३. **हिन्दी शिक्षण**

डा. उमा मंगल (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई ४ : लेखन कौशल

इकाई की संरचना

२.४.१. सीखने के उद्देश्य
२.४.२. प्रस्तावना
२.४.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
२.४.३.१. लेखन कौशल का महत्व, उपयोग और उद्देश्य
आपकी प्रगति की जाँच ट्र ०१
२.४.३.२. लेखन कौशल की विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच – ०२
२.४.३.३. लेखन कौशल के प्रकार और प्रतिलेख और श्रृतलेख में अंतर
आपकी प्रगति की जाँच ट्र ०३
२.४.३.४. लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें और लिखित कार्य का मूल्यांकन
आपकी प्रगति की जाँच ट्र ०४
२.४.४. सारांश
२.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
२.४.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
२.४.७. संदर्भ पुस्तकें

२.४.१. सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत छात्र इन अंशो के योग्य होंगे ट्र

- लेखन कौशल के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखेंगे।
- लेखन कौशल के महत्व को स्पष्ट करेंगे ।
- लेखन कौशल के उपयोग को पहचानेंगे ।
- लेखन कौशल की विधियों का वर्णन करेंगे ।
- लेखन कौशल के प्रकार का वर्णन करेंगे ।
- प्रतिलेख और श्रुतलेख के अंतर की तुलना करेंगे ।
- लेखन कौशल के विकास में ध्यान देने की बातों को सीखेंगे ।
- लेखन कार्य का मूल्यांकन करेंगे ।

२.४.२. प्रस्तावना

प्रिय छात्रों, भाषा के मौखिक और लिखित रूप हैं।

आप भाषा के इन रूपों के बारे में जानते हैं । इन के संबंध में अपने कुछ विचार बताइए और देखिए आपके विचार नीचे के विचारों से कहाँ तक मिलते हैं ।

विचारॉं की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्ति जिन ध्वनियों का प्रयॉग करता है वह मौखिक भाषा कहलाती है। इन्हीं ध्वनियों को जिन विशिष्ट चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप में व्यक्त किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि हॉती है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है ।

वाचन और लेखन भाषा के प्रमुख कौशल हैं। ध्वनियॉं का लिपि संकेतों में रूपान्तरण लेखन कहलाता है। लेखन भाषा को दृश्य चिह्नॉं में अंकित करने की प्रणाली है।

लिखावट भावों एवं विचारॉं की कलात्मक अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति की दृष्टि से लेखन तथा वाचन परस्पर पूरक हॉते हैं।

२.४.३. **सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ**

२.४.३.१. **लेखन कौशल का महत्व, उपयॉग और उद्देश्य**

छात्रों, लेखन कौशल का महत्व उपयोग और उद्देश्य की चर्चा करेंगे।

सामान्य रूप से लिखकर विचारॉं को अभिव्यक्त करना लेखन या लिखित अभिव्यक्ति कहा जाता है। लिपि का ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत भाषा के लिखित रुप का प्रयॉग कर व्यक्ति अपने भावॉं और विचारों को लेखन कौशल द्वारा स्थायित्व प्रदान करता है।

बच्चॉं में लेखन कौशल का विकास करने के लिए लिपि की शिक्षा परम अवश्यक है। जिस तरह ध्वनियॉं के पूर्ण ज्ञान के बिना उच्चारण शुद्ध नहीं हो सकता एवं मौखिक अभिव्यक्ति में पूर्णता नही आ सकती, उसी प्रकार लिपि के ज्ञान के बिना बच्चा न तो शुद्ध वर्तनी का प्रयॉग कर सकता है और न ही विचारॉं कॉ लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकता है। जब तक बच्चे को लिखना नहीं आता तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता है।

<u>लेखन कौशल के महत्व को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है -</u>

- प्राचीन समय से ही भारत वर्ष में सुंदर लेखन पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है। अक्षर सुंदर, सुडौल हों - इस पर विशेष बल दिया जाता था ।
- अपने विचारॉं को सुरक्षित रखने के लिए लिखित कौशल की अवश्यकता है। लिखकर हम अपने विचारॉं को सदियॉं के लिए स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं।
- लेखन के माध्यम से साहित्य की विधाओं एवं शैली का निर्माण तथा विकास किया जाता है।
- साहित्य को स्थायीपन लेखन से आता है।
- लेखन से व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।
- लिखित भाषा बालक के हाथ और मस्तिष्क में संतुलन बनाकर रखती है और भाषा में एक रूपता लाती है।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषता परीक्षा है। लेखन कौशल के द्वारा ही छात्रॉं की यॉग्यता का मूल्यांकन किया जाता है।
- व्यावसायिक एवं औद्यॉगिक प्रगति का आधार लिखित भाषा है।
- पूर्वजों की सभ्यता, संस्कृति को लिखित भाषा ही हम तक पहुँचायी है। हमारी संस्कृति को आगे आनेवाली पीढी तक भी लिखित भाषा ही हस्तांतरित करती रहेगी।

- आज लेखन एक स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में मानव जाति का कल्याण कर रहा है।
- अनेक व्यक्ति अपनी लेखन कला से ही अपनी रॊजी रॊटी की व्यवस्था कर रहे हैं।

अभ्यास -

इन कथनों को पढ़िए यदि आप इनसे सहमत हैं तो (✓)चिह्न लगाइए। असहमत हैं तो (x) चिह्न लगाइए -

	सहमत	असहमत
१. साहित्य में स्थायीपन लेखन से आता है		
२. लेखन कौशल द्वारा ही छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन नहीं किया जाता है।		
३. पूर्वजों की सभ्यता , संस्कृति को लिखित भाषा ही हम तक पहुँचाती है।		
४. अभिव्यक्ति की दृष्टि से वाचन और लेखन परस्पर पूरक नहीं हैं।		
५. अनेक व्यक्ति अपनी लेखनी की कला से ही अपनी रोज़ी रोटी कमा रहे हैं।		

छात्रों, लेखन के उपयोगों के बारे में आप लोग जानते हैं। लेखन के कुछ उपयोगों को बताइए। अपने उत्तर को आगे दिए गये उपयोगों से मिलाकर देखिए -

लेखन कौशल के उपयॊग इस प्रकार हैं -

छात्रों, लेखन कौशल के उपयोग के बारे में जानेंगे -

- छात्रों की रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास के लिए लेखन कौशल उपयॊगी है।
- दूर रहनेवाले मित्र या संबंधी को अपना संदेश देने, एक - दूसरे के साथ कोई कार्य करने लिए लिखित भाषा उपयॊगी है।
- लेखन कौशल द्वारा ही भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।
- शिक्षा ग्रहण करते समय पठित सामग्री को संगठित करने, प्रश्नों का उत्तर तैयार करने, पाठ का सार तैयार करने, गृहकार्य करने में लेखन बहुत ही उपयॊगी है।
- देॅश-विदेॅश में हॊ रहे ज्ञान-विज्ञान आदि से अवगत होने के लिए लेखनकौशल अनिवार्य है।
- शैक्षिक उपलब्धि को समर्थ बनाने लेखन कौशल आवश्यक है।
- लेखन कौशल स्वयं की शिक्षा के लिए उपयोगी है।
- लेखन ज्ञानार्जन के लिए उपयॊगी है।

लेखन कौशल के उद्देश्य -

लेखन कौशल के महत्व को ध्यान में रखते हुए लेखन कौशल की शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं -

छात्रों में,

- वर्णों की ठीक ठीक बनावट लिखना सिखाना ।
- सुंदर, स्पष्ट, शुद्ध एवं आकर्षक लेख लिखने की प्रेरणा देना।
- लेखन के प्रति अभिरुचि बढ़ाना।
- आवश्यक विरामचिन्हों का समुचित उपयोग का अभ्यास कराना।
- शुद्ध रूप से वर्तनी की शिक्षा देना।
- शब्दभंडार में वृद्धि करना ।
- लेखन से अक्षरज्ञान, शब्दज्ञान तथा वाक्य के स्वरूप का ज्ञान तथा कौशल का विकास करना।
- अपने विचारों को तार्किक क्रम में व्यक्त करना सिखाना।
- साहित्य के प्रति रुचि जागृत करना।
- सावधानी पूर्वक लिखने की आदत का विकास करना।

अपनी प्रगति की जाँच - ०१

अनुरूपण / मेलन कीजिए -

१. ध्वनि ज्ञान	१. लेखन कौशल
२. लिपि ज्ञान	२. लेखन का उद्देश्य
३. वर्णों की ठीक बनावट सिखाना	३. मौखिक अभिव्यक्ति
४. देवनागरी	४. मौखिक कला से
५. रोजी रोटी की व्यवस्था	५. हिन्दी भाषा की लिपि

२.४.३.२. **<u>लेखन कौशल की विधियाँ -</u>**

<u>छात्रों, लेखन कौशल की विधियों के बारे में विचार करेंगे -</u>

भाषा सीखने का एक स्वाभाविक क्रम है - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना । भाषा की शिक्षा देने के लिए प्राथमिक स्तर से ही छात्रों में इन चारों कौशलों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। बच्चों को पहले मौखिक भाषा की शिक्षा दी जाती है, उसके पश्चात् पढ़ना सिखाया जाता है और उसके तुरंत पश्चात् लेखन कौशल का शिक्षण आरंभ किया जाता है। जैसे ही बच्चे अक्षरों का उच्चारण कर उनके लिपिबद्ध रूप को पहचानने लगते हैं वैसे ही इन अक्षरों के लिपिबद्ध रूपों को लिखना सिखाना भी शुरु कर दिया जाता है। परन्तु इस कार्य में जल्दी नहीं करनी चाहिए। जब उनकी उंगलियाँ कलम पकड़ने में समर्थ हो जाएँ तब ही लिपि की शिक्षा देनी चाहिए।

लेखन कौशल विकसित करने की विधियाँ -

छात्रों, लेखन कौशल को विकास करने की कुछ विधियों के बारे में बताइए और देखिए कि आपके विचार नीचे के विचारों से कहाँ तक मिलते हैं ।

१. **रूपरेखानुकरण विधि -**
छात्रों को अक्षरों का ज्ञान दिया जाता है । इसमें शिक्षक श्यामपट, स्लेटों पर अक्षरों के लिए बिन्दु रखते हैं और छात्रों को उन बिन्दुओं को मिलाने को कहता है, जिससे अक्षर उभर आता है जैसे अ, आ, इ आदि। इस प्रकार अभ्यास करते करते वह वर्णों को लिखना सीख जाता है। इसी प्रकार वाक्यों तथा शब्दों को आदर्श रूप में शिक्षक लिखता है और अनुकरण कराता है । शिक्षक उनमें सुधार करता है और पुनः अभ्यास कराता है। इसी प्रकार के अभ्यास से अक्षरों, शब्दों तथा वाक्यों को लिखना सीख लेते हैं। यदि अर्थ के साथ सिखाया जाये तब अधिक रुचि लेते हैं। यहाँ छात्र के पूर्वज्ञान, रुचि का लाभ उठाया जाता है।

२. **स्वतंत्र अनुकरण विधि तथा श्रुत लेखन विधि -**
इस विधि का उद्देश्य है कि अक्षरों तथा वाक्यों को सुंदर व सुडौल रूप में लिखें तथा शब्दों को शुद्ध रूप में लिखना भी सीखें। छात्र शब्दों को देखकर उनका शुद्ध रूप में अनुकरण करके लिखना सीखते हैं तत्पश्चात् श्रुतलेख में सुनकर उन्हें बिना देखे ही लिखने का अभ्यास करना सीखते हैं। अशुद्ध शब्दों को बार बार लिखवाना है जिससे वे शुद्ध लिखना सीख सकें।

३. **मान्तेसरी विधि -**
प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री मेडम मान्तेसरी ने छात्रों को वाचन के बदले प्रारंभ में लेखन शिक्षा देने पर बल दिया है, जिसमें आँख, कान, हाथ के प्रयोग को प्रमुख स्थान दिया है, लकड़ी के टुकडों पर बने हुए अक्षरों पर छात्र उंगली फेरने को कहा जाता है उसके बाद उस पर पेंसिल फेरने को कहा जाता है, जिससे छात्रों को लिखने में रुचि उत्पन्न हो जाय। छात्र अक्षरों को प्रत्यक्ष स्पर्श करते हैं और स्पर्श से अक्षर की अनुभूति होती है। पहले छात्रों को सीधी, तिरछी रेखाएँ खिंचवाना और बाद में गोल, अर्धगोलाकार रेखाएँ को खिंचवाना चाहिए अंत में अक्षर का ज्ञान देना है। अक्षरों को बार बार लिखने का अभ्यास कराया जाता है। फिर दो अक्षरों के शब्द लिखाना, शब्दों की कठिनाई धीरे धीरे बढ़ जाती है। वाक्यों को भी लिखना सिखाया जाता है। यह विधि अधिक प्रचलित है क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक तथा व्यावहारिक है।

अभ्यास -

इन वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

१. बच्चे जब कलम पकडने में समर्थ हो तब ही लिपि की शिक्षा देनी चाहिए।
२. छात्रों को प्रारंभ में वाचन के बदले लेखन की शिक्षा पर पेस्टालाजी ने बल दिया है।
३. मान्तेसरी विधि के आँखे, कान, हाथ के प्रयोग को प्रमुख स्थान दिया है।
४. श्रृत लेख विधि में छात्रों से शब्दों को सुनकर उन्हें देखे बिना लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

आइए छात्रों, कुछ और प्रचलित विधियों की चर्चा करेंगे -

४. **<u>जेकॉटॉट विधि</u>** -

इस विधि का अनुमोदन सबसे पहले जेकॉटॉट नामक शिक्षा शास्त्री ने किया था। इसमें छात्रों को स्वावलंबी बनना पड़ता है। छात्रों ने जो पाठ पढ़ा होता है उसका कोई वाक्य शिक्षक लिखकर देता है| बालक उसका अनुकरण करके एक-एक शब्द को लिखता है और मूल से मिलाकर देखता जाता है। यदि कोई अशुद्धि हो तो उसे ठीक कर लेता है। इस प्रकार शब्दों का मिलान करता हुआ वह पूरा वाक्य लिखने का अभ्यास करता है।

५. **<u>पेस्टालॅजी विधि</u>** -

इस् विधि के अंतर्गत - ' सरल से कठिन की ओर ' सूत्र का अनुगमन करते हुए वर्णों की आकृति को खण्ड खण्ड करके उनका अभ्यास कराया जाता है।

थथा - क - ० व क

शिक्षक स्लेट या श्यामपट पर ऎसे खण्ड लिखा देता है और बालक उन्हें देख देखकर लिखता है। खण्डों के योग से अक्षर की रचना कराई जाती है। पहले सरल वर्ण बाद में जटिल वर्ण को लिखना सिखाया जाता है।

६. सार्थक शब्द लेखन विधि -

इस विधि में भाषार्जन प्रक्रिया(वाक्य, शब्द, ध्वनिक्रम) का अनुसरण करते हुए सार्थक शब्द / वाक्य लेखन को प्राथमिकता दिया जाता हैं न कि निरर्थक अलग-अलग वर्णों के लेखन को।

७. समन्वयात्मक विधि -

विभिन्न सूत्रों का अनुगमन करते हुए लिपि का विश्लेषण कर, कम तथा समान संरचक रेखाओं वाले वर्णों का लिखना सिखाते हुए सार्थक शब्दों, वाक्यों में अभ्यास कराया जाता है।

<u>आपकी प्रगति की जाँच -०२</u>

नीचे दिए प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. ' सरल से कठिन की ओर ' सूत्र का प्रयोग किस विधि में किया गया है?
२. सार्थक शब्द, वाक्यों के लेखन को प्राथमिकता कौन सी विधि में दिया जाता है?
३. जेकॉटॉट विधि में छात्रों को क्या बनना पड़ता है?
४. जेकॉटॉट विधि का अनुमोदन सबसे पहले किसने किया था?

२.४.३.३. **<u>लेखन कौशल के प्रकार और प्रतिलेख और श्रृतलेख में अंतर -</u>**

लेखन कौशल के प्रकार -

छात्रों अब तक हम लोग लेखन कौशल के महत्व, उपयोग उद्देश्य, लेखन सिखाने की विधियों की चर्चा कर चुके हैं, अब विचार करेंगे - लेखक कौशल के प्रकार के बारे में -

लेखन कौशल के चार प्रकार हैं -

१. सुलेख / सुलिपि
२. अनुलेख / अनुलिपि
३. प्रतिलेख / प्रतिलिपि
४. श्रुतलेख / श्रुतलिपि

१.सुलेख / सुलिपि-

सुलेख, सुंदर लेख को कहते हैं। सुलेख का अपना स्थान है, यह शिक्षित व्यक्ति का अवश्यक लक्षण है। इसमें लिखावट जो अच्छी ढंग से लिखी गई हो, जो अच्छी प्रकार से पढ़ी जा सके और जिसे अच्छी प्रकार से समाझा जा सके।

सुलेख का अभ्यास कराते समय शिक्षक को ध्यान में रखना है कि छात्र आकर्षक, सुडौल अक्षर लिखें। छात्र के हाथ, मस्तिष्क, हृदय में समन्वय हो छात्र समुचित गति का निर्वाह कर सकें। कलम को ठीक ढंग से पकडें।

२. अनुलेख / अनुलिपि -

छात्रों द्वारा शिक्षक के आदर्श लेख का बिल्कुल वैसा का वैसा अनुकरण करना है। प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षक कॉपी पर अक्षर / शब्द लिख देता है और बालक उसे देख देख कर ठीक वैसा ही लिखने का प्रयास करता है।

अनुलेख का लक्ष्य सुलेख ही है।

शिक्षक को ध्यान देना है कि -

- बैठने का तरीका ठीक हो ।
- कलम पकड़ने का दंग ठीक हो।
- अशुद्धियों को ठीक किया जाये।

३. प्रतिलेख / प्रतिलिपि -

दिए गये शब्द या वाक्य का अनुकरण करके लिखना है , इसका लक्ष्य भी सुलेख ही है। यह अनुलेख की दूसरी प्रकार की विधा है। पाठ्यपुस्तक या पत्र-पत्रिका के किसी अंश का अनुकरण किया जाता है।

प्रतिलेख से छात्रों के शब्दभंडार, सूक्ति भंडार में वृद्धि होती है। छात्रों को शब्द, वाक्यों के लिखने का अभ्यास होता है। वर्तनी का ज्ञान होता है, विराम चिह्नों के प्रयोग से अभ्यस्त होते है।

शिक्षक को ध्यान देना है कि विषय वस्तु छात्र की ज्ञान परिधि के अनुसार हो। अशुद्धियों को ठीक करें।

४. श्रुतलेख / श्रुतलिपि -

यह सुना हुआ लेख है। सुनकर लिखे जाने के कारण श्रुतलेख कहा जाता है । शिक्षक बोलता जाता है और छात्र सुनकर बोली हुई सामग्री लिखता जाता है। यहाँ सुंदर लिखावट का सर्वाधिक महत्व नहीं है। इसमें महत्व भाषा की शुद्धता का होता है।

जब तक छात्र अनुलेख ठीक ठीक न लिख सकें, तब तक श्रुतलेखन न करना चाहिए।

श्रतलेख का लक्ष्य - श्रवणेन्द्रिय को प्रशिक्षित करना है ताकि छात्र भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सके श्रृतलेख में छात्र के हाथ, कान, मस्तिष्क क्रियाओं में संतुलन स्थापित किया जाता है, जिससे स्मरण शक्ति का विकास, भावग्रहण का अभ्यास, वर्तनी शिक्षा दी जाती है। यहाँ वाचन के साथ लिखने का प्रयास होता है। यहाँ अक्षर विन्यास का प्रशिक्षण मिलता है। ठीक गति, सावधानी से लिखने का विकास होता है।

विषय सामग्री छात्र की रुचि, अनुभव ज्ञान के आधार पर हो। न अधिक कठिन, न अधिक सरल हो। छात्र का आसन ठीक हो, उचित लेखन सामग्री हो। शिक्षक, चुने शब्दों को धीरे धीरे पढें। पढने में शुद्ध उच्चारण गति का ध्यान रखे। छात्रों के द्वारा लिखे शब्द का संशोधन अवश्य करें। छात्रों से भी आपस में कापियाँ बदलकर संशोधन करवाए अशुद्ध शब्दों को छात्र शुद्ध रूप में चार - पाँच बार लिखकर उनका अभ्यास कर लें।

परीक्षा -

इन कथनों में सही / गलत को पहचानिए -

१. लेखन कौशल के चार प्रकार हैं।
२. सुलेख शिक्षित व्यक्ति का आवश्यक लक्षण है।
३. अनुलेख का लक्ष्य सुलेख नहीं है।
४. शैक्षिक उपलब्धि को समर्थ बनाने के लिए लेखन कौशल आवश्यक है।
५. प्रतिलेख से छात्रों के शब्द भंडार, सूक्ति भंडार में वृद्धि होती है।
६. श्रुतलेख में छात्र के हाथ, कान, मस्तिष्क का संतुलन नहीं होता है।

(उत्तर : १. सही, २. सही, ३. गलत, ४. सही, ५. सही, ५. गलत)

प्रतिलेख और श्रृतलेख में अंतर -

ध्यान दीजिए, प्रतिलेख और श्रृतलेख में निम्नलिखित भिन्नताएँ दिखाई देती हैं -

श्रुतलेख	प्रतिलेख
-अनुकरण नहीं, अध्यापक द्वारा बोले जाये शब्दों का छात्र सुनकर लिखता है।	पाठ्य पुस्तक या पत्र-पत्रिका के किसी अंश का छात्र देखकर लिखता है।
प्रतिलेख का अभ्यास हो जाने के बाद श्रुतलेख का प्रारंभ कराया जाता है	प्रतिलेख, अनुलेख का विकसित रूप है।
भाषा की शुद्धता पर ध्यान दिया जाता है।	सुंदर अक्षर पर ध्यान दिया जाता है।
कॉपी का संशोधन शिक्षक तथा छात्र दोनों करते हैं।	कॉपी का संशोधन शिक्षक करता है।
गलतियाँ अधिक होती हैं।	गलतियाँ कम होती हैं।
इन्द्रियाँ जैसे आँख, हाथ, कान का काम होता है।	हाथ, आँख का काम होता है।
	विराम चिन्हों का प्रयोग करना आता है।
सुनकर भावग्रहण का अभ्यास होता है।	देखकर अनुकरण का अभ्यास होता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

दिए गए शब्दों में सही शब्द चुनकर लिखिए -

१. प्रतिलेख का विकसित रूप है _____ (अनुलिपि, प्रतिलेख)
२. सुंदर अक्षर पर _____ में ध्यान दिया जाता है। (श्रुतलेख, प्रतिलेख)

३. सुनकर लिखना _____ लेख है । (सुलेख, श्रुतलेख)
४. कॉपी संशोधन का कार्य _____ में शिक्षक, छात्र दोनों करते हैं। (श्रुतलेख, अनुलेख)
५. विराम चिन्हों का प्रयोग करना _____ में होता है। (श्रुतलेख, प्रतिलेख)

२.४.३.४. लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें और लिखित कार्य का मूल्यांकन

छात्रों,

लेखन कौशल सिखाने में शिक्षक को कुछ बातों का ध्यान रखना अवश्यक हो जाता है, इनमें से प्रमुख बातों का उल्लेख इस प्रकार हैं -

- बैठने का ढंग
  छात्रों के बैठने का ढंग उपयुक्त हो।
- आँखों से कागज़ / कॉपी की दूरी

  कॉपी को आँखों के बिलकुल न तो पास रखें और न ही बहुत दूर । एक फूट दूर अच्छा होगा।

- उपयुक्त वातावरण
  समय और स्थान आदि उपयुक्त हो।
- कलम पकड़ने की विधि
  पहली -दूसरी उँगली के बीच में कलम रखकर उसे अंगूठे में पकड़ना चाहिए।
- पढ़ना
  लिखने के साथ साथ पढ़ना भी चलना चाहिए
- अक्षर सुडौल हों
  अक्षर पूरे लिखे जाने चाहिए।
- बाएँ से दाएँ
  सभी अक्षरों, शब्दों, वाक्यों के लिखने का क्रम हिन्दी में बाएँ से दाएँ रहे।
- शिरोरेखा
  अक्षर का अवश्यक अंग शिरोरेखा है अतः उसका प्रयोग करना चाहिए।
- लिपि प्रतीक
  अनुस्वार, हलन्त, मात्राओं के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए।
- नमूने उपयुक्त हो
  शिक्षक द्वारा बनाये गये अक्षर / शब्द आदर्श हो जिससे उनके आधार पर छात्र लिख सकें।
- अभ्यास
  लिखना एक कला है अतः लिखने का खूब अभ्यास होना चाहिए।
- लेखन का चक्र अधिक लंबा न हो अन्यथा बालक थक जायेंगे और उनका लेख अच्छा नही बनेगा।

- लिखना सिखाते समय पहले वही अक्षर चुना जाए जिसे छात्र थोड़े से प्रयास से ही लिख सकें।
- प्रारंभ में लिखने की गति पर इतना ध्यान नहीं देना चाहिए, जितना इस बात पर कि बालक जो जो लिखें, ठीक ठीक तथा सुंदर लिखें।
- एकदम छात्रों से छोटे छोटे अक्षर लिखने के लिए न कहा जाय। पहले पहल उन्हें बड़े अक्षर लिखने को दिए जाएँ। धीरे धीरे अक्षरों का आकार और अंतर ठीक होने लगेगा।
- अच्छा यह होगा कि छात्र का नाम ही पहले लिखवाया जाय, इससे छात्र को बड़ी प्रसन्नता होगी।
- छात्रों के व्यक्तिगत भेदों पर पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए।

अभ्यास -

अनुच्छेद को पढ़िए और नीचे के प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

हिन्दी भाषा में सभी अक्षर, शब्द के लिखने का क्रम बाएँ से दाएँ होता है। अक्षर का आवश्यक अंग शिरोरेखा है। लिखने का खूब अभ्यास होना चाहिए। छात्र का नाम पहले लिखवाने से छात्र को प्रसन्नता होगी। लेखन चक्र लंबा होने से छात्र थक जायेंगे। पहले छात्र से बड़े अक्षर लिखवाना चाहिए।

१. अक्षर का आवश्यक अंग कौनसा है?
२. हिन्दी भाषा में सभी अक्षर, शब्द लिखने का कौनसा क्रम है?
३. छात्र का नाम ही पहले क्यों लिखवाना है।
४. लेखन का चक्र लंबा क्यों नहीं होना चाहिए?

लिखित कार्य का मूल्यांकन

आइए, लिखित कार्य के मूल्यांकन के बारे में विचार करेंगे -

छात्रों के लेखन की योग्यता की जाँच करने के लिए निबंध, कहानी, पत्र, गद्य आदि का सार लिखवाकर मूल्यांकन किया जाता है।

नाटक, कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण लिखवाकर तथा नाटक, कहानी के उद्देश्यों को लिखवाकर भी छात्रों के लेखन कौशल का मूल्यांकन किया जा सकता है।

इसके साथ कुछ लिखावट विशिष्ट लक्षण तथा **व्य**वहारगत परिवर्तन के आधार पर भी लेखन कार्य का मूल्यांकन किया जाता है।

जैसे - छात्र सुंदर, सुडौल, सुपाठ्य अक्षरों में लिख सकते हैं।
- विरामचिन्हों का ठीक प्रयोग करके लिख सकते हैं।
- छात्र शुद्ध वर्तनी में लिख सकते हैं।
- व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।
- छात्र अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतलेख लिख सकते हैं।
- छात्र लिखित अभिव्यक्ति में अनुकूल शैली का प्रयोग करते हैं।

- छात्र शब्दों, मुहावरों, सूक्तियों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग कर सकते हैं।

आपकी प्रगति की जाँच - ०४

इन कथनों में सही / गलत को पहचानिए ---

१. लिखित कार्य का मूल्यांकन निबंध, गद्य का सार लिखवाकर कर सकते हैं।

२. नाटक, कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण लिखवाने से मूल्यांकन नहीं होता।

३. लिखावट के विशिष्ट लक्षणों के आधार पर छात्रों के लेखन का मूल्यांकन कर सकते हैं।

४. व्यवहागत परिवर्तन के आधार पर लेखन का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।

२.४.४. **<u>सारांश -</u>**

छात्रों,

हम अब तक इस इकाई के अंतर्गत -

लेखन कौशल का अर्थ - ध्वनियों का लिपि संकेतों में रूपान्तरण को लेखन कहलाता है। लिखकर विचारों को अभिव्यक्त करना लेखन कौशल है। अपने विचारों को लेखन द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। साहित्य में लेखन द्वारा स्थायीपन आता है। लेखन से व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। लेखन के उद्देश्य जैसे - वर्णो की ठीक बनावट सिखाना।

- लेखन के प्रति अभिरुचि बढ़ाना।

लेखन कौशल सिखाने की विधियाँ हैं - रूपरेखानुकरण विधि, स्वतंत्र अनुकरण विधि, मान्तेसरी विधि आदि ।

लेखन कौशल के प्रकारों में - सुलेख, अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतलेख हैं।

प्रतिलेख और श्रृतलेख में अंतर भी है। लिखना सिखाने में कुछ बातों को शिक्षक ध्यान में रखना है जैसे बैठने का ढंग, कलम पकड़ने का ढंग आदि |

गद्य, निबंध का सार लिखवाकर और कुछ लिखावट के विशिष्ट लक्षणों के आधार पर लेखन कार्य का मूल्यांकन किया जाता है।

२.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१. १ - ३
   २ - १
   ३ - २
   ४ - ५
   ५ - ४

२. १. पेस्टालाजी विधि
   २. सार्थक शब्द लेखन विधि
   ३. स्वावलंबी
   ५. शिक्षा शास्त्री जेकॉटॉट।

३.१. अनुलिपि ३. श्रुतलेख

२. प्रतिलेख ४. श्रुतलेख ५. प्रतिलेख

४.१. सही २. गलत ३. सही ४. गलत

२.४.६. **इकाई समाप्ति का अभ्यास**

इन् प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

1. लेखन कौशल से क्या अभिप्राय है? उसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।
2. लेखन कौशल की विधियों पर प्रकाश डालिए।
3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए -
   - श्रुतलेख
   - सुलेख

२.४.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी शिक्षण
   डा. उमा मंगल (२००६)
   आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

२. हिन्दी भाषा शिक्षण
   भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)
   श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

३. हिन्दी शिक्षण
   डा.शिखा चतुर्वेदी (२००१)
   आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

४. भाषा १,२ की शिक्षण विधियाँ एवं
   पाठ नियोजन
   डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा (२००९)
   श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई ५ : हिन्दी अध्यापक और इसके सामर्थ्य

इकाई की संरचना

२.५.१. सीखने के उध्येश्य

२.५.२. प्रस्तावना

२.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

२.५.३.१. हिन्दी अध्यापक के सामर्थ्य और गुण

आपकी प्रगति की जाँच – १

२.५.३.२. हिन्दी अध्यापक के कर्तव्य

आपकी प्रगति की जाँच – २

२.५.३.३. हिन्दी अध्यापक की वर्तमान स्थिति एवं महत्व

आपकी प्रगति की जाँच – ३

२.५.४. सारांश

२.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

२.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

२.५.७. संदर्भ पुस्तकें

२.५.१. सीखने के उद्देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे –

- हिन्दी अध्यापक के सामर्थ्य की चर्चा करेंगे ।
- हिन्दी अध्यापक के सामान्य, विशिष्ठ गुणों को पहचानेंगे ।
- हिन्दी अध्यापक के कर्तव्य और उनकी वर्तमान स्थिति का वर्णन करेंगे ।
- हिन्दी अध्यापक के महत्व को स्पष्ट करेंगे ।

२.५.२. प्रस्तावना –

प्रिय छात्रों, आप हिन्दी शिक्षक के बारे में जानते हैं । उनके बारे में कुछ विचार सोचिए और देखिये कि आपके विचार नीचे के अंशों से कहा तक मिलते हैं ।

प्राचीन काल से समाज में गुरु का स्थान शिरोमणि है । शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक का पात्र बहुत श्रेष्ठ और प्रभावात्मक है । गुरु रहित विद्यालय भगवान रहित मंदिर के समान है । पहले शिक्षाकेन्द्र गुरुकुल ही थे । शिक्षक केन्द्रित शिक्षा अस्तित्व में थी । शिक्षक का मतलब है अज्ञान को दूर करनेवाला व्यक्ति ।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है तथा हिन्दी भाषा का शिक्षक होना हमारे लिए गौरव की बात है । आज शिक्षा बाल केन्द्रित है, सीखनेवाले को अधिक महत्व दिया जाता है इसी विचारधारा के साथ सामंजस्य करने शिक्षक के स्थान में भी परिवर्तन हुआ है । इसी के अनुसार एक शिक्षक मार्गदर्शक, दोस्त और तत्वज्ञानी भी होता है, उन्हें एक आदर्श व्यक्ति होकर अपना अनुभव छात्रों में बाँटना है ।

एक राष्ट्र का उत्कर्ष उस राष्ट्र के विध्यालयों और वहाँ के शिक्षक की क्षमता पर निर्भर है । अध्यापक राष्ट्र की प्रगति का माध्यम है ।

२.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ –

२.५.३.१ हिन्दी अध्यापक के सामर्थ्य और गुण –

छात्र, आप हिन्दी अध्यापक के सामर्थ्यों के बारे में काफी जानते हैं । कुछ सामर्थ्यों की सूची बनाइए –

देखिये आपकी सूची के अंश, नीचे के अंशों से मिलता है ।

सामर्थ्य विविध होते हैं –

- भाषा का सामर्थ्य
- दृश्य–श्रव्योपकरण के प्रयोग का सामर्थ्य
- साहित्यिक क्रियाओं के संगठन का सामर्थ्य
- मूल्यांकन साधन और तंत्र के प्रयोग का सामर्थ्य
- हिन्दी भाषा साहित्य के इतिहास का समर्पक ज्ञान
- प्राचीन, आधुनिक साहित्य मार्ग का परिचय आदि

भाषा का सामर्थ्य –

अध्यापक की अपनी भाषा ही उसकी पूँजी है ।

मौखिक अभिव्यक्ति, वाचन कौशल, लेखन कौशल, सतत प्रवचन देना, चितंनशीलता आदि अध्यापक के भाषा सामर्थ्य हैं ।

दृश्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग का सामर्थ्य –

अध्यापन कार्य को प्रभावात्मक, सफल बनाने दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग की क्षमता होना चाहिए । यह सामर्थ्य छात्रों के सीखने की गतिविधियों के लिए पूरक होता हैं ।

मूल्यांकन साधन तथा तंत्र का प्रयोग –

पढ़ाये गये विषय वस्तु को छात्र कहाँ तक समझे हैं और शिक्षक स्वयं अपने कार्य में कहाँ तक सफल हुए हैं यह जानने विविध मूल्यांकन साधन, तंत्र सहायक हैं । शिक्षक को इन साधन तंत्र के प्रयोग की जानकारी अवश्य होनी चाहिए ।

प्राचीन और आधुनिक साहित्य के मार्ग का परिचय –

हिन्दी शिक्षक को प्राचीन और आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास के मार्ग का परिचय रखना आवश्यक है ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य का काल विभाजन इस प्रकार है ।

१. आदिकाल (वीरगाथा काल या चारण काल)	सं १००० से १३७५ तक
२. भक्तिकाल या धार्मिक काल	सं १३७५ से १७०० तक
३. रीतिकाल या श्रृंगार काल	सं १७०० से १९०० तक
४. नवीनयुग या आधुनिक काल	सं १९०० से अब तक

जिस काल में जिस प्रवृत्ति की प्रधानता दीखी, उसी के आधार पर उस काल का नामकरण कर दिया गया ।

१. **आदिकाल :** वीरगाथा काल में वीरकाव्य लिखे गये । काव्य की भाषा थी अपभ्रंश और देश भाषा तथा डिंगल । आदिकाल युद्धोंका काल था ।

२. **भक्ति काल :** इस काल में भक्ति प्रधानता, गुरु की मान्यता, अंहकार का त्याग आदि विशेषताएँ देख सकते हैं ।

इस काल की तीन प्रमुख शाखाएँ जैसे १. ज्ञानाश्रयी शाखा में – कबीर, रैदास, गुरुनानक, प्रसिद्ध हैं । २. प्रेममार्गी शाखा में – जायसी प्रसिद्ध हैं । ३. भक्ति मार्गी शाखा की दो उपधाराएँ हैं जैसे अ) कृष्ण भक्ति शाखा में – सूरदास प्रसिद्ध हैं । आ) रामभक्ति शाखा – में तुलसीदास प्रसिद्द हैं ।

३. **रीति काल :** इस काल की विशेषताएँ हैं – श्रृंगार रस के साथ वीर रस की कविता हुई।
   - कवियों में कला के प्रति प्रेम अधिक दिखाई देता है ।
   - प्रमुख कवि हैं – आचार्य केशवदास, बिहारी, भूषण आदि ।

४. **नवीन युग (आधुनिक काल) :** इस काल में गद्य का उद्भव तथा विकास हुआ । खड़ीबोली में लेखन कार्य हुआ करता था । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इस काल के प्रमुख थे । हिन्दी क्रमशः राष्ट्रभाषा का रूप धारण करने लगी और हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार कार्य शुरु हुआ । हिन्दी नाटक, कथा

साहित्य, कहानी, निबंध, समालोचना का विकास हुआ । हिन्दी कविता में नई धारा दीख पड़ी, और इस धारा के जयशंकर प्रसाद प्रमुख थे । इस धारा के अंतर्गत – भाव, स्वदेश प्रेम, मानव गौरव, व्यक्तिवाद, अभिव्यांजना, प्रकृति प्रेम आदि विशेषताएँ हैं ।

आधुनिक काव्य की धाराएँ जैसे छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, हालावाद आदि हिन्दी साहित्य के इतिहास में दिखायी पड़ती है । हिन्दी शिक्षक को उपरोक्त जानकारी से समृद्ध होना आवश्यक है ।

हिन्दी भाषा साहित्य के इतिहास का समर्पक ज्ञान –

इसके अंतर्गत उपरोक्त कालों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे –

हिन्दी साहित्य के इतिहास के चार काल हैं –

आदिकाल – वीर काव्य लिखे जाने के कारण, इस काल को वीरगाथा काल भी कहते हैं । इस काल के हिन्दी काव्य दो प्रकार के काव्यों में विभक्त है –

१. अपभ्रंश का काव्य–जैसे–विद्यापति की कीर्तिलता

२. देश भाषा–जैसे–पृथ्वीराज रासो

अपभ्रंश का काव्य दोहा के रूप में है । पुरानी हिन्दी का विकास अपभ्रंश काव्य से ही हुआ । वीरागाथा काल, युद्धों का काल था । तत्कालीन साहित्य पर वीरता की छाप पड़ी । साहित्य के निर्माता थे चारण लोग, जो अपने आश्रयदाता का यशगान कर उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहन देते थे । इस काल के काव्य की विशेषता थी वीर रस के साथ श्रृंगार का पुट, कल्पना का प्राचुर्य, डिंगल भाषा का प्रयोग । इस काल में पृथ्वीराज, खुसरो आदि प्रसिद्ध कवि थे ।

भक्ति काल –

इस काल की विशेषताएँ हैं – नाम की महत्ता, गुरु की महिमा, भक्ति भावना का प्राधान्य । इस काल के प्रमुख कवि – कबीर, गुरुनानक, जायसी, तुलसीदास, सूरदास आदि थे ।

रीतिकाल –

इस काल की विशेषताएँ हैं– साहित्य निर्माण में रस, अलंकार आदि काव्यांगों पर विवेचना हुई । श्रृंगार रस के साथ वीर रस की अच्छी कविता हुई । भाषा, अवध और ब्रज भाषा का मिश्रण थी । भावपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष का प्राधान्य रहा । प्रमुख कवि थे – केशवदास, बिहारी आदि ।

आधुनिक काल –

इस काल में हिन्दी गद्य का उद्भव, विकस हुआ । नाटक, कला साहित्य, निबंध, समालोचना का विकास भी हुआ । प्रमुख लेखक थे – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, किशोरीलाल गोस्वामी, जैनेंद्र कुमार, रामचंद्र शुक्ल आदि ।

इन सारी जानकारी के साथ हिन्दी शिक्षक, छात्रों को लाभान्वित करना चाहिए ।

अभ्यास –

देंखे आप हिन्दी भाषा के प्रचीन, आधुनिक साहित्य के मार्गों और हिन्दी भाषा साहित्य के इतिहास के बारे में कितना जानते हैं –

खाली जगह को सूक्त शब्दों से भरिए –

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य को ..... कालों में विभाजित किया गया है । आदिकाल में ... काव्य लिखे गये । आदिकाल के दो प्रकार के काव्य हैं .....। भक्तिकाल में .... भावना की प्रधानता थी । रीतिकाल में भावपक्ष की अपेक्षा ..... का प्राधान्य रहा और ..... रस में कविता हुई। आधुनिक काल में .... प्रमुख थे और ...भाषा में लेखन कार्य हुआ करता था।

हिन्दी शिक्षक के कुछ वैयक्तिक सामर्थ्य –

छात्रों, हिन्दी शिक्षक के कुछ वैयक्तिक सामर्थ्य इस प्रकार हैं –

प्रयोगशीलता –

इसमें शिक्षक का अपना श्रम छिपा रहता है । शिक्षक के इस सामर्थ्य से छात्र प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं । छात्रों को रचनात्मक, सृजनात्मक, वैज्ञानिक रूप से विषय वस्तु समझने का अवसर मिलता है । प्रयोग की विषयवस्तु छात्र के जीवन से संबंधित हो । इस प्रवृत्ति से ज्ञान स्थायी होता है और छात्र क्रियाशील रहते हैं ।

सृजनात्मकता –

नवीनता की उत्पत्ति को सृजनशीलता कहा जाता है ।

प्रयोगशीलता की तरह सृजनात्मकता भी एक प्रमुख सामर्थ्य है । सृजनात्मक शिक्षक देश के भविष्य का निर्माण कर सकता है । सृजनात्मकता शिक्षक के व्यक्तित्व के विकास का एक प्रमुख अंश है ।

सृजनशील शिक्षक, सिखाने में होनेवाली समस्या का समाधान कर सकता है । सृजनशीलता, सहजचितंन और कल्पनाशक्ति को अवसर देती है । हमेशा नवीनता से युक्त होती है । छात्रों को स्वइच्छा, स्वप्रेरणा से सीखने का अवसर देती है ।

विस्तृत शब्द भंडार –

भाषा प्रभुत्व के लिए शब्दभंडार की आवश्यकता है । अभिव्यक्ति कौशल के लिए शब्दभंडार आवश्यक है । मानसिक विकास और संपर्क विस्तार से अनेक, शब्दों का ज्ञान होता है। विस्तृत शब्दभंडार से शिक्षक, छात्रों का मार्गदर्शन कर सकता है और अपनी भाषा योग्यता को समृद्ध बना सकता है ।

अपने कार्य में आस्था –

शिक्षक को अपने कार्य में आस्था होनी चाहिए, जिससे वह सफल शिक्षण का कार्य कर सकता है । अपने पेशे से संबंधित नवीन, तकनीकी ज्ञान के विकास में उत्सुक होकर जुट जाना है।

- हिन्दी अध्यापक व्यवहार एवं भाषण में विवेकी हो ।
- एक कुशल शिल्पि की भाँति हिन्दी शिक्षक को अपने कार्य से संबंधित सभी आवश्यक सूक्ष्म बातों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए ।

अभ्यास –

इन कथनों से अपनी सहमति / असहमति को सूचित कीजिए –

१. शिक्षक की प्रयोग शीलता में उसका अपना श्रम छिपा रहता है ।
२. सृजनशीलता, सहजचिंतन और कल्पनाशक्ति को अवसर देती है ।
३. अभिव्यक्ति कौशल के लिए शब्दभंडार आवश्यक नहीं है ।
४. हिन्दी अध्यापक को अपने व्यवहार एवं भाषण में विवेकी होना आवश्यक है ।
५. हिन्दी शिक्षक को सफल शिक्षण कार्य करने के लिए अपने व्यवसाय में आस्था की आवश्यकता नहीं है ।

हिन्दी अध्यापक के गुण –

छात्रों, हिन्दी अध्यापक में मुख्य तौर पर दो गुणों का होना आवश्यक है –

- सामान्य गुण
- विशिष्ट गुण

१. सामान्य गुण –

एक सफल अध्यापक में कई सामान्य गुणों का होना आवश्यक है । सामान्य गुण निम्नप्रकार के होते हैं –

- प्रभावशाली व्यक्तित्व हो ।
- नेतृत्व की क्षमता हो ।
- उत्तम स्वास्थ्य हो ।
- संवेगात्मक संतुलन हो ।
- सामाजिक गुण हो ।
- उच्चचरित्र एवं दृढ़ संकल्प हो ।
- मित्रता एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार हो ।
- वक्त का पाबंध हो ।
- ईमानदार हो ।
- वाक्पटु हो ।
- प्रत्येक कार्य में निष्पक्ष हो ।
- स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता हो ।
- धैर्य, प्रसन्नता, उत्साह हो ।
- पठन अनुभव हो ।

विशिष्ट गुण –

छात्रों, शिक्षक के विशिष्ट गुण की सूची बनाइए और देखिए कि आपकी सूची नीचे के अंशों से कितनी मिलती है ।

शिक्षक अपने मूल अर्थ में वैशिष्ट्य रखते हैं ।

विशिष्ट गुण निम्नप्रकार के हैं –

हिन्दी भाषा पर अधिकार

- शुद्ध उच्चारण, व्याकरण का ज्ञान, चारों भाषाई कौशलों में दक्ष होना है ।
- हिन्दी की सरल अभिव्यक्ति हो ।
- अपनी बात सरल, प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना है ।

अनुकूलता

प्रतिकूल समय में अपने को बनाये रखने की क्षमता हो ।

सतत प्रयत्न शीलता एवं अध्ययनशीलता

निरंतर सीखना, अपना ज्ञान नवीनतम बनाना है ।

भाषा शिक्षण विधियाँ तथा नूतन विधियों का ज्ञान हो

अन्य विषय का ज्ञान –

हिन्दी भाषा के साथ समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि की जानकारी से सामंजस्य, संभव है । यह ज्ञान हिन्दी शिक्षक को आवश्यक है ।

- हिन्दी साहित्य का विस्तृत ज्ञान हो
- बाल मनोविज्ञान का ज्ञान हो
- पाठ्यसामग्री का ज्ञान हो
- शिक्षार्थी के बारे मे ज्ञान हो
- अपने कार्य से संबंधित सभी आवश्यक सूक्त बातों की जानकारी होनी चाहिए ।

आपकी प्रगति की जाँच – १

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

१. प्राचीन काल से समाज में गुरू का स्थान ..... था।
२. शिक्षक का सामर्थ्य छात्रों के सीखने की गतिविधियों के लिए ..... होता है ।
३. एक ..... की भाँति शिक्षक को अपने कार्य के सभी आवश्यक बातों की जानकारी रखनी चाहिए ।
४. शिक्षक के सामान्य गुण में ..... निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए ।
५. शिक्षक को अन्य विषयों की जानकारी से ..... स्थापित करना आवश्यक है ।

२.५.३.२ हिन्दी अध्यापक के कर्तव्य –

छात्रों, आप शिक्षक के कर्तव्यों के बारे में जानते हैं । ऐसे कुछ कर्तव्यों की सूची बनाइए –

छात्र का उत्तर –

१. **शिक्षक को पूरी तैयारी के साथ पाठ पढ़ाना है ।**
२. **दृश्य–श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करना आदि ।**

ठीक है, ऐसे ही शिक्षक के कुछ अन्य कर्तव्यों के बारे में जानेंगे–

- कक्षा में पाठ को सुचारू रूप से पढ़ाना ।
- छात्रों में हिन्दी के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, उनका उत्साह बढ़ाना ।
- छात्रों के सामने अच्छी हिन्दी (मौखिक, लिखित) का आदर्श उपस्थित करना ।

- छात्रों के लेख / रचना का संशोधन करना ।
- छात्रों में अज्ञान, पूर्वाग्रह आदि निकालने का प्रयत्न करना ।
- प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत ध्यान देना ।
- वाद–विवाद, भाषण, बालसभा आदि पाठान्तर क्रियाओं का आयोजन करना ।
- अभिभावकों की सहायता से छात्रों के सर्वागींण विकास करना ।
- समय समय पर मूल्यांकन करके छात्रों की प्रगति का अभिलेख तैयार करना ।
- शिक्षक का कर्तव्य है कि वह शिक्षार्थी को भावी जीवन में आनेवाली समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करे ।
- समाज की उन्नति के लिए कोशिश करनी है ।
- ध्यान रखना कि सफल शिक्षण, शिक्षार्थी केन्द्रित होना चाहिए ।
- उपलब्ध सर्वोत्तम शिक्षण तकनीकों तथा युक्तियों के प्रभावपूर्ण उपयोग की जानकारी रखनी है।
- भाषा के शिक्षार्थी के सभी कौशलों का आवश्यक स्तर तक विकास करने का उत्तरदायित्व है।

अपनी प्रगति की जाँच – २

निम्न वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए –

१. शिक्षक को ध्यान रखना है कि सफल अध्यापन शिक्षार्थी केन्द्रित हो ।
२. पढ़ाने के पहले पाठ्य विषय की पूर्व तैयारी नहीं चाहिए ।
३. छात्रों के लेख का संशोधन शिक्षक को करना है ।
४. शिक्षक, शिक्षार्थी को भावी जीवन में आनेवाली समस्या का सामना करने की शक्ति प्रदान करे ।
५. प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत ध्यान देना शिक्षक का कर्तव्य नहीं है ।

२.५.३.३. हिन्दी अध्यापक की वर्तमान स्थिति एवं महत्व –

छात्रों, हिन्दी शिक्षकों की वर्तमान स्थिति के बारे में विचार करेंगे –

राष्ट्रभाषा समूचे देश की भाषा होती है । हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है तथा हिन्दी भाषा का शिक्षक होना हमारे लिए गौरव की बात है । किसी भी राष्ट्र का वास्तविक धन, उसका गौरव, प्रतिष्ठा व आतंरिक एवं बाह्य तथा सर्वांगीण विकास उस राष्ट्र के छात्रों पर ही निर्भर है । कल के इन भावी नागरिकों को सही मार्गदर्शन का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य शिक्षक करते हैं । शिक्षक राष्ट्र की प्रगति का माध्यम है ।

हिन्दी भाषा का प्रचार और हिन्दी भाषा की शिक्षा, योग्य शिक्षकों पर निर्भर है । आजकल बहुत से हिन्दी अध्यापक इस उत्तरदायित्व को निभाने में प्रायः समर्थ नहीं हैं । योग्य हिन्दी शिक्षकों का प्रायः

अभाव है । अब हिन्दी शिक्षकों में पढ़ाने में रुचि कम हो रही है । कम कुशल व्यक्ति हिन्दी शिक्षक पद पर नियुक्त हुए हैं ।

काफी शिक्षक हिन्दी, की बड़ी उपाधियाँ धारण किये हैं । परन्तु उन्हें शिक्षण विधि का ज्ञान, पढ़ाने का अनुभव नहीं है। जो शिक्षक पहले से ही हिन्दी पढ़ाते आये हैं और हिन्दी का थोड़ा बहुत ज्ञान रखते हैं उन्हें अंग्रेज़ी / गणित के शिक्षकों से निम्न दर्जे का समाझा जाता है । उनको 'वर्नाक्यूलर टीचर' (भाषा शिक्षक) बताकर उनका वेतन न्यून रखा जाता है । उन्हें प्रेरणा और सहायता का अभाव है अपने लिए समाज में गौरव नहीं है । वे अपने जीविकोपार्जन का युद्ध लड़ रहे है । ऐसा लगता है कि शिक्षक स्कूल में है, कक्षा में नहीं । इस स्तिथि में उनसे पाठ्यक्रम का अच्छी तरह पूर्ण करने की निरीक्षा कैसे रखी जा सकती है ?

कक्षा में ४० से ८० तक, बच्चों का अनुपात होता है, इसके साथ प्रेरणारहित छात्र, अमीर अभिभावक, असंगठित स्कूल प्रशासन है । अगर शिक्षक अपनी कुशलता को उत्तम बनाने पर भी, उसका परिनिरीक्षक विध्यालय का परंपरागत प्राचार्य या शिक्षा विभाग ही है । इसी कारण योग्य शिक्षक भी उदासीन, असंतुष्ट, अयोग्य बन जाते हैं ।

बहुत से प्रदेशों में भाषा शिक्षकों के प्रशिक्षण का संतोषजनक प्रबंध नही हैं । इस प्रकार विशेषज्ञ शिक्षकों की आजकल कमी है ।

भाषा शिक्षकों की ऐसी शोचनीय दशा को सुधारने के लिए माध्यमिक शिक्षा आयोग और अतंराष्ट्रीय समिति ने अनेक सुझाव दिये हैं जिनसे आशा बँधती है कि भविष्य में हिन्दी के योग्य प्रशिक्षित अनुभवी शिक्षक मिलने लगेंगे ।

शिक्षक स्वंय को भी अपनी उन्नति का प्रयास करना चाहिए । आवश्यक है कि उन्हें अपना आत्मविशास बनाये रखना और अपनी स्थति को नियंत्रण में रखना है । लेकिन अपना अपमान, अन्याय के साथ कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए ।

आज शिक्षा का क्षेत्र गत्यात्मक है । शिक्षक को उत्तम, नवीन ज्ञान की जानकारी रखनी है और आये दिन के प्रशिक्षण प्राप्तकर, पेशे से संबंधित कार्यशाला में भाग लेना है । शिक्षक को अपने पेशे का मालिक बनना है न कि गुलाम ।

परीक्षा –

अनुच्छेद को पढ़कर संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए –

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है । हिन्दी भाषा का प्रचार और हिन्दी भाषा की शिक्षा, योग्य शिक्षकों पर निर्भर है । जो शिक्षक हिन्दी का थोड़ा बहुत ज्ञान रखता है, उन्हें अंग्रेज़ी / गणित शिक्षकों से निम्न दर्जे का समझा जाता है और उनको ' वर्नाक्यूलर टीचर' बताकर वेतन न्यून करदिया जाता है। वे अपने जीविकोपार्जन का युद्ध लड़ रहे हैं। शिक्षक अपना अपमान,अन्याय के साथ कभी भी समझैता नहीं करना चाहिए ।

१. हमारी राष्ट्रभाषा कौन सी है ?

२. शिक्षक कौन सा युद्ध लड़ रहे हैं?

३. हिन्दी शिक्षक को किनसे निम्न दर्जे का समझा जाता है ?

४. शिक्षक को किन अंशों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए?

(उत्तर : १. हिन्दी, २. जीविकोपार्जन का, ३. अंग्रेज़ी / गणित शिक्षक ४. अपना अपमान,अन्याय**)**

हिन्दी अध्यापक का महत्व –

आइए, हिन्दी अध्यापक के महत्व की चर्चा करेंगे –

हिन्दी शिक्षा का दायित्व महान है । इस उत्तरदायित्व का मान हिन्दी, अध्यापक में होना अत्यंत आवश्यक है। विख्यात दार्शनिक डा. राधाकृष्णन ने अध्यापक के महत्व के बारे में कहा है कि ट्र समाज में अध्यापक का स्थान सशक्त एवं महात्वपूर्ण है । यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बौद्धिक परंपराएँ एवं तकनीकी कौशल संचारित करने में केन्द्रीय भूमिका निभाता है और सभ्यता की ज्योति को प्रज्वलित रखने में सहायता प्रदान करता है ।

अध्यापक का महत्व निम्न उक्ति से स्पष्ट होता है –

'भवन निर्माण में जो स्थान ईटों का है, राष्ट्रनिर्माण में वही स्थान अध्यापक का है'। ऐसे सम्मान, प्रतिष्ठा तथा गौरव पानेवाला हिन्दी अध्यापक होता है ।

हिन्दी शिक्षक के महत्व के कुछ और विचार हैं –

- हिन्दी शिक्षक अपने विषय के प्रति जिज्ञासा की प्रवृत्ति रखता है ।
- छात्रों को विषय समझाने में सहयोग प्रदान करता है ।
- छात्र–शिक्षक दोनों मिलकर ज्ञान रूपी दीप को सदा के लिए प्रज्वलित रखते हैं ।
- छात्रों की मानसिक स्थिति के अनुसार ही शिक्षण प्रदान करता है ।
- आदर्श, सक्रिय, प्रभावशाली नागरिकों को तैयार करता है ।
- दूरदर्शिता से छात्रों के समग्र विकास के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करता है ।
- छात्रों में हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करता है ।
- हिन्दी भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त रखता है ।
- छात्रों के प्रति सहानुभूति और प्रेम रखता है ।
- हिन्दी शिक्षण के साधनों एवं मूल्यांकन में कुशल होता है ।

हिन्दी भाषा शिक्षक में भाषा ज्ञान, भाषा व्याकरण, तथा भाषा अध्यापन संबंधी जितनी अधिक जानकारी होगी उतना ही अधिक वह भाषा शिक्षार्थी के भाषा अधिगम में सहयोगी सिद्ध होगा।

आपकी प्रगति की जाँच – ३

प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. भवन निर्माण में ईंट का जो स्थान है, राष्ट्रनिर्माण में वही स्थान किसका है ?

२. ज्ञान रूपी दीप को सदा प्रज्वलित करनेवाले कौन कौन हैं ?

३. भाषा शिक्षक की शोचनीय दशा सुधारने के लिए किस आयोग और समिति ने सुझाव प्रस्तुत किये हैं ?

२.५.४. सारांश –

अब तक हिन्दी शिक्षक के बारे में काफी विचार कर चुके हैं । आइए और एक बार संक्षिप्त रुप से देखें –

शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक का पात्र श्रेष्ठ और प्रभावात्मक है । अज्ञान को दूर करनेवाला ही शिक्षक है । हिन्दी अध्यापक अपने सामर्थ्य में – भाषा की योग्यता, दृश्य–श्रव्य उपकरण के प्रयोग की क्षमता, भविष्य की सोच, संगीत के प्रति रुचि रखता है । हिन्दी अध्यापक में सृजनशीलता, विपुल शब्दभंडार हो ।

हिन्दी अध्यापक कै सामान्य गुण तथा विशिष्ट गुण होते हैं ।

पढ़ाने के पहले तैयारी करना, छात्र के लेख का संशोधन करना, समस्याट्टसमाधान करने की शक्ति छात्रों को देना आदि हिन्दी शिक्षक के कर्तव्य है ।

हिन्दी शिक्षक की वर्तमान स्थिति आशाजनक नहीं है । गौरव का अभाव, कम वेतन मिलता है । माध्यमिक शिक्षा आयोग और अंतरराष्ट्रीय समिति ने उनकी दशा सुधारने के अनेक सुझाव दिए हैं ।

हिन्दी अध्यापक का अपना महत्व है । छात्रों का मार्गदर्शन करना, हिन्दी भाषा पर अधिकार प्राप्त ाकराना, छात्रों को योग्य नागरिक बनाना है ।

२.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर –

१. १. शिरोमणि २. पूरक ३. कुशल शिल्पी ४. स्वतंत्र ५. सामंजस्य

२. १. सही २. गलत ३. सही ४. सही ५. गलत

३. १. शिक्षक २. छात्र और शिक्षक ३. माध्यमिक शिक्षा आयोग और अंतरराष्ट्रीय समिति

२.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास –

प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. हिन्दी भाषा शिक्षक के गुण और सामर्थ्य पर प्रकाश डालिए ।

२. हिन्दी भाषा शिक्षक के कर्तव्यों के बारे में लिखिए ।

२.५.७ संदर्भ पुस्तकें –

१. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेद्रजीत (२०१२)

श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।

२. नूतन हिन्दी शिक्षण

के. आर. सत्तिगेरी (१९९७)

प्रकाशक – श्रीमती सत्तिगेरी, बेलगाँव

3. www.careerizma.com

खण्ड २ : भाषा कौशलों का शिक्षण

इकाई ६ : हिन्दी अध्यापक के आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र

इकाई की संरचना

२.६.१. सीखने के उद्धेश्य

२.६.२. प्रस्तावना

२.६.३ सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

२.६.३.१. हिन्दी अध्यापक के आनुपातिक **(व्यावसायिक)** विकास के तंत्र – शैक्षिक योग्यता और वैयक्तिक सामर्थ्य

आपकी प्रगगि की जाँच – १

२.६.३.३. हिन्दी अध्यापक का आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र – प्रशिक्षण – सेवा पूर्व तथा सेवारत

आपकी प्रगति की जाँच – २

हिन्दी शिक्षक की रुचि तथा अभिरुचियाँ

आपकी प्रगति की जाँच – ३

२.६.४. सारांश

२.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

२.६.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

२.६.७. संदर्भ पुस्तकें

२.६.१. सीखने के उद्धेश्य –

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत छात्र इन अंशों के योग्य होंगे –

- हिन्दी अध्यापक के आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र – शैक्षिक योग्यता तथा वैयक्तिक सामर्थ्य का वर्णन करेंगे ।
- हिन्दी अध्यापक की आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र – सेवापूर्व तथा सेवानिरत प्रशिक्षण की चर्चा करेंगे ।
- हिन्दी अध्यापक के हिन्दी साहित्य में रुचि, हिन्दी कार्यशाला में अभिरुचि, आधुनिक उपकरणों के सदुपयोग को स्पष्ट करेंगे ।

२.६.२. प्रस्तावना –

छात्रों, आप शिक्षक के बारे में जानते हैं । आपके विचारों को नीचे के विचारों से मिलाइए ।

शिक्षा का आधार स्तम्भ शिक्षक है ।

‘ No system of education can rise higher than its, teacher ’

– यह वाक्य शिक्षक के स्थान की पहचान है । सीखने की तरह सिखाना भी निरंतर प्रक्रिया है । शिक्षक और छात्र एक सिक्के के दो पहलू हैं । शिक्षक का कार्य पवित्र, महत्वपूर्ण और उत्तरदायित्व पूर्ण है ।

२.६.३ सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ ।

२.६.३.१. हिन्दी अध्यापक के आनुपातिक (व्यवसायिक) विकास के तंत्र– शैक्षक योग्यता और वैयक्तिक सामर्थ्य–

हिन्दी अध्यापक की शैक्षिक योग्यता –

छात्रों, आप हिन्दी अध्यापक की शैक्षिक योग्यता के बारे में जानते हैं । हिन्दी अध्यापक बनने आवश्यक शैक्षिक योग्यता को बताइए –

छात्र का उत्तर – विश्वविध्यालय की डिग्री आवश्यक है –

आइए इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे –

हिन्दी अध्यापक को हिन्दी का सही ज्ञान होना चाहिए ।

शिक्षक को वांछित शैक्षिक योग्यता प्राप्त करनी चाहिए । स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त किया हुआ शिक्षक ही माध्यमिक स्तर के छात्रों को पढ़ाने में सक्षम है । जैसे, विश्वविध्यालय की (डिग्री) उपाधि – बी.ए, बी.एस.सी, बी.कॉम । अगर छात्र हिन्दी अध्यापक बनना चाहते हैं तो उन्हें इन उपाधियों में हिन्दी भाषा को एक भाषा या विकल्प के रूप में अध्ययन करना अनिवार्य है।

छात्र को विश्वविध्यालय उपाधि के साथ साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्राप्त कर लेना चाहिए । जैसे, माध्यमिक स्तर के लिए बी.एड, उपाधि प्राप्त करनी है ।

हिन्दी शिक्षक बननेवाले व्यक्ति को इन उपाधियों के साथ साथ हिन्दी भाषा साहित्य की जानकारी, हिन्दी भाषा पर अधिकार, जैसे उच्चारण, व्याकरण, छंद, अलंकार, भाषा के चारों कौशलों का पूरा ज्ञान होना चाहिए तथा उन्हें पढ़ाने के बारे में भी निपुण हो । शिक्षक बननेवाले को हिन्दी भाषाई संस्कृति का ज्ञान और अपने व्यवसाय में निरंतर विचार, विषय, विधियों का ज्ञान बढ़ाकर छात्रों को लाभ पहुँचाना है ।

हिन्दी अध्यापक के वैयक्तिक सामर्थ्य –

पिछली इकाई (खंड–२, इकाई–५) में हिन्दी अध्यापक के वैयक्तिक सामर्थ्य के बारे में आप लोग काफी जान चुके हैं । आइए और जानकारी प्राप्त करें –

हिन्दी अध्यापक के कुछ वैयक्तिक सामर्थ्य

– **संगीत ज्ञान**

यह ज्ञान भाषा साहित्य का सार है । शिक्षक कविता को गाकर सुना सकता है । गाने से, कम समय में सीखना सफल होता है, कविता का रसास्वादन प्राप्त होता है और काव्य में रुचि, भावना का विकास, भाषा सौंदर्य में वृद्धि छात्रों में संभव होता है । संगीत का ज्ञान शिक्षक की भावना पर आधारित है । यह उनकी विशेष योग्यता है ।

– **अभिनय योग्यता**

संगीत और अभिनय, अध्यापन की योग्यता होकर छात्रों को खुशी, शांति देती है । गीत गाने के बाद अभिनय में रूपान्तरित करना चाहिए । अभिनय द्वारा सीखना, छात्रों को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक विकास का अवसर प्रदान करता है । अभिनय छात्रों के मन को प्रभावित करता है । अभिनय क्रियाओं से युक्त होने के कारण, छात्र कम समय में अधिक विषय ज्ञान अपनाते हैं । अभिनय योग्यता छात्रों के मन को एकाग्र करके उत्तम तरीखे से सीखने का अवसर देने के कारण शिक्षक इस योग्यता को अपने शिक्षण प्रक्रिया में अनिवार्य बना लेना चाहिए ।

– **दूर दर्शिता**

यह सामर्थ्य शिक्षक में आवश्यक है । छात्रों का मार्गदर्शन करते समय सीखने के अंश को मन में रखकर, आगे आने वाली कठिनाई, गलतियाँ को पहले से ही ध्यान में रखकर छात्रों को सिखाना और अर्थग्रहण कराना है ।

– **मधुर ध्वनि**

शिक्षक की वाणी मधुर, ज़ोरदार, स्पष्ट होनी चाहिए । यह ध्वनि शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती है ।

– **चितंनशीलता**

शिक्षक को खुद चितंनशील होना चाहिए । सिर्फ पाठ्य पुस्तक पर निर्भर न रहकर विस्तार से सोचट्टसमझकर छात्रों को पढ़ना और उनमें भी इस योग्यता का विकास करना है ।

– **उत्तम संघटनकर्ता**

दैनिक पाठ और इतर गतिविधियों का संघटन शिक्षक को करना है । योजना, गृहकार्य, प्रायोगिक कार्य और मूल्यांकन कार्य को अच्छे तरीके से संघठित करने की योग्यता रखनी चाहिए ।

अपकी प्रगति की जाँच – ०१

सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए–

१. शिक्षक और छात्र एक सिक्के के ..... पहलू हैं ।

२. संगीत का ज्ञान शिक्षक की ..... आधारित होता है ।

३. अभिनय सामर्थ्य, छात्रों के मन को ..... करके उत्तम तरीखे से सीखने का अवसर देता है ।

४. योजना, गृह कार्य, प्रायोगिक कार्य और मूल्यांकन कार्यों का ..... करना चाहिए ।

२.६.३.२. हिन्दी अध्यापक की अनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के तंत्र – प्रशिक्षण और अभिरुचियाँ

हिन्दी अध्यापक के सेवापूर्व और सेवानिरत प्रशिक्षण –

छात्रों, हिन्दी शिक्षक के सेवा पूर्व प्रशिक्षण के बारे में जानेंगे –

प्रत्येक व्यवसाय के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है । प्रशिक्षण विध्यालय में शिक्षा के सिद्धान्तों और शिक्षा की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करना शिक्षक के लिए नितांत आवश्यक है । अध्यापन के लिए उसकी दुगुनी आवश्यकता है, क्योंकि अध्यापक यंत्रों या कागज़ों जैसे निर्जीव पदार्थों के साथ काम करने के बदले बालक जैसे सजीव व्यक्ति के साथ काम करता है । प्रशिक्षण के उपरान्त छात्राध्यापक को अध्यापन का अभ्यास प्राप्त करना है । प्रशिक्षण में शिक्षक अपनी वृत्ति से संबंधित ज्ञान, अनुभव, कौशल प्राप्त करता है ।

विश्वविद्यालय उपाधि जैसे बी.ए, बी.एस.सी, बी.कॉम प्राप्त करने के साथ उसमें हिन्दी भाषा को एक भाषा के या एक विषय के रूप में अध्ययन आवश्यक है । इसके साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण भी आवश्यक है । यह प्रशिक्षण ही सेवापूर्व प्रशिक्षण है ।

१. स्तरानुकूल प्रशिक्षण जैसे – प्राथमिक शिक्षक बनने के लिए – पी.यू.सी. के साथ दो साल का डी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करना है ।

२. माध्यमिक (सेकन्डरी) **शिक्षक बनने के लिए –**

जो विश्वविद्यालय उपाधि बी.ए, बी.एस.सी, बी.कॉम जहाँ हिन्दी एक भाषा / विकल्प के रूप में पढ़ा हो, उनको (दो वर्षीय) बी.एड प्रशिक्षण (हिन्दी पद्धति के साथ) प्राप्त करना चाहिए ।

३. कालेज में हिन्दी प्रवक्ता बनने के लिए –

हिन्दी में स्नातकोतर उपाधि जैसे एम.ए (हिन्दी), के साथ एम फ़िल उपाधि की आवश्यकता है ।

इन दिनों प्रवक्ता पेशे के लिए बी.एड, उपाधि भी हासिल करना आवश्यक मानने लगे हैं ।

प्रशिक्षण के साथ छात्राध्यापक को अध्यापन में सैद्धान्तिक, प्रायोगिक शिक्षण प्राप्त करना है । पाठायोजना, इकाई योजना, इकाई परीक्षा, संसाधन इकाई योजना आदि की तैयारी में प्रशिक्षित होना है । शिक्षण पद्धाति, तकनीकें, मूल्यांकन आदि का ज्ञान प्राप्त करना है । अगर छात्र ने शिक्षक बनने के लिए एम.ए, एम.एड आदि प्राप्त की है तो, यह और भी अच्छा है क्योंकि ऐसे व्यक्ति प्रशिक्षण और पेशे के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं ।

अभ्यास :

नीचे के अनुच्छेद को पढ़िए और संबंधित प्रश्न का उत्तर दिजिए –

प्रशिक्षण विध्यालय, प्रशिक्षणार्थी को शिक्षा के सिद्धांत, शिक्षा की प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करता है । प्रशिक्षण के उपरांत प्रशिक्षणार्थी को अध्यापन का अभ्यास प्राप्त करना है । हिन्दी अध्यापक को सेवा पूर्व, विश्वविध्यालय उपाधि तथा व्यावसाहिक प्रशिक्षण भी आवश्यक है । प्रशिक्षण मैं सैद्धान्तिक, प्रायोगिक शिक्षण प्राप्त करना है । पाठयोजना, इकाई योजना, संसाधन योजना की तैयारी में भी प्रशिक्षित होना है ।

१. प्रशिक्षण विध्यालय प्रशिक्षणार्थी को कौन सा ज्ञान प्रदान करता है ?
२. प्रशिक्षणार्थी को अध्यापन का अभ्यास कब तक प्राप्त करना है?
३. प्रशिक्षणार्थी को हिन्दी अध्यापक बनने किन अंशो की आवश्यकता है ?
४. प्रशिक्षणार्थी को किन अंशों की तैयारी में प्रशिक्षित होना है ?

सेवा निरंतर प्रशिक्षण (सेवारत)

छात्रों, सेवा निरंतर प्रशिक्षण के बारे में बताइए और आपके विचारों को नीचे के अंशों से मिलाकर देखिए कि आप कहाँ तक सही है –

शिक्षा के क्षेत्र में हर दिन आविष्कार, खोज होकर सीखना–सिखाने की प्रकिया में नई प्रशिक्षण पद्धति और शिक्षण तंत्र तथा शिक्षण माध्यम अस्तित्व में आ रहे हैं, इसी कारण, सेवारत शिक्षक को समयट्टसमय पर आधुनिक विचार, तंत्र के बारे में पुनः प्रशिक्षण पाना आवश्यक है ।

सेवानिरंतर प्रशिक्षण देने / पाने के कारण –

- नये विषय, नये पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक रचने के लिए सेवानिरंतर शिक्षकों को प्रशिक्षण देना है।
- छात्रों को नई परिकल्पना, नये क्षेत्र के साथ सामंजस्य कराने ।
- नये तंत्र, शिक्षण पद्धतियों को कक्षा में प्रयोग करने ।

- बाल मनोविज्ञान के नये विचार जानने और विविध स्तर पर छात्रों का स्वभाव तथा विकास का स्तर प्रकृति, विकास समझकर शिक्षण देने ।
- मूल्यांकन क्षेत्र में हो रहे नये तंत्र, साधन की जानकारी प्राप्त करने ।
- परिवर्तित समाज की आवश्यकतानुसार पाठ्य तथा पाठ्येतर गतिविधियों का संगठन करने।
- शिक्षक को स्कूल तथा कक्षा बनाए रखने में पुनः प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता है ।

सेवानिरंतर प्रशिक्षण की पद्धतियाँ –

छात्रों, सेवानिरंतर प्रशिक्षण की पद्धतियों की चर्चा करेंगे –

१. **विचार गोष्ठियाँ –**

हिन्दी शिक्षक को विचार गोष्ठियों (सेमिनार) में भाग लेकर समस्या की चर्चा, विश्लेषण और निर्णय का विचार विनिमय करना चाहिए । इन गोष्ठियों में श्रेष्ठ शिक्षातज्ञ को आमंत्रित करना है और इन से शिक्षा के नये विचारों को सुनाने–सुनने का अवसर प्राप्त होता है ।

- **पुनःश्चेतन कोर्स –**

शिक्षक इन कोर्सों में भाग लेकर श्रेष्ठ शिक्षातज्ञ यो के नये आविष्कार, आधुनिक जानकारी, अनुभवों, आधुनिक शिक्षण उपकरण की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

हिन्दी शिक्षक समिति –

इसमें भाग लेकर हिन्दी शिक्षक अपनी शैक्षिक समस्या, आधुनिक ज्ञान की जानकारी की चर्चा करके कुछ नये करने योग्य हो जाते हैं ।

स्कूल कार्यक्रम –

स्कूल में आयोजित हिन्दी संघ की सभा, प्रायोगिक योजना, विस्तार प्रवचन आदि हिन्दी शिक्षक के ज्ञान की वृद्धि में सहायक हैं ।

ग्रीष्मकालीन शिविर

यह शिविर हर स्तर के, हर विषय के शिक्षकों के ज्ञान के पुनःश्चेतन करने तथा नवीन प्रचलित ज्ञान के साथ सामंजस्य स्थापित करता है । ऐसे शिविरों को ग्रीष्मकालीन छुट्टी की अवधि में आयोजित करते हैं।

प्रदर्शन पाठ, शैक्षिक प्रवास, प्रवचन आदि भी हिन्दी शिक्षक के लिए लाभदायक हैं ।

आपकी प्रगति की जाँच – ०२

दिए गए वाक्यों में सही / गलत पहचानिए –

१. प्रत्येक व्यवसाय के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है ।

२. माध्यमिक स्कूल शिक्षक बनने के लिए बी.एड., उपाधि अनिवार्य है ।

३. हिन्दी शिक्षक बनने के लिए बी.एड. प्रशिक्षण में हिन्दी एक पद्धति के रूप में अध्ययन अनिवार्य है।

४. ग्रीष्मकालीन शिविर, शिक्षक के ज्ञान का नवीन प्रचलित ज्ञान के साथ सामंजस्य नहीं करता है ।

हिन्दी अध्यापक की रुचि तथा अभिरुचियाँ –

छात्रों, हिन्दी अध्यापक की रुचि तथा अभिरुचियों के बारे में चर्चा करेंगे –

हिन्दी साहित्य में रुचि –

हिन्दी शिक्षक को हिन्दी साहित्य में रुचि रखनी चाहिए । हिन्दी के कवियों, उपन्यासकारों, नाटककारों, अन्य प्रसिद्ध लेखकों की जीविनियाँ, प्रसिद्ध रचनाओं, साहित्यिक विशेषताओं, शैलियों आदि से परिचित होना चाहिए । शिक्षक को हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध रचनाओं का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिए । हिन्दी साहित्य के इतिहास, कविता के विभिन्न वाद, छंद, अलंकार, आलोचना, भाषा विज्ञान का ज्ञान आदि प्रकरण पुस्तकों का प्रयोग, पुस्तकालय का उपयोग, हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का निरंतर, नियमित अध्ययन, बाल साहित्य, किशोर साहित्य का परिचय आवश्यक है। शिक्षक अपने इस साहित्य के ज्ञान से संदर्भानुसार छात्रों को भी लाभान्वित कर सकता है ।

– **कार्यशाला में अभिरुचि**

अनेक शिक्षण आयोगों, समितियाँ शिक्षण क्षेत्र से संबंधित पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, मूल्यांकन साधन, शिक्षणोपकरण, पाठयोजना आदि के बारे में कार्यशाला की व्यवस्था करते है । शिक्षक इनमें भाग लेकर व्यावसायिक ज्ञान, प्रशिक्षण प्राप्तकर अपने व्यवसाय में आगे बढ़ सकते हैं ।

– **आधुनिक उपकरणों के प्रयोग में रुचि –**

आज का युग वैज्ञानिक नव निर्माण का युग है । इस बदलते हुए युग में शिक्षण का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है । शिक्षण के बिना उचित परिवर्तन नहीं हो सकता । शिक्षण एक बहुमुखी प्रक्रिया है । शिक्षा प्रणाली को रोचक, आकर्षक, प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है । स्कूल, कक्षा, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यपुस्तकें, पुस्तकालय, पाठ्य सहायक क्रियाएँ आदि सभी शिक्षा के साधन हैं । इन साधनों का उचित उपयोग करने से छात्र कक्षा में सक्रिय सहभाग लेते हैं । पाठ को सहजता से समझ लेते हैं । शिक्षा के विशिष्ट एवं व्यापक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बहुत से शिक्षण साधनों का अध्यापन प्रणाली में उपयोग किया जाता है । आजकल शैक्षिक प्रक्रिया में श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है ।

– **श्रव्य–दृश्य साधन –**

चार्ट, नक्शा, मॉडल, चित्र, रेडियो, चलचित्र, रेकार्डर, प्रोजेक्टर, दूरदर्शन, चित्र दर्शक, भाषा–प्रयोगशाला आदि का सही प्रयोग करना है । इन साधनों का उपयोग, हिन्दी शिक्षक को समय, स्तर, छात्रों के मानसिक–शारीरिक स्तर के अनुसार किया जाना चाहिए ।

प्रारंभिक कक्षओं में अक्षर सिखाने अक्षरों के चार्ट, शब्दज्ञान कराने चित्रों का प्रयोग किया जाता है । बाज़ार के बारे में पढ़ाने हिन्दी शिक्षक छात्रों को प्रत्यक्ष बाज़ार ले जाकर अनुभव करा सकता है । बाज़ार की दुकानों का चित्र दिखाकर इस विषय के बारे में सरस ज्ञान दे सकते है ।

ये साधन पाठ को आकर्षक, प्रभावशाली बनासकते हैं । इन उपकरणों के प्रयोग में हिन्दी शिक्षक को प्रशिक्षण भी लेना है और संदर्भोचित प्रयोग करके छात्रों में ज्ञान स्थायी बना सकता है। शिक्षण पद्धति, प्रसंग के अनुसार उपकरणों के प्रयोग की कला हर शिक्षक को होनी चाहिए ।

आपकी प्रगति का जाँच – ०३

इन प्रश्नों का उत्तर दिजिए –

१. हिन्दी अध्यापक को किन किन अंशों में रुचि रखनी चाहिए ?

२. शिक्षा के साधन कौन कौन से हैं ?

३. शिक्षक को शैक्षिक साधनों का उपयोग किन अंशों के अनुसार करना चाहिए ?

४. शिक्षक कार्यशाला में भाग लेकर कौनसा ज्ञान पा सकता है ?

२.६.४. सारांश –

आइए , अब तक हिन्दी शिक्षक के आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के बारे में क्या क्या विचार किए हैं – इन विचारों का सारांश देखें

हिन्दी शिक्षक के आनुपातिक (व्यावसायिक) विकास के लिए शैक्षिक योग्यता जैसे बी.ए, बी.एस.सी, बी.कॉम के साथ बी.एड. प्रशिक्षण आवश्यक है ।

वैयक्तिक सामर्थ्य में, हिन्दी शिक्षक को संगीत ज्ञान, अभिनय सामर्थ्य, मधुर ध्वनि, चितंनशीलता आदि का अपने में स्थान देना चाहिए ।

हिन्दी अध्यापक को शिक्षक बनने के पूर्व सेवापूर्व प्रशिक्षण और सेवा में रहकर सेवानिरंतर प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है ।

हिन्दी अध्यापक की रुचि और अभिरुचियों के अंतर्गत – हिन्दी साहित्य में रुचि, कार्यशाला में रुचि, आधुनिक उपकरणों के कुशल प्रयोग आदि सम्मिलित हैं हिन्दी शिक्षक को चाहिए कि इन अंशों में कुशल बनकर हिन्दी भाषा क्षेत्र को संपन्न बनाए ।

२.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर –

१) १. दो, २. भावना, ३. एकाग्र, ४. संघटन

२) १. गलत २. सही ३. सही ४. गलत

३) १. हिन्दी साहित्य, कार्यशाला, आधुनिक उपकरणों का प्रयोग

२. स्कूल, कक्षा, शिक्षण विधियाँ, पुस्तकालय, पाठ सहायक क्रियाएँ

३. समय, स्तर, छात्र के मानसिक – शारीरिक स्तर

४. व्यावसायिक

२.६.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास –

इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. हिन्दी शिक्षक के वैयक्तिक सामर्थ्यों के बारे में लिखिए ?

२. सेवापूर्व, सेवानिरंतर प्रशिक्षण के बारे में आप क्या जानते हैं ?

३. हिन्दी शिक्षक की रुचि और अभिरुचियों के बारे में लिखिए ?

२.६.७. संदर्भ पुस्तकें –

१. नूतन हिन्दी शिक्षण ।

के. आय. सत्तिगेरी (१९९७)

प्रकाशक – श्रीमती विजया के सत्तिगेरी, बेलगाँव

२. कन्नड विषयाधारित बोधना पद्धति

एस. के. होळेयन्नवर (२००३)

विध्यानिधि प्रकाशन – गदग

३. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)

श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

४. रसायन शास्त्र बोधने

नीलकंठ रबनाल (२००३–०४)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

खण्ड ३ : पाठयॊजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई १ : पाठयॊजना

इकाई की संरचना

३.१.१. सीखने के उद्देश्य
३.१.२. प्रस्तावना
३.१.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.१.३.१. पाठयॊजना का अर्थ और महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.१.३.२. हिन्दी पाठयोजना के लक्षण और संरचना
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.१.३.३. गद्य की पाठयोजना
आपकी प्रगति की जाँच - ०३
३.१.३.४. कविता की पाठयोजना
आपकी प्रगति की जाँच - ०४
३.१.३.५. व्याकरण की पाठयॊजना
आपकी प्रगति की जाँच - ०५
३.१.४. सारांश
३.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.१.७. संदर्भ पुस्तकें

३.१.१. सीखने के उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- पाठयोजना के अर्थ और महत्व को स्पष्ट करेंगे।
- पाठयॊजना के लक्षणों को पहचानेंगे।
- गद्य की पाठयोजना के बारे में सीखेंगे।
- कविता की पाठ योजना को स्पष्ट रूप से लिखेंगे।
- व्याकरण पाठयोजना को समझकर लिखेंगे।

३.१.२. प्रस्तावना

छात्रों, योजना के बारे में आप जानते हैं। योजना के कुछ विचार बताइए -

छात्र का उत्तर -

- **हर कार्य करने के लिए योजना चाहिए ।**
- **कार्य सफल होने के लिए योजना चाहिए।**
- **ठीक है, आइए योजना और पाठयोजना के कुछ और अंशों की चर्चा करेंगे -**

ब्रम्हांड की सृष्टि भी यॊजना पूर्ण है। सफल कार्य का प्रतिबिंब ही यॊजना है। जीवन में किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित, सुचारु रूप से करने के लिए और अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए सुगठित योजना की परम आवश्यकता है। जैसे अभियंता मकान बनाने के पूर्व आधारपत्रक (नीलनक्शा) तैयार करके निर्माण करता है वैसे ही शिक्षक को, कक्षा में पाठ पढ़ाने के पहले विषयवस्तु की पाठयोजना आवश्यक है।

पाठयॊजना का आविर्भाव गेस्टालट मनोविज्ञान से हुआ है। शिक्षण-अधिगम व्यवस्था में शिक्षक को एक सत्र में निर्धारित पाठ्यवस्तु की वार्षिक योजना और इकाई योजना तैयार करना पड़ता है।

३.१.३. सीखने के अंश और क्रियाएँ -

३.१.३.१. पाठयॊजना का अर्थ और महत्व

छात्रों, पाठ योजना के अर्थ के बारे में जानेंगे -

पाठयॊजना का अर्थ - शिक्षण एक नियोजित रूप से की जानेवाली प्रक्रिया है। भाषा प्रयोग की इकाई को पाठ कहते हैं।

शिक्षक अपने दैनिक शिक्षण कार्य को कुशलता पूर्वक संपन्न करने के लिए जो योजना बनाता है उसे पाठयोजना कहते हैं।

किसी निश्चित अवधि में किसी रचनात्मक, ज्ञानात्मक, कौशल की जानकारी प्रधान पाठ के निर्धारित तथा विशिष्ट उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए आवश्यक सामग्री को एकत्रित करके तथा प्रस्तुत करने की विधि की विस्तृत अथवा सांकेतिक रूपरेखा को ' पाठयॊजना ' कहा जाता है।

शिक्षक को शिक्षण के पूर्व पाठयोजना तैयार करना है। शिक्षक एक अवधि (४०/४५ मिनट) के लिए पाठयोजना तैयार करके उसका कक्षा शिक्षण में अनुसरण करता है। पढ़ानेवाली पाठ्यवस्तु को छोटी इकाइयों में बाँटता है। एक इकाई की विषयवस्तु को वह एक अवधि में पढ़ाता है।

परिभाषा -

बॉसिंग के अनुसार - " पाठयोजना उन उपलब्धियों की सूची का शीर्षक है, जिन्हें शिक्षक कक्षा में प्राप्त करना चाहता है। इनमें वे सब साधन तथा क्रियाएँ भी आयेंगी, जिनकी सहायता से ये उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं। "

भाटिया तथा भाटिया के अनुसार -

" पाठयोजना से पता चलता है कि बालकों ने क्या पढा है, आगे किस दिशा में उनका मार्गदर्शन किया जाये और तत्काल क्या पढाये जाये? "

अभ्यास -

इन कथनों से अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए -

१. शिक्षक अपने दैनिक शिक्षण कार्य के लिए पाठयोजना बनाता है।
२. शिक्षक को शिक्षण के बाद पाठयोजना तैयार करना है।
३. पाठयोजना का अनुसरण कक्षा शिक्षण में करना है।
४. पाठयोजना, उपलब्धियाँ की सूची है जिन्हें कक्षा शिक्षण में प्राप्त की जाती है।

पाठयोजना का महत्व

आइए पाठ योजना के महत्व के बारे में जानेंगे -

- पाठयोजना शिक्षण पथ में यात्रा कर रहे शिक्षक का पग पग पर मार्गदर्शन करती है। उसके अभाव में शिक्षक के भटक जाने का भय बना रहता है।
- पाठयोजना में, शिक्षक सामान्य, निर्दिष्ट उद्देश्यों को निर्धारित करके, छात्रों में ज्ञान, अर्थग्रहण, मनोभाव तथा कौशलों का विकास कर सकता है।
- पूर्वज्ञान के आधार पर नवीन शिक्षण को क्रियाशील बनाती है।
- पाठयोजना द्वारा विभिन्न पाठों का ज्ञान प्राप्त होता है।`
- एक विषय की परिकल्पना पर ध्यान केन्द्रित कराती है।
- शिक्षक और छात्र का समय अपव्यय होने से बचाती है।
- शिक्षक को व्यवस्थित अनुशासन तथा क्रमबद्ध शिक्षण की ओर ले जाती है।
- मूल्यांकन तकनीकों का पूर्व निर्धारण होने से शिक्षण कार्य की सफलता का मापन व मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है।
- कक्षा में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ शिक्षण कार्य संपन्न कराती है।
- त्रुटियों का संशोधन हो जाता है।
- पाठ का अध्यापन सभी प्रकार की प्रक्रियाओं द्वारा करती है।
- सीखना और सीखाने में समन्वय स्थापित करती है।
- छात्रों के सीखने पर न केवल बल देती बल्कि सीखने के सामर्थ्य और अच्छे सीखने व्यवहार का भी विकास करती है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सही शब्द से खाली जगह भरिए -

१. अभियंता मकान निर्माण के पूर्व जैसे नीलनक्शा बनाता है वैसे शिक्षक कक्षा में पाठ पढ़ाने के पहले _____ बनाता है।

२. पाठयोजना का आविर्भाव _____ विज्ञान से हुआ है।

३. भाषा प्रयोग की इकाई को _____ कहते हैं।

४. पाठयोजना _____ के बीच समन्वय स्थापित करती है।

५. पाठयोजना _____ के आधार पर नवीन शिक्षण को क्रिया शील बनाती है।

३.१.३.२. हिन्दी पाठयोजना के लक्षण और संरचना -

आइए, हिन्दी पाठयोजना के लक्षण और संरचना की जानकारी प्राप्त करेंगे -

हिन्दी पाठयोजना से शिक्षण - प्रक्रिया रोचक एवं प्रभावशाली तभी बन सकती है जब वह पूरी तरह सोच समझकर, ठीक ढंग से बनाई गई हो।

एक अच्छी पाठयोजना में निम्नलिखित लक्षण हैं -

- अच्छी पाठयोजना स्वयं शिक्षक से लिखी हो।
- पाठयोजना के सारे सोपान स्पष्ट हो।
- शिक्षण लक्ष्यों को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य संपन्न किया हो।
- शिक्षण सूत्र जैसे सरल से कठिन की ओर आदि का पालन किया गया हो।
- नये ज्ञान और पूर्व ज्ञान से सहसंबंध होने की तरह बनायी हो।
- विषय विश्लेषण में मुख्यांश स्पष्ट हो।
- शिक्षण कार्य में प्रयोग करनेवाले उपकरणों का उल्लेख हो।
- अच्छी पाठयोजना, कौन सी विधि का प्रयोग, प्रश्नों को कैसे पूछाजाय, के बारे में बताती है।
- स्पष्ट वर्णन और सूचना के लिए सूक्त अवसर मिला हो।
- शिक्षक-छात्र दोनों का मूल्यांकन करने की तरह हो।
- छात्रों के गृहकार्य क्रियायुक्त हो।
- संदर्भ पुस्तकों की सूचना हो।

अभ्यास -

अनुच्छेद को पढ़िए और संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए -

पाठयोजना के निर्माण में शिक्षण सूत्रों का पालन अवश्यक है। नये ज्ञान और पूर्व ज्ञान का सह संबंध हो। पाठयोजना विधि और प्रश्न की जानकारी अवश्य दें। पाठयोजना में शिक्षक छात्र दोनों के मूल्यांकन के लिए स्थान देना है। छात्रों को देनेवाले गृह कार्य क्रिया युक्त होना चाहिए।

१. पाठयोजना के निर्माण में कौन से सूत्रों का पालन आवश्यक है?

२. सहसंबंध किन ज्ञानों के बीच में होना चाहिए?

३. पाठयोजना के निर्माण में किन किनके मूल्यांकन का अवसर देना है?

४. गृह कार्य कैसे होना चाहिए?

पाठ्योजना की संरचना -

छात्रों, पाठयोजना की संरचना के बारे में विचार करेंगे -

पाठयोजना अध्यापक की सेविका है, शासिका नहीं।

पाठयोजना पाठ की प्रकृति को देखकर सोच समझकर बनाए जाए । कक्षा की परिस्थिति के अनुसार उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लिए जाए।

पाठयोजना के निर्माण में जान फेड्रिक हरबार्ट के पंच सोपानों को ध्यान में रखा जाता है।

क्रम संख्या -

दिनांक - अवधि

संक्ष्या - कक्षा - वर्ग

छात्राध्यापक का नाम -

विषय - (जिस विषय के लिए योजना बनाई जाती है उसका नाम लिखा जाता है। साहित्यिक विधा का भी उल्लेख हो जैसे हिन्दी (गद्य / कविता / व्याकरण)

उप विषय / शीर्षिक - (पढ़ाये जानेवाले पाठ /प्रकरण का शीर्षिक लिखा जाता है)

उद्धेश्य - दो प्रकार के उद्धेश्य हैं -

अ) **सामान्य उद्धेश्य** - पाठ विषय से संबंधित जिन सामान्य उद्धेश्यों की प्राप्ति हो सकती है उन्हें यहाँ लिखा जाता है। हिन्दी में हर साहित्यिक विधा के लिए अलग सामान्य उद्धेश्य होते हैं। लेखिन उस साहित्यिक विधा के सभी पाठों के लिए ये एक जैसे हो सकते हैं।

जैसे - गद्यपाठ का सामान्य उद्धेश्य -

- छात्रों में हिन्दी में व्यक्त विषयवस्तु को सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना ।
- लिखित विषयवस्तु का शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर वाचन करने की क्षमता का विकास करना।

आ) **विशिष्ट उद्धेश्य** - किसी पाठ विशेष को पढ़ाने से जो उद्धेश्य प्राप्त होते हैं, उन्हें लिखा जाता है, ये हर पाठ के लिए अलग - अलग होते हैं।

जैसे - छात्रों से गद्यांश का उचित रूप से सस्वर वाचन कराना।

- छात्रों को गद्यांश में निहित कठिन शब्दों के अर्थ समझाना ।

पाठ सामग्री -

जैसे गद्य पाठ में -

१. **विषय वस्तु** - पाठ्य पुस्तक संबंधी विषय वस्तु कहाँ से कहाँ तक चुनी गई है उसे संक्षेप में लिखना।

२. **सहायक सामग्री** - पाठ को पढ़ाने में जिस सहायक समग्री जैसे - चार्ट, चित्र, नमूना, वास्तविक पदार्थ आदि का प्रयोग करना हो, उसे क्रम पूर्वक स्पष्ट ढंग से यहाँ लिखा जाता है।

पूर्वज्ञान - पढ़ाए जानेवाले पाठ से संबंधित जो बातें छात्र पहले से जानते हैं, उन्हें यहाँ लिखा जाता है।

प्रस्तुतीकरण -

प्रस्तावना - प्रस्तावना का उद्देश्य छात्रों को कार्य की ओर उत्प्रेरित करने के लिए उनके पूर्वज्ञान पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं । और पूर्वज्ञान एवं नवीन ज्ञान में संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जाता है, यहाँ, चार्ट, चित्र आदि को दिखाकर भी पूर्वज्ञान की परीक्षा की जा सकती है।

किस पाठ की प्रस्तावना, किस प्रकार की जाए, यह शिक्षक के ज्ञान, अनुभव, कौशल तथा सामर्थ्य पर निर्भर है। प्रस्तावना करते समय कुछ अध्यापन सूत्रों का प्रयोग किया जा सकता है,

जैसे - ज्ञात से अज्ञात की ओर

- सामान्य से विशेष की ओर आदि।

उद्देश्य कथन - छात्रों को नवीन ज्ञान की तरफ़ उत्सुक करने के पश्चात् शिक्षक अपने पाठ की घोषणा करता है जैसे - छात्रों आज पश्चात हम इस कक्षा में इस विचार / घटना विषय से संबंधित एक पाठ का या पाठ के एक गद्यांश का अध्ययन करेंगे जिसका शिर्षिक है_____। शिक्षक शीर्षिक लिखकर छात्रों से पाठयपुस्तक खोलने को कहेगा।

पाठ का विकास - इस सोपान में विषय - सामग्री छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है। विषय सामग्री के क्रमिक विकास, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक एवं छात्र की क्रियाएँ आदि का उल्लेख यहाँ करना है।

यहाँ पुष्ठ पर तीन / चार कॉलम बनाकर लिखा जाता है। जैसे,

शिक्षण बिंदु	शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	श्याम पट कार्य एवं मूल्यांकन

अ) **आदर्श वाचन** - शिक्षक स्पष्ट, शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ्यांश का वाचन प्रस्तुत करेगा।

आ) **अनुकरण वाचन** - शिक्षक तीन / चार छात्रों से अनुकरण वाचन करायेगा।

इ) **मौनवाचन** - का उद्देश्य विषय वस्तु का एकाग्र चित्त होकर शीघ्रता से समझने की शक्ति का विकास करना है।

ई) **बोधप्रश्न** (केन्द्रीय प्रश्न) - आवश्यकतानुसार एक या दो सामान्य बोध प्रश्न पूछे जाते हैं और छात्रों को उत्तर देने होते हैं। प्रश्न विषय वस्तु के केंद्रिय विचार से संबंधित हो।

उ) **काठिन्य निवारण** - साहित्यिक विधाओं के विभिन्न पाठों में अनेक अपरिचित / कठिन शब्द, मुहावरें, संदर्भ आ ही जाते हैं, जिन्हें छात्रों के बोध हेतु सरल भाषा में स्पष्ट करना आवश्यक है।

विचार विश्लेषण - समग्र विषय वस्तु के विचारों को प्रश्नों के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। व्याकरण को भी स्थान देना है। संदर्भानुसार शिक्षण साधनों का प्रयोग करके, विचार में स्पष्टता लानी है।

पुनरावलोकन एवं दृढीकरण - इस सोपान द्वारा प्रत्येक छात्र की संप्राप्ति की मात्रा का पता लगाकर आगे के सोपान की सहायता की जाती है। सीखने की प्रक्रिया को आंशिक रूप से दुहराया जाता है। यहाँ छात्रों को अपने ज्ञान, स्मरण शक्ति का पता लगाने का अवसर मिलता है।

पठित पाठ्यवस्तु के वस्तुनिष्ठ तथा विषयगत - दो / तीन प्रश्न पूछकर छात्रों के ज्ञान का दृढ़ीकरण किया जाता है तथा भाषाई बिन्दु के ज्ञान की आवृत्ति कराई जाती है।

मूल्यांकन - मुख्यतः दो क्षेत्र में है -

अ) विषय वस्तु -ज्ञानसंदर्भ - प्रश्नों के सहारे पता लगाया जाता है (मौखिक / लिखित रूप में)

आ) भाषाई कार्य संदर्भ - जो भाषा कार्य पाठ के विकास में किया जा चुका है उसका मूल्यांकन यहाँ करना चाहिए।

गृहकार्य - गृहकार्य दृढीकरण का ही एक उपांग है। कक्षा में पर्याप्त मात्रा में समय उपलब्ध न होने पर सिखाए गए पाठ का दृढीकरण करने के लिए कक्षा से बाहर (घर पर) तथा स्वाध्याय की प्रेरणा देने के लिए गृहकार्य दिया जाता है। पठित विषय के प्रश्नों का उत्तर और पठित विषय की अतिरिक्त जानकारी संग्रह कर लाने के लिए कहना है। यहाँ क्रियाएँ विषय प्रधान तथा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. अच्छी पाठयोजना किसके दवारा लिखी जाती है?

२. पाठयोजना की संरचना के दो उद्देश्य कौन कौन से हैं?

३. पाठयोजना के निर्माण में किसके पंच सोपान को ध्यान में रखा जाता है?

४. मूल्यांकन सोपान के कौन से दो संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है?

३.१.३.३. गद्य की पाठ योजना -

दिनांक - अवधि -

संस्था -

कक्षा - वर्ग

विषय - हिन्दी (गद्य)

शीर्षिक - **मेरा बाल्य काल**

छात्राध्यापक का नाम -

सामान्य उद्धेश्य -

- छात्रों में वाचन कौशल का विकास कराना।
- छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि कराना ।

विशिष्ट उद्देश्य - (प्रस्तुत शीर्षक के शिक्षण से संबंधित है)

- छात्रों को महात्मा गाँधिजी की माता के जीवन आदर्श का बोध कराना।
- छात्रों को श्रवण की पितृभक्ति से अवगत कराना।

पूर्वज्ञान - छात्र महात्मा गाँधी के बारे में जानते हैं।

पाठ सामग्री - अ) विषय वस्तु - (गद्यांश)

मेरा बाल्यकाल

यह पाठ महात्मा गाँधी की आत्म कथा से लिया गया है। इस पाठ में बताया गया है कि माता की धर्मनिष्ठा तथा श्रवणकुमार की कथा का उन पर क्या प्रभाव पड़ा।

मेरी माताजी साध्वी और धर्मनिष्ठ थी। पूजा पाठ किये बिना भोजन न करती। कठिन से कठिन व्रत करने में भी वे हिचकती न थी और उन्हें दृढता से पूरा करती।

इसी समय एक और प्रसंग है जो मुझे याद आ रहा है। पिताजी ' श्रवण की पितृ भक्ति ' नामक एक नाटक खरीद लाये थे। मैंने बड़े चाव से उसे पढ़ा, मेरे मन में यह बात उठा करती कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँ।

आ) सहायक सामग्री - 1. गाँधीजी का चित्र
2. श्रवण कुमार का चित्र

प्रस्तुतीकरण -

शिक्षण बिन्दु	**शिक्षक क्रियाएँ**	**छात्र क्रियाएँ**	**श्याम पट कार्य / मूल्यांकन**
प्रस्तावना **उद्धेश्य कथन**	हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं? गांधिजी ने देश के लिए क्या किया? आज हम इस कक्षा मे गाँधीजी से संबंधित ' मेरा बाल्यकाल ' के बारे में अध्ययन करेंगे।	उत्तर देंगे ध्यान से सुनेंगे।	महात्मा गाँधीजी भारत को आजाद कराया था।
आदर्श वाचन	गद्यांश को शुद्ध उच्चारण तथा स्पष्ट वाणी से सस्वर वाचन करेगा	उच्चारण पर ध्यान देंगे	उच्चारण का अनुकरण
अनुकरण	दो - तीन छात्रों से अनुकरण वाचन	शिक्षक के	

वाचन	कराएगा	निर्देशानुसार अनुकरण वाचन करेंगे	
काठिन्य निवारण	कठिन शब्दार्थ श्याम पट पर लिखेगा।	सुनेंगे, अर्थग्रहण करेंगे, शब्दों को पुस्तक में उतारेंगे	साध्वी - पवित्रता धर्मनिष्ठ - धर्म में आस्था चाव - रुचि
मौनवाचन	छात्रों से मौनवाचन करायेगा।	मौनवाचन करेंगे	
केन्द्रीय प्रश्न	गाँधीजी ने अपनी माता के बारे में क्या लिखा है?	उत्तर देंगे	साध्वी महिला के आदर्शों का बोध कराना।
पाठ का विवेचन	गाँधीजी का चित्र दिखाकर गद्यांश को प्रश्नों के द्वारा वर्णन करेगा - ' मेरा बाल्यकाल ' गद्यांश कहाँ से लिया गया है? - गाँधीजी की माताजी पूजा पाठ के बिना क्या नहीं करती थी? - ' श्रवण की पितृ भक्ति ' नामक नाटक किसने खरीदा था। - 'श्रवण' का चित्र दिखाएगा नाटक पढने के बाद गाँधीजी के मन में क्या बात उठा करती थी?	चित्र देखेंगे वर्णन सुनेंगे प्रश्न का उत्तर देंगे। उत्तर देंगे। चित्र देखेंगे उत्तर देंगे।	
भाषाई कार्य	करेगा सर्वनाम का परिचय देगा।	सुनेंगे, उत्तर देंगे	वाक्य रचना करो - -प्रभाव -चाव विलोम शब्द- बड़ा x कठिन x धर्म x संज्ञा के बदले प्रयुक्त शब्द सर्वनाम है। सर्वनाम के भेद हैं जैसे- उत्तम पुरुष - मैं, हम, मेरा माध्यम पुरुष - तू, तुम

			अन्य पुरुष जैसे - यह, वे, वह, वे
कक्षा निरीक्षण	करेगा		
पुनरावलोकन एवं दृढीकरण	अब तक हमने गाँधीजी के बाल्यकाल के बारे में जानकारी प्राप्त की है। देखें, आपने क्या समझा है - - 'मेरा बाल्यकाल ' पाठ को कहाँ से लिया गया है? - गाँधीजी ने माताजी के बारे में क्या कहा है?	 उत्तर देंगे उत्तर देंगे	शिक्षक, उत्तर को सारांश के रूप में लिखेगा
	पुनरावलोकन के अंतर्गत पूरे पाठ के प्रश्न पूछकर उत्तर श्याम पट पर लिखकर छात्रों को अपनी कॉपि में लिखने को कहा जाएगा।		
मूल्यांकन	भाषाई कार्य के लिए स्थान देना, जो पाठ के विकास में किया हो		विलोम शब्द लिखिए एक x खरीदना x बड़ा x अन्य पुरुष पहचानिए- मैं. वह, आप, यह, वे
गृहकार्य	उत्तर दीजिए - गाँधीजी के बारे में एक निबंध लिखिए?		

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

उत्तर दीजिए -

१. गद्यपाठ योजना में कितने प्रकार के उद्देश्य हैं?

२. पाठ के विकास में कितने प्रकार के वाचन कार्य हैं?

३. पाठ विवेचन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

४. पाठ विवेचन का उपांग कौन सा है?

५. पुनरावलोकन का प्रश्न किससे संबंधित होते हैं?

३.१.३.४. कविता की पाठ योजना -

दिनांक - अवधि

संस्था -

कक्षा - वर्ग

विषय - हिन्दी (कविता)

शीर्षक - **अभिनव गीत**

छात्राध्यापक का नाम -

सामान्य उद्देश्य -

- छात्रों में शुद्ध उच्चारण, ताल - लय के साथ कविता वाचन की क्षमता उत्पन्न कराना।
- छात्रों को काव्य सौंदर्य की अनुभूति कराना।
- छात्रों को कवि की कल्पनाओं, अनुभवों से परिचय कराना।

विशिष्ट उद्देश्य -

- 'अभिनव गीत" कविता के बारे में जानकारी देना।
- कवि का परिचय कराना।

पूर्वज्ञान -

छात्र विभिन्न फूलों के बारे में जानते हैं।

पाठ्य सामग्री -

अ) विषय वस्तु - (कविता पाठ्यांश)

अभिनव गीत

कवि - हरिशंकर कश्यप

आशय - बच्चे जीने की कला सीख सकते हैं। कष्ट के समय में भी हँसते रहने और सबको सुख देते रहने की कला का परिचय दिलाना इस कविता का आशय है।

फूल सदा हँसते रहते हैं।
खिल खिल कर झरते रहते हैं।

रंगबिरंग मोहक छवि से,
अपने अंतर की सुगंध से तन से, मन से, निज जीवन से,
सब जग को सुरभित करते हैं
फूल सदा हँसते रहते हैं।

रहो सदा सबसे हिल - मिलकर
कष्ट सहो जीवन में हँसकर
जिये सदा सब को सुख देकर
फूल यही हमसे कहते हैं
फूल सदा हँसते रहते हैं।

आ) **सहायक सामग्री** - फूल का चित्र
- स्लेट, श्याम पट

प्रस्तुतीकरण -

प्रस्तावना - छात्रों के अर्जित ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को जोड़ा जाता है।

- कवि परिचय द्वारा
- प्रश्नों द्वारा

- 'सम' नामक कविता की कुछ पांक्तियों का वाचन करने के द्वारा प्रस्तावना की जाती है।

शिक्षण बिन्दु	शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	श्याम पट कार्य / मूल्यांकन
	छात्रों, घर के बगीचे में हम क्या क्या देखते हैं? आपको कौन कौन से फूल पसंद हैं?	सोचेंगे उत्तर देंगे। उत्तर देंगे।	 पौधा, फूल, गमला। गुलाब, चमेली आदि।
उद्देश्य कथन	छात्रों, आज हम इस कक्षा में फूल से संबंधित एक कविता 'अभिनव गीत' के बारे में अध्ययन करेंगे।	ध्यान पूर्वक सुनेंगे	
	कविता का आशय कष्ट के समय में भी हँसते रहना है। सबको सुख देते रहना है। फूल द्वारा बच्चे जीने की कला सीख सकते हैं। **कवि का परिचय -** इस कविता के कवि - हरिशंकर कश्यप हैं। यह प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं। इनकी कुछ पुस्तकें हैं - फुलवारी, झरना, पूजा के फूल आदि। इनकी रचनाओं में राष्ट्र भक्ति, भारतीय धर्म संस्कृति झलक्ती हैं।	ध्यान से सुनेंगे।	
कविता का गायन (आदर्श वाचन) **अनुकरण गायन (अनुकरण वाचन)**	सुर, लय के साथ कविता का गायन करेगा। पहले, कक्षा के छात्रों से कविता का सामूहिक वाचन करायेगा, बाद में एक एक छात्र से व्यक्तिगत गायन करायेगा। (राग,लय पर ध्यान दिया जाता है।)	सुनेंगे। शिक्षक के निर्देशानुसार अनुकरण गायन करेंगे।	 राग, लय पर ध्यान देने का अभ्यास करेंगे।
शब्दार्थ वाचन	कविता का संक्षिप्त भाव विवरण देगा, कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करेगा। अर्थ के लिए उन्हीं शब्दों को चुनेगा जो भाव एवं सौंदर्य को निखारते हों। प्रतीकात्मक या लाक्षणिक शब्दों का अर्थ भी संक्षिप्त रूप से बता	सुनेंगे, लिखेंगे।	जैसे, - छवि - कांति सुरभित - सुगंधित

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति	देगा। जैसे, - फूल, मन मोहनेवाले कांति से युक्त होकर सारे संसार को सुगंधित करते हैं। प्रश्नों द्वारा भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति की जायेगी - - कविता के कवि कौन हैं? - कष्ट को कैसे सहना है? - फूल अपने सुगंध से संसार को क्या करते हैं? - हमें सबसे कैसे रहना है? - फूल किस तरह झरते हैं? - फूल सदा कैसे रहते हैं? - कविता का आशय क्या है?	उत्तर देंगे।	
द्वितीय गायन (आदर्श वाचन)	गायेगा - क्यों कि अर्थ समझने के पश्चात् जब छात्र कविता का भावानुसार सस्वर पाठ सुनेंगे। तब उन्हें कविता के रस की अनुभूति अपनी पूर्णता के साथ होगी।		
पुनः अनुकरण गायन (अनुकरण वाचन)	छात्रों से करायेगा - यह जानने के लिए कि कविता के सौंदर्य को कितना ग्रहण किया है?	निर्देशानुसार करेंगे	
अर्थ ग्रहण एवं सौंदर्य बोध परीक्षण (पुनरावलोकन)	अर्थ एवं सौंदर्य बोध के प्रश्न (भावविश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति सोपान के) पूछकर, उत्तर को कविता के संक्षिप्त सार के रूप में लिखकर छात्रों को उतारने के लिए कहेगा - 'अभिनव गीत' के कवि कौन हैं? फूल सदा कैसे रहते हैं? हमें सबसे कैसे रहना है?	सारांश उतारेंगे।	कविता का सारांश
मूल्यांकन	कविता से संबंधित कार्य करेगा	निर्देशानुसार उत्तर देंगे।	**कविता के रिक्त स्थान भरिए -**

			अ) सदा सबको _____देकर जीना। आ) फूल सब जग को _____ करते हैं। इ) फूल सदा _____ रहते हैं। **पढिए और सही वाक्य के सामने(✓)लगाइए -** अ) फूल सदा खुशी से रहते हैं ( ) आ) तुम हमेशा सबसे झगडा करते रहो ( ) इ) सब को सदा सुख देकर जियो ( )
गृहकार्य	'अभिनव गीत' कविता कंठस्थ कीजिए। कविता के आशय के बारे में लिखिए।		

आपकी प्रगति की जाँच - ०४

नीचे के वाक्यों में सही या गलत को पहचानिए -

१. कविता पाठ योजना में विशिष्ट उद्देश्य, प्रस्तुत कविता से संबंधित होता है।
२. 'अभिनव गीत' कविता के कवि श्री हरिशंकर कश्यप हैं।
३. अर्थ ग्रहण एवं सौंदर्य बोध परीक्षण में शिक्षक का कार्य कुछ नहीं होता है।
४. कविता पाठ योजना में प्रस्तावना, प्रश्नों के द्वारा किया जाता है।
५. कविता पाठ योजना में कविता की विशेषता पर बल नहीं दिया जाता है।

३.१.३.५. व्याकरण की पाठ योजना -

दिनांक - अवधि -

संस्था -

कक्षा - वर्ग

विषय - हिन्दी (व्याकरण)

शीर्षक - **द्वन्द्व समास**

सामान्य उद्देश्य -

- छात्रों को शुद्ध भाषा का प्रयोग सिखाना।
- छात्रों को व्याकरण के नियमों से अवगत कराना।

विशिष्ट उद्देश्य -

- छात्रों को समास के बारे में जानकारी देना ।
- छात्रों को द्वन्द्व समास के समास युक्त शब्द को पहचानने योग्य बनाना ।
- छात्रों को द्वन्द्व समास की परिभाषा का प्रत्यास्मरण कराना ।

पूर्वज्ञान - छात्रों को समास की परिभाषा का पूर्ण ज्ञान है।

पाठ सामग्री - लपेट श्याम पट पर लिखे हुए वाक्य / चार्ट
- भारत का मान चित्र
- दो लड़कों का चित्र

प्रस्तुतीकरण -

शिक्षण बिन्दु	शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	श्याम पट कार्य / मूल्यांकन
प्रस्तावना	भारत का मानचित्र छात्रों को दिखाकर प्रश्न पूछेगा और उत्तर श्याम पट पर लिखेगा तथा वाक्य आधारित प्रश्न पूछेगा -		
	गंगा, यमुना कहाँ से निकलती हैं	उत्तर देंगे	हिमालय से ।
	चित्र दिखाकर -		
	राम श्याम क्या कर रहे हैं?		खेल रहे हैं।
	छात्रों, प्रथम वाक्य में सामासिक पद कौन सा है?	उत्तर देंगे	गंगा - यमुना
	दूसरे वाक्य में सामासिक पद कौन सा है?	उत्तर देंगे	राम - श्याम
	गंगा - यमुना और राम-श्याम में समास क्यों है?	सोचेंगे	
उद्देश्य कथन	प्रश्न का उत्तर हो या न हो घोषणा करेगा कि - छात्रों समास के छः भेद होते हैं जैसे द्वन्द्व. द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययी भाव, कर्मधारय और बहुव्रीहि। **आज हम इस कक्षा में इन समासों में से द्वन्द्व समास के बारे में पढेंगे।**		
द्वन्द्व समास का ज्ञान, उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण एवं निरीक्षण	लपेट श्याम पट / चार्ट पर लिखे वाक्य छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करके, वाचन करेगा। रामायण में राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य और स्वामी सेवक के संबंधों का आदर्श रूप दिखाया गया है।	ध्यान से देखेंगे। वाक्य पढेंगे।	
उदाहरणों का	छात्रों से प्रश्न पूछेगा और उत्तर श्याम पट		

विश्लेषण	पर लिखेगा । 1. प्रथम वाक्य में सामासिक पद कौन कौन से है? 2.राजा-प्रजा-इस सामासिक पद/शब्द में कौनसा शब्द छिपा है? 3. पिता- पुत्र शब्द का विग्रह कैसे करोगे? 4. गुरु-शिष्य में संबंध बनाने वाले किस शब्द का लोप हुआ है?	 उत्तर देंगे। सोचेंगे। प्रयास करेंगे। उत्तर देंगे। और अपनी पुस्तिका मे लिखेंगे।	 राजा - प्रजा पिता - पुत्र गुरु - शिष्य, स्वामी-सेवक 'और' पिता और पुत्र ' और '
सामान्यीकरण	जिस सामासिक पद के बीच में ' और ' शब्द का लोप हुआ है उसे कौन सा समास कहते हैं?	समझने की कोशिश करेंगे	द्वन्द्व समास
नियमीकरण	जिस सामासिक पद के बीच में ' और ' शब्द का लोप हुआ है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।	सुनेंगे, लिखेंगे	 अ) रात और दिन = रात-दिन
प्रयोग एवं अभ्यास	कुछ वाक्य प्रस्तुत करेगा और उनमें विग्रहित पदों के स्थान पर सामासिक पदों का प्रयोग करने के लिए कहेगा।	ध्यान से पढ़कर विग्रहित पदों के स्थान पर सामासिक पदों का प्रयोग कर पुनः वाक्य रचना करेंगे।	(वाक्य रचना) वह रात और दिन कार्य में लगा है। आ) यश और अपयश= यश-अपयश यश और अपयश की चिंता नहीं करनी चाहिए।
कक्षा कार्य एवं निरीक्षण	छात्रों से श्याम पट - कार्य को अपनी-अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में उतारने को कहेगा और उनका निरीक्षण करेगा।	छात्र श्याम पट कार्य को अपनी कॉपी में	

		उतारेंगे।	
पुनरावृत्ति एवं दृढीकरण	पाठ का पुनरावर्तन करने के लिए निम्न प्रश्न पूछेगा- १.जब दो शब्दों के बीच ' और ' शब्द का लोप होता है तो वहाँ कौन सा समास होता है? २. इनका सामासिक शब्द कौन सा है? - रात और दिन - राजा और प्रजा	उत्तर देंगे।	
मूल्यांकन	कक्षा को दो समूह में बाँट कर श्याम पट पर एक समूह से, उपलब्ध सहायक सामग्री द्वारा द्वन्द्व शब्दों का चयन करवाएँ। दूसरा समूह इनका विग्रह करेगा।		
गृह कार्य	प्रश्न का उत्तर लिखिए - १. समास के कितने भेद हैं और कौन कौन से हैं? २. विग्रह कीजिए - a) दाल - भात b) स्वामी-सेवक (अगले दिन, शिक्षक को गृहकार्य जाँचनी चाहिए)		

आपकी प्रगति की जाँच - ०५

खाली जगह को सूक्त शब्द से भरिए -

१. प्रस्तुत व्याकरण पाठ योजना में _____ विधि का प्रयोग हुआ है।

२. समास के _____भेद हैं।

३. अन्य साहित्यिक पाठ योजना की तुलना में व्याकरण पाठ योजना की ___ __ __ विशेषताएँ हैं।

४. 'राजा-प्रजा' सामासिक शब्द में _____ शब्द छिपा है।

३.१.४. सारांश -

आइए पूरी इकाई को एक बार फिर देखें - शिक्षक कक्षा में पाठ पढाने जो योजना बनाता है उसे पाठयोजना कहते हैं।

पाठयोजना का महत्व - पाठयोजना छात्र के पूर्वज्ञान के आधार पर नवीन शिक्षण को क्रियाशील बनाती है।

- पाठयोजना के द्वारा विभिन्न पाठों का ज्ञान प्राप्त होता है।

पाठयोजना के लक्षण -

- पाठयोजना स्वयं शिक्षक द्वारा लिखी हो ।
- विषय विश्लेषण में मुख्यांश स्पष्ट हो।

पाठयोजना की संरचना -

पाठयोजना निर्माण में जान फेड्रिक हरबार्ट के पंच - सोपानों को ध्यान में रखा जाता है। संरचना में पाठ से संबंधित पूर्वज्ञान, उद्देश्य, प्रस्तावना. पाठ का विकास- प्रश्नोंद्वारा, पुनरावलोकन, मूल्यांकन, गृहकार्य आदि सोपान हैं।

गद्य की पाठयोजना में विचार प्रधान होता है।

प्रश्नों द्वारा पाठ का विश्लेषण किया जाता है।

कविता की पाठयोजना - में कविता के राग, लय, छंद, अलंकार, और संदर्भ पर ध्यान दिया जाता है। कविता का शिक्षक गायन तथा छात्रों द्वारा भी गायन को प्रोत्साहन दिया जाता है।

व्याकरण की पाठ योजना में - शिक्षक उदाहरण द्वारा नियम का प्रतिपादन करता है। छात्रों का सह भागित्व आवश्यक है। प्रयोग और अभ्यास को स्थान दिया जाता है।

३.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.१.पाठयोजना २.गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ३.पाठ ४.सीखना और सिखाने ५.पूर्वज्ञान

२.१.स्वयं शिक्षक २. सामान्य उद्देश्य, विशिष्ट उद्देश्य ३. जॉन फेड्रिक हरबार्ट ४.विषय वस्तु ज्ञान, भाषाई कार्य

३.१.२ २.३ ३. नवीन ज्ञान देना ४. गृहकार्य ५. पूरे पाठ से

४.१. सही २. सही ३. गलत ४. सही ५. गलत

५.१. आगमन २.६ ३. नियम, सामन्यीकरण, प्रयोग - अभ्यास ४. और

३.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

उत्तर दीजिए -

१. हिन्दी पाठ योजना के महत्व बताइए।

२. किसी एक प्रकरण का चयन कीजिए और उस पर गद्य पाठयोजना बनाइए।

३.१.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. भाषा १,२ की शिक्षण विधियाँ एवं पाठनियोजन
डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा (२००४)
श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

२. नूतन हिन्दी शिक्षण
के.आय.सत्तिगेरी (१९९७)
प्रकाशक - श्रीमती विजया के सात्तिगेरी, बेलगाँव

३. हिन्दी शिक्षण

डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

खण्ड ३ : पाठयॊजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई २ : इकाई योजना

इकाई की संरचना

३.२.१. सीखने के उद्देश्य
३.२.२. प्रस्तावना
३.२.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.२.३.१. इकाई योजना का अर्थ और महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.२.३.२. इकाई योजना की संरचना
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.२.४. सारांश
३.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.२.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.२.७. संदर्भ पुस्तकें

३.२.१. सीखने के उद्धेश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- इकाई योजना के अर्थ को स्पष्ट करेंगे।
- इकाई योजना के महत्व का समर्थन करेंगे ।
- इकाई योजना की संरचना के अनुसार इकाई यॊजना तैयार करेंगे ।

३.२.२. प्रस्तावना -

प्रिय छात्रों,

वस्तु की पूर्णता और उसकी इकाई के बारे में आप जानकारी रखते हैं। इकाई से संबंधित अपने विचारों को नीचे के अंशों से मिलाइए -

जिस प्रकार जीवन में किसी वस्तु को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उसका संपूर्ण रूप हमारे सामने उपस्थित हो, फिर हम उसके एक-एक भाग का समझने का प्रयास करते हैं। ठीक उसी तरह शिक्षण प्रक्रिया में पहले संपूर्ण पाठ्यक्रम को देखते हैं। फिर उसको छोटे छोटे भागों मे बाटँते हैं। यह पाठ्यक्रम अपने आपमें एक बड़ी इकाई है और उसके विभिन्न भाग उसकी उप इकाइयाँ कहलाती हैं। पूरे पाठ को हम एक इकाई मान लेते हैं। पाठ की लंबाई और कालांश की अवधि के आधार पर पाठ को उपखंडों में बाँट लेते हैं। ये उपखंड भी उप इकाई कहलाते हैं।

इन्हीं इकाइयों और उप इकाइयों के आधार पर संपूर्ण पाठ्यक्रम को वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक पाठ योजना का आधार बनाया जाता है और शिक्षण क्रिया को पूर्ण रूप से नियोजित किया जाता है।

इकाई योजना के विकास का क्षेत्र डा. हेनरी मारिसन को है। इकाई योजना का निर्माण पाठयोजना की सहायता से किया जाता है।नवीन पाठयोजनाओं में इकाई योजना भी एक है।

आगे हम इकाई योजना के अर्थ, महत्व और संरचना के बारे में विचार करेंगे -

३.२.३. इकाई योजना का अर्थ और महत्व

छात्रों, इकाई योजना का अर्थ इस प्रकार है -

साधारण शब्दों में इकाई योजना का अर्थ है - शिक्षण-सामग्री को इकाइयों में आयोजित करना ।

इकाई-योजना, शिक्षा की वह विधि है जिसके द्वारा विषय वस्तु को, शिक्षण विधियों को तथा शिक्षण युक्तियों को इस ढंग से गठित किया जाता है कि सीखने और सिखाने की परिस्थितियों को प्रभावी बनाया जा सके।

शिक्षण के लिए इकाई विधि, विषय का आयोजन करके, छात्रों को सक्रिय बनाकर मानसिक, शारीरिक रूप से भाग लेने के द्वारा उनके व्यवहार में परिवर्तन लाकर परिस्थिति के अनुकूल बनाती है।

सामान्य रूप से एक पाठ की एक इकाई बनानी चाहिए। फिर उसे खंडो, उपखंडो में विभाजित किया जा सकता है।

इकाई योजना विधि में विषय विश्लेषण प्रभावात्मक सीखने की क्रियाएँ, परिस्थितियाँ, तकनीकें और शिक्षण विधियाँ हैं। आवश्यक संसाधन तथा सूक्त मूल्यांकन विधि आदि सम्मिलित हैं।

परिभाषाएँ -

प्रेस्टन

" विषय वस्तु के स्पष्ट दिखाई देनेवाला भाग ही इकाई योजना है " ।

जॉनसन् -

" इकाई योजना विभिन्न अनुभवों का संगम है। हर इकाई के अंतर्गत एक विषय या सारांश अथवा तत्व होता है " ।

अभ्यास -

उपरोक्त अर्थ और परिभाषाओं को समझने के बाद इन कथनों से आप सहमत है तो चिन्ह (✓) लगाइए यदि नहीं तो चिन्ह (x)लगाइए।

	सहमत	असहमत
१. इकाई योजना निर्माण का आधार पाठ योजना है।		
२. इकाई योजना शिक्षण सामग्री को इकाइयों में विभाजित करती है।		
३. इकाई विधि छात्रों को सक्रिय नहीं बनाती है।		
४. इकाई योजना एक ही प्रकार के अनुभव का संगम है।		
५. पाठ का उपखंड भी एक उप इकाई है।		

इकाई योजना का महत्व -

छात्रों, आप इकाई योजना के महत्व के बारे में जानकारी रखते है। इस योजना के महत्व के कुछ अंश के बारे में सोचिए और नीचे के विचारों से मिलाइए -

इकाई योजना,

- शिक्षण लक्ष्यों का निर्धारण पहले ही कर लिया जाता है इससे शिक्षक के लिए शिक्षण कार्य स्पष्ट हो जाता है।
- शिक्षण प्रक्रिया सुव्यवस्थित हो जाती है - शिक्षक पहले ही यह निश्चय कर लेता है कि कब क्या करना है।
- छात्र क्रियाएँ पूर्व निर्धारित होने से कक्षा में शिक्षण कार्य अनुशासित रूप में होता है।
- समय का सदुपयोग होता है।
- सेवारत / सेवानिरंतर शिक्षकों के लिए उपयोगी है।
- कक्षा में छात्रों से विषय ज्ञान की अंतः क्रिया का अवसर देती है।
- व्यक्तिगत भिन्नता के लिए सूक्त सुविधाएँ प्रदान करती है।
- सफल शिक्षण के लिए सहायक है क्यों कि इकाई योजना शिक्षक के लिए अपने कक्षा शिक्षण में आत्मविश्वास भरती है।
- यह जानने में भी सहायता मिलती है कि शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में कहाँ तक सहायता मिली है। पाठ्यवस्तु का उचित विभाजन करने से, पाठ्यवस्तु रोचक बनी रहती है।
- शिक्षण में अन्य विषय से सहसंबंध स्थापित करने का अवसर देती है।
- उपचार शिक्षण के लिए स्थान है।
- इकाई बालक के मानसिक स्तर के आधार पर होने से शिक्षण, बालकों की आवश्यक्ता के अनुसार होता है और बालक सक्रिय बने रहते हैं।

इस प्रकार इकाई-योजना शिक्षण-प्रक्रिया को सुरुचिपूर्ण सोद्देश्य, प्रभावशाली, गतिशील, स्वाभाविक और व्यवस्थित बनाती है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सूक्त शब्द से रिक्त स्थान भरिए -

1. इकाई योजना के विकास का श्रेय _____ को है ।
2. इकाई योजना, कक्षा में छात्रों से विषय ज्ञान की _____का अवसर देती है।
3. इकाई योजना _____ भिन्नता के लिए सूक्त सुविधाँए प्रदान करती है।
4. छात्र क्रियाएँ पूर्वनिर्धारित होने से कक्षा में शिक्षित कार्य _____ रूप में होता है।

३.२.३.२. इकाई योजना की संरचना -

देखिए इकाई योजना की संरचना निम्न सोपानों से बनायी जाती है।

शिक्षक का नाम	दिनांक
स्कूल का नाम	विषय
कक्षा	इकाई

१. इकाई का शीर्षक

२. इकाई का क्षेत्र और महत्व

३. पाठ्यवस्तु की उप इकाई तथा शिक्षण अवधि

	उप इकाइयाँ	**शिक्षण की अवधि**
१.		
२.		
३.		

४.अ) इकाई का सामान्य उद्धेश्य - इकाई से संबंधित सामान्य उद्देश्यों को लिखना है |

आ) इकाई का निर्दिष्ट / अनुदेशात्मक उद्धेश्य

(पाठ को पढ़ाते समय छात्र जिन उद्धेश्यों और योग्यताओं को प्राप्तकर सकते हैं, केवल उनका ही उल्लेख किया जाना उचित है।)

- एक समस्या / योजना के पूर्ण सीखने की क्रियाएँ होनी चाहिए ।
- भागशः नहीं, पूर्णता पर बल दिया जाता है।
- सीखने के परिणाम मुख्य है।
- पाठ्यवस्तु के साथ सीखने के अनुभव सम्मिलित है।
- साम्य पाठ्य वस्तु का आयोजन होता है।
- निर्दिष्ट शिक्षण उद्धेश्यों की पूर्ति की तरह इकाई की व्यवस्था होती है।

५. प्रस्तावना -

६. इकाई का विकास -

उद्धेश्य एवं अपेक्षित उपलब्धियाँ			**शिक्षण प्रक्रिया**		**मूल्यांकन**	
उद्धेश्य	अपेक्षित योग्यताएँ	विषय वस्तु	शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	पाठान्तर्गत	पाठोपरान्त
भाषा तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना १.उच्चारण २.वर्तनी	छात्र इन्हें पहचान सकेगा	चुने गए पाठ्यांश	आदर्श वाचन	अनुकरण वाचन	अनुकरण वाचन के समय शुद्धता का पता लगाना	वस्तुनिष्ठ प्रश्नों द्वारा

७. **पुनरावर्तन तकनीकें** - छात्रों के पाठ ज्ञान के बोध का मापने के लिए पाठ्यांश के मुख्य प्रश्न पूछकर उत्तर पाकर सारांश के रूप में लिखाना है।

८. मूल्यांकन - आधार पत्रक आधारित इकाई परीक्षा की सहायता से मूल्यांकन करना है।

९. **सूचित अनुवर्ती क्रियाएँ -** मूल्यांकन के नतीजे के आधार पर छात्र की उपलब्धि सुधारने अथवा उद्धेश्यों की पूर्ति करने के लिए उपचार शिक्षण की उपयुक्त अनुवर्ती क्रियाओं का आयोजन करना ।

१०. **संदर्भ पुस्तकें** -

छात्र के लिए - कक्षा में पढ़ाये गये इकाई शिक्षण के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिए आवश्यक पुस्तकों की सूची दी जाती है।

शिक्षक के लिए - इकाई योजना निर्माण करने तथा इस इकाई शिक्षण के लिए, अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने, संदर्भ पुस्तकों की सूची दी जाती है।

आपकी प्रगती की जाँच - ०२

उत्तर दीजिए -

१. इकाई योजना की संरचना के उद्धेश्य कौन कौन से हैं?
२. संदर्भ पुस्तकों की सूची किन किन को दी जाती है?
३. इकाई योजना की व्यवस्था किन उद्धेश्यों की पूर्ति की तरह होती है?
४. इकाई योजना के अंतर्गत मूल्यांकन किसकी सहायता से किया जाता है?

३.२.४. सारांश -

अब तक हम लोग इकाई योजना के बारे में काफी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं, आइए सारांश के रूप में देखें

शिक्षण प्रक्रिया में संपूर्ण पाठ्यक्रम देखते हैं फिर उसे छोटी छोटी इकाई में बाँटते हैं। पूरे पाठ को हम एक इकाई मान लेते हैं। इकाई योजना का निर्माण पाठ योजना की सहायता से किया जाता है।

साधारण शब्दों में - इकाई योजना का अर्थ है - शिक्षण सामग्री को इकाईयों में विभजित करना है । इकाई योजना - सेवारत - सेवानिरत शिक्षकों के लिए उपयोगी है।

- कक्षा में छात्रों से विषयों की अंतः क्रिया का अवसर देती है।
- इसमें समय का सदुपयोग होता है।

इकाई योजना की संरचना में निम्न सोपान हैं -

- इकाई का शीर्षिक, इकाई का क्षेत्र और महत्व,
- पाठ्यवस्तु की उप इकाई तथा शिक्षण अवधि
- इकाई का उद्धेश्य, प्रस्तावना, इकाई का विकास
- पुनरावर्तन तकनीकें, मूल्यांकन, सूचित अनुवर्ती क्रियाएँ, संदर्भ पुस्तकें

३.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१.डा. हेनरी मारिसन २. अंतः क्रिया ३. व्यक्तिगत ४. अनुशासित

२.१.सामान्य उद्धेश्य, विशिष्ट उद्धेश्य २. शिक्षक और छात्र ३. निर्दिष्ट उद्धेश्य
४. आधार पत्रक आधारित इकाई परीक्षा

३.२.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

उत्तर दीजिए -

१. इकाई योजना का क्या महत्व है?
२. कक्षा नौवीं के लिए गद्य की एक इकाई योजना तैयार कीजिए।

३.२.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी शिक्षण - डा उमा मंगल (२००६)
आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

२. हिन्दी भाषा शिक्षण - भाई योगेन्द्रजीत (२०१२)
- श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

३. शैक्षणिक मौल्यमापन - डा. एम. वी. वामदेवप्पा (२०१७)
- श्रेयस पब्लिकेशन, दावनगेरे

खण्ड ३ : पाठयोजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई ३ : संसाधन पाठयोजना

इकाई की संरचना

३.३.१. सीखने के उद्देश्य
३.३.२. प्रस्तावना
३.३.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.३.३.१. संसाधन पाठ योजना का अर्थ और महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.३.३.२. संसाधन पाठयोजना की संरचना
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.३.४. सारांश
३.३.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.३.७. संदर्भ पुस्तकें

३.३.१. सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- संसाधन पाठयोजना का अर्थ और महत्व का स्पष्टीकरण देंगे ।
- संसाधन पाठयोजना की संरचना के सोपानों को पहचानेंगे ।

३.३.२. प्रस्तावना -

छात्रों, आप जानते हैं कि शिक्षण एक कला है। एक उत्तम शिक्षक के आवश्यक गुणों में सूक्त पूर्व तैयारी भी एक है। शिक्षक को अपने पाठ पढ़ाने के पूर्व सब तरह की तैयारी कर लेनी चाहिए। आपने देखा होगा कि शिक्षक कक्षा में पाठ पढ़ाने के लिए कुछ तैयारी के साथ आते है।

बताइए शिक्षक कौन कौन सी तैयारी के साथ पाठ पढ़ाते हैं -

छात्र का उत्तर - पाठ्य पुस्तक, चित्र आदि।

आप लोग अवश्य बहुत जानते होंगे पर निश्चित रूप से आपकी सूची में पाठयोजना और सहायक सामग्री है।

अच्छी बात है एक शिक्षक को पाठ पढ़ाने के लिए पाठ्यवस्तु, शिक्षण सामग्री, पाठ योजना सीखने के अनुभव आदि की आवश्यकता है। इन सब अंशों को संसाधन कहते हैं।

आइए, संसाधन इकाई के बारे में और जानकारी प्राप्त करेंगे -

शिक्षण को विशिष्ट संसाधन की पूर्ति करनी ही संसाधन इकाई है।

पाठ योजना, ४ ५ मिनट में अध्यापन करने के लिए सहायक है तो इन ४ ५ मिनट में स्पष्ट रूप से शिक्षण देने में संसाधन इकाई लाभ दायक है। शिक्षक को एक विषय / इकाई का अध्यापन करने के लिए आवश्यक सूचनाओं का संग्रह करना पड़ता है तो इस दिशा में संसाधन इकाई सहायक है।

३.३.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ -

संसाधन इकाई का अर्थ और महत्व -

संसाधन इकाई का अर्थ-

संसाधन इकाई एक अत्यंत उपयुक्त विभिन्न सूचनाओं, विषयांश क्रियाओं, पाठ्यवस्तु, शिक्षण सामग्री का संग्रह है। मुख्य समस्याएँ, सीखने के अनुभव, इकाई का प्रारंभ, समाप्ति की सलाह, मूल्यांकन की तकनीक, ग्रंथ विवरण सूची का संग्रह है।

संसाधन इकाई कक्षा शिक्षण से संबंधित समग्र तैयारी का संग्रह है। शिक्षक के लिए पाठ पढ़ाने के आवश्यक तथा उससे भी अधिक सभी प्रकार की सूचनाओं का संग्रह ही संसाधन इकाई योजना है।

पाठ अध्यायन के पूर्व उस पाठ से संबंधित विषयज्ञान का संग्रह करके अध्ययन करना ही संसाधन इकाई योजना है।

संसाधन इकाई योजना, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक उत्तम योजना क्रम है।

परिभाषाएँ -

एड्रिष्ट -

" शिक्षक अपनी कक्षा अध्ययन में प्रयोग करने में सहायक, उस इकाई से संबंधित आवश्यक सामग्रियाँ, सूचनाएँ, संसाधना का क्रियात्मक संग्रह ही संसाधन इकाई है " ।

राल्फ.एल.पौन्ड्स् तथा अन्य -

" संसाधन इकाई जो एक निर्दिष्ट विषय से संबंधित, निश्चित आयु सीमा के लिए निर्धारित सूक्त सूचनाओं का अपार संग्रह है " ।

अभ्यास -

अनुच्छेद को पढ़िए और संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

संसाधन इकाई को विभिन्न सूचना, क्रिया, शिक्षण सामग्री का संग्रह कहा जाता है। संसाधन इकाई योजना, सीखने - सिखाने की प्रक्रिया का एक उत्तम योजना क्रम है।
स्पष्ट रूप से शिक्षण देने के लिए संसाधन इकाई लाभदायक है।
संसाधन इकाई में सीखने के अनुभव, सलाह, मूल्यांकन तकनीक, ग्रंथ विवरण सूची आदि हैं।
राल्फ.एल.पौन्डस् के अनुसार संसाधन इकाई जो एक निर्दिष्ट विषय, निश्चित आयु सीमा, निर्धारित सूचनाओं का संग्रह है।

१. संसाधन इकाई किसे कहते हैं?

२. संसाधन इकाई के बारे में राल्फ. एल. पौन्डस् की परिभाषा क्या है?

३. शिक्षक के लिए संसाधन इकाई कैसे लाभदायक है?

४. संसाधन इकाई के साधनों की सूची बनाइए

|

संसाधन पाठयोजना का महत्व -

छात्रों, संसाधन पाठयोजना का महत्व निम्न प्रकार हैं -

- संसाधन पाठयोजना प्रभावशाली, क्रमबद्ध शिक्षण के लिए आवश्यक है ।
- छात्रों में उत्तम प्रकार से सीखने का अवसर देती है।
- शिक्षण को उद्देश्यपूर्ण, संसाधन पूर्ण बनाती है।
- शिक्षकों को संसाधनों (सामग्री या मानव संसाधन) का प्रयोग करने का अवसर देती है।
- उद्देश्यपूर्ण शिक्षण तथा मूल्यांकन के लिए सहायक है।
- शिक्षकों में सृजनात्मकता का विकास करती है।
- शिक्षकों के लिए संदर्भ पुस्तक की तरह सहायक है।
- शिक्षकों की मेहनत और समय का अपव्यय से बचाती है।
- सीखने के अनुभव तथा सीखने की क्रियाओं का संगठन व्यवस्थित रूप से करती है।
- इस योजना में स्थित इकाईयाँ तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित होती हैं।
- शिक्षकों के लिए स्थानीय संसाधन इस्तेमाल करने में सहायक है।
- शिक्षण पर शिक्षक का नियंत्रण रहता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

निम्न वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

१. संसाधन पाठयोजना सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का एक उत्तम योजना क्रम है।

२. संसाधन इकाई कक्षा शिक्षण से संबंधित नहीं है।

३. एक उत्तम शिक्षक के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक नहीं है।

४. संसाधन पाठयोजना शिक्षक के समय का अपव्यय से बचाती है।

५. संसाधन इकाई सूचना तथा संसाधनों का संग्रह है।

३.३.३.२. संसाधन पाठयोजना की संरचना -

संसाधन पाठयोजना / संसाधन योजना की संरचना के सोपान इस प्रकार हैं -

१. इकाई का शीर्षक

२. **इकाई का विषय तथा महत्व** - चुनी गई इकाई के विषय तथा महत्व लिखना है।

३. इकाई की मुख्य परिकल्पना / संकल्पना, उप परिकल्पना / संकल्पना

पाठ्यविषय की मुख्य उप परिकल्पनाओं को पहचानकर लिखना है।

४. **उद्देश्य** - अ) सामन्य उद्देश्य

आ) शिक्षण उद्देश्य-सीखने के बाद होने वाले व्यवहारगत परिवर्तन को लिखना है।

५. शिक्षण विधि - का संक्षिप्त परिचय देना है।

६. विषय संवर्धन - यह विषय का विकास है। विषय का संक्षिप्त, वैज्ञानिक रूप से चर्चा की जाती है।

७. **सीखने की क्रियाएँ -**

अ) प्रस्तावना की क्रियाएँ

आ) पाठ विकास की क्रियाएँ

इ) पाठ समाप्ति की क्रियाएँ

- प्रमुखांश के सामान्यीकरण में शिक्षक के द्वारा प्रयोग होनेवाले विविध शिक्षण विधि, तकनीक, साधन, सामग्री का विवरण क्रिया के रूप में लिखना है।

८. मूल्यांकन के साधन

इसके अंतर्गत प्रश्नकोश होना चाहिए । इकाई के सीखने के परिणाम को निश्चित करने के लिए प्रयुक्त मूल्यांकन के साधन, तकनीकों को सूचित करना है।

९. सुझाव की क्रियाएँ -

इकाई से संबंधित क्रियात्मक, महत्वपूर्ण क्रियाएँ जो कक्षा के अंदर और बाहर की जा सकती हैं -इनका विवरण देना है।

१०. संसाधन सामग्रियाँ -

अ) इकाई शिक्षण के सहायक उपकरण की सूची

आ) संदर्भ पुस्तकों की सूची - छात्र और शिक्षक दोनों के लिए ।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

उत्तर दीजिए -

१. संसाधन पाठयोजना में कौन कौन सी सीखने की क्रियाएँ हैं?

२. संसाधन की सामग्रियाँ कितने प्रकार की हैं?

३. संसाधन पाठयोजना में कुल कितने सोपान हैं?

३.३.४. सारांश -

संसाधन इकाई के अर्थ, महत्व और संरचना के बारे में चर्चा कर चुके है, आइए और एक बार देखें -

शिक्षण एक कला है। शिक्षक को अपने पाठ पढ़ाने के पहले सब तरह की तैयार कर लेनी चाहिए।

संसाधन इकाई एक उपयुक्त सूचनाएँ, विषयांश, शिक्षण सामग्री आदि का संग्रह है। संसाधन पाठ योजना, सीखने - सिखाने की प्रक्रिया का एक उत्तम योजना क्रम है।

संसाधन पाठ योजना का महत्व -

संसाधन पाठयोजना, शिक्षकों को संसाधनों के प्रयोग करने का अवसर देती है। शिक्षकों को संदर्भ पुस्तक की तरह सहायक है। संसाधन पाठयोजना की संरचना में निम्न सोपान हैं -

- इकाई का शीर्षक, इकाई का विषय तथा महत्व,
- इकाई की मुख्य, उप परिकल्पना
- उद्देश्य, शिक्षण विधि, विषय संवर्धन
- सीखने की क्रियाएँ, मूल्यांकन के साधन, सुझाव की क्रियाएँ, संसाधन सामग्रियाँ ।

३.३.५. **आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर**

१.१. सही २. गलत ३. गलत ४. सही ५. सही

२.१. प्रस्तावना की क्रियाएँ, पाठ विकास की क्रियाएँ, पाठ समाप्ती की क्रियाएँ २. दो प्रकार ३. दस सोपान

३.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

उत्तर दीजिए -

1. संसाधन पाठयोजना के महत्व को बताइए।
2. संसाधन पाठयोजना के निर्माण के सोपानों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

३.३.७. संदर्भ पुस्तकें -

1. शैक्षणिक मौल्यमापन
   डा. एच. वी. वामदेवप्पा (२०१७)
   श्रेयस् पब्लिकेशन, दावनगेरे
2. रसायन शास्त्र बोधने
   नीलकंठ रबनाल (२००३-०४)
   विद्यानिधि प्रकाशन, गदग
3. कन्नड विषयाधारित बोधना पद्धति -
   एस.के. होलेयन्नवर (२००३)
   विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

खण्ड ३ : पाठयोजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई ४ : शिक्षण विधियाँ

इकाई की संरचना

३.४.१. सीखने के उद्देश्य
३.४.२. प्रस्तावना
३.४.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.४.३.१. गद्य शिक्षण का महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.४.३.२. गद्य शिक्षण का उद्धेश्य - सामान्य, विशिष्ट
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.४.३.३. गद्य शिक्षण की परंपरागत विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच - ०३
३.४.३.४. गद्य शिक्षण की आधुनिक विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच - ०४
३.४.४. सारांश
३.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.४.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.४.७. संदर्भ पुस्तकें

३.४.१. सीखने के उद्धेश्य -

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- गद्य शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझकर लिखेंगे ।
- गद्य शिक्षण के महत्व को पहचानेंगे ।
- गद्य शिक्षण की परंपरागत और आधुनिक विधियों की चर्चा करेंगे ।

३.४.२. प्रस्तावना -

साहित्य की अनेक विधाओं में गद्य का स्थान महत्व पूर्ण है। गद्य, कवियों तथा लेखकों की कसौटी है तथा साहित्य की भी कसौटी है।

छात्रों, गद्य साहित्य के विचार के दो / तीन अंश बताइए -

छात्र का संभावित उत्तर -

गद्य, साहित्य की एक विधा है। विचारों के आदान प्रदान का माध्यम है।

आइए इस गद्य साहित्य को और स्पष्ट रूप से जानेंगे -

गद्य साहित्य का क्षेत्र अधिक विशाल तथा व्याप क है । गद्य के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन के विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। गद्य साहित्य के माध्यम से , ज्ञानात्मक

साहित्य, सभी कार्य जैसे सामाजिक , शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, व्यावसायिक तथा अंतराष्ट्रीय संपन्न होते हैं।

गद्य विचार प्रधान साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है । गद्य भी कविता के समान ही हृदय को स्पर्श करता है। रामचंद्रशुक्ल , भारतेन्द्रुहरिश्चंद्र, जैनेंन्द्र कुमार आदि गद्य साहित्य इसके प्रमाण हैं।

३.४.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ -

३.४.३.१. गद्य शिक्षण का महत्व -

छात्रों,

गद्य शिक्षण के महत्व के बारे में विचार करेंगे -

- गद्य का संबंध बुद्धि पक्ष से है । इसमें जीवन की वास्तविकता का वर्णन रहता है।
- गद्य में कल्पना का प्रत्यक्षीकरण रहता है।
- आधुनिक युग में साहित्य का सर्वतोमुखी विकास गद्य के कारण ही हो गया है। इसके अंतर्गत कहानी, नाटक, जीवनी, वर्णन, उपन्यास आदि प्रचुर मात्रा में है।
- सामाजिक व्यवहार को सुगम बनाने का एक प्रभावी साधन है।
- बढ़ता हुआ वैज्ञानिक क्षेत्र, गद्य से ही विकासोन्मुख हो रहा है।
- छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि हो सकती है।
- वैज्ञानिक शक्ति का पर्याप्त विकास गद्य से ही है।
- व्यावहारिक जीवन तो इसके बिना नहीं चल सकता है।
- भाषिक तत्वों (शब्दभंडार, शब्द के शुद्ध उच्चारण, अर्थ, प्रयोग, रचना, वाक्यरचना, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि) के ज्ञान एवं भाषिक कौशलों के अभ्यास की दृष्टि से गद्य शिक्षण की उपयोगिता सर्वमान्य है।
- गद्य रूप ने ही मानव-जीवन की संपूर्ण ज्ञान राशी को सुरक्षित रखा हुआ है।
- गद्य छात्रों का निर्माण करता है,गद्य द्वारा ही छात्र देश-विदेश के तथ्यों एवं घटनाओं से परिचित होते हैं।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

देखें आप गद्य शिक्षण के महत्व के बारे में कितना जानते हैं -

रिक्त स्थान को सही शब्द से भरिए -

१. गद्य के बिना _____ जीवन नहीं चल सकता है।
२. गद्य का संबंध _____ पक्ष से है।
३. जीवन की वास्तविकता का वर्णन _____ में रहता है।
४. गद्य ने ही मानव जीवन की संपूर्ण _____को सुरक्षित रखा है।

३.४.३.२. गद्य शिक्षण के उद्धेश्य -

गद्य शिक्षण के दो उद्धेश्य हैं - सामान्य और विशिष्ट।

सामन्य उद्धेश्य -

छात्रों, गद्य शिक्षण के सामान्य उद्देश्य के बारे में सोचिए और देखिए आपके विचार नीचे के उद्देश्यों से मिलते हैं -

गद्य शिक्षण के सामन्य उद्धेश्य इस प्रकार हैं -

- छात्रों के सूक्ति भंडार, शब्दभंडार का विकास करना।
- शब्द उच्चारण को शुद्ध करना।
- छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित करना।
- छात्रों में इतनी क्षमता उत्पन्न करना कि वे शब्दों तथा मुहावरों का उचित प्रयोग कर सके।
- छात्रों को मौखिक एवं लिखित रूप से विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनाना।
- छात्रों की रचनात्मक शक्ति का विकास करना।
- भाषा संबंधी ज्ञान की वृद्धि करना।
- छात्रों को गद्य की विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों में तर्क, विचार, कल्पना शक्ति का विकास करना।

गद्य शिक्षण के निर्दिष्ट / विशिष्ट उद्धेश्य -

विशिष्ट उद्धेश्यों के निर्धारण में प्रस्तुत पाठ के सभी शिक्षण बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है। यह उद्धेश्य निम्नांकित क्रम से लिखे जा सकते हैं।

१. विषय सामग्री का बोध - पाठांतर्गत प्रमुख तथ्यों, भावों एवं विचारों का उल्लेख।
२. विचार विश्लेषण अथवा अर्थ ग्रहण - समीक्षात्मक एवं सराहना की दृष्टि से आवश्यक उद्धेश्यों का उल्लेख।
३. भाषिक तत्वों का ज्ञान - इसके अंतर्गत उच्चारण, शब्दार्थ, शब्द प्रयोग, शब्दरचना, संधि, समास, उपसर्ग प्रत्यय आदि का उल्लेख ।
४. अभिव्यक्ति - प्रमुख भावों, विचारों को व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

इन वाक्यों पर विचार करके सही / गलत का निशान लगाइए।

१. छात्रों के शब्द उच्चारण को शुद्ध करना आवश्यक है।

२. विशिष्ट उद्धेश्य के निर्धरण में किसी भी पाठ के शिक्षण बिन्दु को ध्यान में रखा जाता है।

३. गद्य शिक्षण के सामान्य उद्धेश्य में स्वाध्याय की आदत का विकास नहीं किया जाता है।

३.४.३.३. गद्य शिक्षण की परंपरागत विधियाँ -

छात्रों, गद्य शिक्षण की परंपरागत विधियों की चर्चा करेंगे -

गद्य, साहित्य का सर्वोत्तम रूप है। इसमें विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्याकरण सम्मत सर्वमान्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।

गद्य की शिक्षा देने की परंपरागत विधियाँ -

१. अर्थकथन विधि -

विद्यालय में गद्य की शिक्षा देने की यह परंपरागत विधि है। सर्वप्रथम अध्यापक गद्यांश का क्रमिक मौखिक पठन करता है और उस गद्यांश में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताता है। गद्यांश का संपूर्ण अर्थ स्पष्ट कर देता है।

दोष -

- सभी कार्य शिक्षक ही करता है । छात्र निष्क्रिय बने रहते हैं। यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।
- छात्र स्वयं सोचने-विचारने के अवसर प्राप्त न होने के कारण उनमें पढ़कर अर्थग्रहण की क्षमता और अपने विचार को उचित रूप से व्यक्त करने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता है।

२. व्याख्या विधि -

यह विधि अर्थकथन विधि का ही विकसित रूप है। यहाँ शिक्षक मौखिक पठन के उपरांत कठिन शब्दों का अर्थ व गद्यांश का सरलार्थ कराते हुए शब्दों और भावों की व्याख्या भी करता है। शब्दों की व्याख्या करते हुए शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि आदि की भी व्याख्या करता है, शब्दों के पर्यायवाची व विपरीतार्थक स्पष्ट करता है। उनमें छिपे प्रसंगों को स्पष्ट करता है।

दोष - अधिकांश कार्य शिक्षक करता है।

- छात्र निष्क्रिय श्रोता बने रहते हैं।

३. प्रश्नोत्तर विधि -

इस विधि को विश्लेषण विधि भी कहा जाता है। यह व्याख्या विधि का परिमार्जित रूप है। व्याख्या विधि की तरह ही शब्दों और भावों की व्याख्या की जाती है, पर अंतर इतना कि इसमें शब्दों और भावों की व्याख्या करने के लिए प्रश्न व उत्तर की सहायता ली जाती है। अगर छात्र के उत्तर में पूर्णता न होने पर शिक्षक को स्वयं अपने कथन से शब्द व भाव की व्याख्या करनी चाहिए।

गुण - शिक्षक छात्रों को पूर्वज्ञान के आधार पर प्रश्न पूछता हुआ उन्हें नवीन ज्ञान की ओर अग्रसर करता है।

- छात्रों को प्रश्न सुनकर स्वयं सोचने - विचारने का अवसर मिलता है और वे सक्रिय रहते हैं।

अभ्यास -

हिन्दी गद्य शिक्षण में नीचे की विधियों के प्रयोग की उपयुक्तता पर अपना विचार व्यक्त कीजिए -

- **अर्थ कथन विधि**
- **प्रश्नोत्तर विधि**

कुछ और परंपरागत विधियाँ हैं ---

४. समीक्षा विधि -

इस विधि का प्रयोग उच्चकक्षाओं में किया जाता है | इस विधि का प्रयोग तभी करना चाहिए जब छात्र को निबंध तत्व का ज्ञान, भाषाई कौशलों का विकास हो जाए। पाठ्यवस्तु का पठन कर भाषाई तत्वों के आधार पर उसके गुण-दोषों की परख की जाती है। इसके पहले गद्य पाठ के अर्थ एवं भाव का स्पष्टीकरण आवश्यक है। शिक्षक पाठ्यवस्तु का भाव स्पष्ट कर, भाषाई तत्वों का ज्ञान प्रदान करता है और इसके आधार पर छात्र पाठ्यवस्तु के गुण-दोषों की परख / समीक्षा करते हैं।

गुण - छात्र स्वयं काफी कार्य करता है।
- शिक्षक मार्गदर्शन करता है।
- छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित होती है।

५. संयुक्त विधि -

माध्यमिक स्तर पर इन सभी (उपरोक्त) विधियों का आवश्यकतानुसार मिश्रित रूप से प्रयोग करके भी गद्य शिक्षण को प्रभावशाली बना सकते हैं।

भाषाई कौशल एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या एवं विश्लेषण विधि को संयुक्त रूप से अपनाया जाए। भाषाई तत्वों का शास्त्रीय - विवेचन करने के लिए समीक्षा विधि को अपनाया जाए। इस संयुक्त प्रयोग से छात्रों को गद्य पाठों की शिक्षा बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से दी जा सकती है।

इस प्रकार शिक्षक गद्य पाठ की शिक्षा देने के लिए अपनी आवश्यकतानुसार किसी एक विधि का अलग से या सभी विधियों का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए -

१. प्रशोत्तर विधि को _____ विधि भी कहा जाता है।

२. समीक्षा विधि के अंतर्गत, छात्रों में _____ की आदत विकसित होती है।

३. व्याख्या विधि _____ विधि का विकसित रूप है।

४. शिक्षक गद्य पाठ की शिक्षा देने के लिए आवश्यकतानुसार किसी एक विधि या सभी विधियों का _____ रूपसे प्रयोग कर सकता है।

३.४.३.४. **गद्य शिक्षण की आधुनिक विधियाँ -**

छात्र, आप हिन्दी गद्य शिक्षण की आधुनिक विधियों की सूची बनाइए और देखिए आपकी सूची के अंश नीचे की विधियों में हैं -

आधुनिक विधियाँ क्रिया प्रधान तथा शिक्षार्थी केन्द्रित हैं। छात्र स्वतंत्र रूप से पाठ्य समस्या का समाधान प्राप्त कर गद्य शिक्षण को सही रूप में समझकर आगे बढ़ सकते हैं। इन विधियों द्वारा छात्रों में भाषा प्रभुत्व का विकास किया जा सकता है।

१. खेल विधि -

इस विधि के प्रयोग का श्रेय काल्ड वेलु कुक महोदय का है। खेल द्वारा भाषा शिक्षण रुचिकर एवं स्थायी होता है। लिखना, पढ़ने, सामूहिक चर्चा में खेल भावना प्रोत्साहित किया जाता है।

भाषण, साहित्यिक खेल, सामूहिक खेल, नाटक, यात्रा द्वारा भाषा का विकास संभव है। गद्य पाठों का समुचित ज्ञान दे सकते हैं। गद्यपाठों में आनेवाले साहित्य सांस्कृतिक विषयों का इस विधि द्वारा सिखाया जा सकता है।

लाभ - करके सीखना, खेलते सीखना, भागलेते सीखने के तत्व पर यह विधि आधारित है।

- छात्रों के शारीरिक, मानसिक विकास होता है।
- छात्र स्वयं सीखते हैं।
- छात्र क्रिया द्वारा सीखते हैं।

दोष - उच्च कक्षा के लिए सूक्त नहीं है।

- छात्र विषय सीखने के बदले खेल पर ही अधिक रुचि लेते हैं।

२. खोज आयाम -

इस आयाम के प्रवर्तक हैं जे.एस.ब्रूनर। यह समस्या समाधान की एक प्रविधि है। शिक्षण की उन परिस्थितियों जिनकी सहायता से अनुदेशन के तथ्यात्मक उद्धेश्यों की प्राप्ति की जाती है तथा शिक्षक इसमें कोई निर्देश नहीं देता है। इस विधि का उद्धेश्य- छात्रों में समस्या समाधान की क्षमता का विकास करना है। शिक्षक समस्या समाधान नियमों की परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है | छात्र स्वयं समस्या का समाधान ढूँढते और निहित नियमों को समझता है।

गुण - छात्र के विश्लेषण, संश्लॅषण, चिंतन की क्षमता का विकास होता है।

३. परियोजना / योजना विधि -

इस विधि के प्रयोग का श्रेय जान् ड्यूवी और किल्पैट्रिक को है। इस विधि में कार्य की योजना बनाई जाती है। योजना के कार्यान्वयन से किसी फल की प्राप्ति होती है। छात्र अपनी स्वाभाविक रुचि से योजना में संलग्न होते हैं। इस विधि में हिन्दी के विविध विषयों का, योजनाओं द्वारा सिखाया जाता है। छॉटी योजनाओं द्वारा छात्रों को सीखने के योग्य बनाया जाता है।

इस विधि का उद्देश्य - स्व इच्छा, उद्धेश्यपूरित क्रिया द्वारा, सीखना अधिक प्रभावात्मक होता है।

छात्रों को शिक्षा इस प्रकार दी जाय जो उन्हें जीवन के लिए समर्थ बना सके।

छात्र जब किसी समस्या को लेकर चलते हैं तो उसे पूरा करने के लिए भाषा कार्य भी करना पड़ता है। उस कार्य के माध्यम से भाषा अध्ययन चलता रहता है, किन्तु केवल भाषा के लिए कोई समस्या नहीं होती। भाषा शिक्षण के लिए यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है।

किन्तु यह विधि अन्य विषय जैसे विज्ञान, सामाजिक अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिक तथा आधुनिक पद्धति मानी गई है।

यह विधि व्यय साध्य है और प्राप्त ज्ञान शृंखलाबद्ध नहीं होता है।

गुण - अनुभव केन्द्रित है। करके सीखने का तत्व पर आधारित है। समाजीकरण पर बल दिया जाता है।

४. शैक्षिक पर्यटन -

इसमें वास्तविक अनुभव द्वारा सीखने को महत्व दिया गया है। पाठ्यवस्तु का ज्ञान प्रत्यक्षीकरण किया जाय तब अधिक रुचिकर, बोधगम्य हो सकता है।

पर्यटन की व्यवस्था विशिष्ट शैक्षिक परिस्थितियों के लिए की जानी चाहिए।

जैसे - ' ताजमहल ' भाषा पाठ के लिए छात्रों को ले जाकर ताजमहल दिखाए तो उन्हें वास्तविक ज्ञान हो जाता है। ऎसे ही स्थानीय-इमारतें, स्मारक, ग्रामीण उद्योगों (जो पाठ से संबंधित) को देखने से उन्हें दैनिक जीवनोपयोगी ज्ञान, पाठ्यविषय की समझ प्राप्त होता है। ज्ञानात्मक, भावात्मक, सहयोग की भावना का विकास छात्रों में होता है।

पर्यटन को छात्र मात्र एक मनोरंजन के रूप में लेते हैं तो अधिक शैक्षिक महत्व नही देते हैं।

गुण - वास्तविक अनुभव द्वारा सीखने पर बल

- पाठ्यवस्तु का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है।
- सहयोग की भावना का विकास होता है।

परीक्षा -

इन कथनों को पढ़िए और अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए -

१. खेल विधि प्रयोग का श्रेय काल्ड वेलु कुक महोदय **को** है।
२. खोज आयाम का उद्देश्य छात्रों में समस्या समाधान की क्षमता का विकास करना है।
३. योजना विधि, भाषा शिक्षण के लिए अधिक उपयोगी है।
४. योजना विधि में हिन्दी भाषा के विविध विषयों **को** योजना द्वारा सिखाया जाता है।
५. शैक्षिक - पर्याटन द्वारा पाठ्य वस्तु का प्रत्यक्षीकरण नहीं किया जाता है।
६. खेल विधि में छात्र, खेल से भी ज्यादा विषय सीखने में अधिक रुचि लेते हैं।

(उत्तर - १. सहमत २. सहमत ३. असहमत ४. सहमत ५. असहमत ६. असहमत)

छात्रों आइए गद्य शिक्षण की कुछ और सार्थक आधुनिक विधियों का विचार करेंगे -

५. भाषा प्रयोगशाला - शिक्षण के क्षेत्र में भाषा प्रयोग शाला एक नई विधा है।

प्रो. एड्विन् पैकर ने लिखा है - " भाषा प्रयोग शाला विद्युतकीय साज सज्जा से युक्त एक शिक्षण कक्ष होता है जिसका उपयोग भाषाओं में समूह शिक्षण के लिए किया जाता है, जहाँ भाषा की शिक्षा दी जाती है " ।

गद्य, पद्य, व्याकरण, रचना के पाठों के स्पष्टीकरण के लिए दृश्य, श्रव्य उपकरणों द्वारा गद्य पाठ को संपन्न बनाया जाता है। उच्चारण, वार्तालाप, वर्तनी का अधिक ज्ञान कराया जा सकता है। गद्य के मुख्य भाषाई कौशल जैसे श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन, संवहन कौशल, शब्द भंडार विकास किया जा सकता है। कौशलों के अर्जन में होनेवाले दोष का निवारण भी किया जाता है। वैज्ञानिकता तथा साहित्यिक का शुद्ध ज्ञान इस विधि द्वारा संभव है।

६. कंप्यूटर निर्देशित / अभिक्रमित अनुदेश -

इस अधिगम में एक विशेष प्रकार का निर्देशन जो छात्र को नई सामग्री सिखाता है और अपने अधिगम को जाँचने का लगातार अवसर देता है।

अभिक्रमित अधिगम, शिक्षण की एक तक़नीकी अधिगम विधि है। छात्र स्वयं सीखने पर बल देता है। अभिक्रमित अधिगम का आधार शिक्षण मशीनें हैं।

इसी योजना के अनुसार शिक्षण एवं सीखने की क्रिया को साकार रूप प्रदान करना है।

इस का लक्ष्य है - अधिगम को सोद्देश्य एवं स्थायी बनाना । इसका स्वरूप प्रश्नोत्तर है।

डी. एल. कुक के अनुसार -

" अभिक्रमित अनुदेश, जो स्वचालित आत्मनिर्देशित विधि के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

शिक्षार्थी के सम्मुख एक अभ्यास / समस्या को प्रस्तुत कर, उसे वांछित उत्तर के लिए प्रेरित करता है कि उसका उत्तर सही या नहीं। इस विधि में पाठ्य पुस्तक, शिक्षण मशीन द्वारा शिक्षण, सीखने की क्रिया संपन्न किया जाता है " ।

- यहाँ सामग्री को छोटे - छोटे पदों में विभक्त किया जाता है।
- छात्र के प्रवेश तथा अंतिम व्यवहार को ध्यान में रखा जाता है।
- प्रत्येक फ्रेम स्पष्ट, तर्क संगत, सार्थक होने के कारण छात्र की बौद्धिक अनुक्रिया प्राप्त करनें की दिशा में क्रियाशील होता है।
- सीखनेवाले को यह पता चलता है कि उसका उत्तर सही या गलत तो उसे आगे बढ़ने या संशोधन करने का पुनर्बलन प्राप्त होता है।
- छात्र तथा विषय सामग्री के बीच अंतः क्रिया होती है।
- छात्र अपनी योग्यता, सामर्थ्य, सीखने की गति के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त करता है। यहाँ मूल्यांकन सतत होता है, छात्र के चिंतन, तर्क, विवेक का विकास होता है।

गुण - सीखना उद्धेश्यपूर्ण, स्थायी होता है।

- छात्र क्रिया शील रहते हैं।
- छात्र अपनी योग्यता के अनुसार सीखते हैं।
- छात्र के चिंतन, तर्क का विकास होता है।
- जटिल व्यवहार तथा कौशल अर्जन में सहायक है।

७. **नाटकीकरण -** यह एक ऐसा श्रव्य - दृश्य विधि है जिसे प्राचीन काल से ही शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है।

भाषा या किसी भी विषय को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना ही नाटकीकरण है। इसका उद्देश्य किसी एक विषय को चुनकर अभिनय द्वारा सीखना है।

ऐतिहासिक घटना से संबंधित भाषा पाठ में छात्र विभिन्न पात्रों में भाग लेकर उस ऐतिहासिक घटना, महापुरुषों, विभिन्न युग की वेशभूषा का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। नाटक द्वारा छात्रों को मनोरंजन के साथ-साथ विभिन्न विषयों की शिक्षा भी स्वाभाविक रूप से मिलती है अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को नाटक में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करें तथा प्रोत्साहन भी दें।

गुण - छात्रों को उत्तम सीखने तथा व्यक्तित्व विकास का अवसर मिलता है।

- लेखन, वाचन कौशल का विकास होता है।
- छात्र स्वयं अनुभव से सीखते हैं।
- छात्रों को सीखने में आनंद मिलता है।
- छात्रों की शारीरिक, मानसिक, भावप्रधान क्रियाओं का समन्वय हो जाता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०४

उत्तर दीजिए -

१. भाषा प्रयोग शाला द्वारा कौन सा शुद्ध ज्ञान संभव है?
२. अभिक्रमित अनुदेश का लक्ष्य क्या है?
३. अभिक्रमित अनुदेश किस विधि के पर्याय रूप में प्रयुक्त किया जाता है?
४. नाटकीकरण किसे कहते हैं?
५. नाटकीकरण का उद्देश्य क्या है?
६.

३.४.४. **सारांश -**

गद्य शिक्षण के संबंध में काफी चर्चा कर चुके हैं । आइए पूरी इकाई पर एक नज़र डालें -

गद्य का संबंध बुद्धि पक्ष से है। गद्य शिक्षण का महत्व जैसे सामाजिक व्यवहार को सुगम बनाता है। छात्र के शब्दभंडार में वृद्धि करता है। गद्य शिक्षण के सामान्य उद्देश्य, जैसे - शब्द का उच्चारण शुद्ध करना, भाषा संबंधी ज्ञान बढ़ाना। विशिष्ट उद्देश्य जैसे - भाषिक तत्व, विषय सामग्री, अभिव्यक्ति से संबंधित है।

गद्य शिक्षण की विधियों में ------

परंपरागत विधियाँ - अर्थकथन विधि, व्याख्या विधि, प्रश्नोत्तर विधि, समीक्षा विधि, संयुक्त विधि आदि देख सकते हैं।

आधुनिक विधियों में - खेल विधि, खोज आयाम, योजना विधि, शैक्षिक पर्यटन, भाषा प्रयोग शाला, कंप्यूटर / अभिक्रमित अनुदेश आदि के द्वारा गद्य शिक्षण को संपन्न किया जा सकता है ।

३.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.१. व्यावहारिक २. बुद्धि ३. गद्य ४. ज्ञान राशी,

२.१. सही २. गलत ३. गलत

३.१. विश्लेषण विधि २. स्वाध्याय ३. अर्थकथन ४. संयुक्त

४.१. वैज्ञानिक, साहित्यिक २. अधिगम को सोद्देश्य एवं स्थायी बनाना है।

३. स्वचालित आत्मनिर्देशित ४. किसी विषय को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना है।

५. किसी विषय को चुनकर अभिनय द्वारा सीखना है।

३.४.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. गद्य शिक्षण के महत्व के बारे में लिखिए ।

२. गद्य शिक्षण की आधुनिक विधियाँ कौन कौन सी हैं ? उनकी व्याख्या कीजिए |

३.४.६. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी शिक्षण

-डा.शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

२. कन्नड भाषा बोधने

प्रो.एम.एन. हेगडे गुणवन्ते (२००८)

प्रदीप प्रकाशन, गदग

३. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)

श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

खण्ड ३ : पाठयोजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई ५ : कविता का रसास्वादन

इकाई की संरचना

३.५.१. सीखने के उद्देश्य
३.५.२. प्रस्तावना
३.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.५.३.१. कविता के रसास्वादन का महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.५.३.२. कविता के रसास्वादन का उद्देश्य
अ) सामान्य आ) विशिष्ट
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.५.३.३. कविता के रसास्वादन की परंपरागत विधियाँ तथा आधुनिक विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच - ०३
३.५.४. सारांश
३.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.५.७. संदर्भ पुस्तकें

३.५.१. **सीखने के उद्देश्य -**

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- कविता रसास्वादन के उद्देश्य को स्पष्ट बतायेंगे।
- कविता रसास्वादन के महत्व का विश्दीकरण करेंगे।
- कविता रसास्वादन के परंपरागत और आधुनिक विधिय़ों का वर्णन करेंगे।

३.५.२. प्रस्तावना -

छात्रों, आइए कविता के बारे में कुछ अपना विचार बताइए और देखिए कि आपके विचार नीचे की कविता के अंशों से मिलता है।

साहित्य का प्रमुख अंग कविता माना जाता है।

कवि कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति सहज रूप से करता है।

जब मानव की भावाभिव्यक्ति में लय हो, सरसता हो, मधुरता हो और आकर्षण हो तब उसे कविता कहते हैं। हिन्दी कविता का आरंभ वीरगाथाकाल से माना जाता है। कविता के अंतर्गत - भावना, कल्पना तथा बुद्धि तीनों पक्षों का समावेश होता है। कविता में भावतत्व प्रधान होता है।

कॉलरिज के अनुसार -

" कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम विधान है " ।

जयशंकर प्रसाद के अनुसार -

" आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति काव्य है।

कविता में - रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, गुण आदि तत्व समाहित है " ।

३.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

३.५.३.१. कविता के रसास्वादन का महत्व -

छात्रों, कविता के रसास्वादन के महत्व निम्नाकित हैं -

- कविता, साहित्य का महत्व पूर्ण अंग है।
- मानव व्यक्तित्व का संगठन करती है।
- कविता शिक्षण अनुभूति प्रदान करता है।
- कविता में विवेक, कल्पना का प्रयोग होता है।
- छात्रों को मानवता प्रदान करती है।
- कविता से सत्यं, शिवं, सुंदरम का बोध होता है तथा प्राप्ति भी की जा सकती है।
- कविता जीवन, समाज, राष्ट्र का प्रतिबिंब होती है।
- आनंद की अनुभूति का सशक्त साधन है।
- कविता अनेकत्व में एकत्व लाती है।
- कविता से सात्विक भावों का उद्‌बोधन एवं उदात्त भावों का संवर्धन होता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

१. कविता शिक्षण _____ प्रदान करता है।
२. कविता मानव के _____ का संगठन करती है।
३. कविता अनेकत्व में _____ लाती है।
४. हिन्दी कविता का आरंभ _____ काल से माना जाता है।

३.५.३.२. कविता के रसास्वादन के उद्‌देश्य -

छात्रों,

कविता के कुछ उद्‌देश्य हैं - कविता रसास्वादन के उद्‌देश्यों की सूची बनाइए -

छात्र का संभावित उत्तर -

- **कल्पना शक्ति का विकास करना।**
- **कवि के भावों का ज्ञान कराना।**

आइए कविता के रसास्वादन के अन्य उद्देश्यों के बारे में जानेंगे -

कविता रसास्वादन के दो उद्देश्य हैं -

अ) सामान्य उद्देश्य

आ) विशिष्ट उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य -

छात्रों में -

- कविता के प्रति अभिरुचि जागृत करना।
- कल्पना शक्ति का विकास करना।
- सात्विक भावनाओं का उदबोधन करना।
- काव्य सौंदर्य को परखने की क्षमता उत्पन्न करना।
- सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।
- शुद्ध उच्चारण और ताल-लय के साथ कविता वाचन की क्षमता उत्पन्न करना।
- राष्ट्रीयता तथा देश प्रेम की भावनाओं का विकास करना ।

विशिष्ट उद्द्देश्य -

- विशिष्ट उद्देश्य के निर्माण में प्रस्तुत पाठ्यांश के सभी शिक्षण बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक है।

छात्रों में,

- अनुभूति, कल्पना की प्रधानता उत्पन्न करना।
- सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् के समन्वय का बोध कराना मुख्य उद्देश्य हो।
- लय, ताल, स्वरों का आरोह-अवरोह का विकास करना
- कविता की भाषा-सरल, सरस मधुरता की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करना।
- काव्य के सही आशय का ज्ञान कराना।
- नैतिक तथा चारित्रिक विकास करना ।
- कवि के भावों के विचारों तथा प्रतिपादन शैली का ज्ञान कराना।
- कविता के भावग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करना।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

निम्न कथनों में सही / गलत को पहचानिए -

१. कविता का मुख्य उद्देश्य सत्यम, शिवम, सुंदरम के समन्वय का बोध कराना नहीं है।

२. कविता की भाषा सरल एवं सरस होती है।

३. कविता, देश प्रेम और राष्ट्रीयता का विकास करती है।

३.५.३.३. कविता के रसास्वादन की परंपरागत विधियाँ -

छात्रों,

भाषा और शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार कुछ प्रमुख कविता शिक्षण की प्रंपरागत विधियाँ हैं। आप भी विचार करके परंपरागत विधियों की सूची बनाकर नीचे के अंशों से मिलाकर देखिए कि आपके विचार कहाँ तक सही हैं -

१. गीत व अभिनय विधि -

गीतों / कविताओं का पढ़ाने की प्रणाली, गति प्रणाली है। इस विधि का प्रयोग प्रारंभिक कक्षाओं में होता है। छात्र (बच्चे) स्वभाव से संगीत प्रेमी होते हैं। बालगीत, छंदोबद्ध गीत (कविता) बच्चों को बहुत प्रभावित करते हैं। स्वयं शिक्षक स्वर एवं ताल के साथ गीत / कविता पढ़ना और बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। अनावश्यक हाव-भाव एवं अंग संचालन नहीं होना चाहिए और उचित रीति से पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए।

बालक सरलतापूर्वक कविता को कंठस्थ करते हैं और आनंद की अनुभूति करते हैं।

२. नाट्य विधि -

यह विधि प्राथमिक स्तर की है।

अनेक गीत/कविता ऐसे पढ़ाने होते हैं जिनमें क्रियात्मकता अधिक होती है। ऐसे गीतों को नाट्य प्रणाली से पढ़ाया जा सकता है। भाव प्रदर्शन के लिए बालक उचित भाव भंगिमा और अंगसंचालन के साथ कविता पढ़ते हैं। इस विधि से कक्षा में सजीव, सरस वातावरण बन जाता है और बच्चे (छात्र) आनंद मग्न होते हैं। अनावश्यक उछलकूद नहीं होना चाहिए।

३. अर्थबोध अथवा शब्दार्थ कथन विधि -

यह प्रणाली परंपरागत प्रचलित प्रणाली है। आज भी शिक्षक इसका अनुसरण करते आ रहे हैं। इस विधि का प्रयोग कक्षा ४ या ५ से प्रारंभ हो जाता है और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक चलता रहता है। इस विधि का अधिक प्रचलन है।

इस विधि में शिक्षक किसी छात्र से कविता पढ़ने को कहता है और कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए कविता का अर्थ भी बताता है। कविता पढ़ाने की यह विधि सर्वथा दोषपूर्ण है। छात्रों को शब्दार्थ ज्ञान तो हो जाता है पर कविता के सौंदर्य तत्वों का बोध नहीं हो पाता और वे आनंद भी नहीं ले पाते ।

४. व्याख्या विधि -

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में व्याख्या प्रणाली का विशेष महत्व है। उपयुक्त प्रश्नों द्वारा छात्रों से कविता के भावों को प्रकाशित कराने का प्रयास किया जाता है और आवश्यकतानुसार शिक्षक व्याख्या भी स्वयं प्रस्तुत करता है। यहाँ शिक्षक शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ की ओर अधिक ध्यान देता है इसके साथ छंद, रस, अलंकारों का स्पष्टीकरण भी करता है। छात्र-(प्रशिक्षणार्थी) शिक्षक और कवि के बीच रागात्मक संबंध स्थापित होता है।

छात्र सक्रिय रहते हैं और उनकी कल्पना शक्ति का विकास होता है।

इस विधि के ३ उपभेद हैं -

अ) व्यास प्रणाली विधि

आ) तुलना विधि

इ) समीक्षा विधि

अ) **व्यास विधि** - यह विधि व्याख्या विधि का विस्तृत रूप है। इस विधि का उपयोग उच्च कोटि की भाव प्रधान कविताओं को पढ़ाने के लिए किया जाता है। कविता को कला-पक्ष, भाव-पक्ष दोनों दृष्टियों से परखा जाता है। कविता के एक-एक शब्द के विशिष्ट भाव को विस्तार से समझाया जाता है। यहाँ छात्र श्रोता मात्र रह जाते हैं, उन्हें पाठ विकास में भाग न लेने के कारण उनमें स्वतंत्र रूप से काव्य रसास्वादन की क्षमता नहीं उत्पन्न हो पाती और न विवेचन की ही शक्ति विकसित होती है।

आ) **तुलना विधि -** इस विधि का उपयोग उच्च कक्षा के शिक्षण में किया जाता है। यहाँ शिक्षक प्रस्तुत कविता के समान भाववाली, उसी कवि द्वारा या अन्य कवि द्वारा रचित कविताएँ छात्रों के सामने प्रस्तुत करता है और उसकी समानता तथा असमानता की तुलना करता है। इससे छात्रों को तत्संबंधी भाषा, भाव एवं शैली का पता चलता है। इससे छात्र की तर्कशक्ति, कल्पनाशक्ति और निर्णय शक्ति पर्याप्त मात्रा में विकसित हो जाती है। इससे कवि की भाषा, शैली के गुण-दोषों का पता चलता है।

गुण - छात्रों की तर्क शक्ति, कल्पनाशक्ति, निर्णय शक्ति का विकास होता है।

- दो विषयों में तुलना करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

इ) समीक्षा विधि - इस विधि का उपयोग ऊँची कक्षाओं में होता है। इसमें शिक्षक कविता के अर्थ, व्याख्या के साथ साहित्यिक सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है और कविता के छंद, अलंकार रस, गुण-दोष तथा भाषा शैली आदि का यथाप्रसंग शास्त्रीय विवेचन करता है। अध्ययन का भार छात्रों पर रहता है और वे क्रियाशील रहते हैं।

समीक्षा तीन प्रकार से होती है। जैसे - भाषा की समीक्षा, काव्यगत भाव की समीक्षा, उन प्रभावों की समीक्षा जिससे कवि को रचना करने में प्रेरणा मिलती है।

५. प्रश्णोत्तर अथवा खण्डान्वय विधि -

यह विधि उन पद्यांशों के लिए उपयुक्त है। जिनमें विशेषणों की बहुलता होती है, भावों और घटनाओं की अधिकता होती है। यह विधि बहुत कुछ गद्य शिक्षण विधि की ही भाँती है, जिसमें पद्यांश को खण्ड - खण्ड करके प्रत्येक तत्व, भाव या विचार के संबंध में प्रश्न पूछा जाता है और अभीष्ट उत्तर प्राप्त करते हुए संपूर्ण विषयवस्तु का परिचय छात्र को कराया जाता है। छात्रों को कविता की विषय सामग्री स्पष्ट हो जाती है पर उनका सौंदर्यबोध नहीं होता है । कविता के रागात्मक तत्वों से तादात्म्य स्थापन की क्रिया इस विधि द्वारा नहीं हो पाती है।

यह विधि वर्णनात्मक, इतिवृत्यात्मक कविताओं में सफल हो सकती है।

गुण - छात्रों को विषय सामग्री का परिचय हो जाता है।

दोष - छात्रों को सौंदर्य का बोध, रागात्मक तत्वों के साथ तादात्म्य नहीं होता है।

हर एक विधि में कुछ दोष, कुछ गुण हैं। शिक्षक को विभिन्न विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए और अपने शिक्षण को प्रभावशाली एवं रोचक बनाना है। इन सभी विधियों का समन्वय करके संदर्भानुसार पढ़ाया जाता है। अंततः कह सकते हैं कि शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में सफलता पाने के लिए स्तरानुकूल विधियों का उपयोग करना ही उपयुक्त होता है।

अभ्यास -

देखें आप कविता रसास्वादन की परंपरागत विधियों के बारे में क्या जानते हैं -

पढिए और सही शब्दों से पूरा कीजिए -

गीत विधि द्वारा छात्र --------- अनुभूति करते हैं। जिन कविताओं में क्रियात्मकता अधिक है वहाँ --------- विधि उपयुक्त है। --------- विधि द्वारा छात्रों को शब्दार्थ ज्ञान तो होता है पर कविता के सौंदर्य का बोध नहीं होता है। -------- विधि में शिक्षक शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ की ओर अधिक ध्यान देता है। जिस कविता में विशेषण अधिक होते **हैं** , वहाँ ------- विधि उपयुक्त है।

कविता रसास्वादन की आधुनिक विधियाँ -

छात्रों,

कविता शिक्षण में उपरोक्त परंपरागत विधियों के अलावा इन दिनों आधुनिक विधियों का भी प्रयोग करके शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाया जा रहा है -

आइए आप कविता शिक्षण की आधुनिक विधियों की सूची बनाइए और देखिए आप के विचार नीचे के विचारों से कितना मिलते हैं ।

आधुनिक विधियाँ हैं -----

१. **खेल विधि** - (संदर्भ खण्ड - ३ इकाई - ४ को देखें) खेलना छात्रों की सहज क्रिया है।

खेल विधि में कविता के रस, छंद, अलंकार, कवि, उनके कृति परिचय को विषय सामग्री के रूप में लेना है। कविता शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग निम्न रूप से किया जाता है -

- अभिनय द्वारा कविता का गायन सामूहिक रूप से कराना।
- कविता के संदर्भगत पात्राभिनय कराना।
- अलंकार, छंद, रस से संबंधित - कार्डस बनाकर, शिक्षक निर्देशन में सिखाया जा सकता है।
- कक्षा क्रियाओं के द्वारा कविता का रसास्वादन कराया जाता है।
- कक्षा को दो समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह के सदस्यों से क्रमानुसार कविता पाठ (कंठस्थ) करने के लिए कहा जाता है, उनके उच्चारण, लय, प्रवाह कविता की सरसता आदि के आधार पर उन्हें श्रेष्ठ घोषित किया जाता है।
- अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है।

१. **भाषाप्रयोगालय (भाषा प्रयोगशाला) विधि** - [संदर्भ - खण्ड - ३, इकाई - ४ देखें]

कविता की विशेषताएँ जैसे - राग, लय, उच्चारण, रस, छंद, अलंकार, कवि, कवि कृति को श्रव्य माध्यम से सुनाया जा सकता है। कविता की कुछ विशेष पंक्तियों को श्रव्य माध्यम से सुनाकर सौंदर्य बोध कराया जाता है।

आधुनिक भाषा प्रयोगालय डिजिटल तथा मल्टी मीडिया से संपन्न होता है। इस प्रयोगालय के प्रयोग से छात्रों को नवीन ज्ञान मिलता है और वे सृजानात्मक बनते हैं । भाषा प्रयोगालय में साधन जैसे - टेपरेकार्डर, ग्रामोफोन, रेकार्ड प्लेयर, दूरदर्शन, कंप्यूटर, प्रतिरूप, छायाचित्र, चित्रदर्शक, चित्रविस्तारक आदि को कविता

शिक्षण में संदर्भानुसार प्रयोग करके नवीन, सौदर्यात्मक ज्ञान दिया जाता है । इस विधि के द्वारा कविता की विशेषताओं के विकास करने के साथ इन विशेषताओं के सीखने में दोष का निवारण भी किया जाता है।

२. कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन विधि -

[संदर्भ देंखें खण्ड -३, इकाई - ४]

कक्षा शिक्षण से भी अधिक जानकारी इस विधि के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

(LAN) एल.ए.एन. द्वारा शिक्षक - छात्र कंप्यूटर के बीच संपर्क स्थापित करके कविता शिक्षण में उपयोग किया जाता है।

कविता से संबंधित विषय सामग्री जैसे रस, छंद, अलंकार, उच्चारण, कविता के आशय का विषयगत पाठ की फाइल, श्रव्यपाठ की फाइल, दृश्यपाठ की फाइल, तथा अनेक अभ्यास तथा परीक्षा की फाइल बनाकर छात्रों को निर्देशन के द्वारा सिखाया जाता है।

इस विधि का प्रयोग करते समय कविता शिक्षण के उद्धेश्य और सौंदर्य तत्व तथा तादात्मयता के बोध को ध्यान में रखना आवश्यक है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. व्यास विधि किस विधि का विस्तृत रूप है?
२. व्याख्या विधि के उपभेद कौन कौन से हैं?
३. समीक्षा विधि के तीन प्रकार की समीक्षाएँ कौन कौन सी हैं?
४. कविता रसास्वादन की आधुनिक विधियाँ कौन कौन सी हैं?
५. खेल विधि में कविता की विषय सामग्री क्या क्या हो सकती हैं?
६. भाषा प्रयोगालय में कविता रसास्वादन के शिक्षण के लिए कौन कौन से साधनों का प्रयोग किया जाता है?

३.५.४. सारांश -

अब तक कविता रसास्वादन के बारे में काफी जान चुके हैं, कविता साहित्य का एक प्रमुख अंग है । इसमें भाव तत्व प्रधान होता है।

कविता रसास्वादन के महत्व -

- मानव व्यक्तित्व का संगठन करती है। छात्रों को मानवता प्रदान करती है।

कविता रसास्वादन के उद्धेश्य -

सामान्य उद्धेश्य - छात्रों में कविता के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कराना। छात्रों में काव्य सौंदर्य का बोध कराना।

विशिष्ट उद्धेश्य - कवि के भाव, विचारों का ज्ञान कराना। छात्रों में कविता के भावग्रहण की क्षमता उत्पन्न कराना।

कविता रसास्वादन की विधियाँ - परंपरागत विधियाँ जैसे - गीत व अभिनय विधि, नाट्य विधि, अर्थबोध विधि, व्याख्या विधि, खण्डान्वय विधि आदि। आधुनिक विधियाँ जैसे - खेल विधि, भाषा प्रयोगालय, कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन विधि

३.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.१. अनुभूति २. व्यक्तित्व ३. एकत्व ४. वीरगाथा

२.१. गलत २. सही ३. सही

३.१. व्याख्या विधि २. व्यास विधि, तुलना विधि, समीक्षा विधि

३. भाषा समीक्षा, काव्यगत भाव समीक्षा, प्रभाव की समीक्षा

४. खेल विधि, भाषा प्रयोगलय, कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन विधि।

५. कविता के रस, छंद, अलंकार, कवि, उनके कृति परिचय आदि।

६. टेपरेकार्डर, रिकार्ड प्लेयर, कंप्यूटर, चित्र दर्शक, आदि।

३.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

उत्तर दीजिए -

१. कविता रसास्वादन की परंपरागत विधियों का वर्णन कीजिए।

२. कविता रसास्वादन के महत्व बताइए।

३.५.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. नूतन हिन्दी शिक्षण
के.आय. सात्रिगेरी(१९९७)
प्रकाशक : श्रीमती विजया के. सत्तिगेरि, बेलगाँव

२. हिन्दी शिक्षण -
डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)
आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

३. हिन्दी शिक्षण
डा. उमा मगल (२००६)
आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

४. e-guideforhindilearning - youtube

५. www.sanako.com

खण्ड ३ : पाठयोजना और शिक्षण विधियाँ

इकाई ६ : व्याकरण शिक्षण

इकाई की संरचना

३.६.१. सीखने के उद्देश्य
३.६.२. प्रस्तावना
३.६.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
३.६.३.१. व्याकरण शिक्षण का महत्व और उद्देश्य
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
३.६.३.२. व्याकरण शिक्षण की परंपरागत विधियाँ और आधुनिक विधियाँ
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
३.६.४. सारांश
३.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
३.६.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
३.६.७. संदर्भ पुस्तकें

३.६.१. सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- व्याकरण शिक्षण के महत्व को स्पष्ट करेंगे ।
- व्याकरण शिक्षण के उद्देश्यों को समझकर लिखेंगे ।
- व्याकरण शिक्षण की परंपरागत विधियों का वर्णन करेंगे ।
- व्याकरण शिक्षण की आधुनिक विधिय़ों की चर्चा करेंगे ।

३.६.२. प्रस्तावना -

छात्रों, आप भाषा और व्याकरण के बारे में जानते हैं। उनके बीच के संबंध के बारे में बताइए। आपके विचार नीचे के अंशों से कितना मिलते हैं देखिए -

भारत में व्याकरण अध्ययन की अति प्राचीन परंपरा है। प्राचीन भारत में भाषा अध्ययन की दृष्टि से व्याकरण पर इतना बल दिया जाता था कि व्याकरण स्वतः एक स्वतंत्र शास्त्र बन गया और उसका पृथक् अध्ययन होने लगा।

हिन्दी साहित्य का विकास होने पर हिन्दी भाषा का व्याकरण लिखने की ओर विद्वानों का ध्यान विशेष रूप से गया। व्याकरण की शिक्षा को भाषा की शिक्षा का एक आवश्यक अंग माना जाता है। किसी भी भाषा सीखने में व्याकरण शिक्षण बहुत ही अनिवार्य है। एक सजीव भाषा के लिए व्याकरण बहुत ही महत्व पूर्ण है।

वास्तव में व्याकरण भाषा का शासक होता है। भाषा की सुसंबंद्धता व्याकरण के नियमों पर ही निर्भर है। भाषा की शुद्धता की दृष्टि से व्याकरण का असीम क्षेत्र है। शिक्षित लोगों पर, शुद्ध भाषा की रक्षा और विकास का दायित्व होने के कारण व्याकरण शिक्षण एक आवश्यक अंश बन गया है।

व्याकरण का अर्थ -

व्याकरण - शब्द प्रयोग के नियमों का प्रायोगिक रूप से बताने वाला शास्त्र है। भाषा की मूल इकाइयाँ जैसे - शब्द, वाक्य व्यवस्था का विवेचन व्याकरण करता है।

परिभाषाएँ -

लेनार्ड हूम फील्ड के अनुसार

" भाषा के रूप की सार्थक एवं शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है "।

महर्षि पाणिनी और पतंजलि के अनुसार

" व्याकरण शब्दानुसान है "।

भाई योगेन्द्र जीत के अनुसार

" सार रूप में प्रचलित भाषा से संबंधित नियमों का कथन ही व्याकरण है "।

उपरोक्त इन परिभाषाओं के द्वारा व्याकरण का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

' व्याकरण' शब्द के द्वारा अर्थस्वरूप के माध्यम से शब्दों की व्याख्या होती है।

अभ्यास -

अनुच्छेद को पढ़कर संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

व्याकरण, भाषा का शासक होता है। भाषा की सुसंबद्धता व्याकरण के नियमों पर ही निर्भर है। एक जीवित भाषा के लिए व्याकरण आवश्यक है। व्याकरण - शब्द प्रयोग के नियमों का प्रायोगिक रूप से बतानेवाला शास्त्र है। महर्षि पाणिनी और पतंजलि के अनुसार व्याकरण शब्दानुशासन है।

१. महर्षि पाणिनी और पतंजलि ने व्याकरण के बारे में क्या परिभाषा दी है?

२. भाषा का शासक कौन है?

३. एक सजीव भाषा के लिए क्या आवश्यक है?

४. व्याकरण किसे कहते हैं?

३.६.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

३.६.३.१. व्याकरण शिक्षण का महत्व और उद्देश्य -

छात्रों, व्याकरण शिक्षण के कुछ उद्धेश्य बताइए,

छात्र का संभावित उत्तर - शुद्ध बोलने, लिखने की प्रेरणा देना ।

- ध्वनि एवं उच्चारण का ज्ञान कराना ।

आपके विचार के साथ साथ व्याकरण शिक्षण के कुछ सामान्य, विशिष्ट उद्धेश्यों की चर्चा करेंगे -

व्याकरण शिक्षण का महत्व निम्न प्रकार है -

- व्याकरण की शिक्षा भाषा शिक्षण का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण भाषा का दिशा निर्देशन करता है और उसे सरलता से अपेक्षित लाभ तक पहुँचाता है।
- व्याकरण द्वारा भाषा को सुव्यवस्थित किया जाता है।
- व्याकरण भाषा को संपन्न, समृद्ध बनाता है।
- व्याकरण अभ्यास से भाषा पर प्रभुत्व लाया जा सकता है यह भाषा का अलंकार है।
- भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
- ध्वनि विचार,शब्द विचार, अर्थ विचार, वाक्य विचार का स्पष्ट ज्ञान व्याकरण की शिक्षा से ही प्राप्त हो जाता है।
- छात्रों को शुद्ध वाचन, लेखन में सक्षम बनाता है।
- भाषा के स्वरूप को विकृत होने से बचाने में व्याकरण का योगदान होता है।
- भाषा की मितव्ययता व्याकरण से होती है।
- भाषा की पूर्णता व्याकरण से है।
- व्याकरण से नवीन भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता होती है।
- व्याकरण से भाषा की स्पष्टता में वृद्धि तथा सृजनात्मक लेखन के लिए भी अवसर मिलता है।

व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य -

व्याकरण शिक्षण के सामान्य तथा निर्दिष्ट / विशिष्ट उद्देश्य हैं -

सामान्य उद्देश्य -

पं लज्जाशंकर झा का मत है कि भाषा के शुद्ध रूप को समझने और पहचानने में समर्थ बनाना ही व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य है।

- व्याकरण के प्रति छात्रों की रुचि और जिज्ञासा को जागृत करना।
- शुद्ध बोलने, लिखने, तथा पढ़ने की प्रेरणा देना।
- भाषा प्रभुत्व का विकास करना।
- चिंतन एवं तर्क शक्ति का विकास करना।
- मानसिक अनुशासन स्थापित करना।

व्याकरण शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य -

छात्रों में -

- गद्य, पद्य की क्षमता का विकास करना
- ध्वनि एवं उच्चारण का ज्ञान कराना
- शब्द, वाक्य के शुद्ध रूप एवं वर्तनी का ज्ञान कराना
- छंद, अलंकार का ज्ञान कराना
- लोकोक्ति, मुहावरे का प्रसंगानुकूल अर्थ निकाल कर स्वराघात एवं बलाघात के अनुसार अर्थ ग्रहण के योग्य बनाना।

- प्रभावात्मक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
- भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान प्रदान करना।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सही शब्द चुनकर लिखिए -

१. एक सजीव भाषा के लिए _____बहुत ही महत्वपूर्ण है । (व्याकरण, ज्ञान)
२. महर्षि पाणिनी और पतंजलि के अनुसार व्याकरण _____ है । (अर्थानुशासन, शब्दानुशासन)
३. व्याकरण छात्रों में भाषा _____ का विकास करता है । (प्रभुत्व, प्रभाव)
४. छात्रों को भाषा से संबंधित _____ का ज्ञान प्रदान करना है । (नियम, निगम)
५. व्याकरण से _____भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता होती है। (नवीन, पुरानी)

३.६.३.२. व्याकरण शिक्षण की परंपरागत और आधुनिक विधियाँ -

छात्रों, व्याकरण की कुछ परंपरागत विधियाँ निम्न प्रकार के हैं -

१. निगमन विधि

- यह विधि परंपरागत है ।

इस विधि को नियम उदाहरण विधि भी कहते हैं। इसमें छात्रों को पहले नियम समझा दिये जाते हैं उसके बाद उदाहरण से उस नियम का प्रयोग करके दिखाया जाता है। इसमें नियम को पूर्ण रूप में प्रस्तुत करके उदाहरण को अपूर्ण रूप में रखकर छात्रों से पूर्ति कराते हैं या उदाहरण से स्पष्ट करते हैं।

गुण - शिक्षक कम समय में अधिक अभ्यास क्रम पढ़ा सकते हैं ।

- छात्रों को व्याकरण के नियम याद करने की आदत पड़ जाती हैं।

दोष - छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

- छात्रों की रुचि या मानसिक स्तर का ध्यान नहीं रखा जाता है ।

निगमन विधि - के दो प्रकार हैं

अ) सूत्र विधि -

- इसके अनुसार व्याकरण के नियम सूत्र रूप में रटा दिए जाते हैं और उसके लक्षण तथा उदाहरण बता दिए जाते हैं । यह विधि अमनोवैज्ञानिक है। इस विधि से भाषा के प्रयोग का अभ्यास नहीं हो पाता है।

आ) पाठ्य पुस्तक विधि -

- इस विधि में भी व्याकरण का पुस्तक में दी गई परिभाषाएँ और सिद्धान्त रटा दिये जाते हैं, जैसे - संज्ञा, सर्वनाम आदि की परिभाषा और भेद छात्रों को बता दिए जाते हैं । इस विधि से भाषा प्रयोग का अभ्यास नहीं होता है।

२. आगमन विधि -

- शिक्षक, अध्यापन के पहले व्याकरण के जिस अंश को पढाना है, उसके संबंध में बहुत से सरल उदाहरण संग्रह करके, छात्रों द्वारा उदाहरणों का वाचन किया जाता है। शिक्षक छात्रों की सहायता से उदाहरणों का विश्लेषण करते हैं और सामन्यीकरण करके छात्रों के सहयोग से नियम बनाकर उसका परिक्षण किया जाता है। उदाहरण परिचित होने से ज्ञात से अज्ञात की ओर, आसान से कठिन की ओर बढ़ते हैं।

गुण - मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा वैज्ञानिक है।

- छात्र सक्रिय रहते है।

दोष - सीखने - सिखाने में काफी समय लगता है ।

- जिन छात्रों के पास उदाहरण पर्याप्त मात्रा में होते हैं वे अपनी प्रगति शीघ्रता से कर सकते हैं।

आगमन विधि के प्रकार -

अ) प्रयोग विधि

- व्याकरण पढ़ाते समय छात्रों के सम्मुख पहले उदाहरण रखे जाते हैं। अनेक उदाहरणों में समान लक्षणवाले अंशों के कार्य एवं गुण छात्रों से कहलाएँ जाते हैं, अंत में उन्हीं के द्वारा कही गयी बातों के आधार पर सिद्धांन्त या नियम निकलवाए जाते हैं और फिर उन्हीं से उनका प्रयोग तथा अभ्यास कराया जाता है।

आ) सहसंबंध विधि

- इस विधि से व्याकरण के नियमों को अधिक बोधगम्य कराया जाता है क्योंकि इस विधि में उनकी सार्थकता एवं उपयोगिता का अनुभव कराया जाता है। गद्य शिक्षण, रचना शिक्षण के साथ व्याकरण के नियमों का बोध कराया जाता है, अलग से व्याकरण की शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं। स्थूल से सूक्ष्म की ओर सूत्र का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में व्यावहारिकता अधिक है।

३. प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि

इस विधि को व्याकरण शिक्षण की उत्तम विधि मानी जाती है, क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। अक्सर बालक भाषा को अनुकरण के आधार पर सीखते हैं। घर तथा पर्यावरण में जो भाषा बोली जाती है उसे बालक स्वाभाविक रूप से सीख लेते हैं। इसी प्रकार भाषा का व्याकरण भी अनुकरण के द्वारा सीख लेता है नियमों को पढ़ाने, समझाने की आवश्यकता नहीं होती है।

गुण - मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है।

४. **व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि** -

संरचनाओं का वर्णन ही व्याकरण है - इस बात पर बल दिया जाता है। भाषा प्रयोग और अभ्यास पर बल दिया जाता है और प्रयोग के आधार पर ही आवश्यक नियम भी बता दिए जाते हैं । प्रचुर अभ्यास ही इस विधि का आधार है ।

गुण - रटने की अपेक्षा समझने पर बल दिया जाता है।

- अभ्यास द्वारा सिखाया जाता है ।
- करके सीखने के सिद्धान्त का अनुसरण होता है।
- भाषा के प्रयोग के लिए व्याकरण शिक्षण आधार होता है। व्याकरण के शिक्षण में शिक्षक व्यावहारिक विधि का ही अनुसरण करता हैं।

अभ्यास -

नीचे की सारणी / तालिका को पढ़िए तथा संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

पद्धति	**उद्देश्य**	**महत्व**
निगमन	व्याकरण नियम पहले बताना है	कम समय में अधिक अभ्यास कर सकते हैं।
आगमन	उदाहरण द्वारा नियम बताना है।	छात्रों के सहयोग से सामान्यीकरण किया जाता है।
प्रत्यक्ष शिक्षण	व्याकरण को अनुकरण द्वारा सिखाना है।	मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है।
व्यावहारिक व्याकरण	संरचना ही व्याकरण है - इस बात पर बल दिया जाता है।	अभ्यास तथा करके सीखने पर आधारित है।

१. व्याकरण सिखाने की परंपरागत विधियाँ कौन कौन सी हैं?

२. व्यावहारिक व्याकरण विधि की क्या विशेषता है?

३. प्रस्तुत कक्षा व्याकरण शिक्षण में इनमें से कौनसी विधि उपयुक्त है और क्यों?

व्याकरण शिक्षण की आधुनिक विधियाँ -

छात्रों, व्याकरण शिक्षण की परंपरागत विधियों की तरह आधुनिक विधियाँ भी हैं। आप कुछ आधुनिक व्याकरण शिक्षण की विधियों के बारे में सोचिए और देखिए आपके विचार नीचे के विचारों से कितना मिलते हैं -

व्याकरण शिक्षण की कुछ आधुनिक विधियाँ हैं ----

१. **खेल विधि** - [संदर्भ खण्ड ३ इकाई ४ को देखें]

यह विधि प्रारंभिक कक्षा में बड़ी उपयोगी है।

इस विधि से व्याकरण को रोचक ढ़ंग से पढ़ाया जा सकता है। खेल-खेल में प्रत्यक्ष वस्तुओं का, उपकरणों का उपयोग करके लिंग, वचन, संज्ञा, विशेषण आदि का ज्ञान कराया जा सकता है।

छात्र कुछ सरल नियमों का आसानी से जानने में समर्थता दिखा सकते हैं।

शब्द पहेली द्वारा व्याकरण नियम सिखाया जाता है।

विशेषण सिखाने के लिए - शिक्षक छात्रों को एक वृत्ताकार रूप में खड़ा करके, एक गेंद लेकर, विशेषण (रंग के बारे में) का एक शब्द जैसे लाल, काला जोर से बताते हुए गेंद को छात्रा की तरफ फेंकता है। जो छात्र गेंद पकड़ता है उसे भी विशेषण का एक रंग बताना है, जैसे सफेद और वह गेंद वापस शिक्षक को फेंकता है। इस तरह हर बार शिक्षक गेंद फेंकते हुए रंग बताता है। बदले में छात्र भी एक रंग बताता है। जब कभी छात्र गलती करते हैं उन्हें वृत्त छोड़ना है। वृत्त का आखिरी छात्र ही जीत हासिल करता है और पुरस्कार प्राप्त करता है। इस तरह खेल द्वारा व्याकरण सिखाया जाता है।

चार्ट द्वारा उदाहरण देकर व्याकरणांश की परिभाषा या नियम निकलवाया जा सकता है।
चित्र पुस्तक द्वारा भी व्याकरणांश सिखाया जाता है।

समस्या समाधान विधि -

यह विधि एक सार्थक ज्ञान को प्रदर्शित करती है। जिसका प्रयोग विभिन्न प्रकार की समस्याओं के लिए किया जाता है, इसमें सृजनात्मक चिंतन निहित होता है और चिन्तन स्तर पर शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। समस्या छात्रों की आयु के अनुरूप हो, छात्रों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हो जिस पर छात्र मौलिक तथा सर्जनात्मक चिंतन कर सके।

इस विधि द्वारा शिक्षक व्याकरण के नियमों का ज्ञान प्राप्त करने छात्रों को प्रोत्साहित कर सकता है। व्याकरण संबंधी समस्या का चिंतन स्तर पर सुलझा जा सकता है। छात्र चिंतन करने स्वतंत्र रहते हैं । आवश्यक मार्गदर्शन शिक्षक करता है। अपने अवलोकन से उद्धेश्यों की प्रगति (व्याकरण के नियम, परिभाषा का अवगत छात्रों को हुआ / नहीं) का निर्णय लेता है।

पर्यवेक्षण विधि अध्ययन -

पाठ्यवस्तु के स्वामित्व के लिए पर्यवेक्षण विधि का विकास किया गया है। यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि छात्र व्यक्तिगत भिन्नता तथा स्वयं अध्ययन से अधिक सीखते हैं। छात्रों की आवश्यकता, स्तर को ध्यान में रखा जाता है। विविध प्रकार की सहायक सामग्री तथा पाठ्यवस्तु अध्ययन को महत्व दिया जाता है।

पर्यवेक्षण अध्ययन का मूल उद्धेश्य - अनेक संबंधों के आधार पर सामान्यीकरण कराना होता है जिससे छात्र पाठ्यवस्तु को गहनता से बोधगम्य कर सकें।

व्याकरण को इस विधि द्वारा सिखाया जा सकता है। किसी व्याकरण बिन्दु जैसे समास, संज्ञा, क्रिया आदि को अनेक उदाहरण के आधार पर सामान्यीकरण कराना जिससे छात्र अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें।

यहाँ छात्र अधिक क्रियाशील रहते हैं। शिक्षक, छात्रों की सहायता, निर्देशन देना, उनकी क्रियाओं का पर्यवेक्षण करता है कि वे अपनी क्रियायें समुचित ढंग से कर रहे हैं।

इस विधि का अंतिम उद्धेश्य पाठ्य बिन्दु का स्वामित्व कराना है। स्वामित्व का परीक्षण करके यदि छात्र उत्तीर्ण न हुए तो उन्हें शिक्षण अध्ययन का अवसर देकर शिक्षक इस बार अधिक सतर्क रहता है।

भाषा प्रयोगालय / भाषा प्रयोगशाला -

इस नयी विधि द्वारा छात्रों को व्याकरण का ज्ञान दिया जा सकता है। श्रव्य - दृश्य साधन द्वारा व्याकरण बिन्दु जैसे स्वर, व्यंजन ज्ञान, संज्ञा, अलंकार, छंद का बोध, शब्दों के उच्चारण का ज्ञान, वर्तनी ज्ञान, वाक्य रचना के नियम की जानकारी वैज्ञानिकता के साथ देना संभव है। यहाँ चार्ट, चित्र, व्याकरण ज्ञान के उपयुक्त वातावरण का इस्तेमाल किया जा सकता है।

उच्चारण सिखाने श्रव्यसाधन टेपरेकार्ड, रेकार्ड प्लेयर का प्रयोग करके बार बार सुनाकर सही ज्ञान देकर स्थायी बनाया जाता है।

छात्रों का मन पाठ में केन्द्रित होता है और व्याकरण दोषों का पता तथा सुधारण संभव है। भाषा प्रयोगालय में व्याकरणांश का श्रवण और अभिव्यक्ति एक ही समय में होता है। कक्षा शिक्षण से भिन्न अनुकूल वातावरण, अधिक अभ्यास और छात्र के क्रियाशील रहने के कारण इस विधि द्वारा व्याकरण शिक्षण सफल होता है। शिक्षक यहाँ सिखने से ज्यादा कैसे सीखें इसके बारे में बताता है। यहाँ शिक्षण न होकर मार्गदर्शन होता है। छात्र स्वयं सीखते हैं उन्हें अवलोकन करके विमर्श करना शिक्षक का कार्य है।

शिक्षण मशीन -

शिक्षण मशीनें तो आधुनिक शिक्षण की एक आवश्यकता समझी जा रही हैं।

इनसे शिक्षक, छात्र दोनों थोडे समय में अधिक से अधिक और सही सही ढंग से शुद्ध ज्ञान प्राप्त करके शीघ्र आगे बढ़ सकते हैं ।

आज के युग में शिक्षण मशीनों ने हमें मौखिक एवं लिखित ढंग से सीखने में सहायता की है।

इस प्रणाली से शिक्षा लेनेवाले स्वाभाविक रूप से ही व्यवहार अनुक्रिया करते पाये जाते हैं और अपनी व्यक्तिगत भिन्नता एवं रुचि के अनुसार शान्तिपूर्वक समायोजन के साथ परिवर्तनों के अनुकूल कार्य करते हैं - सीखते हैं| स्वाभाविक एवं रोचक ढंग से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

हिन्दी व्याकरण में स्वर, व्यंजन का ज्ञान, अक्षर लिपि का बोध, उच्चारण का बोध, शब्द एवं वाक्य रचना का ज्ञान, समास, संधि का बोध, वर्तनी का ज्ञान आदि मशीनों की

सहायता से आसानी से दिया जा सकता है। व्याकरणांश के नियम, सामान्यीकरण भी छात्रों को मशीन के द्वारा दिया जा सकता है।

हिन्दी शिक्षण में भी इन शिक्षण मशीनों का पर्याप्त योगदान पाया जा सकता है, कठिनाई केवल इस बात की है कि हमारे पास शिक्षण की मशीनें अधिक मात्रा में नहीं हैं।

5Es' (पाँच अध्ययन के सोपान)

इन दिनों स्कूलों में पढाने वाले हर विषय के अंतर्गत **5Es'** द्वारा अध्ययन / अध्यापन कार्य हो रहा है।

हिन्दी भाषा में भी गद्य, पद्य, व्याकरण आदि के शिक्षण में भी 5Es' का प्रयोग है।

5Es' (पाँच अध्ययन के सोपन) हैं -

१. कार्य में लगजाना (Engage)– पढ़ाये जानेवाले विषय अध्ययन में लगजाना / भागलेना है। विषय को ज्ञात से अज्ञात सूत्र द्वारा, चित्र, पी.पी.टी., वीडियों, घटना वर्णन, कहानी - कथन द्वारा छात्रों को, शिक्षक, सीखने में लगाना है।

२. ढूँढना (Explore) - विषय से संबंधित सुदूर क्रिया द्वारा चर्चा करके निर्णय पर आयेंगे छात्र । शिक्षक सिर्फ मार्गदर्शन करेंगे।

३. विवरण देना (Explain) - जो क्रियाएँ समूह में की गई हो उसे छात्रों द्वारा प्रस्तुत कराना है। शिक्षक, छात्रों से प्रश्नोत्तर कर सकते हैं।

४. विस्तार से बताना (Expand) - जो पाठ से संबंधित हो कर भी प्रस्तुत में नहीं है ऐसी अतिरिक्त जानकारी छात्र और शिक्षक दोनों अपनी अपनी तरफ से प्राप्त करते हैं।

५. मूल्यांकन (Evaluation) - उपरोक्त सोपानों पर आधारित मूल्यांकन, प्रश्न और क्रियाओं द्वारा करना है।

इन सोपानों से युक्त शिक्षण में छात्र सक्रिय रहते हैं, क्रिया द्वारा सीखते हैं। प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है। शिक्षक केवल मार्गदर्शन करता है।

परीक्षा -

इन कथनों में सही / गलत को पहचानिए -

१. समस्या विधि में समस्या का चिंतन स्तर पर सुलझाया जाता है।
२. पर्यवेक्षण विधि का अंतिंम उद्देश्य है कि छात्रों को पाठ्य बिन्दु का स्वामित्व पाने में असफल हुए तो उन्हें अनुतीर्ण कर देना चाहिए।
३. भाषा प्रयोगालय द्वारा छात्रों का मन व्याकरण पाठ में केंद्रित तो होता है पर उनके दोष का पता तथा सुधारण संभव नहीं है।
४. शिक्षण मशीन द्वारा छात्रों को व्याकरणांश के नियम, सामान्यीकरण भी दिया जा सकता है।
५. इन दिनों विद्यालयों में हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम में पाँच 5Es' का प्रयोग हो रहा है।

(उत्तर - १. सही, २. सही, ३. गलत, ४. गलत, ५. सही)

कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन -

आइए और एक आधुनिक विधि को जानेंगे -

यह एक और आधुनिक विधि है जिसके द्वारा व्याकरण सिखाया जाता है। इस विधि का आधार शिक्षण मशीन है। तकनीक आधारित है, छात्रों को स्वयं सीखने पर बल देती है। प्रश्नोत्तर द्वारा व्याकरण शिक्षण दे सकते हैं।

कम्प्यूटर के प्रत्येक फ्रेम में व्याकरण के अंश (जो भी सिखाना हो जैसे- उच्चारण, वर्तनी, स्वराघात,आदि) स्पष्ट, तर्क संगत सार्थक होने के कारण छात्र की बौद्धिक अनुक्रिया प्राप्त करने की दिशा में क्रियाशील होता है।

छात्र को तुरंत पता चलता है कि उसका उत्तर सही / गलत है। अगर छात्र का उत्तर गलत है तो उसे संशोधन करने का अवसर मिल जाता है।

छात्र और व्याकरण बिन्दु के बीच अंतःक्रिया होती है। छात्र अपनी योग्यता के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त करते हैं। यहाँ सतत मूल्यांकन होता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

अ. रिक्त स्थान को सूक्त शब्द से भरिए -

१. निगमन विधि को _____ विधि भी कहते हैं।
२. व्याकरण के नियमों का अधिक बोधगम्य _____ विधि से कराया जाता है।
३. आगमन विधि के शिक्षण सूत्र _____ हैं।
४. प्रचुर अभ्यास पर _____ विधि आधारित है।

आ. उत्तर दीजिए -

१. पर्यवेक्षण विधि का अंतिम उद्धेश्य क्या है?
२. कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन का आधार क्या है?
३. समस्या समाधान विधि, कौन सा ज्ञान प्रदर्शित करती है?
४. 5Es' के सोपान कौन कौन से है?
५. कंप्यूटर निर्देशित अनुदेशन में किनके बीच अनुक्रिया होती है?

३.६.४. सारांश

आइए, ' व्याकरण शिक्षण ' इकाई पर एक झलक डालें

- व्याकरण, शब्द प्रयोग के नियमों का प्रयोगिक रूप से बतानेवाला शास्त्र है। भाषा की मूल इकाइयाँ जैसे - शब्द, वाक्य व्याकरण का विवेचन व्याकरण करता है।

व्याकरण शिक्षा, भाषा शिक्षण का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण भाषा को संपन्न, समृद्ध बनाता है।

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य हैं -

छात्रों में

- भाषा प्रभुत्व का विकास करना । मानसिक अनुशासन स्थापित करना । ध्वनि एवं उच्चारण का ज्ञान कराना । छंद, अलंकार का ज्ञान कराना ।
- व्याकरण शिक्षण की परंपरागत विधियाँ हैं - निगमन विधि , आगमन विधि, सूत्र विधि, पाठ्यपुस्तक विधि, प्रयोग विधि, सहसंबंध विधि, प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि, व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि।

व्याकरण शिक्षण की आधुनिक विधियाँ हैं - खेल विधि, समस्या समाधान विधि पर्यवेक्षण विधि, भाषा प्रयोगशाला, शिक्षण मशीन, 5Es' तथा कंप्युटर निर्देशित अनुदेशन ।

३.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

१.१. व्याकरण

२. शब्दानुशासन

३. प्रभुत्व, ४. नियम, ५. नवीन

२अ. १. नियम उदाहरण

२. सहसंबंध

३. ज्ञात से अज्ञात की ओर
आसान से कठिन की ओर

४. व्यावहारिक व्याकरण विधि

२आ. १. पाठ्य बिन्दु का स्वामित्व

२. शिक्षण मशीनें

३. सार्थक, ४. लगजाना, ढूँढना, विवरण देना, विस्तार से बताना, मूल्यांकन।

५. छात्र और व्याकरण बिन्दु

३.६.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

उत्तर दीजिए -

१. व्याकरण शिक्षण के महत्व पर प्रकाश डालिए।

२. व्याकरण शिक्षण की परंपरागत विधियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

३.६.७. संदर्भ पुस्तकें

हिन्दी शिक्षण

डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर. लाल बुक डिपो

Success CDS Educater Pub (२०१३)

Website : grammergold https:\\busyteacher
grammerpractice https:\\www.divap

हिन्दी शिक्षण:

डा. उमा मंगल (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

कन्नड विषयाधारित बोधना पद्धति:

एस.के. होलेयन्नवर (२००३)

विद्या निधि प्रकाशन, गदग

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई १ : हिन्दी अध्ययन सामग्री

इकाई की संरचना

४.१.१. सीखने के उद्देश्य
४.१.२. प्रस्तावना
४.१.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
४.१.३.१. हिन्दी अध्ययन उपकरणों का महत्व
आपकी प्रगति की जाँच – ०१
४.१.३.१. हिन्दी अध्ययन सामग्री के विविध रूप और उनके उपयोग
आपकी प्रगति की जाँच – ०२
४.१.३.३. हिन्दी अध्ययन के यांत्रिक एवं अयांत्रिक उपकरण
आपकी प्रगति की जाँच – ०३
४.१.४. सारांश
४.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
४.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
४.१.७. संदर्भ पुस्तकें

४.१.१. सीखने के उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र इन अंशों के योग्य होंगे –

- हिन्दी अध्ययन सामग्री के महत्व को स्पष्ट करेंगे।
- हिन्दी अध्ययन के उपकरणों के विविध रूप और उनके उपयोग का वर्णन करेंगे ।
- हिन्दी अध्ययन के यांत्रिक एवं अयांत्रिक उपकरणों की जानकारी का विश्दीकरण करेंगे ।

४.१.२. प्रस्तावना -

प्रिय छात्रों,

सिखाने का मतलब है सीखने में मदद करना और छात्रों के ज्ञान का वर्धन करना है। सीखना – सिखाना शिक्षा प्रक्रिया के दो पहलू हैं। सर्वतोमुख विकास के आवश्यक विषयों को बच्चों के सामने रखना शिक्षक का कार्य है इसको अपनाना बच्चों का भी काम है। इस कोशिश में शिक्षक और छात्र के बीच की क्रियाओं में शिक्षण संसाधन / शिक्षण उपकरणों से अधिक सहायता मिलती है।

छात्रों, आप शिक्षण उपकरणों के बारे में जानते हैं । शिक्षण उपकरण से संबंधित आपके विचारों को नीचे
के विचारों से मिलाकर देखिए कि आप कितना जानते हैं -

शिक्षण और सीखने को सार्थक बनाने में शिक्षण उपकरण महत्वपूर्ण पात्र निभाते हैं। अध्यापन, अधिगम और शिक्षण उपकरण का संयोग होता है। स्वयं जानने, दूसरों को समझाने के कार्यों को ये उपकरण शक्ति देते हैं और प्रेरित करते हैं। शिक्षण और अधिगम एक दूसरे में समा जाने के लिए और सौ प्रतिशत सफल होने में शिक्षण उपकरण अपना ही स्थान रखते हैं।

सहायक सामग्री (उपकरण) के बिना सिखाने की कक्षा, खिड़की रहित कक्षा (कमरा) के समान होती है।

४.१.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ –

४.१.३.१. हिन्दी अध्ययन उपकरणों का महत्व –

शिक्षक और छात्रों के सिखाने – सीखने की क्रियाओं में शिक्षण उपकरण प्रभावात्मक साधन हैं।

अर्थ –

शिक्षक को अपने पाठ अध्यापन को प्रभावात्मक बनाने कई चीजों / सामग्रियों का इस्तेमाल करना पड़ता है । इन चीज़ों को शिक्षण उपकरण / संसाधन / सामग्री कहते हैं। इनसे सीखना – सिखाने की दोनों क्रियाएँ सरल और सफल बनती हैं।

छात्रों, आप अध्ययन उपकरण के बारे में जानकारी रखते हैं। ये उपकरण सीखना – सिखाने की क्रिया को प्रभावित करते हैं। बताइए इन उपकरणों के कुछ महत्व –

उत्तर – इन उपकरणों से शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

- **इन उपकरणों से ज्ञान की पूर्ति होती है। आइए इन उपकरणों के महत्व के बारे में और जानकारी प्राप्त करेंगे** –

हिन्दी अध्ययन उपकरण का महत्व -

उपकरण के महत्व निम्न प्रकार हैं –

- इन उपकरणों का उचित उपयोग से छात्र पाठ में सक्रिय सहयोग लेते हैं।
- इन उपकरणों से सीखना स्थायी होता है।
- सार्थक शब्द भंडार में वृद्धि होती है।
- अनुभव की सीमा का विस्तार होता है।
- भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के दर्शन हो जाते हैं और छात्र अनुकरण करने को तप्पर हो जाते हैं।
- ये उपकरण प्रत्यक्ष अनुभव देने में, और कक्षानुशासन में सहायक हैं ।
- विषयवस्तु को बोधगम्य बनाने में सहायक हैं।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों को विकसित करने में सहायक हैं।
- इन उपकरणों से छात्रों के नेत्र और कर्णेन्द्रियों को प्रभावित किया जाता है।
- उपकरण, अध्यापक की इस बात में सहायता करते हैं कि वह अपना कार्य अधिक कुशलता से कर सके।
- पाठ्य पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान, इन उपकरणों की सहायता से पूर्ति की जा सकती है।

- पाठ के विकास और प्रश्नोत्तर में इन उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।
- सीखने को अर्थ पूर्ण एवं सजीव रखने में सहायक हैं।
- शिक्षण के उद्देश्य और लक्ष्य को सार्थक बनाने में ये उपकरण सहायक हैं।
- छात्रों के बिखरे ज्ञान को एकत्रित करके, अखंडत्व लाने में ये उपकरण सहायक हैं।

आपकी प्रगति की जाँच – ०१

इन वाक्यो में सही / गलत को पहचानिए -

१. शिक्षा प्रक्रिया के दो पहलू, सीखना-सिखाना है।
२. सिखाने का मतलब है सीखने में मदद नहीं करना है।
३. शिक्षक को अपने पाठ पढ़ाने में शिक्षण उपकरण सहायक हैं।
४. शिक्षण उपकरण से सीखना स्थायी नहीं होता है।
५. अध्ययन उपकरण छात्रों के बिखरे ज्ञान को एकत्रित करते हैं।

४.१.३.२. हिन्दी अध्ययन उपकरण के विविध रूप और उनके उपयोग –

हिन्दी भाषा की शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक अध्ययन उपकरण / सामग्री / साधन का प्रयोग किया जाता है। शिक्षा के विशिष्ट एवं व्यापक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इन उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

छात्रों, आप अध्ययन उपकरणों को जानते हैं। आपकी जानकारी के आधार पर कुछ उपकरणों की सूची बनाइए।

छात्र का उत्तर --- चित्र, चार्ट, मॉडल आदि।

आइए इन उपकरणों के साथ अन्य उपकरणों और उनके उपयोग की जानकारी प्राप्त करेंगे।

१. श्याम पट –

यह प्रत्येक कक्षा के लिए अनिवार्य है। इसे अध्यापक का मित्र कहा जाता है।
श्यामपट के प्रयोग से पाठ रोचक बनता है। अध्यापन व्यवस्थित और आकर्षक बन सकता है।
श्याम पट पर कठिन शब्दार्थ, सारांश, निबंध की रूपरेखा लिखी जाती है।

२. चार्ट –

जिसमें तथ्यों और चित्रों का समन्वय होता है। चार्ट, तार्किक संगठन और क्रमिक विकास की योजना का बोध गम्य स्वरूप है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ाते समय कई प्रकार के चार्ट जैसे – समय चार्ट, तालिका चार्ट, वृक्ष चार्ट आदि का प्रयोग किया जाता है।

३. वास्तविक पदार्थ –

वास्तविक पदार्थो के संपर्क में छात्रों को लाया जा सकता है। इनके प्रयोग से पाठ अच्छी तरह समझ में आ जाता है।

४. पोस्टर –

यह् एक प्रकार से विज्ञापन चित्र है। पाठ पढ़ाते समय पूर्व ज्ञान पर आधारित विषय सामग्री की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए पास्टर का प्रयोग किया जा सकता है।

५. पाठ्यपुस्तक –

शिक्षा के क्षेत्र में यह सबसे पुराना साधन है। पाठ्य पुस्तकें एक विशेष रूप से कक्षा के लिए बनी होती है। इसमें वे सभी बातें होती हैं, जो उस कक्षा विशेष के लिए आवश्यक है।

६. मान चित्र –

इसका सर्वाधिक प्रयोग इतिहास और भूगोल की कक्षाओं में होता है परन्तु भाषा के पाठों में कुछ ऎतिहासिक / भौगोलिक तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए मान चित्र का प्रयोग किया जाता है।

७. स्लाइड्स (स्थिर चित्र) –

प्रारंभिक कक्षाओं में अक्षर ज्ञान, शब्द और उसका अर्थ बोध होने वाले मूक चित्रों को संग्रहित रोल बनाया जाता है। उस रोल को छात्रों के सामने धीरे धीरे दिखाया जाता है।

८. टेप रेकार्डर (ध्वनि लेख)

यहाँ ज्ञानार्जन स्थायी रूप में कर सकते हैं। इसकी विशेषता है कि जैसे जैसे भाषण अथवा वार्तालाप चल रहा होता है वैसे वैसे उनकी ध्वनि टेप में अंकित होती जाती है। बाद में जब चाहे, वह भाषण अथवा वार्तालाप सुनी जा सकती है। इसकी सहायता से उच्चारण, वाचन, अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्रदान किया जाता है।

९. फ्लैश कार्ड –

इसका उपयोग करके शिक्षा में रुचि उत्पन्न की जाती है। छात्र यहाँ योग्य शब्द, चित्रों को जोड़ने का काम भी करते हैं। सरल वाक्यों के फ्लैश कार्ड बनाकर छात्रों से उनका वाचन किया जाता है।

१०. नाटक / अभिनय –

विद्यालय में विशेष रूप से कभी कभी नाटकों का आयोजन होता है। अभिनय को देखकर एवं पात्रों के मुख से स्पष्ट एवं उचित आरोहावरोह युक्त वाणी को सुनकर छात्र भाषा का उचित प्रयोग सीख सकते हैं। नाटक के माध्यम से छात्रों की स्वाभाविक गति से बोलने की आदत पड़ जाती है। वे शब्दों एवं वाक्यों को सजीव ढंग से बोलना सीख जाते हैं ।

११. भाषा प्रयोग शाला –

एक विशेष कक्ष होता जो विविध दृश्य श्रव्य उपकरणों से युक्त होता है। अध्येता भाषा अध्ययन के लिए विविध प्रकार के अभ्यास करते हुए भाषा सीखते हैं।

छात्र सामान्य कक्ष की अपेक्षा यहाँ अधिक सक्रिय और् रुचि के साथ भाग लेते हैं। छात्र के लिए भाषा सीखने का अधिक अवसर मिलता है। प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है। भाषा कौशल के विभिन्न पक्षों का अभ्यास कराया जाता है।

१२. भाषा खेल –

इसका उपयोग करने से छात्र के शब्द भंडार में वृद्धि होता है। छात्र खेल खेल में सीखते हैं। छात्र सुगमता से भाग लेते हैं और अपने में भाषा का विकास कर लेते हैं।

१३. शिक्षण मशीन –

विज्ञान और तकनीकी विकास ने शिक्षण के क्षेत्र में एक नवीन उपकरण को विकासित किया जिसे, शिक्षण मशीन के नाम से जाना जाता है।

यह मशीन सीखनेवाले के सामने कुछ प्रश्न प्रस्तुत करती हैं। ठीक उत्तर के लिए छात्र को बटन दबाना होता है। यदि उत्तर ठीक होता है तो दूसरे प्रश्न से संबंधित विषय सामग्री छात्रों को प्राप्त होती है और यदि उत्तर गलत है तो उसी प्रश्न की विषय वस्तु पुनः छात्रों को स्वयं सीखने में सहायता करती है । इसके प्रयोग से हिन्दी शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर और आकर्षक बनाया जा सकता है।

१४. कंप्यूटर –

कंप्यूटर शिक्षण क्षेत्र में अनुदेशन, शोधकार्य, परीक्षा प्रणाली में अधिक उपयोगी है। अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में कंप्यूटर सहायक है। कंप्यूटर द्वारा चित्र, चार्ट, ग्राफ की सहायता से हिन्दी शिक्षण से संबंधित विविध विषयों का भली भाँति अनुदेशन किया जा सकता है। हिन्दी भाषा के रचना कार्य जैसे निबंध, पत्र लेखन में कंप्यूटर द्वारा प्रदत्त सामग्री महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अभ्यास पर, अनुकरण, खेल द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है।

आपकी प्रगति की जाँच – ०२

रिक्त स्थान को सही शब्द से भरिए –

१. पोस्टर एक प्रकार से _____ चित्र है।
२. शिक्षा के क्षेत्र में सबसे पुराना उपकरण _____ है।
३. भाषा खेल से छात्रों के _____में वृद्धि होती है।
४. छात्रों को स्वयं सीखने में _____मशीन सहायक है।
५. शिक्षक का मित्र _____ को कहा जाता है।

४.१.३.३. हिन्दी अध्ययन के यांत्रिक एवं अयांत्रिक उपकरण

छात्रों, आइए यांत्रिक, अयांत्रिक उपकरणों की चर्चा करेंगे -

नई तकनीकी के आधार पर कामकरने वाले उपकरण ही यांत्रिक उपकरण हैं जैसे – रेड़ियो, दूरदर्शन, शिक्षण मशीन आदि।

सरलता से तकनीकी के बिना आसानी से बनाकर प्रयोग कर सकनेवाले उपकरण ही अयांत्रिक उपकरण हैं।

जैसे, श्याम पट, चित्र, चार्ट आदि।

यांत्रिक उपकरण –

छात्रों, आप यांत्रिक उपकरणों के बारे में जानते हैं। कुछ यांत्रिक उपकरणों की सूची बनाकर नीचे के अंशों से मिलाकर देखिए कि आप कहाँ तक सफल हैं -

यांत्रिक उपकरण निम्न प्रकार के हैं –

१. रेड़ियो (आकाश्वाणी) –

आधुनिक जीवन में रेड़ियो का विकास इतना अधिक हो गया है कि अब हमारे लिए रेड़ियो आवश्यकता की वस्तु बन गया है।

रेड़ियो का आविष्कार विज्ञानी मारकोनी ने किया था। इससे छात्रों में नई बात सीखने की उत्सुकता उत्पन्न होती है। उससे छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है। रेड़ियो पाठ से छात्र और शिक्षक लाभ उठा सकते हैं।

२. दूरदर्शन (टेलीविज़न)–

रेड़ियो का विकसित रूप दूरदर्शन है जिसमें ध्वनि के साथ साथ चित्र भी आते हैं| टेलीविज़न केन्द्र में शिक्षक भाषा की शिक्षा देकर दूर दूर तक बैठे श्रोता दर्शकों को भाषा सिखा सकता है। कान और आँख दोनों इन्द्रियों को प्रशिक्षित करने के कारण टेलीविज़न अधिक प्रभावशाली है।

३. टेप रेकार्डर –

इसको भाषा शिक्षण में अभिरुचि बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसकी सहायता से शिक्षण के दोष और भ्रम को दूर किया जाता है। उच्चारण, वाचन आदि मौखिक परीक्षा के लिए यह पर्याप्त उपयोगी है।

४. चलचित्र –

आज विश्वभर में करोडों व्यक्तियों पर चलचित्रों का प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए आज भिन्न भिन्न राष्ट्रों में चलचित्रों की सहायता ली जा रही है ये चलचित्र छविगृह में दिखाये जानेवाले चलचित्र से भिन्न होते हैं। यह चलचित्र १६ मिली मीटर की फिल्म पर बनाये जाते हैं और १६ एम.एम. के प्रक्षेपक के द्वारा प्रदर्शित किये जाते हैं। ये चलचित्र विशेषरूप से शैक्षिक स्वरूप के होते हैं और कक्षा में दिखाये जाने के लिए ही बनाये जाते हैं। इन चलचित्रों का संबंध पाठ्यक्रम के साथ होना चाहिए । छात्रों के सामने कुछ प्रश्न रखने चाहिए, जिसका उत्तर उन्हें चलचित्र द्वारा मिले।

शैक्षिक चलचित्र छात्रों के इन्द्रियों को प्रभावित करते हैं। साहित्य में वर्णित विभिन्न प्रकार के काल्पनिक दृश्यों को वर्णन द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

५. चित्र विस्तारक –

यह यंत्र पाठ को अधिक स्पष्ट तथा रोचक बनाता है। छोटे चित्र, मानचित्र, पोस्टर को विस्तृत रूप देता है। भाषा तथा साहित्य शिक्षण के विभिन्न पक्ष (वर्ण-लेखन, वर्तनी) के लिए इस यंत्र का सदुपयोग किया जाता है।

६. चित्र दर्शक –

इसके द्वारा चित्रों की स्लाइडों अथवा फिल्म पट्टियों का एक क्रम से दिखाया जा सकता है। विभिन्न विषयों से संबंध रखनेवाले चित्रों को आवश्यकतानुसार लगातार या रुक रुक कर हर प्रकार से दिखाया जा सकता है।

७. मूक चित्र –

मूक चित्र, चलचित्र का पहला रूप है। इसमें क्रियाऍं तो पूरी दिखायी जाती है परन्तु ध्वनि नहीं होतीं। मूकचित्र का शिक्षण में विशेष महत्व है।

८. शीर्षोपरि प्रक्षेपक –

इसके माध्यम से शिक्षक कक्षा में पाठ के आवश्यक विभिन्न पक्षों को सेल्यूलाइड की शीट पर अंकित करते हुए पर्दे पर बड़े आकार में प्रस्तुत करता है। वाचन अनुकरण, वर्ण लेखन, वर्तनी आदि के शिक्षण में इसका सदुपयोग किया जा सकता है।

९. वीडियो –

इसकी सहायता से चलचित्र के मन चाहे कैसेट को टेलीविज़न के पर्दे पर दिखाया जा सकता है। यह टेलीविज़न, चलचित्र का संयुक्त रूप है।

१०. शिक्षण मशीन –

यह मशीन छात्रों को स्वयं सीखने में सहायता करती है। कठिन विषय सामग्री को भी बहुत सरल और रुचिकर बनाकर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

११. कंप्यूटर –

विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक शैक्षिक कार्यक्रम कंप्यूटर पर उपलब्ध होते हैं | छात्र उनको अपनी व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार चयन कर सकते हैं। हिन्दी भाषा संबंधी सभी कौशलों के अर्जन, आवश्यक ज्ञान प्राप्ति की दिशा में स्वअनुदेशन तकनीक को अपनाकर आवश्यक प्रगति कर सकते हैं।

१२. ज़ेराक्स मशीन –

इससे किसी मुद्रित सामग्री का प्रतिरूप निकाला जा सकता है । इससे शैक्षिक रेकार्ड को मुद्रित किया जाता है। पुस्तक, समाचार पत्र के अंश, चित्रों का ज़ेराक्स करके इस्तेमाल किया जाता है। शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में छात्रों के मूल्यांकन करने आवश्यक अभ्यास कॉपी को तैयार करने में सहायक है।

१३. कैमरा –

कैमरा छाया चित्र, रेखाचित्र की भाँति है। अध्येता को प्रभावित करते हैं। कम समय में अधिक विषय के शिक्षण के लिए सहायक है। आवश्यक दृश्यों, गतिविधियों तथा प्रसंगों का फॊटो लेने के लिए कैमेरा बहुत उपयोगी है | शिक्षक आवश्यक फोटो को स्वयं लेकर कक्षा के अध्यापन में उपयोग कर सकता है |

१४. स्लाइड प्रोजेक्टर –

इसे जादू की लालेटन भी कहा जाता है| भाषा शिक्षक को आवश्यकतानुसार उच्चारण स्थान, वर्णलेखन, वर्तनी आदि के स्लाइडों का निर्माण करके और उनका सदुपयोग करने के लिए स्लाइड प्रोजेक्टर का उपयोग किया जाना चाहिए।

१५. लिंखाफोन / ग्रामोफोन / सीतावाद्य –

ये उपकरण रेकार्डों की सहायता से छात्रों का मनोरंजन तथा शिक्षा भी देते हैं। इनकी सहायता से कविता, संवाद की शिक्षा रोचक ढंग से दी जाती है।

परीक्षा ----

नीचे के कथनों के बारे में अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए –

१. रेड़ियो से जनता में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है।
२. मूक चित्र और चलचित्र में कोई संबंध नहीं है।
३. शिक्षण मशीन छात्र को स्वयं सीखने में सहायता करती है।
४. सीतावाद्य से छात्रों को शिक्षा और मनोरंजन दिया जाता है।

(उत्तर :-- सही, गलत, सही, सही)

अयांत्रिक उपकरण -

छात्र, आइए अयांत्रिक उपकरणों का विचार करेंगे -

अयांत्रिक उपकरण निम्न प्रकार के हैं –

१. श्याम पट -

इसके द्वारा शब्दों, वाक्यों को स्पष्ट किया जाता है। श्याम पट नेत्रेन्द्रियों को प्रभावित करता है। छात्रों का ध्यान केन्द्रित करता है।

२. चित्र –

पाठ को रोचक बनाने के लिए समय समय पर चित्रों का प्रदर्शन छात्रों में अध्ययन के प्रति उनका अवधान बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है।

३. रेखा चित्र –

सामान्यतः कक्षा में ही शिक्षक द्वारा श्यामपट पर खींचे जाते हैं। रेखाचित्र में किसी घटना, प्राणी, वस्तु आदि का केवल वही अंश प्रस्तुत किया जाता है जो पाठ्यवस्तु से संबंधित होता है। छात्रों पर रेखाचित्र का प्रभाव पड़ता है।

४. चार्ट –

इसमें तार्किक रीति से क्रमबद्धता होती है। कवि व लेखकों को पढ़ाते समय चित्रयुक्त चार्ट का प्रयोग किया जा सकता है।

५. पोस्टर –

यह शीघ्र संदेश देता है और कार्य की दिशा निश्चित कर देता है। शिक्षा से संबंधित पोस्टर प्रभावत्मक होते हैं।

६. वास्तविक पदार्थ -

इनके प्रयोग से छात्र सूक्ष्म चिंतन की ओर अग्रसर होता है।

७. पाठ्य पुस्तक –

यह एक विषय विशेष के लिए बनी होती है। शिक्षक, कक्षा को इसके अनुसार तैयार करता है। इससे क्या पढ़ाना, कितना पढ़ाने की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

८. मानचित्र –

यह भाषा के ऐतिहासिक और भौगोलिक पाठ पढ़ाने में सहायक है। नदी, पर्वत, पौधों की जानकारी देने के लिए सहायक है।

९. ग्राफ –

इसके द्वारा शिक्षक को विभिन्न विषयों का प्रयोग करते हुए अनेक प्रश्नों का हल किया जा सकता है। यह भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान, भाषा से संबंधित इतिहास पाठ में अधिक उपयोगी है।

नाटक (अभिनय) –

नाटक के रूप में विषय को सिखाना है। अभिनय विषयों में रुचि लेने का अवसर प्रदान करता है। छात्रों की आँख, कान इन्द्रियों को संवेदन मिलता है। छात्र क्रियाओं द्वारा वाचन, लेखन कौशल प्राप्त करते हैं और स्वानुभव से सीखते हैं।

प्रतिमूर्ति / मॉडल -

यह किसी बड़ी वस्तु का छोटा नमूना हो सकता है। इसके प्रयोग में दर्शनीयता, स्पष्टता, आकर्षण का ध्यान रखा जाता है। जिन वस्तुओं को कक्षा में लाना सरल नहीं तो उनके विषय में पाठ पढ़ाना है तो मॉडल का प्रयोग हो सकता है।

फ्लैश कार्ड –

कक्षा में इन कार्डो का उपयोग करके शिक्षा में रुचि उत्पन्न की जाती है। सरल वाक्यों के फ्लैश कार्ड बनाए जाते हैं और छात्रों से उनका वाचन कराया जाता है।

आपकी प्रगति की जाँच – ०३

अ. प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. रेड़ियों का अत्यंत विकसित रूप कौन- सा है?
२. कक्षा में दिखाये जानेवाले चलचित्र किस फिल्म पर बनाये जाते हैं?
३. रेड़ियों का आविष्कार किसने किया था?
४. चल चित्र का पहला रूप कौन- सा है?
५. टेलीविज़न, चलचित्र का संयुक्त रूप कौन- सा है?

आ. नीचे के उपकरणों को यांत्रिक, अयांत्रिक उपकरणों में विभाजित कीजिए –

चित्र विस्तारक, टेपरेकार्डर, मानचित्र, पोस्टर, चलचित्र, पाठ्यपुस्तक, दूरदर्शन, रेड़ियो, कैमरा, फ्लैश कार्ड।

४.१.४. सारांश –

हिन्दी अध्ययन उपकरणों के बारे में काफी जान चुके हैं। आइए और एक झलक डालें -

शिक्षण, अधिगम और शिक्षण उपकरण का संयोग ही शिक्षण है। शिक्षक को अपने अध्यापन में सहायता करनेवाले उपकरण को शिक्षण उपकरण या अध्ययन सामग्री कहते हैं।

हिन्दी शिक्षण में इन उपकरणों का काफी महत्व है जैसे, छात्रों को पाठ में सक्रिय बनाना । सीखने को स्थायी बनाना । ये उपकरण विषय वस्तु को बोधगम्य बनाने में सहायक हैं।

हिन्दी अध्ययन सामग्री के विविध रूप हैं – जैसे – श्यामपट, चार्ट, पोस्टर, मानचित्र, स्लाइड्स, अभिनय, भाषा प्रयोगशाला आदि।

हिन्दी अध्ययन सामग्री से संबंधित यांत्रिक उपकरण जैसे – रेड़ियों, दूरदर्शन, चित्रविस्तारक, चलचित्र, कैमरा आदि।

अयांत्रिक उपकरण हैं – श्यामपट, रेखाचित्र, मानचित्र, चार्ट, पोस्टर, ग्राफ, पाठ्यपुस्तक, वास्तविक पदार्थ आदि।

५.१.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर –

१.१. सही, २. गलत, ३. सही, ४. गलत, ५.सही

२.१. विज्ञापन २. पाठ्यपुस्तक ३. शब्द भंडार ४.शिक्षण ५.श्याम पट

३अ.१. दूरदर्शन २. १६ एम.एम. ३. विज्ञानी मारकोनी ४. मूक चित्र ५.वीड़ियो

आ. यांत्रिक उपकरण - चित्र विस्तारक, टेपरेकार्डर, चलचित्र, , दूरदर्शन, रेड़ियो, कैमरा

अयांत्रिक उपकरण - मानचित्र, पोस्टर, पाठ्यपुस्तक, फ्लैश कार्ड

४.१.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास –

प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

१. हिन्दी शिक्षण उपकरणों के विविध रूप का वर्णन कीजिए और उनके उपयोग का उल्लेख कीजिए।
२. हिन्दी शिक्षण के यांत्रिक एवं अयांत्रिक उपकरण के बारे में आप क्या जानते हैं? संक्षेप में लिखिए।

४.१.७. संदर्भ पुस्तकें –

१. हिन्दी शिक्षण-

डा. उमा मंगल (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

२. भाषा१,२ की शिक्षण विधियाँ

एवं पाठ नियोजन

डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा (२००९)

श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

३. कन्नड विषयाधारित बोधना पद्धति –

एस.के. होलेयन्नवर (२००३)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

४. **नूतन हिन्दी शिक्षण-**

के.आय. सत्तिगेरी (१९९७)

प्रकाशक - श्रीमती विजया के सत्तिगेरी, बेलगाँव

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई २ : दृश्य और श्रवण सामग्री

इकाई की संरचना

४.२.१. सीखने के उद्देश्य
४.२.२. प्रस्तावना
४.२.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
४.२.३.१. दृश्य और श्रवण सामग्री - दृश्य शिक्षण उपकरण-चित्र
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
४.२.३.२. श्रव्य शिक्षण उपकरण रेडियो तथा दृश्य - श्रव्य शिक्षण उपकरण
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
४.२.४. सारांश
४.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
४.२.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
४.२.७. संदर्भ पुस्तकें

४.२.१. <u>सीखने के उद्देश्य</u>

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- दृश्य उपकरण का वर्णन करेंगे।
- चित्र उपकरण के महत्व को स्पष्ट करेंगे।
- श्रव्य शिक्षण उपकरण के बारे में जानकारी की चर्चा करेंगे।
- दृश्य - श्रव्य शिक्षण उपकरण की जानकारी का विश्दीकरण करेंगे।
- रेड़ियो उपकरण के महत्व को स्पष्ट करेंगे ।

४.२.२. प्रस्तावना -

छात्रों, भाषा की शिक्षा को प्रभाव शाली बनाने के लिए अनेक सहायक साधनों (उपकरणों) का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक इन उपकरणों की सहायता से बालक की नेत्र और कर्णेन्द्रियों को प्रभावित करता है। ये सहायक उपकरणें शिक्षक की इस बात में सहायता करते हैं कि वह अपना कार्य अधिक कुशलता से कर सके। इन उपकरणों के प्रयोग से अधिगम की परिस्थितियों को अधिक प्रभावशाली रूप में उत्पन्न किया जा सकता है और उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति की जा सकती है।

४.२.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ -

४.२.३.१. दृश्य और श्रव्य सामग्री -

छात्रों, दृष्य शिक्षण उपकरण के बारे मे विचार करेंगे

दृश्य शिक्षण उपकरण -

दृश्य-श्रव्य सामग्री का तात्पर्य शिक्षण में चित्र उन साधनों से है, जिनके प्रयोग से छात्रों की श्रव्य तथा दृश्य की ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं और वे पाठ के सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा कठिन से कठिन भावों को सरलतापूर्वक समझ जाते हैं।

दृश्य - श्रव्य सामग्री न केवल शिक्षण को ही नहीं अपितु शिक्षण की प्रविधियों अथवा सूक्तियों को भी प्रभावशाली बनाने में रामबाण का कार्य करती है।

ई.सी.डेन्ट के अनुसार - " श्रव्य - दृश्य सामग्री का अर्थ उन समस्त सामग्री से है जो कक्षा में अथवा शिक्षण परिस्थितियों में लिखित अथवा बोली हुई पाठ्य सामग्री को समझने में सहायता देती है " ।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण -

इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर दृश्य-श्रव्य सामग्री को मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है -

- श्रव्य सामग्री / उपकरण
- दृश्य सामग्री / उपकरण
- श्रव्य - दृश्य सामग्री / उपकरण

दृश्य शिक्षण उपकरण -

ये शैक्षिक सामग्री हैं जिनके प्रयोग के समय अध्येता / छात्र मुख्यतः आंखों के माध्यम से अपनी चिंतन प्रक्रिया को और अधिक विकसित करने में सहायता प्राप्त करता है। ये सामग्री / उपकरण मानसिक बिम्ब की प्रक्रिया में प्रत्यक्षीकरण के वातावरण की सृष्टि करती है।

अभ्यास -

छात्रों आप समूह में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करके कक्षा में प्रयोग करनेवाले दृश्य-

उपकरणों की सूची बनाइए –

छात्र का उत्तर – मानचित्र, रेखाचित्र आदि।

आइए, अन्य दृश्य साधनों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे –

कुछ दृश्य उपकरण इस प्रकार हैं -

१. चित्र -

दृश्य शिक्षा साधनों में चित्रों का स्थान बहुत ऊँचा है। पाठ को आकर्षक व रोचक बनाने के लिए शिक्षक चित्र का प्रयोग कर सकता है । रेखाओं और रंगों का वह संयोग जो अपनी मूक भाषा में किसी तथ्य, भाव योजना की अभिव्यक्ति करता है उसे चित्र कहलाता है। यह आँखों को सौंदर्य प्रदान करता है। चित्र में वस्तुओं को चित्रण रहता है। इसके उद्देश्य - कला प्रदर्शन, मनोरंजन, भावाभिव्यक्ति, ज्ञान, शिक्षा आदि हैं।

साधारण तस्वीरों और शैक्षिक चित्रों में अंतर होता है। शैक्षिक चित्र केवल मनोरंजन, सौंदर्य के लिए न होकर अनुभव, भाव, तथ्य ज्ञान एवं शिक्षा प्रदान करने के लिए होते हैं। प्रत्येक चित्र सोद्देश्य हो और उन पर आवश्यक प्रश्न किये जाने चाहिए। इनमें स्पष्टता, शुद्धता, विश्वसनीयता, सत्यता एवं पूर्णता होनी चाहिए ।

२. प्रतिमूर्ति / मॉडल - किसी बड़ी वस्तु का छोटा नमूना हो सकता है। अमूर्त विषय को अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रतिमूर्ति का उपयोग किया जाता है। प्रतिमूर्ति उपयुक्त अवसर प्रदान करता है। शिक्षण को प्रभावात्मक बना सकता है। प्रतिमूर्ति का प्रयोग शिक्षण में करने से छात्र विषय का सहज अनुभव करते हैं।

३. रेखाचित्र -

रेखाचित्र पाठ को रोचक बनाता है। ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक शिक्षक को सुंदर तथा आकर्षक रेखाचित्र खींचने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

४. चार्ट -

चार्ट के प्रयोग से शिक्षक को शिक्षण का उद्देश्य प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है। आवश्यकता को ध्यान में रखकर शिक्षक को चार्ट का प्रयोग करना चाहिए। भाषा साहित्य का इतिहास पढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के चार्ट जैसे - समय चार्ट, धारा चार्ट, तालिका चार्ट, वृक्ष चार्ट, संगठन चार्ट का प्रयोग किया जाता है।

५. अजायबघर / संग्रहालय -

संग्रहालय राष्ट्रीय विरासत की झाँकी प्रदान करने में अपना एक अनुपम स्थान रखता है। छात्रों की रचनात्मक मूल प्रवृत्ति को संतुष्ट करने में सहायक है। संग्रहालय को प्राचीन तथा आधुनिक ज्ञान का भंडार बनाया जा सकता है।

इसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण करने, सृजनात्मक शक्ति, जिज्ञासा प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए -

१. भाषा की शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए _____ का प्रयोग किया जाता है।
२. दृश्य-श्रव्य सामग्री को _____ भागों में विभाजित किया जाता है।
३. दृश्य शिक्षा साधनों में _____ का स्थान बहुत ऊँचा है।
४. संग्रहालय को _____ ज्ञान का भंडार बनाया जा सकता है।

५. प्रतिमूर्ति किसी बड़ी वस्तु का _____ हो सकता है।

४.२.३.२. श्रव्य शिक्षण उपकरण -

श्रव्य उपकरण के प्रयोग के समय अध्येता / छात्र मुख्यतः कानों के माध्यम से अपनी चिंतन प्रक्रिया को और अधिक विकसित करने में सहायता प्राप्त करता है। इन उपकरणों से भाषा की ध्वनि, शब्द, वाक्य, अनुतान, बलाघात के ग्रहण में सहायता मिलती है।

छात्रों आप श्रव्य उपकरणों को जानते हैं। कुछ श्रव्य उपकरणों को बताइए –

देखिए आप का उत्तर नीचे के विचारों से कहाँ तक मिलता है –

कुछ श्रव्य उपकरण इस प्रकार हैं -

१. रेड़ियो (आकाश वाणी) -

यह एक प्रभावकारी शिक्षण का जनप्रिय साधन है। इसका प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। रेड़ियो मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन का साधन है। इसके माध्यम से छात्रों को भाषा का समुचित ज्ञान दिया जा सकता है।

रेड़ियो अधिक लोगों तक पहुँचनेवाला माध्यम है। रेड़ियो उच्चरित भाषा का रूप हमारे सामने रखता है। इसके द्वारा जन शिक्षण का कार्य, हिन्दी पाठ प्रसारित किए जाते हैं। विभिन्न साहित्यकारों तथा उनकी कृतियों का परिचय मिलता है। कवि गोष्ठियाँ प्रसारित होते हैं जिससे छात्र को कविताओं के रसास्वादन का अवसर मिल जाता है । नाटक, वादविवाद, चुटकुले आदि के प्रसारण द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है।

भाषा और भाषण में निपुणता प्राप्त की जा सकती है । इससे विश्व के समाचार को स्पष्ट रूप से सुन सकते हैं। सीखने के विशेष उपकरण की तरह शिक्षक और छात्र दोनों के लिए लाभ दायक साधन है। रेड़ियो छात्रों में विमर्शात्मक चिंतन का विकास करता है। कम समय में अधिक ज्ञान पाने का अवसर देता है।

२. ग्रामोफोन -

रेड़ियो की भाँति ग्रामोफोन भी शिक्षण के महत्वपूर्ण उपकरण है। ग्रामोफोन द्वारा बालक को भाषण तथा गाने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षक को इस उपकरण का शिक्षण के समय आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए। इस उपकरण को कविता, वार्तालाप, भाषण की शैलियों का ज्ञान कराने में एक से अधिक बार प्रयोग किया जाता है। शिक्षक को चाहिए कि वह इस उपकरण का प्रयोग करने के बाद छात्रों के सामने विषय का स्पष्टीकरण अवश्य कर दे, इससे वे ज्ञान को सफलतापूर्वक ग्रहण कर लेंगे।

३. टेपरेकार्डर -

इसकी विशेषता है कि जैसे भाषण अथवा वार्तालाप चल रहा होता है वैसे वैसे उसकी ध्वनि टेप में अंकित होती जाती है बाद में जब चाहें, वह भाषण अथवा वार्ता सुनी जा सकती है। इसकी सहायता से उच्चारण, वाचन, बोलचाल, अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियों, साहित्यिक गतिविधियाँ तथा विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता है। इस उपकरण से छात्रों के बोलने की गति, प्रभाव संबंधी त्रृटियाँ एवं उच्चारण को सुधारने में आश्चर्यजनक सहायता मिलती है।

अभ्यास -

नीचे के कथनों पर विचार करके अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए –

१. ग्रामोफोन को कविता, भाषण का ज्ञान कराने के लिए एक से अधिक बार प्रयोग किया जाता है।
२. टेपरेकार्डर से छात्रों के उच्चारण को सुधारा जा सकता है।
३. कक्षा में ग्रामोफोन का प्रयोग होने के बाद शिक्षक को विषय का स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं है।
४. रेड़ियो जन शिक्षण का कार्य करता है।

दृश्य - श्रव्य उपकरण -

छात्र, आप दृश्य - श्रव्य उपकरण के बारे में जानते हैं। कुछ दृश्य-श्रव्य उपकरण की सूची बनाकर नीचे के अंशों से मिलाइए -

श्रव्य उपकरण के प्रयोग के समय छात्र मुख्यतः कानों और आखों के माध्यम से अपनी चिंतन प्रक्रिया को और अधिक विकसित करने में सहायता प्राप्त करता है।

कुछ दृश्य-श्रव्य उपकरण इस प्रकार हैं -

१. चलचित्र -

यह बीसवीं शताब्दी की शिक्षा का सस्ता, सुलभ एवं यंत्रिकृत महत्वपूर्ण साधन है। चलचित्र द्वारा छात्रों की कल्पनाशक्ति को विकसित करके उनकी निरीक्षण शक्ति का विकास भी किया जा सकता है। इसके द्वारा विभिन्न देशों की स्थितियों, परिस्थितियों तथा मानव और उसके कार्य कलापों का ज्ञान कराया जाता है, चलचित्र को कक्षा कार्य का एक भाग ही समझना चाहिए। शिक्षक की अनुपस्थिति में चलचित्र के द्वारा छात्रों को नियंत्रण और अनुशासन में रखा जाता है। चलचित्र के द्वारा पाठ का पुनरावर्तन संभव है। यह चर्चा विधि का विकास करता है और यहाँ छात्रों का सीखना सहज होता है।

२. दूरदर्शन -

रेडियो और चलचित्र दोनों के लाभ इससे मिल सकते हैं। छात्रों के कान और आँख दोनों ज्ञानेन्द्रियाँ एकाग्रता से कार्य करती हैं । छात्र टेलीविज़न / दूरदर्शन द्वारा बातचीत करना, भाषण देना तथा अभिनय आदि अनेक बातों को सरलतापूर्वक सीख पायेंगे।

३. भ्रमण -

यह शिक्षक के मार्गदर्शन में योजना बद्ध ढ़ंग से कक्षा के बाहर किसी स्थान का निरीक्षण है । कक्षा शिक्षण से भिन्न प्रत्यक्षीकरण का अवसर मिलता है किसी स्थान विशेष की यात्रा / भ्रमण का वास्तविक अनुभव प्राप्त होता है। भ्रमण से विद्यालय और समाज के बीच का संबंध होता है। छात्रों में निरीक्षण, कल्पना शक्ति का अन्वेषण आदि क्षमताओं का विकास होता है। अनुशासन की भावना का विकास होता है। भ्रमण कक्षा-कार्य की पूरक प्रवृत्ति होती है। इसके द्वारा शिक्षण कार्य में नवीनता आजाती है और शिक्षार्थी विषय में अधिक रुचि दर्शाने लगते हैं। भ्रमण में भी छात्रों की आँखें कान सक्रिय होते हैं |

अब तक हमने सहायक उपकरणों के बारे में काफी चर्चा की है। देखें आप कहाँ तक समझे हैं -

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

जोड़कर लिखिए -

१.	दूरदर्शन	१. भाषा प्रयोग शाला, नाटक
२.	रेडियो	२. कक्षा कार्य का एक भाग ही समझना चाहिए।
३.	चलचित्र	३. भाषा का उच्चरित रूप हमारे सामने रखता है।
४.	भ्रमण	४. रेडियो और चलचित्र दोनों का लाभ मिल सकता है।
५.	दृश्य - श्रव्य साधन	५. कक्षा के बाहर किसी स्थान का निरीक्षण है।

४.२.४. सारांश -

छात्रों, अब तक हम दृश्य और श्रव्य सामग्री की पर्याप्त चर्चा कर चुके हैं। आइए और एक बार झाकें -

भाषा की शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक सहायक साधनों / उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। इन उपकरणों के उपयोग से अधिगम की परिस्थितियों को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है और उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

दृश्य - श्रव्य सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से है जिनके प्रयोग से छात्रों की श्रव्य - दृश्य ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं और वे पाठ को सरलता से समझ पाते हैं।

दृश्य - श्रव्य सामग्री / उपकरण को तीन भागों में विभाजित किया जाता है - श्रव्य उपकरण, दृश्य उपकरण, श्रव्य -दृश्य उपकरण

दृश्य - श्रव्य शिक्षण उपकरणों के प्रयोग से भाषा की ध्वनि, शब्द, अनुतान के ग्रहण में सहायता मिलती हैं। कुछ श्रव्य उपकरण हैं - रेड़ियो, ग्रामोफोन आदि।

दृश्य शिक्षण उपकरण - इनके द्वारा मानसिक बिम्ब की प्रक्रिया में प्रत्यक्षीकरण के वातावरण की सृष्टि होती है। कुछ दृश्य उपकरण हैं - चित्र, चार्ट आदि।
श्रव्य शिक्षण उपकरण - ये उपकरण छात्रों के कानों और अँखों के द्वारा चिंतन प्रक्रिया को अधिक विकसित करते हैं। कुछ श्रव्य -दृश्य उपकरण हैं - चलचित्र, भ्रमण आदि।

४.२.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१) १. सहायक साधन २. तीन ३. चित्र ४. प्राचीन तथा आधुनिक ५. छोटा नमूना
२) १-४ २-३ ३-२ ४-५ ५-१

४.२.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

उत्तर दीजिए -

१. हिन्दी भाषा शिक्षण में सहायक उपकरणों का क्या महत्व है?
२. रेड़ियों का क्या उपयोग है? आप कक्षा शिक्षण में इसका प्रयोग किस प्रकार करेंगे?

४.२.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. भाषा१,२ की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ नियोजन
डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा (२००९)
श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
२. हिन्दी शिक्षण
डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)
आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
३. हिन्दी भाषा शिक्षण
भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)
श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
४. नूतन हिन्दी शिक्षण
के. आय. सत्तिगेरि (१९९७)
प्रकाशक - श्रीमती विजया सत्तिगेरी, बेलगाँव

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई ३ : कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री

इकाई की संरचना

४.३.१. सीखने के उद्देश्य

४.३.२. प्रस्तावना

४.३.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

४.३.३.१. हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का महत्व

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

४.३.३.२. कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - ०१

ई-शिक्षा (e-learning), अंतरजाल (internet), ई-मेल (e-mail) वेब साइट (web sites)

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

४.३.३.३. कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - ०२

पी.पी.टी (P.P.T.), मल्टीमीडिया (Multimedia) (उपग्रह दूरदर्शन प्रयोग, रेडियो और कंप्यूटर आदि), सीखने के मोबइल एपस (Mobile learning apps)

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

४.३.४. सारांश

४.३.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

४.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

४.३.७. संदर्भ पुस्तकें

४.३.१. सीखने के उद्धेश्य -

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर के स्थान के बारे में स्पष्टीकरण देंगे।
- कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - ई-शिक्षा, अंतरजाल, वेबसाइट, ई-मेल, उपग्रह, का वर्णन करेंगे।
- कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - पी.पी.टी. बहुमाध्यम प्रणाली (Multimedia) , सीखने के मोबाइल एपस् का प्रयोग कक्षा कार्य में करेंगे ।

४.३.२. प्रस्तावना -

प्रिय छात्रों, जैसा कि आप जानते हैं कि -

इन दिनों नवीन तकनीकों के माध्यम से शिक्षण दिया जा रहा है। परंपरागत कक्षा के विपरीत शिक्षा में परिवर्तन लाने के लिए उच्च कोटि की विकासित संप्रेषण तकनीकी का उपयोग किया जाने लगा है।

अपनी जानकारी के आधार पर, आप लोग कक्षा शिक्षण में प्रयोग किये जाने वाले तकनीकी आधारित, साधनों की सूची बनाइए ----

आप अपनी सूची के साधनों को नीचे के इन साधनों से मिलाइए ---

कंप्यूटर, दूरदर्शन, अंतरजाल, इंटरनेट, एल.डी., ऑ.एच.पी., उपग्रह दूरदर्शन, वीडियो, आडियो, आदि।

शिक्षण अधिगम एवं अनुदेशन के क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग अति आधुनिक अनुदेशात्मक सामग्री एवं साधन का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ बहुमाध्यम साधन का भी प्रयोग होने लगा है।

४.३.३. सीखने के अंश तथा सीखने की क्रियाएँ

४.३.३.१. हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का महत्व

छात्रों, हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर के बारे में विचार करेंगे -

हिन्दी शिक्षण में कंप्यूटर की भूमिका है । कंप्यूटर को विद्युत मस्तिक भी कहते हैं। कंप्यूटर ने शिक्षण क्षेत्र में अनुदेशन, शोधकार्य, परीक्षा प्रणाली को प्रभावित किया है। कंप्यूटर द्वारा अनुदेशन का कार्य हिन्दी शिक्षण में साफ्टवेर सीडीज़ (CD's) तथा वेबसाइटों पर उपलब्ध सूचना एवं पठन सामग्री द्वारा किया जाता है। कंप्यूटरों के द्वारा चित्र, चार्ट, ग्राफ, मुद्रित सामग्री के सृजन की सहायता से ऎसी अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों का संग्रह किया जा सकता है जिनसे हिन्दी शिक्षण से संबंधित विविध विषयों या प्रकरणों का अनुदेशन प्रदान किया जा सके।

' कोडब्रेकर ' एक प्रकार का कार्यक्रम है जिसके द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। प्रश्नोत्तर द्वारा छात्रों को सफलता पूर्वक सीखने का अवसर मिल जाता है। कंप्यूटर में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को शिक्षण के लिए प्रदर्शित किया जाता है एवं उनके द्वारा छात्रों को अपने अनुसार कार्य करने के लिए अनुमति प्रदान की जाती है। विभिन्न प्रकार के वैकाल्पिक कार्यक्रम कंप्यूटर पर उपलब्ध होते हैं छात्र उनको अपने व्यक्तिगत आधार पर चयन करते हैं। कंप्यूटर से छात्र अभ्यास पर, अनुकरण, खेल द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

अभ्यास -

नीचे दिये वाक्यों को पढिये और बताइए आप उन वाक्यों से सहमत / असहमत हैं -

	सहमत	असहमत
१. कंप्यूटर को साधारण मस्तिष्क भी कहते हैं। २. कोड्ब्रेकर एक प्रकार का कार्यक्रम है। ३. कंप्यूटर छात्रों को अभ्यास, अनुकरण, खेल द्वारा शिक्षा प्रदान करता है। ४. कंप्यूटर में उपलब्ध वैकल्पिक कार्यक्रम का चयन छात्र नहीं कर सकते हैं।		

आइए हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर के महत्व के बारे में जानेंगे-

छात्र, कंप्यूटर द्वारा हिन्दी भाषा संबंधी सभी कौशलों के अर्जन, आवश्यक ज्ञान प्राप्ति की दिशा में स्व अनुदेशन तकनीक को अपनाकर आवश्यक प्रगति कर सकते हैं।

- कंप्यूटर, परीक्षा प्रणाली में परीक्षा फल, अंकचिट तैयार करने, प्रमाण पत्र भी तैयार करता है।
- अनुदेशन प्रक्रिया में छात्रों के निदान के आधार पर सुधारात्मक शिक्षण भी देता है।
- अधिगम सामग्री का विशाल स्तर पर व्यवस्थित कर सकता है। यह एक साथ अनेक छात्रों की अधिगम आवश्यकता को पूर्ण कर सकता है।
- कंप्यूटर की चुनैतीपूर्ण कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों में मध्य प्रेरणा पैदा की जाती है।
- कंप्यूटर कार्यक्रम के द्वारा सीखने की क्रिया कभी भी किसी भी प्रकार से नीरस नहीं होती है।
- छात्रों के अध्ययन की प्रक्रिया में वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखा जाता है।
- छात्र की अध्ययन गति का अनुसरण किया जाता है और उनके द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है।
- कंप्यूटर के वर्ड प्रोसेसिंग साफ्ट वेयर द्वारा हिन्दी भाषा के लिखने तथा पढ़ने संबंधी कौशलों का विकास किया जा सकता है।
- लिखने, पढ़ने की त्रृटियों को दूर करने तथा व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा के ज्ञानार्जन में भी काफी मदद करता है।
- विभिन्न प्रकार के गद्य तथा पद्य पाठों को विधिवत् शिक्षण में विशेषरूप से तैयार की गई सीडीज़ तथा वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री मदद कर सकती है।

हिन्दी भाषा के रचना कार्य जैसे -

निबंध, पत्र लेखन, कहानी समालोचना आदि में कंप्यूटर द्वारा प्रदत्त अनुदेशात्मक सामग्री उपयुक्त भूमिका निभा सकती है।

- **अनुदेशनात्मक परिस्थितियों में कंप्यूटर का प्रयोग**

अ) छात्र के पंजीकरण के लिए पूर्व परीक्षण की व्यवस्था करना।

आ) छात्र विकास के लिए निर्देशन देना ।

इ) प्राप्तांकों एवं परीक्षणों को प्रयोग में लाना।

ई) अनेक आलेख की फाइलों को कंप्यूटर में सुरक्षित रखा जा सक्ता है।

कंप्यूटर की मदद से आज " आनलाइन एजुकेशन ", हिन्दी भाषा शिक्षण में संभव है। इस तरह कंप्यूटरों का प्रयोग हिन्दी भाषा शिक्षण क्षेत्र में एक ऎसे उन्नत साधन तथा अनुदेशनात्मक सामग्री स्त्रोत का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे सभी कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण संबंधी अनुदेशनात्मक कार्य को एक अच्छा सहायक तथा ठोस आधार प्रदान किया जा सके।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

उत्तर दीजिए -

१. परीक्षा प्रणाली में कंप्यूटर क्या क्या तैयार करता है?
२. अनुदेशन प्रक्रिया में कंप्यूटर, छात्रों के निदान के आधार पर कौन सा शिक्षण देता है?
३. कंप्यूटर के कौन से साफ्ट्वेयर द्वारा हिन्दी भाषा के लिखने-पढ़ने के कौशलों का विकास किया जाता है?
४. गद्य तथा पद्य पाठों के शिक्षण में किन किन पर उपलब्ध सामग्री मदद करती है?

४.३.३.२. कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - ०१

इ-शिक्षा (इ-लर्निंग), अंतरजाल, वेब साइट, ई-मेल

छात्रों, कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री में उपरोक्त अंशों को देख सकते हैं। आइए उनपर विचार करेंगे -

ई-शिक्षा (ई-लर्निंग) -

सूचना प्रसारण में तकनीकी का प्रभाव काफी फैल चुका है। शिक्षा में एलेक्ट्रानिक (आण्विक)माध्यम के प्रयोग को ई-शिक्षा कहा जाता है। शिक्षण तथा अधिगम की प्रक्रिया में कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है। ई-शिक्षा एक उपागम है। जिसके द्वारा बहुपक्षीय शिक्षा, विज्ञान, गणित, भाषा में ऑ.एच.पी., सीडीज़, वीडियो, एल.ई.डी., पाठ्य पुस्तक, सहायक पुस्तक, टेलिकान्फरेन्स, वीडियो कान्फरेन्स आदि का संदर्भोचित चित्र प्रयोग करते हुए शिक्षण दिया जाता है। ई-शिक्षा के बारे में कहा जाता है कि - Everything, every one engaging easily.

अभ्यास -

छात्रों, आप लोग समूह में चर्चा करके उपरोक्त एलेक्ट्रानिक्स साधनों के अलावा और कौन कौन से एलेक्ट्रानिक्स (आण्विक) साधन हैं, उनकी सूची बनाइए।

अपने उत्तर को नीचे की सूची से मिलाकर देखिए आप कहाँ तक सफल हुए हैं -

डी.वी.डी. प्लेयर, वीडियो कैसेट, अंतरजाल, इंट्रानेट, वेबब्रौज़र, चाटिंग (chatting), वीडियो प्रवचन आदि। वेब प्रयोग के अंतर्गत भाषा शिक्षण आधिगम के लिए वीडियो शेरिंग (video sharing) श्रवण सामग्री, अनिमेशन साधन, ब्लाग असिस्टेड लेंग्वेज़ लर्निंग (BALL) आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इनका पूरा लाभ उठा सकते हैं।
ई-शिक्षा में सी.डी. रोम(CD-ROM), अंतरजाल, तकनीकी का प्रयोग किया जाता है।

ई-शिक्षा का उद्देश्य -

- अधिगम प्रक्रिया में दो / तीन आण्विक साधनों का प्रयोग करना।
- तकनीकी कुशलता को बढ़ावा देना।
- शैक्षिक, नवाचारों, रचनात्मक एवं प्रायोगिक कार्यों को प्रोत्साहन देना ।
- छात्रों में व्यावहारिकता उपलब्ध कराना।
- छात्रों के स्तर, गुणवत्ता को बढ़ावा देना ।

ई-शिक्षा की विशेषता ----

- ई-शिक्षा कंप्यूटर आधारित अधिगम है।
- किसी भी समय, स्थल से कार्य किया जाता है।
- बहुत ही गत्यात्मक है।
- बड़े समूह के लिए आसानी से कार्य करता है।
- इसके द्वारा एक दूसरे से सीखना संभव है।
- इसको आसानी से अध्यतन किया जा सकता है।
- विषय वस्तु को डिजटलीकरण (digitalization) में प्रस्तुत करता है।

अंतरजाल (Internet) -

आइए, अंतरजाल के बारे में चर्चा करेंगे -

छात्रों, विंट सर्फ और बाबकाहन ने इंटर्नेट का सफर - १९७० के दशक में शुरु किया था। अंतर्जाल को नेट भी कहा जाता है। वास्तव में इंटर्नेट एक जाल ही है जिसके असंख्य धागे एक दूसरे से मिलकर एक विशाल और अत्यंत जटिल संरचना का निर्माण करते हैं। इसकी तुलना मकड़ी के जाल से की जा सकती है। इसमें कई संगठनों, विश्व विध्यालय आदि के निजी और सरकारी संगणक जुडे हुए हैं। अंतर्जाल में जुड़े हुए संगणक आपस में अंतरजालीय नियमावली सूचना का आदान प्रदान करते हैं। अंतर्जाल के जरिए मिलने वाली सूचनाओं और सेवाओं में अंतरजाल पृष्ट, ई-मेल और आपसी बातचीत (आडियो तथा वीडियो कान्फेरेन्स) सेवा प्रमुख हैं । इनके साथ चलचित्र, संगीत, वीडियो के इलेक्ट्रानिक / कंप्यूटर की भाषा में कहे तो डिजिटल रूप भी इसमें शामिल हैं।

अंतरजाल को कार्य करने उपग्रह संचार प्रणाली और धरती पर फाइबर केबल्स की आवश्यकता होती है हम तक यह संचरण टेलीफोन के तार और मोबाइल (चलदूर भाष) कनेक्शन के द्वारा पहुँचता है।

अंतरजाल का उपयोग -

- अंतरजाल ने अनगिनत लोगों को रोजगार दिया है।
- मानव जीवन की शैली पर व्यापक प्रभाव छोड़ा है।
- घर, ऑफिस में इंटरनेट का इस्तेमाल किया जाता है।
- लोगों को आपस में काफी करीब लाया है।
- मनोरंजन का एक बड़ा स्त्रोत है।
- यात्रा और पर्यटन पर नेट का प्रभाव पड़ा है।
- शिक्षा के क्षेत्र में नेट का उपयोग हो रहा है।

छात्र ऑनलाइन कोचिंग, जानकारी का लाभ उठा रहे हैं। योजना कार्य पूरा कर सकते हैं और नये तरीके से अध्ययन कर सकते हैं। शिक्षक वीडियो प्रवचन का मौका पा रहे हैं। कक्षा गतिविधियों की व्यवस्था और अन्योन्य क्रियाधारित शिक्षण की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। अंतरजाल द्वारा शिक्षक, अभिभावक, छात्र आपस में संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

अभ्यास-

अनुच्छेद को पढ़िए और संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए -

शिक्षा में एलेक्ट्रानिक माध्यम के प्रयोग को ई-शिक्षा कहते हैं । ई-शिक्षा का उद्देश्य अधिगम प्रक्रिया में दो/तीन अधिक साधनों का प्रयोग करना । ई-शिक्षा की विशेषता है कि वह विषयवस्तु को डिजिटलीकरण में प्रस्तुत करता है। अंतरजाल की शुरुआत विंटसर्फ और बाब काहन ने की थी। अंतरजाल से मिलनेवाली सूचनाओं और सेवाओं में अंतरजाल पुष्ठ, ई-मेल, आपसी बात चीत सेवा प्रमुख हैं। शिक्षक अंतरजाल द्वारा वीडियो प्रवचन, कक्षा गति विधियों की व्यवस्था और अन्योन्याश्रित शिक्षण का लाभ उठा सकता है।

१. ई-शिक्षा किसे कहते हैं?
२. ई-शिक्षा की क्या विशेषताऍं हैं?
३. अंतरजाल की शुरुआत किनसे हुई थी?
४. अंतरजाल की प्रमुख सूचना और सेवा कौन कौन सी हैं?
५. अंतरजाल से शिक्षक को क्या क्या लाभ हैं?

वेबसाइट (Website) और ई-मेल (e-mail) ----

छात्रों, आइए वेबसाइट और ई-मेल के विचारों को देखें -

वेबसाइट -

यह वेब साइट वेबपेजस का संग्रह है, इनमें बहु माध्यम विषय भी है। यह ऐसी अनुदेशन जगह है जहाँ यू.आर.एल. (URL) द्वारा सूचित दस्तावेज तथा अन्य वेब संसाधन हैं जिसे हैपर टेक्स्ट लिंक द्वारा अंतर संबंधित (interlinked) किया जाता है और अंतरजाल द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। १९८९ में अंग्रेजी विज्ञानी टिम बरनरस ली ने www का आविष्कार किया \

वेबसाइट में सूचनाओं को वेब पेज में संग्रह करके रखा जाता है, उस वेब साइट के पेज को कोई भी यू.आर.एल. नेट से संपर्क करके देख सकते हैं। वेब साइट पर उपलब्ध इन पेजस् को वेब पेज कहते हैं। वेब पेज में बहुत सारी अलग अलग तरह की जानकारी हो सकती है। जानकारी विषय के साथ ग्राफिक्स, अनिमेशन, ध्वनि / वीडियो के रूप में भी हो सकती है।

वेब पेज एक प्रायोगिक कार्यक्रम (application program) है जो कि www से जानकारी को पुनः पाने, भेजने का और जानकारी को प्रस्तुत करने का काम करता है। वेब साइट की जानकारी मनोरंजन, वाणिज्य, सरकारी, सरकारेतर संगठन के लिए होती है। ब्रौज़र के सृजन से www पर जो भी विषय हो उनको, आसानी से पता लगाना और खोजना संभव हुआ है। ये विषय चित्र, वीडियो, वेबपेज़ कुछ भी हो सकते हैं जो कि हाइपर लिंक से संपर्कित (connected) होते हैं|

प्रसिद्ध वेब ब्रौज़र हैं, क्रोम, एड्ज, सफाई, ओपेरा, फायर फाक्स आदि।

वेब साइट के उदाहरण हैं - यू ट्यूब.कॉम, गूगल.कॉम, वीकिपीडिया.ओ, याहू. कॉम
अमेजॉन.कॉम, ई-मेल, आदि

इ-मेल (e-mail) –

यह एलेक्ट्रानिक मेल (डाक) है। यह एक कंप्यूटर की प्रणाली है। अंतर जाल की सबसे अधिक उपयोग की जानेवाली सेवा है। इसे किसी नेटवर्क से जुडे विभिन्न कंप्यूटरों के बीच भेजा व प्राप्त किया जाता है।

इ-मेल लिखित संदेश भेजने से किया जाता है। इ-मेल एक संदेश है जो परंपरागत डाक से भी शीघ्र भेजा और प्राप्त किया जा सकता है।

हिन्दी भाषा शिक्षण में, विद्यालय प्रशासन में इ-मेल का अपना ही एक महत्व है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

उत्तर दीजिए-

1. ई-मेल क्या है?
2. ई-मेल कैसे किया जाता है?
3. वेबसाइट किसे कहते हैं?
4. www का आविष्कार किसने किया?
5. वेब ब्रौज़र के कुछ उदाहरण बताइए?

४.३.३.३. कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री - ०२

पी.पी.टी., बहुमाध्यम, मोबाइल लर्निंग एपस् :

छात्रों, अब हम पी.पी.टी., बहुमाध्यम, सीखने के मोबाइल एपस् (लर्निंग एप) के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

अ) पी.पी.टी. - (योजना व्यवस्था / नियोजन प्रशिक्षण) -

यह एम.एस. पवर पाइंट है जिसका पूरा नाम माइक्रो साफ्ट पवर पाइंट है तथा इसे पवर पाइंट भी कहते हैं, यह एक प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम है (प्रोग्राम) जो सूचनाओं को स्लैडस प्रारूप में कुछ मल्टीमिडियाकी विशेषताओं जैसे फोटो एवं आवाज के साथ खोलना, सृजन, संपादन, आरूप करने, सुरक्षित रखना, दूसरों से बाँटने एवं मुद्रण आदि का कार्य करता है।

पी.पी.टी. का उपयोग हिन्दी भाषा शिक्षण में -

विद्यालय के ऑफीस और कक्षा में स्लैड शो के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

अभ्यास -

छात्रों, आप पी.पी.टी. की उपयोगिता के बारे में कुछ चंद वाक्य बताइए -

आप के उत्तर को नीचे के अंशों से मिलाकर देखिए कि आप का चिंतन कहाँ तक सही है -

शिक्षा क्षेत्र में पी.पी.टी. -

- पी.पी.टी. कक्षा शिक्षण में विस्तार से प्रयोग करने वाला साफ्टवेयर है।
- पी.पी.टी. शिक्षक के प्रस्तुतीकरण को बढ़ावा देती है।
- छात्रों को विषय का बोध कराता है।
- शिक्षक को विषय के प्रस्तुतीकरण, प्रवचन को, श्याम पट पर लिखने के बदले गत्यात्मक रूप से सरल कराता है।
- पाठ प्रस्तुतीकरण में सृजनशीलता, अन्योन्य क्रिया को स्थान देता है।
- छात्र और शिक्षकों में रुचि को बढ़ावा देता है।
- पी.पी.टी. का इस्तेमाल मानवसंसाधनवाले, बिक्री, बाज़ार विभाग में ज्यादा किया जाता है।

आ) बहुमाध्यम (Multimedia) प्रणाली -

छात्रों, बहुमाध्यम के बारे में आप जानते हैं। कुछ बहुमाध्यम साधनों के बारे में सोचिए और आपकी सोच नीचे के विचारों से कहाँ तक मिलती है देखिए -

बहुमाध्यम प्रस्तुतीकरण में एक से अधिक माध्यमों का संयुक्त प्रयोग किया जाता है । आज के नये युग में बहुमाध्यम प्रणाली प्रभावकारी हैं। आज के विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय में इस प्रणाली जैसे रेड़ियो, दूरदर्शन, चलचित्र, समाचार पत्र, टेपरेकार्ड, स्लाइड प्रोजेक्टर, फिल्म स्ट्रिपस आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

बहुमाध्यम शब्द का प्रयोग सबसे पहले बाब गोल्डस्टैन (BOB Gold Stein) के द्वारा जुलाई १९९६ में प्रयोग किया गया । टे वाहघान (Tay Vanghan) ने घोषणा की, कि बहुमाध्यम में विषय (पाठ्य) ग्राफिक, कला, ध्वनि, अनिमेशन, वीडियो का मिश्रण होता है और कंप्यूटर द्वारा प्रयोग किया जाता है।

बहुमाध्यम का उपयोग -

बहुमाध्यम से - शिक्षा क्षेत्र में मुख्य कौशलों का अभ्यास कराया जाता है।

- लेखन कौशल का विकास किया जाता है।
- शैक्षिक समस्या का समाधान किया जाता है।
- अधिगम प्रक्रिया में जिज्ञासा उत्पन्न करता है।
- कक्षा वातावरण सक्रिय सजीव रखता है।
- भाषा के शिक्षण और अधिगम में उपयोग किया जाता है।
- परंपरागत माध्यमों के साथ बहुमाध्यम का भी उपयोग किया जाता है।
- एक ही समय में अनगिनत लोगों को अनुदेशन, समाचार देनेवाला माध्यम है।
- सामूहिक शिक्षा में इसकी भूमिका अपार है।
- ये माध्यम केवल संपर्क साधन न होकर आधुनिक समाज की आवश्यक शिक्षा संस्था के रूप में विकसित हो रहे हैं। आज विदयालय, कालेज से भी अच्छी शिक्षा देने में इनका पात्र महत्व पूर्ण है।
- कंप्यूटर आधारित शिक्षा के लिए सहायक है।

परीक्षा -

इन कथनों में सही / गलत को पहचानिए -

१. पी.पी.टी. कक्षा शिक्षण में विस्तार से प्रयोग करने वाला साफ्टवेयर है।
२. पी.पी.टी. का प्रयोग सिर्फ बाज़ार विभाग में किया जाता है।
३. बहुमाध्यम शब्द का प्रयोग पहले बाब गोल्ड् स्टैन ने किया था।
४. परंपरागत माध्यमों के साथ बहुमाध्यम का प्रयोग नहीं किया जाता है।
५. बहुमाध्यम प्रस्तुतीकरण में एक से अधिक माध्यमों को संयुक्त रूप में प्रयोग किया जाता है।

(उत्तर - १.सही, २.गलत, ३.सही, ४.गलत, ५.सही)

बहुमाध्यम के अंतर्गत उपग्रह दूरदर्शन प्रयोग -

छात्रों, आइए उपग्रह दूरदर्शन प्रयोग के बारे में विचार करेंगे।

यह उपग्रह दूरदर्शन प्रयोग आज कल का एक प्रयोग है। यह शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली संप्रेषण है। दूरदर्शन का विस्तार सीमित है परन्तु उपग्रह की सहायता से इसका विस्तार बढ़ गया है । इन उपग्रहों को आकाश में २२,३०० मील ऊँचाई पर विषवत् रेखा पर प्रक्षेपित किया गया है। ये विषवत रेखा की परिधि में घूमते हैं और दूरदर्शन के प्रसारण केन्द्र का कार्य करते हैं।

उपग्रह दूरदर्शन का महत्व -

अभ्यास -

छात्रों, - आप लोग उपग्रह आधारित शिक्षा के बारे में जानते हैं। उपग्रह आधारित शिक्षा के महत्व के बारे में बताइए।

देखिए आप का उत्तर नीचे के अंशों से कहाँ तक मिलता है।

- इस परियोजना / योजना (उपग्रह दूरदर्शन) का प्रयोग संपूर्ण राष्ट्र की शिक्षा के लिए किया जा रहा है।
- इसके द्वारा अनुदेशन तथा संप्रेषण माध्यम में सुधार लाया जा सकता है तथा उन्हें प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
- इस योजना का उपयोग आर्थिक विकास से परे सामाजिक मूल्य के विकास में किया जा सकता है।
- शैक्षिक प्रणाली तथा कक्षा वातावरण के लिए इसका विशेष महत्व है।
- इसकों कक्षा तथा कक्षा के बाहर प्रयोग किया जा सकता है।
- विभिन्न विषयों के विशिष्ट ज्ञान का प्रसारण किया जा सकता है।
- ग्रामीण जनसंख्या को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक ज्ञान की जानकारी हेतु प्रयुक्त किया जाता है।
- पत्राचार पाठ्यक्रम, सामूहिक शिक्षा योजना आदि में इस योजना को प्रभावशाली ढंग से प्रयुक्त किया जाता है।

(इ) सीखने के मोबाइल एपस् (Mobile learning apps)-

मोबाइल द्वारा एपस् माध्यम से सीखने को एम-लर्निंग (M-learning) भी कहते हैं। आगामी सालों में स्मार्टफोन, टेब्लेट (Tablet) द्वारा सीखना भी प्रभावात्मक शैक्षिक प्रवृत्तियों में एक है। भारत और अमेरिका देश में शिक्षक अधिगम के लिए फोन का अधिक इस्तेमाल करना पाया जाता है।

जहाँ आइ.सी.टी. (ICT) (अनुदेशनात्मक सूचना प्रौद्योगिकी) सीमित है वहाँ स्मार्टफोन/सेल्युलार (cellular) वास्तविकता को बदल रहा है। सीखने के एप हैं - बैजुस (ByJus)

कुछ अन्य सीखने के मोबाइल एप हैं -

- **कोरसेरा (Coursera)**

इससे विदेशी भाषा के साथ साथ प्रदेशिक भाषा को भी सीखा जाता है। वीडियो पाठ, टुटोरियल उपलब्ध हैं।

- **इ.डी. एक्स (Edx)**

इसके द्वारा इतिहास, मनोविज्ञान, शैक्षिक अधिगम संभव है। यहाँ आनलैन, आफलैन, वीडियो, व्याख्यान, टुटोरियल उपलब्ध हैं।

- **खान अकाडेमी (Khan Academy)**

यह और एक शिक्षा का मंच है। विविध शिक्षा देता है। कठिन विषय को सरलता से समझाने का प्रयास होता है।

- **मेमरैस (Memrise)**

यह भाषा अधिगम का प्रयोग है। अधिगम को प्रेरित करनेवाले खेल हैं। विभिन्न भाषाई कौशलों को सीख सकते हैं ।

- **बुस्सु (Busuu)**

भाषाओं का वाचन, लेखन, अभिव्यक्ति आदि के बारे में सिखाया जाता है।

सीखने के मोबाइल एपस् के उपयोग -

सीखने के एप -

- निश्चित समय में छोटी सी जानकारी को जाँचने में उपयुक्त है।
- नये साक्षरता कौशल को बल देता है।
- शीघ्र अनुस्मारक का काम करता है।
- स्वाध्याय को प्रोत्साहन देता है।
- अधिगम संसाधन को ढूंढने में सहायक है।

शीघ्र ही, 'एग्ज़ाम टाइम एप' (Exam Time App) का प्रयोग होनेवाला है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

सही शब्द से रिक्त स्थान को भरिए -

1. दूरदर्शन के विस्तार को _____ की सहायता से बढ़ा दिया है।
2. उपग्रह दूरदर्शन का प्रयोग _____ की शिक्षा के लिए किया जा रहा है।
3. मोबाइल द्वारा एपस् माध्यम से सीखने को _____ कहा जाता है।
4. शिक्षक अधिगम के लिए फोन का अधिक इस्तेमाल _____ और _____ देश में पाया जाता है।
5. बैजूस और इ.डी.एक्स. _____एपस् हैं।

४.३.४. सारांश -

हम लोग, कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त किये हैं, आइए उसपर एक नज़र डालें -

कक्षा शिक्षण में नवीन तकनीकों के माध्यम का उपयोग होने लगा है। शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में कंप्यूटर बहुमाध्यम का प्रयोग हो रहा है।

कंप्यूटर ने शिक्षण क्षेत्र में अनुदेशन, शोध कार्य, परीक्षा प्रणाली को प्रभावित किया है। कंप्यूटर द्वारा हिन्दी शिक्षण के विविध विषय / प्रकरण का अनुदेशन दिया जाता है। कंप्यूटर द्वारा सीखने में नीरसता नहीं होती है और शैक्षिक समस्या का समाधान किया जाता है।

शिक्षा में एलेक्ट्रानिक माध्यम के प्रयोग को ई-शिक्षा कहा जाता है। ई-शिक्षा एक उपागम है जो विषयवस्तु को डिजटलीकरण में प्रस्तुत करती है।

अंतरजाल का उपयोग हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम में किया जाता है। छात्र और शिक्षक दोनों के लिए लाभदायक है।

ई-मेल - एक एलेक्ट्रानिक संदेश है। संदेश और सूचनाओं को लिखित रूप में भेजा और प्राप्त किया जाता है।

वेबसाइट - द्वारा सूचनाओं को वेब पेज में संग्रह करके रखा जाता है। ब्रौज़र द्वारा शिक्षण अधिगम के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त किया जाता है।

कंप्यूटर द्वारा पी.पी.टी. का प्रयोग किया जाता है और बहुमाध्यम का भी अधिगम के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

सीखने के मोबाइल एप द्वारा अधिगम और शिक्षण का कार्य संपन्न होता है। विभिन्न सीखने के एप हैं जैसे, ई डी एक्स, मेमरैस, बैजुस, टीचर किट आदि।

इस तरह कंप्यूटर आधारित अध्ययन सामग्री का उपयोग हिन्दी भाषा शिक्षण - अधिगम में किया जाता है।

छात्रों, हमने इस इकाई में कंप्यूटर अध्ययन सामग्री के बारे में जानकारी दी है आशा है कि यह इकाई आप के लिए उपयोगी साबित होगा ।

४.३.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१. परीक्षा फल, अंकचिट, प्रमाण पत्र।

२. सुधारात्मक ३. वर्ड प्रोसेसिंग ४. सीडीज़, वेबसाइट।

२.१. ई-मैल एक संदेश है। २. लिखित संदेश द्वारा।

३. वेबसाइट एक ऐसी अनुदेशन जगह है, जहाँ वेब पेजस और यू.आर.एल. द्वार सूचित दस्तावेज तथा वेब संसाधन आदि का संग्रह होता है।

४. टिम बरनरस ली ५. क्रोम, सफारी, फायर फाक्स आदि।

३.१. उपग्रह २. संपूर्ण राष्ट्र ३. एम लर्निंग ४. भारत, अमेरिका ५. सीखने के

४.३.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

उत्तर दीजिए -

१. हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर के महत्व की चर्चा कीजिए|

२. हिन्दी भाषा शिक्षण में अंतरजाल की उपयोगिता के बारे में लिखिये?

४.३.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी शिक्षण -

डा उमा मंगल (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

२. रसायन शास्त्र बोधने -

नीलकंठ रबनाल (२००३-०४)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

३. www.mobilelearningupdate.com

४. http://blog.capterra.com

५. googleweblight.com

६. www.hindikiduniya.com

७. हिन्दी शिक्षण - डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर.लाल बुक डिपो. मेरठ

८. Computer assisted learning – Wikipedia

९. विजयवाणी समाचार पत्र - दिनांक - ०४/०४/१८.

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई ४ : हिन्दी भाषा का मूल्यांकन

इकाई की संरचना

४.४.१. सीखने के उद्देश्य

४.४.२. प्रस्तावना

४.४.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

४.४.३.१. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन का अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्य

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

४.४.३.२. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन का महत्व और सोपान

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

४.४.३.३. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन की विधियों और साधन

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

४.४.४. सारांश

४.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

४.४.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

४.४.७. संदर्भ पुस्तकें

४.४.१. सीखने के उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- हिन्दी भाषा के मूल्यांकन का अर्थ और परिभाषा को स्पष्ट करेंगे।
- हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के उद्देश्य को पहचानेंगे।
- हिन्दी भाषा के मूल्यांकन का महत्व और सोपान का विश्दीकरण करेंगे ।
- हिन्दी भाषा के मूल्यांकन की विधियाँ और साधन का वर्णन करेंगे।

४.४.२. प्रस्तावना -

छात्रों, आप मूल्यांकन के बारे में जानते हैं। 'अत्यंत प्राचीन काल से ही मूल्यांकन शिक्षा क्षेत्र में किसी न किसी रूप में प्रचलित रहा है' - इस कथन से संबंधित अपना विचार सुनाइए -

छात्रों का संभावित उत्तर -

प्राचीन समय में स्पर्धा द्वारा छात्रों की योग्यता का निर्णय लिया जाता था।

गुरुकुल में गुरु प्रश्न पूछकर छात्र के पूर्व ज्ञान की परीक्षा लेते थे।

अच्छा, आप के उत्तर के साथ साथ प्राचीन समय में मूल्यांकन के बारे में और विचार जानेंगे -

जब कोई छात्र विद्या प्राप्ति के हेतु किसी विद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहता है तो सर्वप्रथम द्वार पंडित उसके अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन करता था। मूल्यांकन में सफलता प्राप्त करके ही वह छात्र उस विद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सकता था।

वेद काल में भी जब कोई छात्र किसी गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करना चाहता तो विद्यार्थी गुरु प्रश्न पूछकर उसके पूर्व ज्ञान की परीक्षा किया करता था और इस बात की जाँच करता था कि क्या उस विद्यार्थी का स्तर गुरुकुल की शिक्षा के अनुरूप है।

अनेक शिक्षा तज्ञों ने बालक के सर्व सामर्थ्य को मापने के उद्देश्य से परीक्षा तथा मापन शब्द के बदले मूल्यांकन शब्द का प्रयोग किया। मूल्यांकन की व्यापकता मापन से अधिक है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक हो सकती है तथा छात्रों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति में किस सीमा तक प्रगति की है, इसका पता मूल्यांकन से ही लगाया जाता है।

मूल्यांकन का अर्थ -

किसी व्यक्ति या पदार्थ में विद्यमान गुणों / लक्षणों / विशेषताओं का मूल्य आँकने की प्रक्रिया मूल्यांकन, कहलाती है। शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के स्तर की जाँच करने की प्रक्रिया को शैक्षिक मूल्यांकन कहा जाता है।

परिभाषाएँ -

क्लार और स्टार के अनुसार -

" मूल्यांकन वह निर्णय या विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है " ।

क्विलन और हेन्ना के अनुसार -

" विद्यालय द्वारा एक बालक के व्यवहार परिवर्तन के विषय में सबूतों का संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है " ।

जे. डब्ल्यु राइटस्टोन -

" मूल्यांकन में व्यापक व्यक्तित्व से संबंधित परिवर्तनों तथा शिक्षा कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों पर बल दिया जाता है।इसमें केवल विषयवस्तु का मूल्यांकन ही नहीं बल्कि दृष्टिकोणों, रुचियों, आदर्शों, चिंतन विधियों, कार्यों, आदतों, वैयक्तिक तथा सामाजिक समायोजन, योग्यताओं का मूल्यांकन भी सम्मिलित है "

मूल्यांकन परीक्षा पर आधारित है। मूल्यांकन का क्षेत्र परीक्षा से भी अधिक व्यापक होता है क्यों कि परीक्षा का संबंध विषयवस्तु की जाँच से होता है। उद्देश्य, सीखने के

अनुभव व मूल्यांकन तीनों का समन्वय व मिलान ही मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार है। यह प्रणाली शिक्षण का केन्द्र बिन्दु है और मूल्यांकन शिक्षण का अभिन्न अंग है।

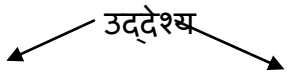

अभ्यास -

नीचे के पैराग्राफ को पढिए और संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए -

प्राचीन समय से ही गुरुकुल में शिक्षार्थी को प्रवेश देने के लिए उसका मूल्यांकन किया जाता था। किसी व्यक्ति / वस्तु में स्थित गुणों / लक्षणों का मूल्य आँकने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है। क्लार और स्टार के अनुसार - मूल्यांकन वह निर्णय / विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है। परीक्षा का संबंध विषय वस्तु की जाँच से है। उद्धेश्य, सीखने के अनुभव व मूल्यांकन तीनों का मिलान ही मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार है।

१ मूल्यांकन किसे कहते हैं?
२ मूल्यांकन के बारे में क्लार और स्टार की परिभाषा क्या है?
३ मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार क्या है?
४ मूल्यांकन का क्षेत्र परीक्षा से भी व्यापक है कैसे?

हिन्दी भाषा मूल्यांकन का उद्देश्य -

छात्रों, आपको हिन्दी भाषा मूल्यांकन के उद्देश्यों की जानकारी है। आप हिन्दी भाषा मूल्यांकन के उद्देश्यों की सूची बनाइए -

छात्र का उत्तर ---

- **छात्रों की रुचि तथा बौद्धिकता का पता लगाना।**
- **छात्रों की सीखने की योग्यता को पहचानना आदि।**

आइए देखें कुछ और मूल्यांकन के उद्देश्यों को -

- हिन्दी भाषा संबंधी समस्त ज्ञान की जाँच करना।
- छात्रों की प्रयोग कुशलता, उनके अर्जित ज्ञान की थाह लगाना।
- छात्रों की मनोवृत्ति, धारण शक्ति, स्मरण शक्ति, कार्यक्षमता, रुचि एवं जीविकावृत्ति का पता लगाना ।
- अध्यापन विधि, अध्यापक क्षमता, अध्यापन अवधि के औचित्य-अनौचित्य का ज्ञान कराना।
- छात्रों को मार्गदर्शन देना।
- सीखने की सामग्रियों के उपयोग का महत्व बताना।

- छात्रों के सीखने के दोषों का पता लगाना।
- छात्रों की उपलब्धि का समग्ररूप से अवलोकन करना।
- छात्रों में स्वमूल्यांकन की योग्यता का विकास करना।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

नीचे के वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

1. प्राचीन काल में छात्रों को विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए द्वार पांडित उसके ज्ञान को जाँचते थे।
2. मूल्यांकन की व्यापकता मापन से अधिक नहीं है।
3. शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के स्तर की जाँच प्रक्रिया को मूल्यांकन कहा जाता है।
4. छात्रों के सीखने की योग्यता का पता लगाना ही मूल्यांकन का उद्देश्य है।
5. मूल्यांकन, शिक्षा का अभिन्न अंग नहीं है।

४.४.३.२. हिन्दी भाषा मूल्यांकन का महत्व -

छात्रों, आइए हिन्दी भाषा मूल्यांकन के बारे में विचार करेंगे -

किसी न किसी रूप में छात्र-छात्राओं का मूल्यांकन आवश्यक है। इसके महत्व अधोलिखित हैं --- मूल्यांकन द्वारा यह पता लगाया जाता है कि शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति किस स्तर तक हुई है, किसी निर्धारित ज्ञान, कौशल, योग्यताओं को छात्र ने किस सीमा तक ग्रहण किया है?

अतः शिक्षा में शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए मूल्यांकन का विशेष महत्व होता है।

- सामान्य रूप से शिक्षण प्रक्रिया मूल्यांकन से प्रारंभ होकर मूल्यांकन से ही समाप्त होता है।
- मानसिक दृष्टि से छात्र - छात्राओं के विकास का पता लगाया जाता है।
- शिक्षकों की कुशलता एवं सफलता का मापन करता है।
- इसके आधार पर छात्रों के वर्गीकरण में ठीक ठीक सूचना प्राप्त होती है।
- इसके द्वारा हमें शिक्षण - विधियों की उपादेयता तथा सीमाओं का ज्ञान हो जाता है।
- इसके द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पाठ्यक्रम में समुचित परिवर्तन किया जा सकता है।
- मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रियाओं के महत्व को छात्र के व्यवहार - परिवर्तन को उद्देश्यों की दृष्टि से आँका जाता है।
- इसके द्वारा छात्र परिश्रम करने को प्रेरित होता है।
- मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक है, जिस के अंतर्गत छात्रों के सभी पक्ष शारीरिक, मानसिक, नैतिक आदि मूल्यांकन हेतु आते हैं। मूल्यांकन में गुण और परिमाण दोनों निहित हैं।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास को अधिकतम गतिशील बनाए रखता है।

अभ्यास ---

इन वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

१. छात्रों के सभी पक्ष का मूल्यांकन संभव है।

२. शिक्षण प्रक्रिया मूल्यांकन से प्रारंभ होकर मूल्यांकन से ही समाप्त होती है।

३. मूल्यांकन द्वारा छात्र परिश्रम करने को प्रेरित नहीं होता है।

४. मूल्यांकन में गुण और परिमाण दोनों निहित हैं।

हिन्दी भाषा शिक्षण में मूल्यांकन के सोपान -

छात्रों,

मूल्यांकन के कुछ सोपान हैं। उसके बारे मे जानने के लिए कोशिश करेंगे -

शिक्षक को मूल्यांकन के अंतर्गत निम्नलिखित सोपानों का अनुगमन करना चाहिए -

मूल्यांकन के चार सोपान हैं जो एक दूसरे पर पारस्परिक रूप से निर्भर करते हैं -

१. शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिपादन -

छात्र की सामाजिक स्थिति, विषयवस्तु, शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखकर उद्देश्यों का निर्धारित करना चाहिए।

व्यवहार परिवर्तन के रूप में उद्देश्यों को सफल रूप से तभी निर्धारित किया जा सकता है जब उपर्युक्त तत्वों को भली प्रकार समझ लिया जाये। मूल्यांकन कर्ता को यह स्पष्ट रूप में ज्ञान होना चाहिए कि व्यवहार परिवर्तन किस रूप और किस सीमा तक लाना है, इससे यह जानने में सरलता होगी कि व्यवहार में वांछित परिवर्तन आया है या नहीं। विषयवस्तु और व्यवहार परिवर्तन दोनों को समान रूप से मानना आवश्यक है।

शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया जाता है -

- **सामान्य उद्देश्य** - जैसे ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक
- **विशिष्ट उद्देश्य -** (व्यावहारिक रूप में होना है) जैसे- भाषा (हिन्दी), विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास तथा कला आदि से संबंधित है।

मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों पर ही अधिक बल दिया जाता है।

२. सीखने के अनुभव का सृजन -

उद्देश्यों को पहचान लेने और उनका निर्धारण कर लेने के बाद सीखने के (अधिगम) अनुभव की ओर ध्यान देना है। एक ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना है जिसमें बालक वांछित क्रिया कर सके। एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक अनुभवों की योजना तैयार करनी पड़ती है। अनुभव की योजना के समय बालक की आयु, लिंग, परिवेश आदि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

इन्हीं के आधार पर सीखने के अनुभवों के कुछ प्रमुख तथा तथ्थ प्रक्रियाओं की व्यवस्था करनी चाहिए -

जैसे - शिक्षण के विषय उद्देश्य, शिक्षण सूत्र, सहायक सामग्री, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों तथा प्रविधियाँ, पाठ्यपुस्तकें व गृहकार्य, शिक्षक एवं छात्र

सीखने के अनुभवों के सृजन से बालकों की निष्पत्तियों द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। शिक्षण तथा सीखना अनुभवों के द्वारा अधिक प्रभावशाली होता है। सीखने की क्रियाओं तथा अनुभवों के सृजन की व्यवस्था शिक्षक द्वारा ही की जाती है। शिक्षक संपूर्ण सीखने की क्रियाओं का नियंत्रण करता है। शिक्षक पाठयोजना की व्यवस्था सीखने के अनुभवों के सृजन के लिए करता है।

विभिन्न उपकरणों के माध्यम से सबूतों को प्रदान करना ---

उद्देश्य एवं अधिगम(सीखना) अनुभव की योजना तैयार होने के बाद मूल्यांकन कर्ता को उपयुक्त उपकरण के चयन अथवा विकास की ओर प्रयत्न करना चाहिए। इन उपकरणों को प्रयोग कर सबूतों को एकत्रित करें। इन सबूतों के आधार पर व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना चाहिए।

३. व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन -

सीखने के अनुभवों के सृजन से छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होता है। छात्र के व्यवहार परिवर्तन उसके व्यक्तित्व के सभी पक्षों से संबंधित होता है । इसके अंतर्गत बाह्य, आंतरिक दोनों प्रकार के व्यवहार सम्मिलित हैं। छात्र के व्यवहार के **३ मुख्य पक्ष / क्षेत्र हैं - ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक |**

ये क्षेत्र शिक्षा के कुछ विशेष गुणों, रुचियों, मूल्यों के विकास करने में समर्थ होते हैं। शिक्षक इन्हीं के आधार पर अपने शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति का पता लगाता है। व्यवहार - परिवर्तन का मूल्यांकन शिक्षण के उद्देश्यों की दिशा में सीखने की क्रियाओं तथा अनुभवों द्वारा किया जाता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

1. शिक्षा में मूल्यांकन का विशेष महत्व किन-किन के लिए होता है?
2. मूल्यांकन क्षेत्र में छात्र के कौन-कौन से पक्ष मूल्यांकन हेतु आते हैं?
3. शिक्षा का विशिष्ट उद्देश्य किस रूप से होना चाहिए?
4. मूल्यांकन के कितने सोपान हैं?
5. छात्र के व्यवहार के तीन मुख्य क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

४.४.३.३. हिन्दी भाषा मूल्यांकन की विधियाँ तथा साधन -

छात्रों, मूल्यांकन की विधियों और साधनों की चर्चा करेंगे -

हिन्दी शिक्षण में पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण होता है और छात्रों के व्यवहार में आए परिवर्तनों के आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हुई या नहीं। छात्रों के इन व्यावहारगत परिवर्तनों, रुचियों,

आकांक्षओं, रुझानों एवं योग्यताओं की जाँच करने के लिए शिक्षक विभिन्न मूल्यांकन विधियों एवं साधनों की सहायता लेता है।

मूल्यांकन की विधियाँ-

१. परीक्षा -

यह मूल्यांकन की सबसे महत्वपूर्ण विधि है। सर्वप्रथम चीनी लोगों ने ही परीक्षा पद्धति का प्रयोग किया था। अमेरिका के बोस्टन में पहलीबार प्रश्न पत्र की रचना की गयी थी। लार्ड मेकाले ने भारत में परीक्षा पद्धति का प्रचलन किया। वहीं से पेपर पेन्सिल परीक्षाओं का विकास हुआ।

छात्र के ज्ञान, कुशलता, बुद्धि आदि को क्रमपूर्वक ढंग से सूचित करनेवाली व्यवस्था को परीक्षा कहते हैं। यह छात्र के प्राप्त अनुभवों के स्तर बतानेवाला साधन या व्यवस्था है।

कक्षा में पढ़ाए गए विषय के आधार पर छात्रों के सम्मुख कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं और उनके उत्तर के आधार पर छात्रों की विषयगत योग्यताओं / उपलब्धियों की जाँच की जाती है।

परीक्षा प्रकार ---

१. लिखित परीक्षा

छात्रों की उपलब्धियों एवं व्यवहार - परिवर्तन की जाँच लिखित रूप से की जाती है। एक समय में लाखों छात्रों को विभिन्न केन्द्रों में प्रश्न पत्र वितरित किये जाते है छात्र उत्तर - पुस्तिकाओं पर प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं और बाद में परीक्षक अपनी सुविधानुसार उनकी जाँच कर योग्यता का मापन करते हैं। सभी कार्य का लिखित रूप में अभिलेख सुरक्षित रहता है। कभी भी आवश्यकता पड़ने पर उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है।

लिखित परीक्षा के तीन रूप हैं -

१. निबंधात्मक परीक्षा

इसमें प्रश्नों का उत्तर छात्रों को विस्तृत निबंध के रूप में देना है। इस परीक्षा द्वारा छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच होती है। पढ़कर अर्थग्रहण, विचारों का संग्रह, लिखने की गति आदि का मूल्यांकन होता है।

२. लघु उत्तर परीक्षा

यह निबंधात्मक परीक्षा का ही परिष्कृत रूप है। प्रश्न का उत्तर एक, दो, तीन या चार पंक्तियों में होता है। यह परीक्षा अधिकतर पाठ्यक्रम से संबंधित ज्ञान की जाँच करती है। उत्तर अधिक निश्चित होते हैं। छात्रों की बोधशक्ति, वाक्य रचना की जाँच होती है पर तर्क, विचार, मानसिक शक्तियों की जाँच नहीं होती है, न ही भाषा, शैली की।

३. वस्तुनिष्ठ परीक्षा -

इस परीक्षा में उत्तर किसी चिह्न विशेष या एक-दो शब्द के द्वारा दिए जाते हैं। निबंधात्मक परीक्षा के दोषों को दूर करने की दृष्टि से इसका विकास किया गया है। कम

समय में अधिक प्रश्न पूछे जाते हैं| प्रश्न पूरी पाठ्य चर्या से संबंधित है। प्रश्नों के उत्तर निश्चित होने के कारण, अगर उत्तर सही निकले तो परीक्षक को निश्चित अंक देने पड़ते हैं । ये परीक्षाएँ विश्वासनीय एवं प्रामाणिक होती हैं।
ये परीक्षाएँ केवल छात्रों की स्मरण शक्ति की जाँच करती हैं न कि छात्रों के विचार, तर्क, मानसिक शक्तियाँ, भाषा, शैली आदि की जाँच ।
अतः वस्तुनिष्ठ परीक्षा पर पूरी तरह से निर्भर न रहकर निबंधात्मक, लघुउत्तर, परीक्षाओं के साथ समुचित प्रयोग करना चाहिए।

II मौखिक परीक्षा -

इस परीक्षा में मौखिक रूप से छात्रों से प्रश्न पूछकर उनके उत्तर भी मौखिक रूप से ही देने को कहा जाता है। मौखिक रचना ही लिखित रचना का आधार है। अतः हिन्दी के मूल्यांकन में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना भी उतना ही आवश्यक है जितना लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना। छात्रों के उत्तर देने के ढंग के आधार पर उनका मूल्यांकन कर लिया जाता है।

मौखिक परीक्षा द्वारा बोलने की योग्यता, उच्चारण, हाव-भाव, स्वर के उतार चढ़ाव, वाचक योग्यता आदि की जाँच की जाती है।

इस परीक्षा की सबसे बड़ी परेशानी है यह एक एक छात्र से अलग-अलग प्रश्न पूछने के कारण समय अधिक लगता है। परन्तु उपयोगिता की दृष्टि से लिखित परीक्षा के साथ सहायक के रूप में इसे भी स्वीकार करना चाहिए।

III प्रायोगिक परीक्षा -

इस परीक्षा में प्रयोग के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। छात्र कुछ कार्य करके दिखाते हैं। प्रयोग के सोपान और समय को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जाता है। छात्रों को कुछ क्रियाएँ करनी पड़ती है उनके कौशलों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। विज्ञान विषय वस्तु की उपलब्धि जाँच ने के लिए यह परीक्षा अनिवार्य और उत्तम है | छात्र अपने कार्य का एक नमूना परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसके आधार पर संबंधित क्षेत्र / विषय में उसकी योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है।

IV उपलब्धि परीक्षा -

इस परीक्षा का शिक्षा क्षेत्र में आधुनिक प्रयोग होता है। उपलब्धि शब्द का विशालार्थ जैसे ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, व्यवहार में परिवर्तन के रूप में प्रयोग होता है। यह सीखने के उद्देश्यों के उपलब्धि स्तर को निर्धारित करने वाली परीक्षा है। स्कूल की परिक्षाएँ - लघुपरीक्षा, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक आदि उपलब्धि परीक्षाएँ हैं। इसका मुख्य लक्ष्य है कि - शिक्षण उद्धेश्य कहाँ तक सफल हुए हैं, छात्र कितने उद्देश्य प्राप्त किये हैं और उन उद्देश्यों के बारे में कार्य करना है।

V नैदानिक परीक्षा -

अधिगम प्रक्रिया में छात्र की योग्यता और कठिनाई का पता लगाने में यह परीक्षा सहायक है। उद्देश्यों की प्राप्ति होने पर छात्र से प्रतीक्षित व्यवहार के पक्ष / इकाई को पहचानकर, किस पक्ष / इकाई में उन्हें कठिनाई है - इनके बारे में पता लगाने में सहायक है। पता लगाये हुए अंश के आधार पर शिक्षक , छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण दे सकता है। रचनात्मक मूल्यांकन में यह परीक्षा प्रमुख पात्र निभाती है।

VI बुद्धि परीक्षा -

छात्रों के शैक्षिक, व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए, बुद्धि परीक्षा का प्रयोग करके बुद्धि सामर्थ्य का निर्धारण किया जा सकता है। बुद्धि परीक्षा द्वारा मूल्यांकन सुगम बनता है।

२. पर्यवेक्षण -

छोटे बालक के मूल्यांकन के लिए पर्यवेक्षण किया जाता है। उन्हें कोई परीक्षा नहीं दी जा सकती है और उनके व्यवहार वास्तविक होता है। शैक्षिक विचारों के मूल्यों, भावनाओं के विकास की प्रक्रिया का पर्यवेक्षण शिक्षक द्वारा किया जाता है। पर्यवेक्षण का प्रयोग छात्र की योग्यता तथा व्यवहारों के संबंध में किया जाता है।

परीक्षा -

इन कथनों के बारे में अपना अभिमत हाँ / ना में दीजिए ---

१. निबंधात्मक परीक्षा में छात्रों को उत्तर विस्तृत रूप में देना है।
२. लघु उत्तर परीक्षा में भाषा, शैली, तर्क, विचार की जाँच होती है।
३. वस्तु निष्ठ परीक्षा छात्रों के तर्क, विचार, भाषा शैली की जाँच नहीं करती है।
४. शिक्षक को वस्तुनिष्ठ परिक्षा के साथ अन्य निबंधात्मक, लघु उत्तर परीक्षा का भी समुचित प्रयोग करना चाहिए।
५. पर्यवेक्षण में शैक्षिक विचार, भावनाओं के विकास की प्रक्रिया का पर्यवेक्षण नहीं परीक्षा की जाती है|

(उत्तर - कथन २ और ५ को छोडकर अन्य कथन सही हैं)

हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के साधन -

छात्रों, हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के साधनों की सूची बनाइए -

छात्र का उत्तर --- संचित अभिलेख, प्रश्नपत्र ।

आइए इन साधनों के साथ अन्य साधनों की चर्चा करेंगे -

१. गृहकार्य -

मूल्यांकन में गृहकार्य एक साधन का कार्य करता है।गृहकार्य के रूप में लिखे गए प्रश्नों के उत्तर पाठ का सार, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, कंठस्थ विषय वस्तु को सुनाने आदि क्रियाओं के आधार पर छात्र की भाषागत योग्यताओं के विकास की जाँच की जाती है।

२. निर्धारण मापनी -

इसमें कुछ कथन दिये जाते हैं उनका तीन, पाँच, सात बिन्दुओं तक सापेक्ष निर्णय करना होता है। इसका प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जाता है। शिक्षक प्रत्येक छात्र के मापन के लिए इसका प्रयोग करता है परन्तु शिक्षक को प्रत्येक छात्र से भली प्रकार परिचित होना चाहिए। निर्धरण मापनी के कथन स्पष्ट तथा विशिष्ट व्यवहारों से संबंधित होने चाहिए।
छात्र परिस्थितियों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने में कितना कुशल है, मूल्यों को अपने अंदर किस प्रकार विकसित कर पाया है, आदि का मूल्यांकन निर्धारण मापनी द्वारा किया जाता है।

३. घटनावृत्त -

विद्यालय में घटित होनेवाली दैनिक घटनाओं का विवरण भी बालकों के व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन में सहायता करता है। उन घटनाओं में छात्र की क्या भूमिका रही, उस बात का विवरण छात्रों की भाषागत उपलब्धियों का मापन करने में सहायक होता है।

४. संचित अभिलेख -

इसमें प्रत्येक छात्र के संबंध में सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है | इसमें शैक्षिक प्रगति, मासिक परीक्षा फल, उपस्थिति, योग्यता अन्य विद्यालयी क्रियाओं में भाग लेने का आलेख प्रस्तुत किया जाता है। छात्रों की प्रगति, कमज़ोरी जानने शिक्षक, अभिभावक, प्रधानाचार्य के लिए उपयोगी है।

५. जाँच सूची -

लिखित और मौखिक परिक्षाएँ छात्रों के ज्ञानात्मक पक्ष की परीक्षा करती हैं और प्रयोगात्मक परीक्षाएँ कौशल तथा क्रियात्मक पक्ष की जाँच करती हैं। जाँचसूची का प्रयोग अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा भावात्मक पक्ष के लिए किया जाता है इसमें कुछ कथन दिये जाते हैं उन कथनों के संबंध में छात्रों को हाँ अथवा नहीं में उत्तर अंकित करना होता है। इस प्रकार के कथनों की सूची की रचना करते समय उद्धेश्य स्पष्ट होना चाहिए। प्रत्येक कथन को किसी विशिष्ट उद्देश्य का मापन करना चाहिए जैसे - आपको शिक्षण सोपानों को स्मरण करने में रुचि है। (हाँ / नहीं)

६. प्रश्नावली -

प्रश्नावली प्रश्नों का एक संकलन है। मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक रूप से एक व्यक्ति/समूह के लोगों के एक निर्दिष्ट विषय का सूचना संग्रह है। छात्र की सामाजिक परिस्थिति, परिवार की समस्या,अभिरुचि सामर्थ्य को इसके द्वारा जाना जा सकता है। इससे छात्रों के भविष्य का निर्णय और मार्गदर्शन में सहायता होती है। प्रश्नावली साधन द्वारा

भाषा छात्र की रुचि, मनोभाव, मौखिक अभिव्यक्ति, धैर्य, व्यवहार आदि को मापा जा सकता है।

७. प्रश्नपत्र -

शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हुई, शिक्षण विधियों का प्रयोग ठीक है या नहीं, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप है या नहीं - इस बात की जाँच मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा ही की जाती है और यह मूल्यांकन प्रश्न-पत्र के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन की सफलता प्रश्न पत्र पर निर्भर करता है। प्रश्न पत्र का निर्माण बहुत सावधानी एवं चिंतन मनन के पश्चात् करना चाहिए। प्रश्नों की विविधता, स्पष्टता, स्पष्टनिर्देश, हर प्रश्न के अंक आदि का उल्लेख भी स्पष्ट रूप से होना चाहिए। प्रश्न पत्र में प्रमाणिकता, विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता, व्यावहारिकता आदि गुणों का समावेश आवश्यक है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०३

प्रश्न का उत्तर दीजिए -

1. परीक्षा के तीन प्रकार कौन कौन से हैं ?
2. लिखित परीक्षा के तीन रूप कौन कौन से हैं?
3. प्रश्नावली किसे कहते हैं?
4. जाँच सूची को छात्रों के किन पक्षों के लिए प्रयोग किया जाता है?
5. उपलब्धि परीक्षा किसे कहते हैं ?

४.४.४. सारांश -

नैदानिक मूल्यांकन, उपलब्धि मूल्यांकन की काफी चर्चा कर चुके हैं, आइए संक्षिप्त रूप से देखें -

प्राचीन काल से ही मूल्यांकन प्रचलित रहा है। शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के स्तर की जाँच करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहा जाता है।

क्विल्न और हेन्ना के अनुसार-

विद्यालय द्वार एक बालक के व्यवहार परिवर्तन के विषय में सबूत का संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है। उद्देश्य, सीखने के अनुभव, व मूल्यांकन तीनों का समन्वय ही मूल्यांकन शिक्षण प्रणाली का सार है। छात्रों की रुचि, बौद्धिकता का पता लगाना, सीखने की योग्यता को पहचानना ही हिन्दी भाषा मूल्यांकन के उद्देश्य हैं। मूल्यांकन, छात्रों को परिश्रम करने प्रेरित करता है। छात्रों के सर्वांगीण विकास को अधिकतम गतिशील बनाए रखता है।

हिन्दी भाषा मूल्यांकन के सोपान जैसे - शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिपादन, सीखने के अनुभव का सृजन, विभिन्न उपकरणों द्वारा सबूतों को प्रदान करना, व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन |

हिन्दी भाषा मूल्यांकन की विधियाँ जैसे-परीक्षाएँ-जैसे-लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, प्रयोगिक परीक्षा, नैदानिक परीक्षा, बुद्धि परीक्षा उपलब्धि परीक्षा, पर्यवेक्षण।

हिन्दी भाषा मूल्यांकन के साधन जैसे - संचित अभिलेख, प्रश्नावली, जाँच की सूची आदि।

४.४.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१. सही २. गलत ३. सही ४. सही ५. गलत

२.१. छात्र और शिक्षक २. शारीरिक, मानसिक, नैतिक आदि।

३. व्यवहार परिवर्तन ४. चार सोपान ५. ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक

३.१. लिखित,मौखिक,प्रायोगिक २. निर्बंधात्मक परीक्षा, वस्तुनिष्ठ परीक्षा,लघु उत्तर परीक्षा

३. मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक रूप से एक व्यक्ति / समूह् के लोगों के निर्दिष्ट विषय का सूचना संग्रह है।

४. अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा भावात्मक पक्ष

५. सीखने के उद्देश्यों के उपलब्धि स्तर को निर्धारित करनेवाली परीक्षा है।

४.४.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

उत्तर दीजिए -

१. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए |

२. हिन्दी भाषा के मूल्यांकन के महत्व पर प्रकाश डालिए |

४.४.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. शैक्षणिक मौल्यमापन

डा. एच. वी. वामदेवप्पा (२०१७)

श्रेयस पब्लिकेशनस, दावनगेरे

२. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)

श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

३. कन्नड भाषा बोधना पद्धति

प्रो.एम.एन. हेगड़े (२००८)

प्रदीप प्रकाशन, गदग

४. रसायन शास्त्र बोधने

नीलकंठ रबनाल (२००३)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

५. हिन्दी शिक्षण

डा. शिखा चतुर्वेदी (२००१)

आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

६. हिन्दी शिक्षण

डा. उमा मंगल (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई ५ : उपलब्धि मूल्यांकन और नैदानिक मूल्यांकन

इकाई की संरचना

४.५.१. सीखने के उद्देश्य

४.५.२. प्रस्तावना

४.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ

४.५.३.१. उपलब्धि मूल्यांकन का अर्थ और महत्व

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

४.५.३.२. नैदानिक मूल्यांकन का अर्थ और महत्व

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

४.५.४. सारांश

४.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर

४.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास

४.५.७. संदर्भ पुस्तकें

४.५.१. सीखने के उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के बाद छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- उपलब्धि मूल्यांकन का अर्थ और महत्व को स्पष्ट कहेंगे ।
- नैदानिक मूल्यांकन का अर्थ और महत्व का निरुपण करेंगे।

४.५.२. प्रस्तावना -

छात्रों, आप मूल्यांकन के बारे में जानते है, पिछ्ली इकाई (संख्या - ४) में विस्तार से जानकारी प्राप्त की हैं।

उपलब्धि मूल्यांकन और नैदानिक मूल्यांकन के बारे में कुछ विचार बताइए और देखिए आप के विचार नीचे के अंशों से कहाँ तक मिलते हैं -

मूल्यांकन एक प्रक्रिया है। यह सूचित करता है कि छात्रों में शिक्षण उद्देश्य कहाँ तक सफल हुआ है । मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक है। छात्रों के सारे व्यवहार मापता है। मूल्यांकन छात्रों के व्यवहार का गुणात्मक, परिमाणात्मक विचार से संबंधित है।

मूल्यांकन में उपलब्धि तथा नैदानिक परीक्षाएँ सम्मिलित हैं। मापन के आधार पर मूल्यांकन संभव है। उपलब्धि मूल्यांकन से ज्ञान के किसी संपूर्ण क्षेत्र का मापन होता है।

नैदानिक मूल्यांकन से, ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में छात्र की कठिनाई / सफलता का पता लगाया जाता है।

४.५.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ -

४.५.३.१ उपलब्धि मूल्यांकन का अर्थ और महत्व -

आइए उपलब्धि मूल्यांकन का अर्थ और महत्व की चर्चा करेंगे -

परीक्षाएँ छात्र की प्रगति को मापने के साधन हैं। इन साधनों से छात्रों की उपलब्धि के स्तर को जाना जा सकता है इसलिए मूल्यांकन कार्य में इन परीक्षाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

छात्रों को सीखने प्रेरित करना, छात्रों की समस्या समाधान तथा शिक्षक के शिक्षण की प्रभावात्मकता को जानने उपलब्धि परीक्षाएँ सहायक हैं।

उपलब्धि परीक्षाओं का शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रयोग होता है। उपलब्धि शब्द का प्रयोग विस्तृत अर्थ में होता है जैसे ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, व्यवहार परिवर्तन के रूप में छात्र की उपलब्धि मूल्य निर्धारित करती है। इस मापन के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है जिसे उपलब्धि मूल्यांकन कहा जाता है।

अर्थ - छात्रों के ज्ञान की प्राप्ति का पता लगाने सहायक परीक्षाओं को उपलब्धि परीक्षा कहते हैं । उपलब्धि मूल्यांकन से पता चलता है कि किसी व्यक्ति ने किस विषय का कितना ज्ञान प्राप्त किया है।

उपलब्धि परीक्षा को छात्र का उपलब्धि मूल्य निर्धारित करनेवाली परिक्षा भी कहते हैं। जैसे स्कूल की लघु परीक्षा, त्रैमासिक, सेमिस्टर, अर्धवार्षिक, वार्षिक उपलब्धि परीक्षाएँ आदि।

इसके साथ साथ उपलब्धि परीक्षा के कुछ और प्रकार हैं - मौखिक परीक्षा, क्रियात्मक परीक्षा, निबंधात्मक परीक्षा और वस्तुनिष्ठ परीक्षा।

इसका लक्ष्य - यह पता लगाना है कि निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हुई और छात्रों ने कितना अर्जन किया है।

लिंड्क्विस्ट एवं मन के अनुसार -

" एक सामान्य निष्पत्ति परीक्षा वह है जो एक ही प्राप्तांक द्वारा निष्पत्ति के किसी दिए गए क्षेत्र में छात्र के सापेक्षिक ज्ञान का बोध कराये " ।

उपलब्धि मूल्यांकन छात्र के सामान्य, विशेष प्रवृत्ति तथा संपूर्ण छात्र विकास के बहुविध उद्देश्यों का मूल्यांकन करता है। जिसमें परिकल्पना, कौशल, मनोभाव, वैयक्तिक समायोजन आदि सम्मिलित हैं।

सीखने की परिस्थिति में मनोभाव, रुचि, चिंतनशक्ति, वैयक्तिक सामाजिक समयोजन सम्मिलित हैं तो उपलब्धि को छात्र के पूर्ण विकास के रूप में मूल्यांकन करना चाहिए।

अभ्यास -

इन वाक्यों में सही / गलत को पहचानिए -

१. उपलब्धि परीक्षा से छात्र की उपलब्धि को जाना जाता है।

२. स्कूल की लघु परीक्षा, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा आदि उपलब्धि परीक्षाएँ हैं।

३. उपलब्धि परीक्षा के अंतर्गत निबंधात्मक परीक्षा और वस्तुनिष्ठ परीक्षा नहीं आती हैं।

४. उपलब्धि मूल्यांकन छात्र के बहुविध उद्धेश्यों का मूल्यांकन करता है।

उपलब्धि मूल्यांकन का महत्व -

छात्रों, उपलब्धि परीक्षाओं के मापन के आधार पर उपलब्धि मूल्यांकन का महत्व इस प्रकार हैं -

यह मूल्यांकन -

- कार्य निष्पत्ति की योग्यता बताता है।
- छात्र को चुनने, उनके स्थान तथा वर्गीकरण में सहायक है।
- सलाह, श्रेणी देने में सहायक है।
- उपचार शिक्षण के लिए सूक्त जानकारी देता है।
- शिक्षण के तकनीक सुधारने, पाठ्यक्रम परिष्करण में एक साधन के रुप में कार्य करता है।
- सीखने में रुचि उत्पन्न करता है। शिक्षकों की कार्यकुशलता का पता लगाता है।
- इससे छात्रों में धैर्य, विनय, श्रम की प्रवृत्ति आदि गुणों का विकास होता है। यह किसी भी भावी कार्य में सहायक है।
- छात्रों को पढ़ने एवं कार्य करने की प्रेरणा देता है और उन्हें अध्ययन की ओर उन्मुख करता है।
- शिक्षक को स्वयं अपने अध्यापन का मूल्यांकन करने एवं भविष्य में अध्यापन विधि का सुधार करने में सहायक है।

शैक्षिक उपलब्धि एवं योग्यता में धनात्मक सहसंबंध है। अतः शिक्षक उपलब्धि परीक्षा के आधार पर छात्र की सर्वतोमुख मानसिक योग्यता का पता लगा सकता है। उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए लब्ध प्राप्तंकों को सामने रखा जाता है।

उपलब्धि मूल्यांकन में सूक्ष्म स्तर को नहीं देखा जाता बल्कि प्राप्त कुल अंक मुख्य होता है, सीखने के अंतर अंशों की निपुणता नहीं। छात्र की योग्यता के आधार पर सीखने के अंशों का निर्धारण किया जाता है ।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए -

३. उपलब्धि मूल्यांकन से _____ के किसी संपूर्ण क्षेत्र का मापन होता है।
४. उपलब्धि परीक्षा छात्र की _____ का मूल्य निर्धारित करती है।
५. उप्लब्धि मूल्यांकन छात्र विकास के _____ उद्देश्यों का मूल्यांकन करता है।
६. उपलब्धि मूल्यांकन, शिक्षकों की _____ का पता लगाता है।
७. शैक्षिक उपलब्धि एवं योग्यता में _____ सहसंबंध है।

४.५.३.२. नैदानिक मूल्यांकन का अर्थ और महत्व -

छात्रों, नैदानिक मूल्यांकन का अर्थ और महत्व के बारे में जानेंगे -

अर्थ - सीखने के दोषों का पता लगाने में सहायक परीक्षाओं को नैदानिक परीक्षा कहते हैं। यह छात्रों के अधिगम में होनेवाली समस्याओं तथा कमियों का पता लगानेवाली परीक्षा है। नैदानिक परीक्षाओं के मापन के आधार पर होने वाला मूल्यांकन ही नैदानिक मूल्यांकन है |

रचनात्मक मूल्यांकन में नैदानिक परीक्षा प्रमुख पात्र निभाती है। रचनात्मक अवधि के मूल्यांकन के आधार पर लिए सुधार क्रम से समाधान न मिलने पर सीखने की कठिनाई को दूर करने के लिए प्रयोग करनेवाली विधि को नैदानिक मूल्यांकन कहते हैं।

नैदानिक मूल्यांकन बहुत ही समग्र विस्तृत मूल्यांकन है। नैदानिक मूल्यांकन के लिए विशेषरूप से निर्माण की गई नैदानिक परीक्षाएँ तथा निरीक्षण तंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है।

छात्रगण वाचन या अन्य विषय में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं और कई पर्याय शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग के बाद भी लगातार कठिनाई बढ़े तो विस्तार से कठिनाई के कारणों का पता लगाना है। अगर समस्या तीव्र है तो मनोचिकित्सक, वैद्यकीय तज्ञ, चिकित्सकों की सहायता लेनी है।

नैदानिक मूल्यांकन का उद्देश्य -

छात्रों, नैदानिक मूल्यांकन का उद्देश्य इस प्रकार हैं -

छात्रों को सीखने में पिछड़ने के कारण का पता लगाना और सूक्त उपचार क्रम का निर्माण करना है।

नैदानिक परीक्षा में प्राप्त विस्तृत विश्लेषण से छात्र की आम कमजोरियों के कारण का पता चलेगा और उनके प्रति कार्य की विधि की ओर संकेत होगा ।

नैदानिक परिक्षा के विकास में दो चरण हैं -

- जटिल क्रिया का विश्लेषण
- विश्लेषण के बाद प्रत्येक उप-भाग के लिए परीक्षा की रचना।

छात्र एक विषय में प्राप्त अंक दूसरे विषयों से कम है तो वहाँ निदानात्मक परीक्षा द्वारा ज्ञात किया जाता कि कमजोरी कहाँ पर है और छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाई को दूर करने लिए उपचार शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। उपचारात्मक शिक्षा दोष निदान पर आधारित है।

अभ्यास -

इन कथनों के बारे में विचार करके अपना सहमत / असहमत को सूचित कीजिए -

	सहमत	**असहमत**
१. रचनात्मक मूल्यांकन में नैदानिक परीक्षा प्रमुख पात्र निभाती है।		
२. नैदानिक परीक्षा से छात्र की कमज़ोरी का पता लगता है।		
३. उपचारात्मक शिक्षा दोष निदान पर ही आधारित है।		
४.छात्र की समस्या तीव्र होने पर भी शिक्षक अपने आप निवारण कर सकता है।		

नैदानिक मूल्यांकन का महत्व -

छात्रों, नैदानिक मूल्यांकन के महत्व के कुछ विचार सुनाइए और देखिए आपके विचार नीचे के अंशों से मिलते हैं या नहीं -

- नैदानिक मूल्यांकन छात्र की योग्यता, कठिनाई का पता लगाता है।
- उद्देश्यों की प्राप्ति होने पर छात्रों से प्रतीक्षित व्यवहार की इकाई / पक्ष को पहचान कर, उसमें छात्र की कठिनाई का पता लगाने में सहायक है, इसके आधार पर शिक्षक उपचारात्मक शिक्षण दे सकता है।
- एक/अनेक क्षेत्र में छात्रों की कमियाँ एवं उसकी शक्ति का बोध कराता है।

नैदानिक मूल्यांकन शिक्षक को यह निर्धारित करने में सहायक है कि शिक्षण कहाँ तक सफल हुआ और कहाँ असफल ।

- यहाँ दोषों को वैज्ञानिक रूप से समझ्कर उपचारात्मक शिक्षा दी जाती है ।
- शिक्षण और सीखने को प्रभावित करता है।
- पाठ्य विषय के दोष को भी पता लगाता है।
- शिक्षक के शिक्षण और छात्र के अध्ययन की कमियों को दूर करके आसान बनाता है।
- शिक्षक की निपुणता को बढ़ाता है।
- छात्रों के दोषों का पता लगाने के साथ उनकी उपलब्धि और सीखने की योग्यता को बताता है।
- उद्देश्यों को स्पष्ट करता है और छात्रों का विशेष मार्गदर्शन भी करता है।

- सीखने की कठिनाई को प्रयोगिक आधार देता है।
- क्रमानुसार विषय का परिचय कराता है।

नैदानिक मूल्यांकन में सूक्ष्म स्तरों को ध्यान में रखा जाता है। यहाँ एक-एक उप परीक्षा से प्राप्त अंक मुख्य होता है। निर्दिष्ट सीखने के दोष का पता करने न्यूनतम सीखने के अंश होतो उसी से आरंभ करना है।

उपचार शिक्षण में, छात्र में होनेवाले व्यावहारगत प्रगति का लगातार लिखकर रखना आवश्यक है। यह अनुसरण कार्य मूल्यांकन के लिए सहायक होता है।

नैदानिक मूल्यांकन उद्देश्य आधारित है। यह मूल्यांकन ही अंतिम नहीं, यह अंतिम लक्ष्य की ओर जानेवाला मार्ग है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

१. नैदानिक मूल्यांकन किसे कहते हैं?
२. नैदानिक मूल्यांकन को सुचारु रूप से निर्माण करने में किन-किन अंशों का इस्तेमाल किया जाता है?
३. छात्रों की समस्या तीव्र होने पर किन किन की सहायता लेनी पड़ती है?
४. नैदानिक मूल्यांकन में दोषों को वैज्ञानिक रूप से समझकर कौन सी शिक्षा दी जाती है?
५. नैदानिक परीक्षा के विकास के कितने चरण हैं?

४.५.४. सारांश -

आइए, पूरी इकाई पर एक और नज़र डालें --

मूल्यांकन एक प्रक्रिया है। छात्रों के व्यवहार का गुणात्मक और परिमाणात्मक विचार से संबंधित है। मूल्यांकन में उपलब्धि तथा नैदानिक परीक्षाएँ हैं। इन साधनों से छात्रों की उपलब्धि स्तर तथा सीखने के दोषों का पता लगाया जा सकता है।

छात्रों के ज्ञान की प्राप्ति का पता लगाने में सहायक परीक्षाओं को उपलब्धि परीक्षा कहते हैं । उपलब्धि मूल्यांकन छात्र के सामान्य, विशेष अभिवृत्ति तथा संपूर्ण छात्र विकास के बहुविध उद्देश्यों का मूल्यांकन करता है। छात्र को चुनने, उनके स्थान तथा वर्गीकरण में यह मूल्यांकन सहायक है |

सीखने के दोषों का पता लगाने में सहायक परीक्षाओं के आधार पर नैदानिक मूल्यांकन किया जाता है। यह छात्रों के अध्ययन में होनेवाली समस्याओं का पता लगानेवाला मूल्यांकन है। नैदानिक परीक्षा, रचनात्मक मूल्यांकन में प्रमुख पात्र निभाती है। नैदानिक मूल्यांकन शिक्षक को यह निर्धारित करने में सहायक है कि शिक्षण कहाँ तक सफल हुआ और कहाँ तक असफल।

४.५.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१. ज्ञान २. उपलब्धि ३. बहुविध ४. कार्यकुशलता ५. धनात्मक

२.१. सीखने के दोष का पता लगाने में सहायक नैदानिक परीक्षाओं के मापन पर आधारित मूल्यांकन को नैदानिक मूल्यांकन कहा जाता है।

२. नैदानिक परीक्षाएँ और निरीक्षण तंत्र ३. मनोचिकित्सक, वैद्यकीय तज्ञ, चिकित्सक, ४. उपचारात्मक शिक्षण, ५. दो

४.५.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास -

प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

1. नैदानिक मूल्यांकन के बारे में संक्षिप्त रूप से लिखिए।
2. उपलब्धि मूल्यांकन के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

४.५.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी भाषा शिक्षण

भाई योगेन्द्र जीत (२०१२)

श्री. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

२. शैक्षणिक मौल्यमापन

डा. एच.वी. वामदेवप्पा (२०१७)

श्रेयस पब्लिकेशन, दावन गेरे

३. रसायन शास्त्र बोधने

नीलकंठ रबनाल (२००३-०४)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

3. 1.https://en.wikipedia.org/wiki/achievement test
2.https://www.tandfonline.com/dai/pdf/10
3.https://www.verywellmind.com

खण्ड ४ : बोधना सामग्रि और मौल्यमापन

इकाई ६ : हिन्दी भाषाभ्यास की अनुदेशात्मक सामग्री

इकाई की संरचना

४.६.१. सीखने के उद्देश्य
४.६.२. प्रस्तावना
४.६.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ
४.६.३.१. अनुदेशात्मक सामग्री - समाचार पत्र -पत्रिकाओं का महत्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०१
४.६.३.२. अध्यापक द्वारा रचित हिन्दी भाषाभ्यास की अनुदेशात्मक सामग्री और हिन्दी भाषा सीखने और सिखाने में समाचार पत्रों का भागित्व
आपकी प्रगति की जाँच - ०२
४.६.४. सारांश
४.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर
४.६.६. इकाई समाप्ति का अभ्यास
४.६.७. संदर्भ पुस्तकें

४.६.१. सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन अंशों के योग्य होंगे -

- समाचार पत्र - पत्रिकाओं के महत्व का स्पष्टीकरण देंगे।
- अध्यापक द्वारा रचित हिन्दी भाषाभ्यास की अनुदेशनात्मक सामग्री का वर्णन करेंगे।
- हिन्दी भाषा सीखने और सिखाने में समाचार पत्रों के भागित्व की चर्चा करेंगे।

४.६.२. प्रस्तावना -

प्रिय छात्रों,

प्राचीन काल से शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए दृश्य - श्रव्य साधनों का प्रयोग करते आ रहे हैं। गुरुकुलों में विभिन्न विद्या ज्ञान देने के लिए यथार्थ परिस्थितियों का निर्माण कर उसमें छात्रों को अभ्यास कराते थे। आज शिक्षण सफल बनाने में अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

छात्र, आप कुछ अनुदेशात्मक सामग्री की सूची बनाइए

छात्र - चित्र, चार्ट् आदि।

देखिए आपकी सूची में ये सामग्रियाँ हैं ---

अनुदेशनात्मक सामग्री जैसे रेडियो, दूरदर्शन , चलचित्र, वीडियो, नाटक, शिक्षण मशीन, कंप्यूटर, चित्र, चार्ट, संदर्भग्रंथ, पूरक पुस्तक, समाचार पत्र - पत्रिका आदि हिन्दी भाषा शिक्षण प्रक्रिया को रोचक, आकर्षक, उद्‌धॆश्यपूर्ण, प्रभावशाली बनाने में सहायता की जा सकती हैं।

४.६.३. सीखने के अंश और सीखने की क्रियाएँ-

४.६.३.१. समाचार पत्र एवं पत्रिका का महत्व -

समाचार पत्र -

छात्रों, आप समाचार, पत्र - पत्रिकाओं के बारे में जानते हैं। इनके महत्व के बारे में अपना विचार बताइए और नीचे के विचारों से मिलाकर देखिए आप कहाँ तक सही हैं -

समाचार पत्र लेखन द्‌वारा प्रसारित एक समूह माध्यम है। ऍतिहासिक रूप से पत्र माध्यम ही प्रथम माध्यम है। यह शिक्षा की दृष्टि से जनता को शिक्षित करनेवाला माध्यम है । यह माध्यम सारे मानव कुल की भलाई के लिए काम करता है।

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री की भूमिका अदा करती हैं।

मुद्रणकला मानव के लिए एक वरदान है। समाचार पत्र प्रजातंत्र की रक्षा करने वाला प्रबल एवं प्रभावकारी माध्यम है ।

राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय समाचार और घटनों का संग्रह करके और अनेक महत्व के आधार पर वर्गीकरण करके प्रकाशित करने का माध्यम ही समाचार पत्र है।

समाचार पत्र को अंग्रेजी में NEWS PAPER कहते है। इसका मतलब है उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण (North, East, West, South) दिशाओं के विषय देता है। समाचार पत्र सामान्यतः दैनिक, साप्ताहिक, एक सप्ताह में दो बार भी निकलते हैं | समाचार पत्र वर्तमान समाचार को प्रजा में प्रसारित करके शिक्षा देता है। इसमें शिक्षा, कला, साहित्य, विज्ञान, नाटक आदि के बारे में लेखन निकलते हैं। यह जीवन के हर क्षॆत्र व विषय संग्रह करके ज्ञानार्जन का अवसर देता है।

इसी प्रकार शिक्षा और मनोरंजन की पत्रिकाएँ भी निकलती हैं। पत्रिकाएँ साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक रूप में प्रकाशित होती हैं। इनमें समाचार गहराई से होता है। अनेक बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं । स्कूल पत्रिका छात्रों की भावनाओं को लिखित रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करने और उनमें अच्छे गुणों के विकस के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। स्कूल पत्रिका में बच्चे लघु कहानियाँ, निबंध, कविताएँ, रेखाचित्र, व्यंग्यचित्र, आदि लिख सकते हैं। स्कूल पत्रिका में कुछ उपयोगी विचारों का संग्रह, प्रचलित विषयों पर नोट तथा

जानकारी, चुटकले, स्कूल स्टाफ के बारे में जानकारी, स्कूल की पाठ्सामग्री, क्रियाओं की जानकारी आदि भी प्रकाशित होते हैं।

स्कूल पत्रिका के उद्देश्य

छात्रों को लिखित रूप में आत्माभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करना । साहित्यिक रुचि तथा अध्ययन संबंधी आदतों का विकास करना । अवकाश के उपयोग के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना। स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना । छात्रों के सामान्य ज्ञान में वद्धि करना । छात्रों के भावी जीवन में तरह-तरह की प्रतियोगिताओं एवं साक्षात्कार के लिए उन्हें तैयार करना ।

समाचार पत्र और पत्रिकाएँ बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी आयुवालों को अनेक लेखन, विषय / जानकारी मुद्रित करके सामूहिक शिक्षा देते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र की प्रगति का पूर्ण विकास इन समाचारपत्र - पत्रिकाओं पर अवलंबित है।

समाचार पत्र काल सूचक साधन है जो संसार के अनेक राष्ट्र के बीच संबंध स्थापित करता है।

छात्रों में द्रुतवाचन की योग्यता विकसित करने, देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर ज्ञानवर्धन करता है।

इस तरह समाचार पत्र, पत्रिकाएँ हिन्दी शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिन्दी भाषा ज्ञान की वृद्धि की दृष्टि से रुचिकर एवं मनोरंजक अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०१

सूक्त शब्द से रिक्त स्थान भरिए -

१. गुरुकुल में छात्रों को विभिन्न ज्ञान देने के लिए _____ का निर्माण करते थे।
२. समाचार पत्र शिक्षा की दृष्टि से _____ करने वाला माध्यम है।
३. स्कूल पत्रिका छात्रों की भावनाओं को _____ में अभिव्यक्ति प्रदान करने का साधन है।
४. समाचार पत्र _____ सूचक साधन है।
५. पत्रिकाएँ साप्ताहिक, _____ एवं _____ के रूप में प्रकाशित होती हैं।

४.६.३.२. अध्यापक द्वारा रचित हिन्दी भाषाभ्यास की अनुदेशात्मक सामग्री-

छात्रों, आप जानते होंगे कि अध्यापक अपने शिक्षण हेतु अनुदेशात्मक सामग्री तैयार / निर्माण करते हैं।

अपने अध्यापन विषय से संबंधित लेख लिखकर पत्रिका में प्रकाशित कर सकते हैं। ऐसे ही समाचार पत्र के लिए परीक्षा संबंधी लेख, शिक्षण की उत्तम पद्धति, तथा अपनी रुचि के विषय का लेख लिख सकते हैं जो छात्र और् शिक्षकों के लिए उपयोगी होंगे ।

शिक्षक अध्ययन मार्गदर्शिका तैयार कर सकते हैं जो छात्रों के लिए सहायक होती है। पाठ संबंधी मानचित्र स्केच (रूपरेखा) बनाकर पाठ पढ़ा सकते हैं । चार्ट भी बना सकते हैं। चार्ट में शिक्षक अपने अध्यापन के मुख्यांश लिखते हैं। इसे संदर्भानुसार तैयार करके प्रयोग करना है।

चार्ट छात्रों में सीखने की अभिरुचि उत्पन्न करता है , विषयों को स्पष्ट समझने में सहायक है। चार्ट तर्क विचारों को मूर्तरूप देता है।

शिक्षक स्लाइड्स निर्माण करके पाठ को रोचक बना सकते हैं , पवर पाइंट प्रेसेन्टेशन (P.P.T.) तैयार करके पाठ को कंप्यूटर द्वारा आकर्षक बना सकते हैं।

शिक्षक अपना योगदान स्कूल पत्रिका के लिए भी दे सकते हैं। स्कूल पत्रिका में अपना लेख प्रकाशित कर सकते हैं कक्षा पत्रिका प्रभारी (इन्चार्ज) बनकर कार्य कर सकते हैं। स्कूल पत्रिका के संपादकीय बोर्ड में स्टाफ संपादक का कार्य कर सकते हैं। छात्रों द्वारा लिखित लेख, चित्र आदि स्कूल पत्रिका में प्रकाशित होने के पहले उनकी जाँच पड़ताल (संपादन) कर सकते हैं। नये अनुसंधान, खोज में शिक्षा से संबंधित अंशों का सृजनात्मक कार्य भी कर सकते हैं।

अभ्यास -

नीचे के पैराग्राफ को पढिए और संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

शिक्षक **क**क्षा शिक्षण के लिए स्वयं अनुदेशात्मक सामग्री का निर्माण कर सकता है। छात्रों के लिए सहायक अध्ययन मार्गदर्शिका तैयार कर सकता है। शिक्षक पी.पी.टी. बनाकर कंप्यूटर द्वारा पाठ को आकर्षक बना सकता है। स्लाइड्स द्वारा पाठ को रोचक कर सकता है। नये अनुसंधान, खोज में सृजनात्मक कार्य् कर सकता है। शिक्षक समाचार पत्र और पत्रिकाओं के लिए अपने विषय संबंधित, परीक्षा, शिक्षण पद्धति का लेख लिख सकता है।

१. शिक्षक कंप्यूटर का प्रयोग पाठ पढाते समय कैसे कर सकता है?
२. शिक्षक रचनात्मक और सृजनात्मक कौन कौन से कार्य कर सकता है?
३. शिक्षक समाचार पत्र - पत्रिका के लिए क्या योगदान दे सकता है?

हिन्दी भाषा सीखने और सिखाने में समाचार पत्रों का भागित्व -
आइए, हिन्दी भाषा सीखने - सिखाने में समाचार पत्रों के भागित्व की चर्चा करेंगे।

समाचार पत्र अनेक भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। हिन्दी समाचार पत्र , हिन्दी भाषा साहित्य के विकास में अपना योगदान देता है। अन्य भाषा समाचार पत्रों में भी हिन्दी भाषा का पूरक ज्ञान मिलता है। समाचारपत्र, हिन्दी भाषा प्रसार में पाठ्य पुस्तक , लेखन, विज्ञान, आदि मुद्रित करके अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करता है। जब समाचार पत्र में हिन्दी भाषा शिक्षण के पूरक विषय प्रकाशित होता है तो उसे काटकर बोर्ड पर चिपकाकर , उसे कक्षा में पढ़कर सुनाया जा सकता है।

समाचार पत्रों के अध्ययन से छात्रों की वाचन योग्यता का विकास होता है। छात्रों को शब्दों का वाक्यों में प्रयोग , वाक्य निर्माण, अभिव्यक्ति ढंग का ज्ञान होता है। शिक्षक छात्रों से एक पुस्तिका बनवाकर प्रतिदिन उसमें प्रमुख पाँच समाचार संग्रहित करने का कार्य दे सकता है। इससे छात्र समाचार को पढेंगे और समझेंगे और अपनी पुस्तिका में लिखेंगे जिससे लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता को विकसित करने में मदद मिल सकेगी।

समाचार पत्र हिन्दी भाषा क्षेत्र में छात्रों की सृजनात्मक योग्यताओं के विकास के साथ साहित्य के अध्ययन में रुचि विकसित करने के उद्देश्य रखते हैं।

समाचार पत्रों में 'बाल जगत' शीर्षक के अंतर्गत छात्रों के पसंदीदा क्षेत्र संबंधित रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं , इन्हें छात्र बडी रुचि से पढते हैं , इससे छात्रों में वाचन कौशल का विकास होता है साथ ही वे स्वयं भी कुछ रचना करने को प्रेरित हो सकते हैं।

समाचार पत्र में हिन्दी भाषा पाठों की जानकारी, व्याकरण ज्ञान भी छात्र की दृष्टि से, परीक्षा की दृष्टि से दिया जाता है। शिक्षक को रविवार के समाचार पत्र में प्रकाशित होनेवाले हिन्दी के विशेष लेखन, कहानी, निबंध, कविता आदि पढ़कर छात्रों को सुनाना है।
समाचार पत्र 'संसार का आइना' होने के कारण शिक्षक को साहित्य , रसानुभव, भाषा प्रभुत्व के लिए अवसर देना, उनका प्रमुख कार्य होता है।

समाचार पत्र छात्रों में पढ़ने/वाचन की प्रेरणा देता है। यह छात्रों की सर्वतोमुखी विकास करता है। विविध प्रकार के समाचार देकर छात्रों का बौद्दिक विकास में सहायक है। पाठ्य - पाठ्येतर क्रियाओं के विचार सुनाता है। सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीयता, एकता लाने में प्रमुख भूमिका निभाता है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा शिक्षण से संबंधित भाषाई योग्यताओं , विभिन्न कौशलों को विकसित करने, ज्ञान में वृद्धि करने तथा अवकाश के समय का सदुपयोग करने की दृष्टि से समाचार पत्र का भागित्व महत्व पूर्ण माना जाता है।

आपकी प्रगति की जाँच - ०२

सही / गलत को पहचानिए -

१. शिक्षक अपने शिक्षण हेतु अनुदेशात्मक सामग्री का निर्माण नहीं कर सकता है।
२. अध्ययन मार्गदर्शिका छात्रों के लिए उपयोगी है।
३. समाचार पत्र पढ़ने से छात्रों की वाचन योग्यता का विकास होता है।
४. समाचार पत्र ' संसार का आइना ' है।
५. समाचार पत्र तथा पत्रिकाएँ अनुदेशात्मक सामग्री नहीं बन सकती हैं।

४.६.४. सारांश -

आइए, पूरी इकाई का अवलोकन एक बार फिर करें-

शिक्षक अपने शिक्षण के लिए स्वयं अनुदेशात्मक सामग्री निर्माण कर सकता है जैसे मानचित्र, चार्ट, पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेख , स्लाइड़स, आदि। स्कूल पत्रिका के लिए भी अपना योगदान दे सकता है।
समाचार पत्र, हिन्दी भाषा के सीखने - सिखाने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है।

समचार पत्र के वाचन से छात्रों में वाचन योग्यता , अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है। समाचार पत्रों से छात्रों में सृजनात्मक विकास , सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीयता की प्रेरणा संभव है | समाचार पत्र और पत्रिकाओं में हिन्दी भाषा पाठों , व्याकरण की जानकारी तथा हिन्दी भाषा का पूरक ज्ञान भी छात्रों को मिलता है। इस तरह हिन्दी भाषा विकास में समाचार पत्र का महत्व पूर्ण भागित्व है।

४.६.५. आपकी प्रगति की जाँच के उत्तर -

१.१. यथार्थ परिस्थिति २. जनता को शिक्षित ३. लिखित रूप ४. काल ५. मासिक और वार्षिक

२.१. गलत २. सही ३. सही ४. सही ५. गलत

४.६.६. **इकाई समाप्ति का अभ्यास -**

उत्तर दीजिए -

१. हिन्दी भाषा शिक्षण में समाचार पत्र - पत्रिकाओं के महत्व का समर्थन कीजिए ।
२. हिन्दी भाषा शिक्षण में अनुदेशात्मक सामग्रियों के विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

४.६.७. संदर्भ पुस्तकें -

१. हिन्दी शिक्षण

डा. उमा मंगल - (२००६)

आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

२. कन्नड़ विषयधारित बॊधना पद्धति

एस.के. होलेयन्नवर - (२००३)

विद्यानिधि प्रकाशन, गदग

३. Preparation of Evaluation of Instructional Material
http://www.slideshare.net